ासिक प्रकाशन ● जून '९७

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की
विशिष्ट पत्रिका



निया के
रोचक
म प्रसंग

म कथा
विशेषांक

रुपये
स्तान टाइम्स प्रकाशन



हर राह प
LML STYLE POWER PERFORMANCE
In partnership with PIAGGIO
WORLD'S MOST FUEL EFFICIENT 80 KMPL 2-STROKE 150 CC SCOOTER
60 कि.मी./लीटर सामान्य ड्राइविंग में
START
इलेक्ट्रिक स्टार्ट वाला मॉडल भी उपलब्ध
हाइ-टेक जगमगाता इन्स्ट्रुमेंट पैनल इलेक्ट्रिक क्लॉक के साथ
MOST POWERFUL HALOGEN LIGHT
ज्यादा चले, रात में दे दिन जैसा उजाला
Beep! Beep!
स्पीड वॉर्निंग बीपर
फ्लेमिंग रेड
सुप्रीम व्हाइट
डेअरिंग ग्रीन
SUPREMO
WORLD


शहंशाह
SUPREMO
हमेशा से आपको बेजोड़ शान, शक्ति और कार्यकुशलता
देने वाले एल एम एल लिमिटेड अब पेश करते हैं एक
शाही सवारी. नया सुप्रीमो. भारत का सबसे ज़्यादा
शानदार, शक्तिशाली, तेज़; और विश्व का
सबसे ज्यादा पैट्रोल-किफ़ायती 150 सी सी,
2-स्ट्रोक स्कूटर. ऐसी ख़ासियत जो
इसे बनाए, हर राह पर शहंशाह.
FROM
LML

आस्था के आयाम

अपनी भाषा से प्रेम

वर्षों पहले की बात है, केंद्रीय विद्यालय में प्रवेश बहुत मुश्किल से होता था । नयी दिल्ली के आर. के. पुरम में नया-नया स्कूल खुला था, ज्ञात हुआ कि वहां के प्रिंसिपल मेरे मित्र श्री रामानुज सिंह (आकाशवाणी के समाचार वाचक) के सुपरिचित हैं । मैंने अपने बालक के प्रवेश के लिए रामानुजजी से अनुरोध किया कि फार्म भर कर दे चुका हूं, आप प्रिंसिपल साहब से बोल दें तो काम बन जाएगा । चालीस सीटों के लिए तब करीब चार सौ आवेदन आये थे ।

> **प्रेम किसी से भी किया जा सकता है, पर अपनी भाषा से प्रेम का अलग ही महत्त्व है**

मेरे स्नेहवश रामानुजजी ने उत्तर दिया कि आप परेशान नहीं हों, आपके साथ ही प्रिंसिपल कर्तार सिंह से मिलकर बात करूंगा । अगले सप्ताह स्कूल में पहुंचकर हम दोनों प्रिंसिपल साहब के पास गये । वे बड़े तपाक से मिले और आदरपूर्वक बिठाया । रामानुजजी ने मेरा परिचय कराते हुए नाम बताया । उत्तर में प्रिंसिपल साहब ने हंसते हुए कहा, "इस प्रवेश के लिए आपको आने की क्या जरूरत था ? पर पुत्र का नाम पता आदि सब बतलाते हुए कर्तार सिंहजी ने कहा कि देखिए यह आवेदन सबसे ऊपर रखा है ।" मुझे घोर आश्चर्य हो रहा था कि प्रिंसिपल को मेरे बारे में इतनी जानकारी कहां से मिली, जबकि कभी कोई मुलाकात नहीं हुई थी । उधर रामानुजजी को देखा तो उनका चेहरा क्रोध से लाल हो उठा था । वे मुझसे कुछ बोलना भी पसंद नहीं कर रहे थे । इसी बीच प्रिंसिपल साहब चाय लाने के लिए कमरे से बाहर निकल किसी को बोलने गये । हम दोनों स्तब्ध बैठे रहे । चाय आ गयी फिर भी कोई कुछ नहीं बोल रहा था । हम दोनों को गुमसुम देखकर प्रिंसिपल कर्तार सिंह ने मौन भंग किया, "अरे आप दोनों इस प्रकार तनाव में क्यों हैं ? भाई भारतीजी के लड़के का प्रवेश हो जाएगा, हालांकि इनसे पहले कभी मुलाकात नहीं हुई । फिर भी मुझे पूरी जानकारी इनके आवेदन पत्र से हो गयी है, क्योंकि करीब चार सौ आवेदन पत्रों में मात्र एक आवेदन हिंदी में मिला, जो इन्हीं का है । राजभाषा हिंदी से प्रेम होने के नाते मैंने इनके आवेदन को ध्यान से पढ़ा और अलग सबसे ऊपर रखा है ।"

इतना सुनते ही गंभीर बने रामानुजजी ने मौन तोड़ा और क्षणिक भ्रांति दूर होते ही तीनों जोर से हस पड़े और बोले, "यह है हिंदी का चमत्कार ।"

—राधाकांत भारती

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

• ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तर से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

१. **अवसाद**—क. लापरवाही, ख. उदासी, ग. निराशा, घ. हताशा।

२. **तादात्म्य**—क. अभिन्नता, ख. समानता, ग. नकल, घ. अनुकूलता।

३. **नियंता**—क. उत्पादनकर्ता, ख. उत्साह देनेवाला, ग. नियमन व नियंत्रण करनेवाला, घ. बनानेवाला।

४. **प्रतिकृति**—क. प्रतिक्रिया, ख. बदले का कार्य, ग. नकल, घ. उसी प्रकार की बनायी हुई दूसरी वस्तु।

५. **अवधारणा**—क. मत, ख. मन में किसी प्रकार का उदय, ग. कोरी कल्पना, घ. सम्मति।

६. **निरूपण**—क. नकली रूप, ख. किसी विषय को स्पष्ट समझा देना, ग. विवाद को निबटाना, घ. निर्णय।

७. **नैष्ठिक**—क. ईमानदार, ख. निष्ठावाला, ग. सत्य, घ. धार्मिक।

८. **जघन्य**—क. कठिनाई से, ख. अधम, ग. बेईमान, घ. असत्य।

९. **संपृक्त**—क. संबद्ध, ख. समान, ग. संपूर्ण, घ. भावपूर्ण।

१०. **निरामय**—क. प्रसन्न, ख. नीरोग, ग. आनंदमय, घ. तटस्थ।

११. **मेधावी**—क. शांतिमय, ख. परिश्रमी, ग. बुद्धिमान, घ. खोजी।

१२. **प्रवर्तित**—क. चालित, ख. आरंभ, ग. जारी, घ. तब्दील होना।

१३. **अंतर्निहित**—क. छिपा हुआ, ख. भीतर स्थित, ग. मानसिक, घ. हृदयस्थ।

१४. **विधिविहित**—क. अनुशासित, ख. नियम के अनुसार, ग. नियंत्रण में, घ. कानूनी।

उत्तर

१. ख. उदासी, शिथिलता। प्रेम परमानंद है और **अवसाद** उससे दूर भागता है। (व्युत्.—अव+सद्)

२. क. अभिन्नता, समरूपता। राजनीतिज्ञों को जनता से **तादात्म्य** स्थापित करना चाहिए। (व्युत्.—तदात्मन्)

३. ग. नियमन व नियंत्रण करनेवाला। ईश्वर ही सृष्टि का **नियंता** है।

४. घ. उसी प्रकार की बनायी हुई दूसरी वस्तु। भारतीय संविधान ब्रिटेन के संविधान की लगभग **प्रतिकृति** है। (व्युत्.—प्रति+कृ)

५. ख. मन में किसी विचार का उदय (कांस्पेशन)। पवित्र **अवधारणा** मनुष्य को पुण्यात्मा बनाती है। (व्युत्.—अव+धृ)

६. ख. किसी विषय को स्पष्ट समझा देना। गीता में कर्म के सिद्धांत का **निरूपण** किया गया है।

७. ख. निष्ठावाला, शुद्ध एवं पवित्र जीवन बिताने की प्रतिज्ञा करनेवाला। **नैष्ठिक** साधु में आस्था उत्पन्न हो जाती है। (व्युत्.—निष्ठा)

८. ख. अधम, नीच। **जघन्य** अपराध बढ़ते जा रहे हैं।

९. क. संबद्ध, मिला हुआ। वाक् और अर्थ दोनों **संपृक्त** हैं। (व्युत्.—सम्+पृच्+क्त)
१०. ख. नीरोग, स्वस्थ। शुद्ध एवं स्वच्छ आहार करनेवाला व्यक्ति ही **निरामय** होता है। (निर्+आमय)
११. ग. बुद्धिमान, समझदार। **मेधावी** छात्रों का भविष्य उज्जवल होता है। (व्युत्.—मेध्)
१२. क. चालित, स्थापित। पुरस्कार-योजना किसी क्षेत्र में योग्य व्यक्ति को प्रोत्साहित एवं सम्मानित करने के लिए **प्रवर्तित** की जाती है। (व्युत्.—प्र+वृत्)
१३. ख. भीतर स्थित, समाविष्ट। इस वाक्य का **अंतर्निहित** भाव यह है। (अंतर+निहित)
१४. ख. नियम के अनुसार। कोई भी कार्य **विधिविहित** करना चाहिए। (विधि+विहित)

पारिभाषिक शब्द

Comptroller	=नियंत्रक
Auditor General	=महालेखा-परीक्षक
Debit Balance	=नामे शेष
Extent	=विस्तार/सीमा
Financial power	=वित्तीय अधिकार
Gross assets	=कुल परिसंपत्ति
Immovable property	=अचल संपत्ति
Irresponsible	=अनुत्तरदायी
Castings	=ढली वस्तुएं

ज्ञान-गंगा

अविनीतं स्नेहमात्रेण न मंत्रे कुर्वीत।

—(चाणक्यसूत्राणि २०)

—विवेकहीन व्यक्ति को केवल स्नेही होने के कारण गुप्त विचारणा में सम्मिलित नहीं करना चाहिए।

सशंक सर्वदा दुःखी निशंकः सर्वदा सुखी

—(वृहन्नारदीयपुराण ४/७४)

—संशयी सदैव दुःखी रहता है और निःशंक सदैव सुखी रहता है।

बलाबलापेक्षमिति।

—(धर्मबिंदु १/५२)

—अपनी शक्ति व अशक्ति को देखकर कार्यारंभ करना चाहिए।

शरीरेऽरिः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा।

—(प्रतिमानाटकम् १/१२)

—बाहरी शत्रु तो केवल देह पर आघात करता है, किंतु स्वजन हृदय पर भी आघात करते हैं।

साधु वासाधु वा कर्म यस्य यद्विहितं पुरा।
तदेव तेन कर्तव्य मापद्यपि कथंचन॥

—(ब्रह्मांडपुराण ३/२३/७६)

—उचित या अनुचित जिसका जो कार्य शास्त्र-विहित है, उसे आपत्ति में भी वही कार्य करना चाहिए।

कुलान्यकुलतां यांति स्वाध्यायस्य बिवर्जनात्।

—(विष्णुधर्मोत्तर पुराण ८९/९०)

—स्वाध्याय का परित्याग कर देने से उत्तम कुल भी नीच कुल हो जाते हैं।

ये हि जनाः पुण्यकृतः स्वर्गं लोकं यंति तेषामेतानि ज्योतींषि।

— (माध्यंदिनीयशतपथ ब्राह्मण ६/५/४/८)

—जो पुण्य करनेवाले लोग स्वर्ग में जाते हैं, उन्हीं की ये ज्योतियां हैं जो आकाशमंडल में जगमगाती हैं।

प्रस्तुति—महर्षि कुमार पांडेय

मासिक प्रकाशन

कादम्बिनी

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

• वर्ष ३७
• अंक ८
• जून, १९९७

लेख एवं निबंध

प्रेम बहती हुई नदी है
☐ शकुंतला बहादुर २४

लेखकों के प्रेम प्रसंग
☐ मजीद अहमद २९

प्रेम कथा आइसनहोवर की प्रेमिका की
☐ अनंत राम गौड़ ३५

औरत ही प्रेम करना जानती है
☐ अनंत राम ४२

रूस की साम्राज्ञी के रोचक प्रेम प्रसंग
☐ शैलेन्द्र सिंह ४६

अप्सराओं और सुंदरियों के बीच
☐ कु. शुभ्र तनया ४९

प्रेम की प्रतिरूप भारतीय मोनालिजा
☐ स्वामी वाहिद काज़मी ५४

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

अर्द्धवार्षिक : ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये; द्विवार्षिक : २२५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान : अर्द्धवार्षिक : १८५ रुपये; (अमरीकी डॉलर-७, पौंड-४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर-१३.५०, पौंड-७.५०); अन्य सभी देशों के लिए : अर्द्धवार्षिक : २७५ रुपये; (१०.५० डॉलर, पौंड-६), वार्षिक : ५३५ रु. (२०.५० डॉलर, पौंड-११.५०)

शुल्क भेजने का पता : प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-१

आवरण (पारदर्शी) : प्रेमकपूर

बांस के पत्ते पर लिखा प्रेम पत्र
☐ प्रस्तुति : सुनीता ६०

बिछुड़े हुए प्रेमी युगलों को मिलाया 'कादम्बिनी' ने
☐ अशोक ६३

रंगीला राजस्थान
☐ लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत ६८

मूल्य आधारित शिक्षा
☐ विशेष संवाददाता द्वारा ७२

बोझ एक प्रेम पत्र का
☐ अशोक सेन ७४

विश्व विख्यात प्रेम प्रसंग
☐ मेघराज जैन ८६

ढाई आखर प्रेम का
☐ संगीता बनर्जी 'अनुश्री' ८९

सभी फूल प्रेम के लिए नहीं
☐ डॉ. गिरिजा शंकर त्रिवेदी १०१

कलेक्टर पर मोहित गवर्नर जनरल की पत्नी
☐ ब्रजेश वर्मा १०४

मुसोलिनी की नीली आंखोंवाली प्रेमिका
☐ सुजीत वाजपेयी १०८

उन्नीस प्रेमियोंवाली खातून
☐ डॉ. जगदीश चंद्रिकेश ११३

प्रेम स्वरूप नहीं देखता
☐ अशोक जैन १२७

औरतें भी कम कारीगर नहीं
☐ सर्वेश १२९

कन्हैया की नगरी : मथुरा वृंदावन
☐ विभा प्रकाश श्रीवास्तव १३४

प्रेमियों का अहम् विस्फोटक होता है
☐ दुर्गा प्रसाद शुक्ल १३९

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

फिल्म जगत के रोचक प्रेम प्रसंग
☐ इस्मत जहीर.................................१४२

बाबर और आयशा बेगम
☐ विरिमकुल कादिरोव.......................१४६

वह पूरे शहर की प्रेमिका थी
☐ सुरेश नीरव...................................१४९

वह अपने प्रेमी के साथ सती हो गयी
☐ श्रीनिवास बालाजी हार्डीकर...............१५३

प्रेम की गवाह बारादरियां
☐ सरिता नागपाल...............................१५८

पुरुष कभी स्वयंवर के पक्ष में नहीं रहा
☐ सत्य नारायण भटनागर...................१६२

अनुभवी होते हैं प्रौढ़ प्रेमी
☐ माइकल वेतुरा...............................१६७

प्रेम कलाम लिव टुगेदर
☐ अंजलि लखेड़ा...............................१७५

क्या है प्रेम की भाषा
☐ डॉ. हीरालाल बाछोतिया..................१८९

कहानियां एवं व्यंग्य

सुंदरी सुकन्या
☐ डॉ. सुधा पांडे...................................८०

बेमौसम की बरखा
☐ कौशल्या अश्क....................................९३

मैंने तुम्हें बेहद प्यार किया
☐ पद्माशा झा.....................................११८

प्रेम गली अति सांकरी
☐ मीनाक्षी दीक्षित.................................१२४

पी.एच-डी. पुराण
प्रस्तुति : रितु....................................१७२

कविताएं

अलेक्सांद्र पुश्किन
● डॉ. अख्तर नज़्मी...............................१८०

सिमरन कौर ● सुरजन.........................१८१

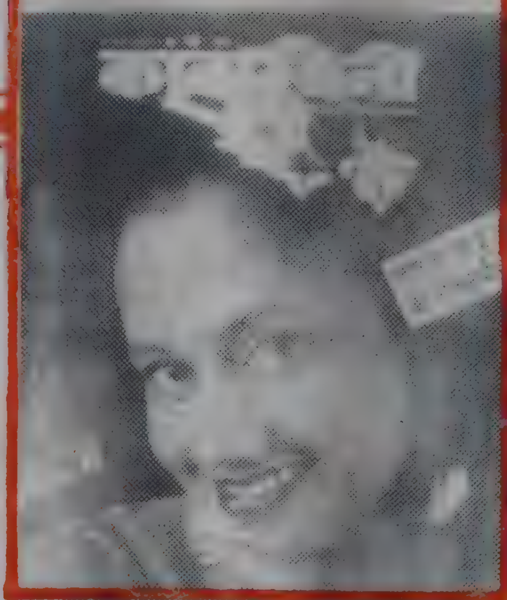
महेश चंद्र द्विवेदी ● यश मालवीय १८२

स्थायी स्तंभ

आस्था के आयाम— ७, शब्द सामर्थ्य— ८, ज्ञान गंगा— ९, प्रतिक्रियाएं —१२, कालचिंतन —१५, आखिर कब तक—२०, प्रेम-प्रसंग—४०, तनाव से मुक्ति —५८, आइए चलें जंगल की ओर—७८, विधि विधान—९८, व्यंग्य तरंग—१०६, वैद्य की सलाह—११५, इनके भी क्यों जुदा-जुदा—१५६, बुद्धि विलास—१५७, गोष्ठी—१६४, ज्योतिष समस्या और समाधान—१७८, यह महीना और आपका भविष्य—१८४, प्रवेश—१८६, नयी कृतियां—१९२, सांस्कृतिक समाचार—१९५, क्लब समाचार—१९६, समस्या पूर्ति—१९८।

संपादकीय परिवार

मुख्य उप-संपादक : भगवती प्रसाद डोभाल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, सुरेश नीरव
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, धनंजय सिंह, अरुण कुमार जैमिनि, सुजीत वाजपेयी
प्रूफ रीडर : प्रदीप कुमार
कला विभाग प्रमुख : सुकुमार चटर्जी
चित्रकार : भुपेन मंडल
संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९



पुरस्कृत पत्र

महिला आरक्षण : एक दुःस्वप्न

कादम्बिनी के अप्रैल अंक में महिलाओं के आरक्षण विषय पर आपकी समीक्षा महिला-आरक्षण के पक्षधर उन महिला संगठनों, समाज सुधारकों और राजनीतिकों के विचार-मंथन के लिए अत्यंत सटीक है, जो यह समझते हैं कि केवल स्थानीय निकायों, विधानमंडलों और संसद में महिला-आरक्षण से ही समाज में विद्यमान स्त्रियों की दशा और दिशा बदल सकती है । पिछले चार-पांच दशकों में समाज के जिन वर्गों को अभी तक विभिन्न क्षेत्रों में आरक्षण प्राप्त हुआ है, उनकी स्थिति पर यदि दृष्टि डालें, तो आरक्षण के सुपरिणामों की व्यापकता (?) का बोध हो जाएगा । आरक्षित श्रेणी के किसी अधिकारी की संतान तो आरक्षण का लाभ प्राप्त कर अधिकारी का पद पा जाती है, किंतु महानगर में नीम के पेड़ के नीचे बैठकर रोटी कमानेवाले चर्मकार की स्थिति में आरक्षण से कोई सुधार हुआ हो—ऐसा दिखायी नहीं पड़ता । दूर-दराज देहातों में रहनेवाले आरक्षित वर्गों के व्यक्तियों की दशा में सुधार की आशा तो दुःस्वप्न ही है । यही बात महिला आरक्षण के लिए भी उतनी ही सत्य होगी ।

पुरुष जहां परिवार के लिए आजीविका और सुरक्षा का दायित्व निभाता है, वहां स्त्री पुरुष के लिए पोषक— मां, मित्र और रमणी के बहुआयामी दायित्वों का निर्वहन करती

कादम्बिनी के मूल्य में वृद्धि

कादम्बिनी आप सबकी अत्यंत लोकप्रिय पत्रिका है । हम पूरे श्रम के साथ उसका प्रत्येक अंक ऐसा निकालते हैं कि वह किसी विशेषांक से कम नहीं होता । कादम्बिनी के अपने विशिष्ट पाठक हैं । उन्हें वह सब सामग्री मिलती है जो उन्हें चाहिए । पाठक किसी भी वर्ग का हो, उसे उसके योग्य रचनाएं प्रत्येक अंक में अवश्य मिलेंगी ।

२०० पृष्ठों की पत्रिका सर्वाधिक प्रचारित और संग्रहणीय है । जब बाजार में हर चीज के मूल्य बढ़ गये हैं, तब भी हमने कादम्बिनी की कीमत नहीं बढ़ायी । अब स्थिति यह है कि कोई भी पत्रिका बाजार में इतने सस्ते दामों में, इतनी विराट सामग्री नहीं दे सकती । अपने पाठकों को दृष्टि में रखते हुए हम इसके मूल्य में केवल दो रुपये और जोड़ रहे हैं, यानी जुलाई से कादम्बिनी का प्रत्येक अंक ११ रुपये की अपेक्षा १३ रुपये में मिलेगा । हमें विश्वास है कि पाठक इस नगण्य वृद्धि को हंसते हुए स्वीकार करेंगे ।

—संपादक

है । इस दृष्टि से स्त्री का महत्त्व कहीं अधिक है । परिवारों से बने समाज और समाजों से निर्मित देश में भी स्त्री और पुरुष की भूमिकाओं का यह पार्थक्य स्पष्ट है ।

विचारणीय यह है कि स्त्री को यदि परिवार और समाज में अपना गौरवमय स्थान प्राप्त नहीं हुआ है तो क्या कुछ संस्थाओं में मात्र आरक्षण से उसे वह स्थान मिल सकेगा ? अनुभव यह बता रहा है कि उत्तर प्रदेश के स्थानीय निकायों में अध्यक्ष पद पर आरक्षण के आधार पर सुशोभित महिलाओं की स्थिति यह है कि स्थानीय परिषदों के कामकाज में उन महिलाओं के पति अथवा परिवार के पुरुष सदस्य प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अपना वर्चस्व बनाये रखते हैं और महिला अध्यक्षों की स्थिति गौण-सी दिखायी देती है । ऐसे परिवेश में महिलाओं की स्थिति में सच्चा और दूरगामी सुधार उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य और स्त्री-सुलभ स्वरोजगारों पर ध्यान देने से होगा—आरक्षण से नहीं ।

—शरत कुमार कौशिक
विशेष सचिव, उ. प्र. शासन
डी-१३६१, इंदिरा नगर, लखनऊ

प्रोत्साहन पुरस्कार

इतिहास गवाह है

श्री विजय प्रकाश बेरी का 'हिंदी आयात चक्रम' शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित लेख पढ़कर दुःख हुआ । इस लेख में श्री बेरी के दुःखी मन की झलक देखने को मिलती है । चूंकि 'कादम्बिनी' जो श्री राजेन्द्र अवस्थी के कुशल एवं योग्य संपादकत्व में हिंदी की पिछले ३७ वर्षों से सेवा में संलग्न है, इसलिए आयातित' हिंदी (जिसे बेरीजी ने जानबूझकर 'इंपोर्टेड' शब्द के द्वारा संज्ञापित किया है) की बढ़ती संभावना को उजागर होने देने एवं उस पर नियंत्रण हेतु कुछ कारगर कदम उठाये जाने के लिए हमें प्रेरणा मिलती है ।

विश्वभर के सभी स्वतंत्र (लगभग सभी) देशों में भाषा के लिए एक महत्त्वपूर्ण शब्द का प्रयोग होता है । वह शब्द है 'मातृ' । विश्व के किसी देश का बालक, नवजात शिशु बड़ा होने पर अपनी माता से माता की भाषा में प्रथम संवाद करता है । माता जिस भाषा में उससे बोलती है उसकी संतान (पुत्र या पुत्री) उससे उसी भाषा में बोलती है । वह अपनी तोतली बातों में माता-पिता या दादा-दादी द्वारा बोली जानेवाली भाषा बोलता है चाहे वह बंगला हो अथवा पंजाबी, मराठी हो या कन्नड़, मलयालम हो या गुजराती, डोगरी हो या भोजपुरी इत्यादि, इत्यादि । विश्व के किसी देश या राष्ट्र की भाषा वहां की (देश या राष्ट्र विशेष की) स्थानीय भाषा (विदेशी भाषा नहीं) ही राष्ट्रभाषा होती है । चूंकि हिंदी भारत के एक बड़े भूभाग में प्रयुक्त होनेवाली भाषा रही है, इसलिए हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाया जाना उचित था ।

फिर क्यों वह हिंदी 'इंपोर्टेड' होने की स्थिति में आ गयी है ? विचारणीय प्रश्न भी है और चिंताजनक भी । मुझे तो कभी-कभी ऐसा लगने लगता है कि आज के 'कॉनवेंट एजूकेटेड' आधुनिक माता-पिता अपनी संतानों को संग्रहालयों में ले जाकर काले बड़े-बड़े अक्षर में लिखे ढाई अक्षरी 'हिंदी' शब्द को फ्रेम में मढ़े हुए देखकर उल्लसित और हर्षित होंगे और कहेंगे 'दिस वाज मदर टंग ऑव अवर ओल्ड

पीपुल' ।

बीसवीं सदी के अवसान पर और इक्कीसवीं सदी के आगमन पर 'हिंदी' शब्द भांति-भांति के विदेशी फ्रेमों में मढ़कर, विदेशी कंपनियां बाटेंगी, उपहार स्वरूप और खरीदार होंगे 'कॉनवेंट एजूकेटेड' माता-पिता ।

हाय री हिंदी और वाह री अंगरेजी ।

● **वृंदावन गोस्वामी**
३३२, रमण-रेती, वृंदावन

जब तक स्त्री है आसमान में

'कादम्बिनी' का अप्रैल अंक मिला । किस-किस रचना की तारीफ करूं ? या यूं कहूं कि 'कादम्बिनी' बेजोड़ है । गीता पर हाथ रखकर सत्य वचन कहती हूं संपादकजी हर पृष्ठ पर कुछ-न-कुछ लिख भेजने को मन बेचैनी से हुलसता है ।

इसी क्रम में एक विषय उठाती हूं 'लेखकों की दृष्टि में स्त्री'। स्त्री शब्द ही अपने आप में महान है । स्त्री के प्रति पुराने दृष्टिकोण को बदला जाए तो देखिए यह दुनिया कितनी खूबसूरत हो उठेगी, परंतु अफसोस होता है तो इस बात पर कि अपने आपको हर मामले में 'सुपरमैन' समझनेवाला पुरुष वर्ग (अपवादों को छोड़ दें तो) चाहे उसकी तमाम उपलब्धियों के पीछे स्त्री (मां, पत्नी, बहन, प्रेमिका, बेटी ही क्यों न हो) का हाथ हो चट से स्वीकारते नहीं और स्त्री हमेशा की तरह परदे में गुम हो जाती है ।

● **माला वर्मा**
हुकुम चंद जूट मिल
हाजीनगर, २४ परगना (उत्तर)
प. बंगाल ।

— एक कहानी याद आ रही है :

एक जुलाहे ने लगातार कई दिनों तक कपड़ा बुना ।
कपड़े को स्वरूप दिया । कपड़े के हर तार के साथ उसने धागे
को नहीं अपने अभ्यांतर प्रेम को पिरोया । बनकर वह तैयार हुआ ।
उसने देखा । सोच उसकी समझ के परे था, आंखें तो थीं —अत्यंत
मनोहारी आकृतियों से आवृत्त वह कपड़ा बेशकीमती था । उसके पैरों
में गति आ गयी और वह बाजार की ओर भागा ।

— हर धागे से बंधे प्रेम-सूत्र को अर्थसत्ता ने झकझोर दिया । वह बाजार जाएगा और उस अनमोल प्रेम को बेचकर लौटेगा ।

□

— मेरी चेतना यहां आकर रुक जाती है :
अर्थसत्ता के बाजार में प्रेम इसी तरह नीलाम होता है ।

— घबरा गया मैं, प्रेम इतना अभय, अहिंकारी और प्रतिगामी है । हस्तांतरण सहज साध्य है । प्रेम बाजार है । प्रेम पुकार है बिचौलिए के हाथों जो बोली लगाते हैं ।

— खरीद के लिए प्रेम सड़ी-गली टेबल-सा अवयव है क्या ?

□

— अपनी दीवार पर मैं उलटी लटकी छिपकली को देखता हूं । छिपकली सोचती है मकान उसी के सहारे खड़ा है । वह हट जाए तो मकान गिर जाएगा ।

— मुरगे को भ्रम है कि वह बांग नहीं देगा तो सवेरा नहीं होगा ।

— गिलहरी को भ्रम है कि वह अपनी सुंदर पूंछ उठाकर भागदौड़ नहीं करेगी तो उद्यान कभी सुंदर नहीं दिखेंगे ।

— मोर सोचता है, मेरे परों में सौंदर्य नहीं होगा तो मादा मोर आकर्षित नहीं होगी ।

□

— कितने विरोधाभासों के बीच हम जीते हैं ।

— जानते हैं प्रेम एक नाजुक तंतु है ।

— जिंदगी का पूरा भवन प्रेम की नींव पर खड़ा है ।

— प्रेम धरती से उपजा अंकुर है ।

— प्रेम का अंकुर पत्तों में बदलता है ।

— पत्ते बढ़ते हैं, लता, बनते हैं या वृक्ष ।

— वृक्ष फूल देता है । फूल देता है फल । फल फिर गिरता है धरती के गर्भ में और गर्भाशय में पलकर वह फिर अंकुर के रूप में उभरता है । इस प्रक्रिया में प्रेम अक्षुण्य है । कटिहारे व्याघात करते हैं । प्रेम बिना चीखे, हंसते हुए सभी संधान स्वीकारता है । प्रेम की बेल बढ़ती रहेगी । प्रेम का पौधा पनपता रहेगा ।

— प्रश्न उठता है, कहां से आता है प्रेम ? कहां जाता है प्रेम ?

— प्रेम की प्रासंगिकता क्या है ? कब उभरता है, कब टूटता है, किसी ने जाना है कभी ?

— देखा है किसी ने कि भोर की पहली किरण के साथ हरसिंगार के फूल क्यों झर जाते हैं ? क्यों तिरस्कृत और विमूढ़ खड़ा रहता है हरसिंगार ।

— अशोक में फूल नहीं खिलते जब तक किसी सुंदरी के चरण उसकी पीठ पर लात नहीं मारते । क्यों, आखिर क्यों ? लात मारना और लात खाना प्रेम का समन्वयमय अधिकार है । फिर अशोक क्यों सार्वजनिक करता है कि सुंदरी सबके सामने अपने गुलाबी तलुवों का स्पर्श करे !

— प्रेम प्रदर्शन है क्या ?

— है, सच है यह ! किसी से प्रेम करना एक बात है । प्रेम को बांधकर रखना दूसरी बात है । प्रेम को बांधना, प्रेम करना नहीं है ।

— प्रेम मैत्री को पहचानता है, इसलिए मित्रता के धरातल पर वह बेहद फलता और फूलता है ।

— प्रेम जब जीवन संगिनी का रूप लेता है तो जीवन-संगीत समाप्त हो जाता है । शेष रहते हैं खंडहरों में पलते प्रेम के प्रकरण जो इतिहास के पृष्ठों में अंकित होकर वर्तमान के समय-साध्य और जीवन की स्वर्णिम धड़कनों को तोड़कर दो प्रेमियों को छोड़ देते हैं इड़ा के भ्रमजाल में ।

— प्रेम कभी एकाकी नहीं होता । प्रेम के लिए प्रेम का अवयव चाहिए —वह आत्मा का परमात्मा से मिलता द्वार हो, शरीर का शरीर से मिलना प्रकृति का नैसर्गिक उपहार हो अथवा मस्तिष्क की नाजुक शिराओं से शिराओं के साथ मिलता अदृश्य संगम हो ।

— प्रेम संगम है ।

— प्रेम समचेतना का समवाही रथ है ।

— प्रेम घात-प्रतिघात के घर्षण से उभरता तीसरा तत्त्व है ।

— प्रेम अमरता का प्रतीक है ।

— प्रेम प्रार्थना है । प्रेम मंदिर की आरती है । प्रेम सरपीली नदी का घर्षण

है । प्रेम जिंदगी का रोशनदान है ।

— प्रेम प्रीति है । प्रेम प्रतिकार है । प्रेम आहार है । प्रेम व्यवहार है ।

— समूची दुनिया बिना प्रेम के एक खोखली सुरंग है ।

□

— प्रेम किसने नहीं किया ? प्रेम का मंत्र किसने नहीं दिया ?

— ईसा ने कहा चेतना-मात्र प्रेम का आधार है ।

— मोहम्मद ने कहा, प्रेम के बिना धर्म एक ख्वाबी महल है ।

— बुद्ध ने प्रेम को शक्ति और भक्ति माना, जूठे बेर खाये और प्रेम के हाथों ही बलि चढ़े ।

— शिव प्रेम के सर्वाधिक श्रेष्ठ प्रतीक हैं । शक्ति को बांधकर शिव ने कनकहे कहा —प्रेम की जमीन में हल जितना गहरे प्रहार करेगा, शक्ति उतनी ही बलवती होगी ।

— जरदस्थु प्रेम के हाथों भरे बाजार बिके थे ।

— महान विजेताओं के इतिहास विषधर प्रेम-कन्याओं के उदाहरण से भरे पड़े हैं ।

□

— कुछ और सत्य लीजिए :

- महावीर एक ही करवट सोते थे
- बुद्ध एक ही करवट सोते थे
- शिव तांडव के बाद एक ही करवट पर विश्राम करते थे

— करवट बदलने से प्रेम की डोर टूट जाती है ।

— आलिंगन और उपालंभ प्रेम के प्रतीकार्थ हैं ।

— प्रेम में ही व्यायाम है । प्रेम में ही प्यार और प्रतिकार है । प्रेम ही आलिंगनबद्ध सर्प का स्वरूप है ।

— बाग हो या जिंदगी, प्रेम के बिना महाबोधि वृक्ष भी ठूंठ बन जाता है ।

— प्रेम की धड़कन रक्त संचार का माध्यम है ।

— प्रेम परिवार का कल्याणी कलाबा है । वह परिवार को सुख, सौंदर्य और निश्चिंत होने के लिए आश्वस्त करता है ।

□

— प्रेम की रीति, प्रीति और प्रतीति अनुपम है । [illegible], किस क्षण [illegible] बंध जाए अज्ञात है ? [illegible] बंधा हुआ टूट जाए, [illegible] है ? [illegible] प्रेम [illegible]

सकतीं ।

— प्रेम अत्यंत व्यापक तत्त्व है । व्यापक होते हुए भी वह क्षणजीवी है । क्षणजीवी होने का अर्थ टूटना नहीं है । जोड़ने के सारे पोषक तत्त्व हर क्षण मधुमक्खी के छत्ते की तरह कार्यरत रहते हैं ।

— आंधी हो या तूफान, ज्ञान हो या अज्ञान, समझ हो या नासमझ के परदे, प्रेम हर समय, हर क्षण परीक्षा लेते हुए चलता है ।

— प्रेम को प्रेम रहने दो : श्रेयस्कर है । प्रेम को व्यवसाय बनाओगे तो प्रेम वितृष्णा पैदा करेगा; दोषी होगी भ्रमित करनेवाली मानसिक चेतना और चेतना से अद्‌भुत समूचे क्रिया-कलाप ।

— प्रेम बहुआयामी वृक्ष है ।

- प्रेम का वृक्ष मातृत्व में पलता है
- प्रेम का वृक्ष घरौंदों में पलता है
- प्रेम का वृक्ष भीड़ में पलता है
- प्रेम का वृक्ष पद या निरापद को नहीं देखता
- प्रेम एकांत संगीत है तो वही प्रेम सामूहिक समारोह भी है
- प्रेम मुक्ति है । प्रेम दुप्ति है । प्रेम प्रकाश का अमिट रोशनदान है । प्रेम उसी क्षण अंधकार का पहरुआ भी है ।
- प्रेम के लिए न बाधित है प्रकाश और न बाधित है अंधकार ।
- प्रेम किसी के प्रमाण-पत्र के लिए व्याकुल नहीं है ।
- अभंग प्रेम प्राणपात्र का भिक्षुक है ।

□

— आश्चर्य है यह कि सदियों से बदलते सांस्कृतिक और रासायनिक प्रयोग प्रेम की प्रतीति और रीति-नीति को नहीं बदल सके ।

— संस्कृति और इतिहास के अध्याय भी वर्तमान की सीमा में व्यतीत नहीं हुए, प्रेम की सार्थकता इससे बड़ा प्रमाण नहीं हो सकती ।

— सकल प्राणियों से प्रेम करो — कहते रहे हैं हमारे पुरुष पुरातन । कहते रहते हैं समस्त जगत से प्रेम करो । प्रेम करो हर तत्त्व से घातक हो या साधक । प्रेम करो प्रेम से तो प्रेम करो उससे भी जो घृणा करता हो ।

— सारे रासायनिक प्रयोग प्रेम के बीज-तत्त्व का विश्लेषण नहीं कर सके । नहीं कर सकेंगे वे कभी ।

□

— ठहरिए, मात्र भ्रष्ट शिक्षक बनकर मैं आपका समय नष्ट नहीं करना चाहता ।

— कुछ मूल मंत्र और फिर शांति :

- प्यार देवताओं का अलभ्य वरदान है
- प्यार प्रकृति का अलभ्य उपादान है
  प्यार अपनी सीमाओं को पहचानता है
- प्यार जिंदगी की धड़कन है
- प्यार प्रतिरोही नहीं है
- प्यार प्रतिगामी नहीं है
- प्यार घृणा की पहचान से अपरिचित है
- प्यार करोगे तो कभी अकेले नहीं रहोगे : पर्वतों में रहो, मैदानों में या रेगिस्तान में
- प्यार एक बस्ती है जिसे न्याय-अन्याय, नियम-कानून कुछ भी कभी कोई तोड़ नहीं सकता ।

□

— जीवन सीमाबद्ध है । सीमाबद्ध जीवन को प्यार के पहलुओं में उसी तरह बांध दो जैसे मकड़ी अपने जाले में सभी कुछ बांध देती है ।

— जीवन के पार मृत्यु है । मृत्यु अपने आप में प्यार का श्रेष्ठतम आलिंगन है । प्यार के इस आलिंगन से फिर घबराहट क्यों ?

— मृत्यु अपने आप में जिंदगी का महाराग है, महाबोध है और नये पथ का संकेतात्मक प्रतीक है तो सहज हुआ न, रास्ता खोजना नहीं पड़ेगा । भटकते हैं हम वहीं जहां मार्गदर्शक प्रतीक चिह्न नहीं मिलते । मिलते रहें तो पथ सहज हो जाता है, भटकन से बच जाते हैं ।

— मित्र, भय किससे : ढोंगी सामाजिक व्यवस्थाओं से, अपने आप से या अपरिचय के विंध्याचलों से ?

— प्रेम कीजिए, भरपूर प्रेम कीजिए, हमारी श्वासें हमारे हाथ में नहीं हैं, हम श्वासों के बिके हुए दास हैं । दास बनकर मैं आपको जाने नहीं दूंगा —आइए, इस प्रेम-मंदिर में आरती उतारिए और चुनौती दीजिए उन सबको जिनकी फूटी आंखें रोशनी से भरे द्वार का झूठा नाटक खेलती हैं । नाटक खेलनेवाले खेलते रहे हैं, खेलेंगे, हमारा रास्ता उन संड़ास भरे बंद कमरों से नहीं जाता । रास्ता है मुक्त आकाश, मुक्त पवन और प्यार के उन्मुक्त गीत । गाइए तो, प्रेम गीतों के स्वरों में अमर चेतना होती है ।

राजेन्द्र अवस्थी



चारा चोर, खजाना चोर

बिहार मेरा अत्यंत प्रिय राज्य है । यहां [illegible] हिसाब जनता ने हमेशा ही मुझे प्यार और सम्मान दिया है । कई बार तो मैं अपने भाषणों में वहां कहता हूं कि शायद पिछली जिंदगी में मैं बिहार में ही पैदा हुआ हूं ।

बिहार सचमुच में एक अजीब राज्य है । वैसे कहा जाता है कि यह अशिक्षित और पिछड़े हुए राज्यों में आता है, लेकिन मजे की बात तो यह है कि सबसे ज्यादा पत्र-पत्रिकाएं बिहार में ही बिकती हैं । इसका अर्थ यह हुआ कि बिहार में जो भी थोड़ा-बहुत पढ़ा-लिखा है उसे पढ़ने का शौक है और लिखने का भी । हमारे पास बिहार से सबसे ज्यादा रचनाएं आती हैं ।

बिहार का राजनीतिक माहौल उतना ही उलटा है । एक बार मैंने लालू प्रसाद यादव को अनधिकृत इमारतें और झोपड़ियां आधी रात को अपने सामने खड़े होकर गिरवाते देखा है । यह काम उन्होंने लंदन से लौटने के बाद किया था । सौभाग्य से मैं भी उन दिनों लंदन गया था और लालू प्रसाद यादव और उनके सहयोगी डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (अब केंद्रीय मंत्री) के साथ लगातार डेढ़ दिन बिताये थे । लालू ने तभी कहा था कि मैं पटना को लंदन बना दूंगा । इस बार एक-दो दिन के लिए पटना जाने का मौका मिला । अजीब माहौल था । भीड़ चीख-चिल्ला रही थी—

"चारा चोर खजाना चोर । लालू यादव गद्दी छोड़ ।।"

लालू प्रसाद यादव (मुख्यमंत्री बिहार) के विरुद्ध जबसे चारा घोटाले में अभियोग पत्र दाखिल हुआ है तब से ही यह आंदोलन का केंद्रीय नारा बन गया है । इसके साथ और भी कई नारे जुड़े हुए हैं । इसके अनशन, धरना, प्रदर्शन, सभा, जुलूस और प्रेस कांफ्रेंस भी साथ-साथ चल रही है । हमारा देश नारा देने में बहुत विख्यात है । बिहार में [illegible] भी । मुझे याद है [illegible] अब्दुल गफ़ूर बिहार के मुख्यमंत्री थे तो उस समय यह नारा सुना था—

"अब्दुल गफ़ूर [illegible] । हाथ में [illegible] ।"

[illegible] —

"सिंहासन खाली करो कि, जनता आती है ।"

कुछ नारे और देखिए— ***"हिटलरशाही नहीं चली, इंदिराशाही नहीं चलेगी ।"***

लालू के पक्ष में एक नारा और— ***"गली-गली में शोर है, के. बी. सहाय चोर है ।"***

दूसरा नारा— ***"लालू को फंसाया गया तो, खून बहेगा सड़कों पर ।"***

तीसरा नारा— ***"मुरगी, बकरी, भैंस चिल्लाये, लालू यादव जेल में जाए"***

चौथा नारा— ***"लालू चारा खोर है, नेता नहीं वह चोर है ।"***

"अब तो स्पष्ट है, लालू यादव भ्रष्ट है ।"

—और स्वयं लालू का नारा— ***'हम लड़ेंगे, जो होगा सहेंगे ।'***

लालू भाई, मैंने कहा न मुझे बिहार से प्रेम है । चारा की चोरी कोई चोरी होती है । मेरी जरूरत पड़े तो बुला लीजिए । मेरा नारा होगा—***"चारा चुराइए, भैंस खिलाइए ।"***

कक्कड़ साहब सावधान : जनता पीटेगी दिल्ली पुलिस को

दिल्ली पुलिस का नारा है—आपके साथ... आपके लिए... हमेशा । यह नारा पढ़कर मुझे हंसी आती है कि विदेशों में मैंने पुलिस की भूमिका देखी है । आप किसी पुलिसवाले के पास चले जाइए वह आपका सच्चा दोस्त साबित होगा । दिल्ली-पुलिस से खुदा बचाए । पुलिसवाले गाड़ियों और मोटर साइकिलों पर जनता की सेवा के लिए नहीं घूमते, अपनी शान बघारने के लिए चौकसी करते हैं । सड़कों पर दुकानें लगानेवालों और खोमचेवालों से उनकी दिहाड़ी बंधी है । अपनी कार में आप बैठे हों तो पुलिसवाला ऐसे झांकता है... (मैं गाली नहीं देना चाहता) । एक दिन शाम को मैं त्रिवेणी कला संगम के पास कार में बैठा अपने मित्र के साथ बातें कर रहा था । असल में हम तीसरे मित्र की प्रतीक्षा कर रहे थे । न जाने कहां से एक मोटरसाइकिल पर सवार दो पुलिसवाले आ धमके और मेरे दरवाजे के पास खड़े हो गये । कुछ दिन पहले अखबारों में पढ़ा था कि एक भले आदमी की पुलिसवालों ने इतनी पिटाई की कि वह भगवान को प्यारा हो गया । खैरियत यह थी कि मेरी कार में कोई महिला मित्र नहीं थी । मुझे एकदम गुस्सा आ गया । मैंने कार का दरवाजा खोलते हुए कहा; "सिपाहीजी मार तो नहीं खानी है ।" दोनों आदमी भले थे । नहीं, नहीं साहब बैठिए । आप तो भद्र आदमी दिखते हैं । लेकिन हमें सिपाही नहीं, दारोगाजी कहिए । इतना कहकर वह चले गये । शायद कार पर प्रेस का लेबल देखा होगा या मेरी तेज-तर्रार आवाज काम कर गयी होगी । पुलिस का काम न्याय और व्यवस्था की देखभाल करना है । कोई गलती [illegible] उसे समझाना पुलिस का काम है [illegible] कोई सिपाही जाहिल ही है तो

वह चालान काट सकता है—बस । आगे का काम कानून करेगा । दिल्ली-पुलिस सारे कानूनों को ताक पर रखकर और स्वयं को मजिस्ट्रेट मानकर काम करती है ।

दिल्ली-पुलिस कमिश्नर कक्कड़ साहब बहुत भले आदमी हैं । जितने दिन आप दिल्ली में हैं; एक काम कीजिए, पुलिसवालों को 'रिफ्रेशर कोर्स' कारवाइए और सभ्यता के साथ कानून पर भी चलना सिखाइए ।

संसद टूटा हुआ आईना

इस शताब्दी के जाते-जाते हमारे देश का जो राजनीतिक माहौल है, उस पर कोई भला आदमी केवल तरस खा सकता है । खिचड़ी सरकार से बासमती चावल की सुगंध नहीं आ सकती । हमारे कर्णधार ऐसे लोग हैं कि लड़ते-झगड़ते भी हैं और प्रेम भी करते हैं । समझ में नहीं आता प्रेम सत्य है या लड़ना-झगड़ना । वैसे कोई भी कह सकता है कि यदि जिंदगी के पहलू होते तो कम-से-कम दूसरे की कुरसी नहीं तोड़ते । जो कुरसी तोड़ दे वह तो पाप का भागीदार है । फिलहाल अच्छी बात यह है कि श्री इंद्र कुमार गुजराल खिचड़ी सरकार का नेतृत्व संभाले हैं । गुजराल साहब को मैं पच्चीस-तीस वर्षों से जानता हूं । वह नितांत शिष्ट, परिपक्व और बुद्धिमान व्यक्ति हैं । मैंने उनकी बौद्धिकता के प्रतिमान कई स्तरों पर देखे हैं । उनकी पत्नी शीला गुजराल स्वयं एक अच्छी कवयित्री हैं । मैं तारीफ के लंबे पुल बांधकर यह दंभ नहीं भरना चाहता कि इन दोनों के लिए मैं क्या हूं ? यही कहूंगा कि गुजराल साहब को काम करने का मौका दिया जाए तो शायद बहुत कुछ बदल सकता है ।

मैं अक्सर कहता था कि संसद इस देश का आईना है । इसलिए किसी को भी शिकायत करने का अधिकार नहीं है । अब मैं कहता हूं कि संसद का आईना टूटा हुआ कांच है । टूटे हुए कांच में मुंह देखना अशुभ होता है । इस देश के सभी बुद्धिजीवियों, चिंतनशील व्यक्तियों को अब चुप नहीं बैठना चाहिए और जाति, संप्रदाय, अपराध और निरक्षरता के बीच से आगे आकर अपने मान्य सांसद बंधुओं को समझाना चाहिए, "भाई, दुनिया बहुत छोटी हो गयी है । जो हो रहा है, सब देख रहे हैं । इस देश की संस्कृति और धर्म (धर्म वह नहीं जिसकी परिभाषा आप करते हैं) के आप सही मायने में इज्जतदार भागीदार बनिए ।"

परेशान है कि फांसी चढ़ाने नहीं मिली

पश्चिम बंगाल के [illegible]हत्तर वर्षीय नाटा मलि[illegible] पेशे से जल्लाद है । जेल में सजायाफ्ता को फांसी के तख्ते पर चढ़ाते हैं । यह [illegible]श परंपरा से चला आ रहा है । यह बात अलग है कि मलिक के दादा ने खुदीरा[illegible] को फां[illegible] के फंदे पर लटकाने से

इनकार कर दिया था, लेकिन उनके पिता को मासतरदा और सूरीसेन को अंगरेजी राज में फांसी पर लटकाना पड़ा था ।

नाटा मलिक ने बताया कि वह चौबीस आदमियों को फांसी पर लटका चुका है और पच्चीसवें की प्रतीक्षा में है । दक्षिण कलकत्ता के के. पी. रे लेन में टॉली क्लब के पास मलिक महोदय रहते हैं, उन्होंने बताया कि वह पहले अपराधी के चेहरे पर काला कपड़ा बांधते हैं, फिर दोनों हाथ और दोनों पैर बांधे जाते हैं । जेलर-जैसे ही रूमाल छोड़ते हैं, मलिक तख्ता खींच देते हैं । मलिक बहुत शान से कहते हैं कि मैं सबसे अच्छा जल्लाद हूं । जब कोई आदमी फांसी के तख्ते से लटकता है तो उसके नाक, कान और मुंह से थोड़ा भी खून नहीं आता । फांसी देने के एक दिन पहले मलिक रस्सी के फंदे में ढेर-सा साबुन लगाते हैं । फिर उसे घी पिलाते हैं । उसके बाद ढेर-सा केले को गूंदकर रगड़ा जाता है । वह शान से कहते हैं कि कम-से-कम दर्द और कोई बचा नहीं । उसे गर्व है कि मृणाल सेन की प्रसिद्ध फिल्म मृगया में जल्लाद का काम करने की भूमिका भी मिली थी । बी. बी. सी. ने मलिक पर दो लघु चित्र बनाये हैं । इन दिनों मलिक परेशान हैं, क्योंकि अगस्त १९९१ के बाद किसी को भी फांसी पर चढ़ाने का मौका उसे नहीं मिला । उनका कहना है कि एक आदमी को फांसी देने पर सरकार पांच हजार रुपये और ब्रांडी की एक बोतल देती है । अगस्त १९९१ में उसने अंतिम बार दो आदमियों को फांसी दी थी । तब दस हजार रुपये मिले थे । छह साल हो गये, दस हजार रुपये कब तक चलेंगे । पेशा कोई भी हो, धीरे-धीरे आदमी उसी में रच-बस जाता है ।

वी. आई. पी. !

वी. आई. पी. क्या बला है ? राजधानी की सड़कें वी. आई. पी. की चहल-पहल से परेशान हैं । यहां हर चाहा-अनचाहा आदमी वी. आई. पी. बन जाता है । कल शाम एक मित्र से मैं बात कर रहा था । मेरी कार वी. आई. पी. के चक्कर में चौराहे पर रुकी थी । अचानक हमने परिभाषाएं कीं—वी. आई. पी. का अर्थ क्या होता है—

(अनर्थ की भाषा में) वेरी इंपोर्टेड परसन ।

(अर्थ की भाषा में) वेरी इडियट परसन ।—

वेरी इनोसेंट परसन

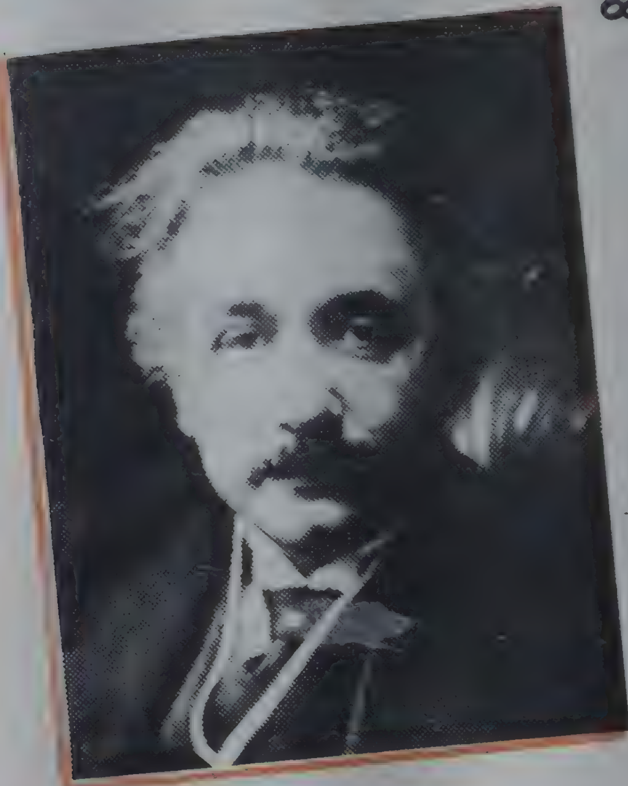
तीसरा—

वैरी इनकाम्पीटेंट परसन ।

पाठक इसमें जो अर्थ ढूंढ़ना चाहें, ढूंढ़ लें ।

—राजेन्द्र अवस्थी

व्यक्तिगत जीवन की अंतरंग झांकी : अलबर्ट आइन्सटाइन



प्रेम बहती हुई नदी है !

● शकुंतला बहादुर

न्यूयॉर्क में २५ नवम्बर, १९९६ को आइन्सटाइन के पत्रों की नीलामी हुई, जिससे २००,००० डॉलर्स की धनराशि प्राप्त हुई। पत्रों का यह संग्रह 'आइन्सटाइन करेस्पांडेंस ट्रस्ट' के अधिकार में था जो सन् १९८६ में बर्कले शहर के एक बैंक के सेफ से प्राप्त हुआ था। आइन्सटाइन के उत्तराधिकारियों के आपसी झगड़े के कारण महान वैज्ञानिक के पत्रों को नीलाम करने की स्थिति आयी। बर्कले (कैलिफोर्निया) से प्राप्त, ये चार सौ पत्र इस विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक के अंतरंग जीवन के रहस्यों का उद्घाटन भी करते हैं।

अल्बर्ट आइन्सटाइन का एक पत्र सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध है— जिसने आधुनिक युग को प्रभावित किया तथा विश्व के कई देशों का भाग्य निर्णायक भी प्रतीत हुआ। नोबेल पुरस्कार विजेता आइन्सटाइन ने ये पत्र सन् १९३९ में यानी द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारंभ में अमरीका के राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट को लिखा था। इस पत्र में उन्होंने नाजियों के 'न्यूक्लियर' सामर्थ्य की संभावना का बोध कराते हुए चेतावनी दी थी। उसी से 'मैनहट्टन की योजना' बनी और बाद में 'अणु बम' का विकास हुआ।

उनके अन्य पत्रों में इस महान वैज्ञानिक का सर्वथा भिन्न व्यक्तित्व भी उभरकर सामने आया है। अधिकांश पत्र जरमन भाषा में हैं। इन पत्रों में कुछ उसके पांडित्य का प्रमाण हैं, कुछ पत्र प्रेम की रसिकता से ओतप्रोत हैं, तो कुछ प्रथम विवाह के कटुतापूर्ण दुःखद निर्णय को उजागर करते हैं। इन पत्रों से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह केवल एक असाधारण प्रतिभा संपन्न मेधावी व्यक्ति ही नहीं था, अपितु उसका एक रूप सामान्य मानव-जैसा भी था, जिसने राग-द्वेष के कारण अपना पारिवारिक जीवन दुःखमय कर लिया था। उसकी पत्नी और बच्चों को उसका दुष्परिणाम भोगना पड़ा था। हिटलर के सत्ता में आने पर यहूदी होने के कारण आइन्सटाइन को जरमनी छोड़कर अमरीका भागना पड़ा था, जहां उसका शेष जीवन बीता।

अध्ययन करते हुए प्रेम

आइन्सटाइन का जन्म जरमनी में हुआ। स्विट्जरलैंड के 'ज्यूरिच पॉलीटेकनिक इंस्टीट्यूट' में अध्ययन करते हुए उसका परिचय मिलेवा से हुआ। मिलेवा मैरिक सर्ब यानी बोसनिया में जन्मी थी। वह भौतिक विज्ञान की अकेली छात्रा थी और अत्यंत कुशाग्र बुद्धि की थी। आइन्सटाइन और मिलेवा का परस्पर परिचय शीघ्र घनिष्ठता में परिणित होकर प्रणय के रूप में विकसित हुआ। यह घटना आज से सौ वर्ष पूर्व सन् १८९६ की है। छुट्टियों में आइन्सटाइन अपने माता-पिता के पास जब घर गया तो वहां से उसने मिलेवा को भेजे अपने पत्रों में लिखा : "मैं तुम्हारे बारे में सोचे बिना रह नहीं सकता। तुम्हारे पास न रहने पर मन दुःखी हो जाता है। तुम्हारे पास रहकर मैं गर्व अनुभव करता हूं। तुम्हारा प्यार मुझे आह्लादित करता है। तुम्हारी निकटता से खुशी दोगुनी हो जाती है। तुम्हारी आंखों की चमक मुझे उत्साहित करती है।" —— (अगस्त १९००)

मिलेवा का पत्र भी प्रेम की विह्वलता और उत्कंठता से परिपूर्ण है। एक अन्य पत्र में जो सितम्बर, १९०० का है, आइन्सटाइन ने अपने पैर की नाप का चित्र बनाकर उसे भेजा, ताकि वह उसके पैरों का मोजा बना सके। एक अन्य पत्र में आइन्सटाइन ने लिखा है— 'मेरी नन्हीं डॉली जो मधुर गीत गाती है, मैं आत्मविभोर होकर उसी में अपना गाना मिला देता हूं।'



जॉनी और डॉली— प्रेम संबोधन

पत्रों में मिलेवा उसे 'प्रिय जॉनी' और आइन्सटाइन 'प्रिय डॉली' नाम से मिलेवा को संबोधित करते थे। पत्रों से यह भी ज्ञात होता है कि आइन्सटाइन मिलेवा के छात्रावास में इतना अधिक समय उसके साथ व्यतीत करते थे कि उसके कमरे में रहनेवाली अन्य छात्राओं को आपत्ति होती थी। यह जानकारी भी मिलती है कि मिलेवा स्वयं आइन्सटाइन की गणित की कॉपी चेक किया करती थी। गणितीय सिद्धांतों के लिए मिलेवा उसे ठोस आधार प्रस्तुत करती थी। उसने केवल बीस वर्ष की आयु में ही फिजिक्स (भौतिक विज्ञान) के मान्य नियमों पर

प्रश्नचिह्न लगा दिया और उन्हें अमान्य करने का साहस दिखाया था।

मिलेवा ने 'विद्युत सिद्धांत' का गहराई से अध्ययन किया था। वह हेल्महोल्ज का ग्रंथ पढ़ चुकी थी और हेर्ज द्वारा प्रतिपादित 'विद्युत शक्ति की उत्पादकता' को भी पूरे ध्यान से पढ़ा था। इस प्रकार वह इस निर्णय पर पहुंची थी कि विद्युत शक्ति के सिद्धांत की व्याख्या अधिक सरल रीति से की जा सकती है। यह उसके पत्रों से ज्ञात होता है।

मिलेवा आयु में आइन्सटाइन से बड़ी थी

मिलेवा आयु में आइन्सटाइन से बड़ी थी। जन्मजात दोष के कारण चलने में वह कुछ लंगड़ाती भी थी। आइन्सटाइन के माता-पिता ने उससे अपने बेटे की शादी करना स्वीकार नहीं किया था। आइन्सटाइन ने लिखा था— 'मां कहती है कि वह (मिलेवा) भी तुम्हारी तरह किताब है, लेकिन तुम्हें पत्नी चाहिए। जब तक तुम ३० वर्ष के होगे, वह वृद्धा हो जाएगी।'

उसने अपनी मां से यह बात छिपायी थी कि वे दोनों साथ-साथ भी रहने लगे हैं। इतना ही नहीं, जनवरी, १९०२ में मिलेवा ने अपने माता-पिता के यहां एक बेटी को जन्म दिया, जिसका नाम 'लीजर्ल' रखा गया। फरवरी, १९०२ के एक पत्र में आइन्सटाइन ने अपनी बेटी के प्रति ममता तो प्रगट की थी, उसके विषय में जानना भी चाहा था, किंतु उसके पत्रों से ज्ञात होता है कि वह अपनी बेटी को देखने कभी नहीं गये। बताया जाता है कि किसी ने उसे गोद लेकर मिलेवा की कठिनाई दूर की थी।

विवाह और दो बेटे हुए

जनवरी, १९०३ में दोनों ने शादी की और उसके बाद उनके दो बेटे भी हुए। आइन्सटाइन उस समय अपने शोध-कार्य में संलग्न थे। मिलेवा से उसे अपने शोध कार्यों में पूरा सहयोग मिलता रहा और पति की व्यस्तता के बावजूद उसने कभी कोई असंतोष प्रगट नहीं किया। मिलेवा दोनों बेटों को पाकर प्रसन्न थीं और उनके पालन-पोषण में ही जुटी रही। इधर आइन्सटाइन ने १९०५ में अपना शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया। बर्न विश्वविद्यालय (स्विट्जरलैंड) ने उसके शोध प्रबंध को अनावश्यक विस्तारवाला और मनगढ़ंत कहकर लौटा दिया था। निराश होकर भी उसने पराजय स्वीकार नहीं की और परिश्रम से अपना लक्ष्य प्राप्त करने में जुटा रहा। इससे उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रमाण भी मिलता है जिसके फलस्वरूप सफलता ने उसके कदम चूमे।

आइन्सटाइन की दूसरी प्रेमिका

कालांतर में आइन्सटाइन की मित्रता 'एल्जालॉएवेंथाल' नाम की लड़की से हो गयी थी, जो बरलिन में रहती थी। वह आइन्सटाइन की दूर रिश्ते की बहन लगती थी। प्रगाढ़ता बढ़ती गयी और वह मिलेवा से दूर होता गया। यही 'एल्जालॉएवेंथाल' बाद में उसकी दूसरी पत्नी बनी थी।

अब आइन्सटाइन की प्रसिद्धि बढ़ने लगी थी। बरलिन की 'प्रशियन एकेडेमी ऑव साइंस' में उसकी नियुक्ति हो गयी थी। उस समय तक उसके और मिलेवा के बीच की दूरियां अप्रत्याशित रूप से काफी बढ़ गयी थीं। सन् १९१३ में 'एल्जालॉएवेंथाल' को लिखे एक पत्र के अंश से यह स्पष्ट होता है कि आइन्सटाइन और मिलेवा का साथ रहना

असंभव हो गया था । मिलेवा और उसके बच्चे उसके साथ बर्लिन में रहने के लिए तैयार थे । आइन्स्टाइन ने अपनी शर्तों की एक लंबी सूची मिलेवा को दी कि पूरी तरह शर्तों को स्वीकार करने के बाद ही मिलेवा और उसके बच्चे आइन्सटाइन के साथ रह सकते थे, अन्यथा नहीं । यह सूची-पत्र सन् १९१४ का था, क्योंकि उसी वर्ष उसने बर्लिन एकेडेमी में पद स्वीकार किया था । उसकी शर्तें इस प्रकार थीं—

अ- तुम ध्यान रखोगी १. मेरे कपड़े तथा बिस्तर आदि, २. मुझे नियम से प्रतिदिन तीन बार मेरे कमरे में ही भोजन पहुंचाया जा रहा है, ३. मेरा शयन कक्ष और अध्ययन कक्ष सदा अच्छी तरह व्यवस्थित है और मेरी डेस्क मेरे अतिरिक्त कोई नहीं छूता है ।

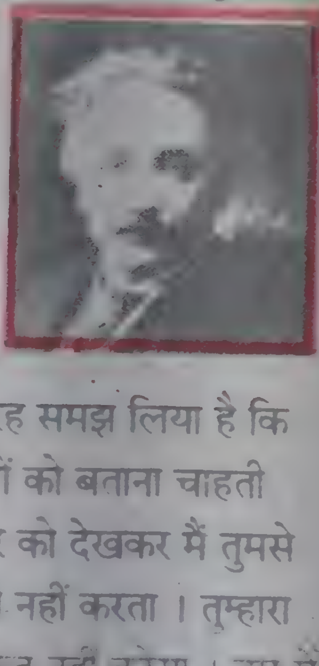
ब- तुम मेरे साथ सारे व्यक्तिगत संबंधों को त्याग दोगी । केवल कुछेक सामाजिक अवसरों पर ही तुम मेरे साथ जा सकोगी— जब आवश्यकता (विवशता) होगी । तुम इसके लिए आग्रह नहीं करोगी कि १. मैं घर पर तुम्हारे साथ बैठूं, २. तुम्हारे साथ बाहर कहीं जाऊं या यात्रा करूं ।

स- मुझसे किसी प्रकार से भी संपर्क करते समय तुम निम्न बातों का विशेष रूप से ध्यान रखोगी — १. तुम मुझसे किसी प्रकार की [illegible] या स्नेह की आशा नहीं करोगी तथा [illegible] के लिए मेरी आलोचना या निंदा भी नहीं करोगी । २. जब भी मैं तुमसे कुछ कहूंगा, तुम [illegible] उत्तर दोगी । ३. जब भी मैं तुमसे जाने को कहूंगा, तुम तुरंत मेरा सोने या पढ़ने का कमरा छोड़कर चली जाओगी ।

द- तुम मुझे वचन दोगी कि तुम अपने शब्दों अथवा कार्यों से मुझे मेरे अपने बच्चों की दृष्टि में नीचे नहीं गिराओगी ।

मिलेवा अलग हो गयी

मिलेवा इन शर्तों को कैसे स्वीकार करती ? अतः दोनों अलग हो गये । दोनों बेटों को लेकर मिलेवा ज्यूरिच चली गयी जहां वह बच्चों को पालने में संघर्ष करती रही । उसने बच्चों के लिए अधिक धन की मांग की तो आइन्सटाइन ने उसका विरोध किया । उसने लिखा कि उसके पास और पैसा नहीं है, नहीं तो भेज देता । एक अन्य पत्र में उसने लिखा था— 'मैंने तुम्हारी



धमकियों को अच्छी तरह समझ लिया है कि तुम इस स्थिति को लोगों को बताना चाहती हो । तुम्हारे पूर्व व्यवहार को देखकर मैं तुमसे इससे अधिक आशा भी नहीं करता । तुम्हारा कोई भी कदम मुझे चकित नहीं करेगा । तुम मेरे बच्चे मुझसे दूर ले गयी हो और उनके मन में उनके पिता के विरुद्ध जहर घोलने की कोशिश कर रही हो ।' (१५ सितम्बर १९१४)

नोबेल पुरस्कार की राशि देने की पेशकश

सन् १९१६ में आइन्सटाइन ने संबंध विच्छेद करने का प्रस्ताव रखा । मिलेवा उस समय मानसिक रूप से अस्वस्थ थी । कुछ ठीक होने पर उसने समझौते के लिए पुनः प्रस्ताव रखा जिसमें उसे सफलता नहीं मिली ।

आइन्सटाइन ने लिखा था— 'व्यक्तिगत संबंधों को व्यवस्थित करने के प्रयत्न मुझे दुबारा संबंध-विच्छेद (डाइवोर्स) का प्रस्ताव रखने को विवश कर रहे हैं। संबंध-विच्छेद के लिए जो कुछ भी आवश्यक होगा— मैंने उसे करने का दृढ़ निश्चय किया है। तुम्हारे सहयोग के एवज में मैं तुम्हें काफी आर्थिक सहायता दे सकता हूं। यदि मुझे 'नोबेल पुरस्कार' मिल जाता है (१९२१ में फिजिक्स के लिए मिला था) तो मैं उसे पूरी तरह से तुम्हें दे दूंगा। इतना बड़ा त्याग मैं तभी करूंगा जब तुम निर्विरोध संबंध-विच्छेद की स्वीकृति दोगी। यदि तुमने संबंध-विच्छेद को स्वीकार नहीं किया तो मैं तुम्हें ६००० मार्क्स वार्षिक से अधिक एक पेनी भी नहीं दूंगा।' (३१ जनवरी १९१८)

प्रथम विश्व युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ था। उसने पुनः लिखा— 'मैं यह देखने के लिए व्यग्र हूं कि हमारा 'डाइवोर्स केस' अधिक दिनों तक चलता है या विश्व युद्ध ?' अंततः दोनों के बीच १४ फरवरी १९१९ को संबंध-विच्छेद का निर्णय ले लिया गया। इसके बाद एल्जा लॉएवेंथाल आइन्सटाइन की दूसरी पत्नी बनी।

भावुक प्रेमी— कठोर पति

इन पत्रों के आधार पर जहां एक ओर आइन्सटाइन का व्यक्तित्त्व अत्यंत भावुक प्रेमी तथा कोमल स्वभाव का प्रतीत होता है, वहीं दूसरी ओर अत्यंत कठोर पति और स्वार्थी स्वभाव का भी लगता है।

उन्नीसवीं सदी की समाप्ति पर मिलेवा को लिखे उसके ५३ प्रेम-पत्रों को किसी अज्ञात व्यक्ति ने सबसे अधिक मूल्य ४४२,५०० डॉलर्स में खरीदा। इसमें नोबेल पुरस्कार विजेता ने 'ऑरबिट ऑव मरकरी एराउंड द सन' का गणना कार्य व अन्य शोध टिप्पणियां दी थीं। उसने 'जनरल थ्योरी ऑव रिलेटिविटी' का विकास किया था, जो सृष्टि का मूलभूत सिद्धांत था। यह सन् १९१५ में प्रकाशित हुआ था। इस सिद्धांत की पांडुलिपि के मूल्य से लगभग दोगुने मूल्य में बर्कले से प्राप्त उसके पत्रों का संग्रह बिका।

मिलेवा भी वैज्ञानिक थी

विद्वानों का विचार है कि मिलेवा मैरिक स्वयं वैज्ञानिक थी और आइन्सटाइन की असाधारण प्रतिभा को प्रतिष्ठित करनेवाले इस 'थ्योरी ऑव रिलेटिविटी' सिद्धांत की आधारशिला मिलेवा ही की थी। शूलमन ने कहा है कि वह आइन्सटाइन को एक पवित्र आत्मा-जैसा मानता था, किंतु इन पत्रों ने उनका रूप बदल दिया है। आइन्सटाइन ने कहा था, 'सौ वर्षों बाद लोगों के लिए यह विश्वास करना कठिन होगा कि महात्मा गांधी-जैसा कोई व्यक्ति इस पृथ्वी पर जन्मा था। उसकी यह उक्ति सत्य प्रतीत होती है कि युद्ध की तैयारी और साथ ही उसे रोकने के उपाय एक ही समय में करना संभव नहीं है। एक मार्ग पर ही चलना संभव है— वह चाहे युद्ध के पक्ष में हो अथवा विरोध में हो। यदि मैं जानता कि मेरे परिश्रम का परिणाम इतना विध्वंसकारी होगा तो मैं कभी भी आणविक शक्ति का आविष्कार नहीं करता।

१४ मार्च १८७९ में जन्मे इस महान वैज्ञानिक के इस कथन से उसके मनोभावों का आभास भी मिलता है। १७ अप्रैल, १९५५ में उसका स्वर्गवास हो गया।

रवींद्रनाथ टैगोर और नलिनी

चौबीस वर्ष की आयु में रवींद्रनाथ ठाकुर ने जो कविताएं लिखीं, वे प्रथम यौवन के प्रेम-राग से पूरी तरह रंगी हुई हैं । कविताओं में सिर्फ प्लेटॉनिक प्रेम की रोमांचक अनुभूति नहीं, विशुद्ध दैहिक प्रेम की आकुलता भी स्पष्ट व्यक्त होती है—'मेरा प्रत्येक अंग तुम्हारे प्रति अंग के लिए व्याकुल हो उठा है । वह तुम्हारे आकुल

रवींद्रनाथ से वह एक वर्ष बड़ी थी । वह जैसी प्रगतिशील थी, वैसी खूबसूरत भी । कवि रवींद्रनाथ से उसकी घनिष्ठता हो गयी । अनुभूतिशील अन्ना कवि की कविताओं से मुग्ध होकर उनका अंगरेजी रूपांतर करने लगीं ।

अन्ना को अंगरेजी ढंग का अपना नाम पसंद नहीं था, इसलिए कवि ने स्वयं उसका नामकरण किया था—'नलिनी' । उसके बाद रवींद्रनाथ ने नलिनी के लिए अनेक गीतों की रचना की ।

लेखकों के प्रेम-प्रसंग

काहे री नलिनी तू कुम्हलानी?

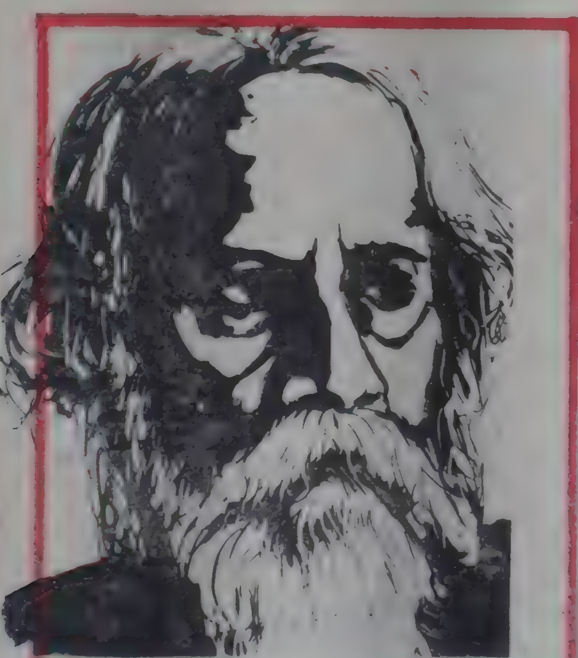
● मजीद अहमद

अंतर में अपना सर्वांग विलीन कर देना चाहता है । प्राणों का मिलन ही शरीर का मिलन मांगता है । तभी प्राण देह के रहस्य में डूब सकेगा ।'

रवींद्रनाथ ठाकुर ने सत्रह वर्ष की आयु में प्रथम प्रेम का अनुभव किया था । तब उनके अग्रज सत्येंद्रनाथ ने कवि की यूरोप-यात्रा के पूर्व उन्हें शिष्टाचार और बोलचाल की शिक्षा देने के लिए मुम्बई में अपने एक मित्र के यहां भेज दिया था । सत्येंद्रनाथ तब अहमदाबाद में उच्च न्यायाधीश थे । मुम्बई में उनके मित्र दादोबा पांडुरंग थे । उनकी पुत्री अन्ना तरखड़ इंगलैंड-प्रवास से प्रत्यावर्तित हुई थीं ।

जैसे—'शुनो नलिनी, खोलो गो आंखि' । एक बार रवींद्रनाथ 'चौर-कृत्य' में सफल हो गये । जाड़े के दिन थे । अन्ना रात में दस्ताने पहनकर सोया करती थी । एक दिन वे बड़े भोर ही उसके कमरे में चुपचाप जा पहुंचे । वह प्रगाढ़ निद्रा में सोयी थी । कवि ने अत्यंत सावधानी से उसका दस्ताना खोलकर कहीं छिपा दिया । फिर गीत गुनगुनाते हुए उसे लगाने लगे । आंखें खोलते हुए नलिनी (अर्थात अन्ना) ने कवि को खड़ा पाया । वह मुसकरायी और सधे अंदाज से अंगड़ाई लेने लगी । आंखों में प्रेम की स्वीकृति और निमंत्रण पाकर रवींद्रनाथ ने

धड़कते हृदय से उसका चुंबन ले लिया । अन्ना ने कहा, 'आज से तुम्हें चुंबन लेने का अधिकार प्राप्त हो गया है ।' उसी दिन रवींद्रनाथ ने नलिनी को लक्ष्य करके जो बंगला कविता लिखी, उसका भावानुवाद है—'ओ मेरी नलिनी, लाज-भीनी नलिनी ! अनेक नवयुवतियों की आंखों में सौंदर्य विराजता है, पर तुम्हारी आंखें प्रेम के रंग में रंगी हैं । ओ सुकोमल नलिनी ! जहां कहीं भी रूप की माधुरी भासित होती है, वहीं प्रकृति का सुवास महकता रहता है । वही सुगंध तुम्हारी देह-यष्टि में भी संचरण कर रही है ।' फिर एक और 'विख्यात गीत उसी युग में कवि ने लिखा था, 'हे सखी, मैं इस समय सपनों में खोयी हुई हूं, मुझे मत जगाना !'



इस प्रेम की स्मृति को स्थायी रूप देने के उद्देश्य से कवि ने 'नलिनी' नाटक भी लिखा । वृद्धावस्था में रवींद्रनाथ ने दिलीपकुमार राय से नलिनी-प्रकरण की चर्चा करते हुए कहा था, 'अन्ना-जैसी लड़की को मैं जीवन में कभी न भूल पाया और न कभी उसके आकर्षण को उपेक्षा की दृष्टि से देख सका । उसके बाद मेरे जीवन में कई प्रकार की घटनाएं धूप-छांह का खेल खेल चुकी हैं और इस संबंध में विविध प्रकार के अनुभव मुझे हो चुके हैं, परंतु एक बात मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि किसी भी लड़की के प्रेम को मैंने कभी अवज्ञा की दृष्टि से नहीं देखा—फिर चाहे उस प्रेम का रूप कैसा ही क्यों न रहा हो ?'

रवींद्रनाथ ठाकुर का दूसरा प्रेम

अग्रज ज्योतिरिंद्रनाथ ठाकुर की पत्नी कादम्बरी देवी रवींद्रनाथ से दो वर्ष बड़ी थीं । कादम्बरी देवी के कोई संतान न थी । परिवार में रवींद्रनाथ के अतिरिक्त कोई दूसरा ऐसा न था, जिसके साथ वे सुख-दुःख की बातें कर पातीं ।

एक बार ज्योतिरिंद्रनाथ और कादम्बरी देवी जोड़ासांको का निवास त्यागकर कलकत्ता से कहीं बाहर भ्रमण के लिए चले गये । ठाकुरबाड़ी में रह गये अकेले रवींद्रनाथ ।संध्या समय पथराई छत पर अकेले घूमते हुए वे बेहद विचलित हुए, फिर लिखा—'चले गये ! सभी चले गये ! हृदय को मसलकर, कुचलकर चले गये । अब कहने और गाने के लिए कुछ भी शेष न रहा । मैं कातर नयनों से उनकी ओर देखता रहा, पर वे अपने साथ नहीं ले गये—नहीं ले गये । पुराने, फटे और मलिन वस्त्र की तरह मुझे फेंककर, वे चले गये !' यह वेदनापूरित उपालंभ कादम्बरी देवी के प्रति है, जो उन्हें अकेला छोड़ गयीं । कवि ने दुःख और निराशा की मनःस्थिति में 'असहनीय प्यार' कविता लिखी—'जब देह के द्वार पर मन तुम्हारे रूप के साथ जूझने लगता है. तब तुम मुंह फेर लेती हो । इतनी ज्यादती शायद तुम्हें अच्छी नहीं लगती । तुम्हें शायद मेरा वह प्रेम पसंद नहीं है, जो अपने को पूर्णतया खोकर तुममें विलीन होना चाहता है, जो अनन्त और अतृप्त प्यास के रेगिस्तान में भटक रहा

—जहां आंखों से केवल अनंत जलधारा रसती रहती है और दुःखभरी आह हाहाकार रती रहती है ।'

काफी समय बाद जब कादम्बरी देवी प्रवास से प्रत्यावर्तित हुई, तो उन्हें रवींद्रनाथ ने अपनी यी कविताएं पढ़ने को दीं । वे अपने कमरे में कविताएं पढ़ते-पढ़ते रोने लगीं ।

मृणालिनी के साथ विवाह

१८८४ में रवींद्रनाथ ठाकुर (तब वे बाइस र्ष के थे) का विवाह मृणालिनी के साथ हो या । विवाह के कुछ ही समय बाद कादम्बरी वी ने आत्महत्या कर ली । कारण कोई न जान सका ! अकेले रवींद्रनाथ ही इस दुर्घटना के ल कारण से परिचित थे । कादम्बरी देवी का मरण करते हुए 'पुष्पांजलि' में रवींद्रनाथ ठाकुर लिखा है, 'उसके साथ मेरे जीवन के कितने भात, कितनी दुपहरियां, कितनी संध्याएं कात्म भाव से बीती हैं । कितने वसंत, कितनी र्षाएं और कितने शरत् दोनों की आत्माओं के रम नैकट्य के साक्षी रहे हैं । कितना स्नेह मैंने ससे पाया है, कितने खेल हम दोनों ने ाथ-साथ खेले हैं, मेरे जीवन की सौ-सौ टनाओं की साझीदार बनकर वह प्रतिपल मेरे ाथ रही है । अब भी मेरे जीवन में कितने ही दिन, कितनी ही रातें अपने विचित्र रहस्यों को लेकर आएंगी, पर हाय, सब उसके साथ के बना आकर शून्य में आहें भरती रहेंगी । □

चंडीदास का प्रेम

बंगाल के अनेक वैष्णव कवियों ने धा-कृष्ण की प्रेमलीला ललित, कोमल ीत-पदावली में रची है, लेकिन चंडीदास की व-धारा अप्रतिम है । इस महाकवि ने प्रेम के अनंत रस में अपनी आत्मा को पूर्णतया निमज्जित कर दिया था । उन्होंने पदावली में मात्र 'पिरीति' की ही सर्वत्र रट लगायी—'प्रीति की मूर्ति न मालूम कैसे मेरे हृदय में आ लगी ? प्राण छूटने पर भी अब यह प्रीति मुझे छोड़ना नहीं चाहती । इस प्रीति की रचना किसने की ? न मालूम 'पिरीति' संज्ञक त्रयी (सृष्टि के आरंभ में) कहां छिपी थी !'

चंडीदास देखने में अत्यंत सुंदर लगते थे । वह मंदिर आने-जाने वाली कुलवती-रूपवती कन्याओं की बंकिम दृष्टि के प्रति अवज्ञा भाव दिखाते थे । फिर अचानक एक हरिजन रजक की पुत्री से प्रेम करने लगे । उस सुदर्शन कन्या का नाम था—रामी ।

लोगों ने चंडीदास को लांछित और तिरस्कृत करना शुरू कर दिया, पर मधुर प्रेम में विभोर उन्हें दीन-दुनिया से क्या काम था ? जातिच्युत होने पर भी वे लिखते रहे, 'हे रजकिनी, तुम मेरी प्रेमिका हो और मेरे माता-पिता भी तुम्हीं हो । त्रिकाल-संध्या करते हुए मैं केवल तुम्हारा ही संकीर्तन करता हूं, क्योंकि वेदमाता गायत्री तुम्हीं हो । वाग्वादिनी देवी भी तुम्हीं हो और तुम ही शिव-गृहिणी हो । तुम मेरे गले का हार हो, स्वर्ग-मर्त्य तुम ही हो, पाताल-पर्वत तुम ही हो और मेरी आंखों का तारा भी तुम ही हो ।'

उस कट्टरवादी युग में भी उस ब्राह्मण कवि ने एक अस्पृश्या से अपने प्रेम संबंध की स्पष्ट घोषणा करते हुए उस पर गर्व अनुभव किया था, क्योंकि प्रतिभा विद्रोहिणी होती है, वह देश, काल और समाज का कोई बंधन भी नहीं मान सकती ।

तुझे तो बस ख्वाब में देखा : गेटे

१७७२—वेत्सलर नगर में विधि-अध्ययन करते हुए जरमन कवि गेटे ने 'गेत्स' नाटक लिख लिया था, पर प्रकाशित न हो सका था। उसी समय एक मध्यवर्गीय परिवार की सुसंस्कृत लड़की चार्लोट से उसका परिचय हुआ—जो अत्यंत रूपवान थी। कुमारी चार्लोट की उम्र सोलह वर्ष थी। गेटे ने स्वयं अपनी आत्मकथा में इस तथ्य को स्वीकारा है कि एक अवस्था-प्राप्त नारी में मातृत्व की सहज अभिव्यक्ति उतनी आकर्षक नहीं होती, जितनी वह एक ऐसी किशोरी कुमारी में होती है, जिसे अभी तक वैवाहिक जीवन का तनिक भी अनुभव न हुआ हो।

इसे नियति ही कहा जाए कि गेटे के प्रेम का कोई गहरा प्रभाव चार्लोट पर नहीं पड़ा। चार्लोट गेटे की पीड़ा से अपरिचित हो, यह बात नहीं थी—वह चाहती थी—प्रेम की कभी न बुझनेवाली वृत्तिका स्थायी बने, पर भावुक कवि के लिए ऐसा कर सकना संभव नहीं हो रहा था। गेटे चार्लोट के लिए हर रोज मर रहा था। आखिर में उसने निर्णय लिया कि वह अपनी प्रेयसी को बिना बताये उससे दूर—बहुत दूर चला जाएगा और अपनी ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों के लिए व्यय करेगा। उसने उदास और भारी मन से वेत्सलर छोड़ने का निर्णय लिया। एक शाम वह चार्लोट के घर गया। केस्टनर के साथ भोजन किया। बातें हुईं—विषय अध्यात्म। चार्लोट आशंकित थी कि कहीं गेटे आत्महत्या न कर ले! इसके बाद वह भाग गया। गेटे के इस तरह चले जाने से चार्लोट कहीं अधिक दुःखी हुई। चार्लोट को गेटे ने लिखा था—'मुझे निश्चय ही आशा है कि मैं फिर कभी तुमसे आकर मिलूंगा, परंतु ईश्वर ही बता सकता है कि कब। लोट, क्या तुम कल्पना कर सकती हो कि जब तुम बोल रही थीं और मैं जानता था कि मैं तुमसे अंतिम बार मिल रहा हूं, तब मेरे भीतर क्या बीत रही थी? वह कौन-सी प्रेरणा थी जिससे अनजाने प्रेरित होकर तुमने मृत्यु के पार के जीवन की चर्चा चलायी? जो भी हो, अब मैं अकेला हूं और एकांत में रो भी सकता हूं। तुम खुश रहो, मैं आशा करता हूं कि तुम्हारे हृदय में मेरे लिए कहीं-न-कहीं स्थान रहेगा ही। बच्चों को मेरी तरफ से प्यार करना और बता देना कि 'वह' अब चला गया, इससे अधिक इस समय मैं कुछ नहीं कह सकता।'

अपने दीर्घ जीवन-काल में गेटे चार्लोट से सिर्फ एक बार मिला। गेटे को देखते ही चार्लोट की आंखों से आंसू बहने लगे। उस समय चार्लोट साठ वर्षीया वृद्धा थी। □

बायरन और उसकी खूबसूरत प्रेमिकाएं

बायरन की प्रेम-कथाओं का आरंभ उसके बचपन से ही हो गया था। नौ वर्ष की उम्र में ही वह मेरी डफ नामक लड़की के प्रति आकर्षित हो गया, उसने उसके लिए कई कविताएं लिखीं। अपने छात्र-जीवन में बायरन मेरी चावर्थ के मोहक रूप पर मरने लगा। मेरी चावर्थ बहुत समझदार थी। वह समझ गयी कि बायरन—जैसे उत्तरदायित्वहीन लड़के के प्रेम का कोई मूल्य उसके लिए नहीं हो सकता। वह

तो सिर्फ बायरन की सुंदरता और प्रतिभा पर मुग्ध थी । बायरन दिन-रात चंद्रमुखी चावर्थ के चारों ओर मंडराता रहता । उसने अपने प्रेम-अनुभव को लेकर जो कविताएं लिखीं, उनमें 'ड्रीम' कविता विख्यात है ।

लेडी केटोलोन से प्रेम

बायरन की प्रेमिकाओं में लेडी केरोलीन का नाम विशेष उल्लेखनीय है । वह उसके प्रेम में पागल तक हो गयी थी और उसका जीवन घोर यातनाओं में बीता । लेडी केरोलीन अपनी सांस्कृतिक रुचि और कलात्मक व्यक्तित्व के लिए प्रसिद्ध थी । उसने बायरन को अपनी प्रतिष्ठा, रूप-यौवन, सामाजिक स्थिति और विशाल धन अर्पित कर दिया ।



मनोवैज्ञाकि कहते हैं कि जिस समय बायरन लेडी केरोलीन के प्रेम में डूबा हुआ था, उस समय भी वह अपने अज्ञात में उसके प्रति घोर घृणा का भाव ाषित किए हुए था और एक दिन उसने अपनी स समर्पित प्रेमिका का परित्याग कर दिया । र भी केरोलीन ने बायरन को सविनय लिखा, ं कुछ नहीं चाहती, केवल इतना ही चाहती हूं मुझे समय-समय पर याद करते रहना ।'

अन्नाबेला से विवाह

बायरन ने अन्नाबेला मिलबैंक लड़की से विवाह कर लिया । अन्ना सुंदर होने के साथ ही सरल हृदय की थी । स्वयं अन्ना के बारे में बायरन ने लिखा है, 'वह लड़की इस कदर निष्पाप है कि मेरे-जैसे पापी के उपयुक्त नहीं ।' इस बीच बायरन ने अपनी सौतेली बहन आगस्टा से देह-संबंध बना लिया, जिससे अन्ना आतंकित हो गयी । फलस्वरूप एक दिन दोनों के बीच स्थायी संबंध-विच्छेद हो गया ।

क्लेयर के संपर्क में

क्लेयर शिक्षिता अंगरेज लड़कियों की तरह अत्यंत भावुक थी और शेली के संपर्क में रहने के कारण स्वतंत्र-प्रकृति की हो उठी थी । शेली उसे अपनी बहन की तरह मानता था । कुछ समय बाद क्लेयर अपने परिवार के साथ जेनेवा चली गयी और वहीं बायरन से उसका परिचय हुआ । धीरे-धीरे वे लोग एक-दूसरे के बहुत निकट आ गये । परिणामतः अविवाहित अवस्था में ही क्लेयर ने एक लड़की को जन्म दिया, जिसका नाम एलेग्रा रखा गया ।

मर्गारिता हृदय से चाहती थी

इधर बायरन अपने स्वभाव के अनुरूप जेनेवा छोड़कर वेनिस चला गया । वहां उसने कई इटालियन लड़कियों से प्रेम-संबंध स्थापित किये । फिर भी वह अपनी दैहिक भूख शांत करने के लिए सड़कों पर घूमती आवारा लड़कियों के लिए परेशान रहता था । ऐसी लड़कियों में मार्गारिता कोन्यों लड़की, जो बायरन को हृदय से चाहती थी—एक दिन वह हाथ में खंजर लेकर मारने भी दौड़ पड़ी । बायरन की इस हृदयहीनता को क्लेयर

मृत्यु-पर्यंत न भूल सकी और उसने जीवन में कभी विवाह नहीं किया । □

खुले में खड़ी चांदनी : जार्ज ईलियट

उस लड़की का नाम था मेरी एनी ईवांस । मेरी एनी की स्मरण-शक्ति अद्‌भुत थी । मेरी एनी की सबसे अधिक मित्रता हर्बर्ट स्पेंसर से हुई, जो महान दार्शनिक, सांख्यिक और विचारक थे ।

वे दोनों ऐसे रेस्तरां में बैठते, जहां कोई लेखक नहीं जाता था । प्रेम की परिणति के संबंध में भी हर्बर्ट स्पेंसर इस निर्णय पर पहुंचा कि बार-बार हिसाब लगाने पर भी डेबिट-क्रेडिट ठीक नहीं मिलते ! इसलिए उसने जीवन भर विवाह न करने का निश्चय किया ।



अपने इस प्रथम प्रेम से निराश मेरी एनी ने लिखा, 'मुझे ऐसा लग रहा है-जैसे जीवन की एक बहुत बड़ी शोभा-यात्रा मेरे आगे से होकर निकल चुकी है—उस जुलूस के संगीत के क्रम से मुरझाते हुए स्वर अब एक-एक करके शून्य में विलीन हो चुके हैं और मैं अकेली एकांत सन्नाटे में खड़ी केवल खेतों और आकाश की ओर शून्य दृष्टि से देख रही हूं ।'

फिर वह जार्ज हेनरी के संपर्क में आयी और उसके प्यार में डूब गयी । १८५७ में मेरी एनी अड़तीस वर्ष की हो चुकी थी । उसने अपने उपन्यास में साधारण जनों के जीवन का चित्रण करने का निश्चय किया कि—'साहित्य में ऐसे लोगों का चित्रण आवश्यक है जो बिना किसी शिकायत के अपने जीवन का भार ढोते चले जाते हैं, जिनके अंतर में दुःख की गहराइयां और सुख की निश्छल आनंदानुभूतियां छिपी हैं, पर जिन्हें वाणी देनेवाला कोई नहीं है । क्या ये उपेक्षित व्यक्तियों के जीवन की सहज संवेदनाएं सदा उपेक्षित पड़ी रहेंगी ?' मेरी एनी ने 'ऐडम बीड' उपन्यास में ऐडम बीड नामक एक [illegible] और डीना मोरिस नामक एक मेथाडिस्ट महिला के प्रेम-जीवन के घात-प्रतिघात का सहज, [illegible] मार्मिक चित्रण देहाती परिवेश में किया । इस उपन्यास में ही मेरी एनी ने अपना प्रछन्न नाम 'जार्ज ईलियट' रखा । एक दिन अचानक रात में जार्ज हेनरी सोता हुआ मरा पड़ा पाया गया ।

जार्ज ईलियट महाशोक में डूब गयी । लेखिका जार्ज ईलियट की उम्र इकसठ वर्ष की हो चुकी थी, तभी एक खूबसूरत अंगरेज बैंकर, जिसका नाम जॉन क्रास (उम्र इकतालिस वर्ष) था, उसने डरते-डरते विवाह का प्रस्ताव किया । आश्चर्य ! इस वृद्धा-युवती ने स्वीकृति दे दी ।

जार्ज ईलियट को लगा कि जीवन और जवानी दोनों का अंत कभी नहीं होता । हनीमून मनाकर इंगलैंड लौटने पर नये विवाह के कुल सात महीने बाद जार्ज ईलियट चल बसी ।

—एफ-१०१, राजौरी गार्डन
नयी दिल्ली-२७

प्रेम कथा आइजन हॉवर की प्रेमिका की

● अनंतराम गौड़

वह एक फैशन मॉडल थी । जब द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ा और लंदन पर बमबारी होने लगी, तब वह घायलों को अस्पताल पहुंचाने के लिए ऐंबुलेंस गाड़ियां चलाने लगी । इसी दौरान लंदन में अमरीकी फौजी गतिविधियां भी बढ़ गयीं । इस कारण अमरीकी फौजी अफसरों के लिए ड्राइवरों की जरूरत पड़ी तो, उसे एक मेजर-जनरल की कार चलाने के लिए चुना गया । जबकि अपनी वरिष्ठता के कारण वह किसी जनरल की ड्राइवर होने की अपेक्षा करती थी । पर वह कर भी क्या सकती थी ? उसके भाग्य का निर्णय तो हो चुका था । अंततः उसने एक मेजर-जनरल की कार तीन [illegible] साल तक न केवल ब्रिटेन बल्कि, उत्तरी अफरीका और यूरोप के युद्ध क्षेत्रों में भी चलायी ।

दिल चुरा बैठा

इस दौरान वह मेजर-जनरल उसका दिल चुरा बैठा, फिर इसने भी हथियार डाल दिये । एक प्रगाढ़ आलिंगन में बांधे उस मेजर-जनरल ने उससे कहा था, ''मैं तुम्हें दिल से प्यार करता हूं, तुम्हारे बिना तो मैं पागल हो जाऊंगा ।''

उस युवती का नाम था के (के. ए. वाई.) समर्सबी, और वह था ड्वाट डी. आइजन हॉवर । उस समय एक अज्ञात मेजर-जनरल, जो आगे चलकर मित्रराष्ट्रों का सर्वोच्च कमांडर बना और जिसने यूरोप को फासिस्टों से आजाद कराया, त्रस्त मानवता को राहत दिलायी ।

के समर्सबी के प्रति आइजन हॉवर यानी आइक की मोहब्बत की खबर कुछ इने-गिने लोगों को छोड़कर किसी को नहीं थी, किंतु उन दोनों की मुहब्बत इतनी गहरी हो चुकी थी कि युद्ध समाप्त होने पर आइक ने अमरीका लौटकर अपनी पत्नी मैमी को तलाक देने का भी मन बना लिया था और इस आशय का एक पत्र भी उसने अमरीकी चीफ ऑव स्टाफ जनरल मार्शल को लिख दिया था ।

मार्शल ने उस पत्र के उत्तर में लिखा था, 'तुम मेरे उत्तराधिकारी बननेवाले हो । राष्ट्रपति हेरी ट्रूमन को तुम्हारे इरादों का पता चल चुका है, और उन्होंने कहा है कि यदि आइक ने ऐसा कुछ भी किया तो वह तुम्हें न केवल सेना से उखाड़ फेकेंगे बल्कि, तुम्हें जिंदगीभर चैन से नहीं बैठने देंगे...और यदि भविष्य में तुमने इस तरह की किसी बात का जिक्र भी किया, तो वह

तुम्हारे जीवन को नर्क से भी बदतर बना देंगे ।'

उन दोनों के बीच प्रेम का यह बीज टेलिग्रॉफ कॉटेज में पल्लवित हुआ था । लंदन में किंग्स्टन के निकट आइक ने यह ग्रामीण कॉटेज किराये पर ले रखा था । शहर से दूर था, भीड़-भाड़ से दूर प्रमोद वन-जैसा, जहां प्रेम की बेल अपने आप फल-फूलने लगी थी । पहले तो दोनों आंखें चुराते रहे, शर्म से दिल की बात करते हुए कतराते रहे । फिर एक दिन आइक ने ही कह दिया, ''देखती नहीं कि तुम मेरे दिल के अंदर तक कितनी गहरी पहुंच चुकी हो । मेरी आंखों में झांककर तो देखो कि कहां तक तुम्हारी पैठ हो चकी है ।''

अब इससे आगे की बातों को समर्सबी से ही पता करना उचित रहेगा, जो उसने 'पास्ट फोरगेटिंग' नामक पुस्तक में लिखी है । हां, उसने जब तक आइक जीवित रहा, अपने संबंधों के बारे में कभी एक शब्द भी नहीं कहा और अपनी प्रेम-कथा लिखी भी, तो मौत के दिन गिनते हुए अपने जीवन के अंतिम दिनों में । उसे फांसी की सजा हुई थी । डॉक्टरों ने उसे छह महीने दिये थे और अगले छह महीने उसने और अपनी चतुराई से निकाल लिये थे इस तरह फांसी पर चढ़ने से पूर्व एक साल में उसने इस प्रेम-कथा को लिखा । उसने इस प्रेम-कथा के अंत में लिखा था, 'जो कुछ हो चुका है, वह तो हो ही चुका है । इसलिए अब इसे लेकर और ज्यादा न कानाफूसी की जरूरत है और न ज्यादा तीर-तुक्का भिड़ाने की ।'

प्रस्तुत है उसकी कहानी उसकी ही लेखनी से—

'मुझे मेजर-जनरल आइजन हॉवर का ड्राइवर नियुक्त किया गया था । उसके साथ प्रायः जनरल वुचर भी रहते थे । आइक जहां प्रसन्नचित्त और रंगीन मिजाज थे, वुचर वहीं शांत और शुष्क । उनके दिमाग में तो सदा युद्ध छाया रहता था । कार के पीछे की सीट पर बैठे अधिकतर बातें आइक ही करते थे । वुचर हंसते भी कम ही थे । एक बार आइक ने चॉकलेट का एक डिब्बा उपहार में दिया और कहा, ''यह हम दोनों की ओर से है ।'' वुचर की भाव-भंगिमा से यह स्पष्ट था कि उसने यह पसंद नहीं किया । फिर वुचर की अलग व्यवस्था हो गयी थी ।'

'दरअसल, मेरा दिल तो एक अमरीकी अफसर डिक आर्नल्ड से लगा हुआ था । वह मेरा मंगेतर था, जिससे शादी होनी भी तय हो चुकी थी । टेलिग्राफ कॉटेज में आइक के साथ मेरा ब्रिज खेलना और चर्चिल का मुझे 'के' कहकर पुकारना डिक को मालूम हो चुका था

आइजन हॉवर



जिससे वह परेशान रहने लगा था । मैंने उसे आश्वस्त किया कि आइक एक अमरीकी है, जहां मालिक-नौकर में कोई दूरी नहीं होती, इसे अमरीकी होने के नाते तुम भी जानते हो ।'



समर्सबी

'आइक का रेस्ट्रां में लंच खिलाना मुझे भी अचंभित कर गया था, किंतु असलियत मुझे बाद में मालूम हुई । मैं डिक से ही प्यार करती थी । स्कॉच की चुस्कियां लेते हुए देर रात तक आइक के साथ मेरा ब्रिज खेलने का भी पता डिक को लग गया था किंतु, अब वह सशंकित नहीं था । इधर आइक और मेरी निकटता बढ़ने लगी थी । ब्रिज के खेल ने मुझे यह भुला दिया कि मैं अपने बॉस की शोफर हूं और जाने-अनजाने में ही इस ब्रिज को सेतु बनाकर आइक के नजदीक पहुंचती जा रही हूं ।'

'तभी उत्तरी अफरीका के मोरचे के खुलने से आइक को वहां भेजे जाने की बातें होने लगीं । इस खबर को सुनकर कि आइक चला जाएगा, मैं अपने दिल में कहीं बेचैनी-सी भी महसूस करने लगी थी । तभी एक दिन अपने दफ़्तर में आइक ने मुझे बुलाकर कहा, ''अफरीका में भी मेरी कार तुम्ही चलाओगी । सब प्रबंध हो गया है । मैं हवाई जहाज से जा रहा हूं और तुम समुद्री जहाज से आओगी । और हां, यह लो इसे हमेशा अपने पास रखना ।'' वह एक बेरेटा पिस्टल था । आइक ने कहा, ''इस पर अपना हाथ साफ कर लो । विदेश में खतरे बहुत हैं । कुछ भी हो सकता है । नाजियों का कैदी बनने के बजाए मैं तुम्हें मृत देखना अधिक पसंद करूंगा ।'' इस तरह से मुझ पर आइक के प्रेम का अहसास गहराने लगा था ।'

'आइक हवाई जहाज से और मैं एक युद्धपोत से गयी । भूमध्यसागर के हमारे जहाज पर शत्रु का हमला हुआ, जिससे वह पोत क्षतिग्रस्त हो गया, पर हमें बचा लिया गया । मैंने अल्जियर्स स्थित आइक के मुख्यालय को फोन किया और इस दुर्घटना की सूचना दी । आइक ने छूटते ही कहा, ''भगवान का शुक्र है कि तुम सही सलामत बच गयी हो ।'' आइक ने मुझे लाने के लिए अपना वायुयान भेजा और हवाई अड्डे पर मुझे लेने के लिए अपना एक सहायक भी ।'

मंगेतर डिक नहीं रहा

'टेलिग्रॉफ कॉटेज की तरह आइक ने अल्जियर्स में भी एक कॉटेज किराये पर ले लिया था । वहां भी हमारा जीवन इसी तरह व्यतीत होता था । मेरा मंगेतर डिक आर्नल्ड इस समय उत्तरी-अफरीका में था । उन्हीं दिनों एक

दिन मैं आइक के लिए चिंतित हो उठी । वह कहीं भी जाते हुए हमेशा थोड़ी-बहुत बातें करते रहना पसंद करते थे । लेकिन, उस दिन कार में बिलकुल चुप थे । पास गुजरते ट्रकों के ड्राइवर जब मुझे देखकर सीटियां बजाते और तरह-तरह की फब्तियां कसते हुए निकल गये, तब भी वह चुप रहे, अन्यथा ऐसे मौकों पर वह बहुत क्रुद्ध हो जाया करते थे । उनकी परेशानियां बराबर तनी रहीं ।'

'घर पहुंचकर हमेशा की तरह आइक ने मुझे बुलाया, "के अंदर आओ !" रात हो चुकी थी । मैंने पूछ लिया कि क्या एक ड्रिंक बना दूं । आइक ने कहा, "हां, एक अपने लिए भी बना लेना ।" फिर पीते हुए मेरे बहुत इशरार करने पर उन्होंने अपनी परेशानी बता दी । सीधे ही बिना भूमिका के, "मैं तुम्हें एक दुखद समाचार सुनाने जा रहा हूं । सुरंगों में फंसकर डिक अपनी जान से हाथ धो बैठा है ।"

'यह सुनकर मैं सन्न रह गयी । फिर मैं अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख पायी, रो पड़ी । आइक ने अपनी बांहों में लेकर मुझे सांत्वना दी । इस हादसे से उबरने में मुझे एक सप्ताह लगा ।'

'उन्हीं दिनों आइक ने मुझसे एक दिन कहा, "के तुम्हारी यह बरदी अब जवाब दे रही है । तुम्हें नयी की जरूरत है । कल दरजी आएगा । तुम अपनी नाप दे देना, दो जोड़ी बरदियों के लिए । मैंने अपनी भी सिलवानी हैं ।" यहां बात कुछ यों ही बढ़ गयी । मैं जिद कर बैठी कि मेरे पास जो कुछ है, वही बहुत है । आप मेरे लिए बहुत करते हैं ।'

शर्म से लाल हो गयी

"मैं और भी बहुत-कुछ करना चाहता हूं ।" आइक ने आंखों में चमक के साथ उत्तर दिया । मैं शर्म से लाल हो गयी । मुझे याद आया कि मैं भी आइक को कितना चाहती हूं । किसी न किसी बहाने से हम दोनों एक-दूसरे का स्पर्श सुख प्राप्त करने का सदा प्रयास करते रहते हैं । चाहें अंगुलियां ही छुआ लें । मेज के नीचे से पैरों का स्पर्श भी आइक करते रहते थे । उन्होंने अपने हाथों में मेरे हाथ ले लिये । सहलाने लगे । हम दोनों ही चुप थे । मैं शर्म से पानी-पानी हो रही थी । ऐसा लग रहा था कि मैं धीरे-धीरे निर्वस्त्र हो रही हूं । और वह मुझे देख रहे हैं ।'

'मेरी आंखों में आंसू आ गये । आइक घबरा गये । क्षमा मांगने लगे । मैं वहां से चली आयी । 'यही प्रेम है', मैं अपने मन में सोच रही थी । पहले भी प्रेम कर चुकी थी, लेकिन इस प्रेम की चुभनभरी मिठास ही कुछ और थी । प्रेम का उफान अपने स्वाभाविक सच में उदित हुआ था । मैंने महसूस किया कि सचमुच मैं इस अधेड़ व्यक्ति से प्यार करने लगी हूं और उसके आकर्षण में अनजाने ही डूबने-उतरने लगी हूं ।'

'आइक ने सबेरे मुझे फिर बुलाया । बरदी की नाप दरजी को देने की याद दिलायी । मैं जिद कर बैठी, "मेरे पास जो कुछ है, उसी से काम निकाल लूंगी । धन्यवाद ।" वह गुस्से से लाल हो गये । फिर खड़े हो गये, "कल तुम्हें दरजी को नाप देनी है । यह मेरा हुक्म है ।" मैं भी क्रुद्ध हो गयी । दो योद्धाओं की तरह हम दोनों तन गये । "क्या तुम यह नहीं समझ सकतीं कि मैं तुम्हारे लिए कितना पागल हो चुका हूं ।" फिर अचानक हम एक-दूसरे की

बांहों में थे। मेरा मन बाहुपाश को ढीला करने का हो नहीं रहा था। आइक ने मेरे चेहरे को अपनी दोनों हथेलियों के बीच भींचकर कहा, "तुमसे कितना प्रेम करता हूं यह तुम नहीं जानती ?"

वाशिंगटन से लौटे थे। उन्होंने एक लिफाफा मुझे दिया। "देखो, यह क्या है ?" राष्ट्रपति रूजबेल्ट ने हस्ताक्षर किया हुआ अपना एक चित्र मेरे लिए भेजा था। मगर मेरी खुशी की सीमा नहीं थी। इसी समय आइक ने एक और

फिर अचानक हम एक-दूसरे की बांहों में थे। हम निश्चिंत हो गये कि हमें अब कोई नहीं देख रहा है। सहसा हमारी जैकटें उतरीं। बटन खुल चुके थे। अचानक आइक ने मेरे कान में कहा, "याद है ? तुमने वायदा किया था कि तुम मेरे बच्चे की मां बनोगी।"

लिपस्टिक पौंछ दी

'अचानक मैं होश में आ गयी। डर गयी कि कहीं किसी ने देख न लिया हो। मैंने फौरन अपने रूमाल से आइक के चेहरे से लिपस्टिक के दाग पोंछ दिये। जब हम कमरे से बाहर निकले, तब मुझे लगा जैसे कि सब हमें ही देख रहे हैं। मेरा मन हुआ कि वहीं खड़े होकर घोषणा कर दूं, "सुनो, सब लोगों सुनो ! हम दोनों प्रेमी-युगल हैं। हमें किसी से छिपाने की जरूरत नहीं है।" किंतु, जैसा कि आइक ने भी कहा था, हमें सावधान रहना है। इसलिए मैं आज तक चुप रही। और इसी चुप्पी में हमारी शान थी।'

'शाम को हम देर से घर लौटे। स्टाफ के सभी लोग जा चुके थे। आइक अभी ड्रिंक अपने लिए बनाया, मेरा गिलास भी भर दिया। फिर अचानक हम एक-दूसरे की बांहों में थे। हम निश्चिंत हो गये कि हमें अब कोई नहीं देख रहा है। सहसा हमारी जैकटें उतरीं। बटन खुल चुके थे। अचानक आइक ने मेरे कान में कहा, "याद है ? तुमने वायदा किया था कि तुम मेरे बच्चे की मां बनोगी।"

'मैंने अब तक यह राज छिपाये रखा था। आज जब मैं जिंदगी के अंतिम समय में हूं, तब यह बता देने के लिए स्वतंत्र हूं कि आइक से मैं प्रेम करती थी। मैं अपना जीवन आइक को अर्पित कर चुकी थी। हम एक-दूसरे के नहीं बन सके, यही ईश्वर की इच्छा थी, इसमें मेरा कोई दोष नहीं है।'

—सी-२बी, ११२ सी, जनकपुरी, नयी दिल्ली

देशभक्ति द्वारा इतने धर्मों का संपादन देखकर भी यदि कोई धर्म के आगे देशभक्ति को कुछ नहीं समझता तो वह धर्म के मूल तत्त्व को ही नहीं पहचानता।

(मदन मोहन मालवीय)

प्रेरक प्रसंग

राष्ट्रभाषा के प्रचारकों को चरित्रवान होना ही चाहिए । उनकी साहित्यिक अयोग्यता अथवा व्याकरण के अज्ञान को मैं बर्दाश्त कर लूंगा किंतु उनके चरित्र की कमी को तो मैं एक क्षण के लिए भी बर्दाश्त नहीं कर सकता ।

हिंदी प्रचार में धन से भी हमको ज्यादा मदद नहीं मिलेगी । अकेले धन से क्या होता है ? रुपयों से भी अधिक हम चारित्र्य को प्रधानता देते हैं ।

(महात्मा गांधी)

संसार एक रणक्षेत्र है । इस मैदान में उसी सेनापति की विजय होती है, जो अवसर को पहचानता है । वह अवसर में जितने उत्साह से आगे बढ़ता, उतने ही उत्साह से आपत्ति के समय पीछे हट जाता है । ऐसा वीर पुरुष राष्ट्र का निर्माता होता है और इतिहास उनके नाम पर फूलों की वर्षा करता है ।

इस मैदान पर कभी-कभी ऐसे सिपाही भी आ जाते हैं, जो अवसर पर कदम बढ़ाना तो जानते हैं, पर संकट के समय कदम पीछे हटाना नहीं जानते । ये रणवीर पुरुष विजय को नीति की भेंट कर देते हैं, वे अपनी सेना का नाम मिटा देंगे किंतु एक बार जहां पहुंच गये हैं, वहां से कदम पीछे नहीं हटाएंगे । उनमें से कोई विरला सिपाही संसार में विजय प्राप्त करता है, किंतु उनकी प्रायः हार भी विजय से अधिक गौरवात्मक होती है ।

अगर अनुभवी सेनापति राष्ट्रों की नींव डालता है, तो आन पर जान देनेवाले कर्त्तव्यों से मुंह न मोड़नेवाला सिपाही राष्ट्र के भावों को उच्च करता है और उसके हृदय में गौरव को अंकित कर देता है । उसे इस कार्य में चाहे सफलता हासिल न हो, पर जब किसी सभा में उसका नाम जबान पर आ जाता है तो श्रोताओं का स्वर उसकी कीर्ति गौरव को प्रतिध्वनित कर देते हैं ।

—(प्रेमचंद)

हममें अभिमान, संकीर्णता, प्रांतीयता, सांप्रदायिकता और जातिवाद नहीं होना चाहिए क्योंकि हमें एक महान मिशन पूरा करना है । भारतीय गणराज्य के नागरिकों को तन कर सीधे खड़े रहना चाहिए । ऊपर देखते हुए भी हमारे पैर मजबूती से जमीन पर जमे रहें और फिर हम भारत की जनता में इस समन्वय और एकता को पैदा करें । राजनीतिक एकता कुछ हद तक आ चुकी है । लेकिन मैं जिस चीज के पीछे हूं, वह इससे बहुत

गहरी है । वह है—भारतवासियों की भावात्मक एकता—ताकि हम सब मिलकर एक हो सकें और सब मिलकर एक ही राष्ट्र की इकाई बनें । लेकिन ऐसा करते हुए हम अपनी आश्चर्यजनक विविधता के बावजूद एकता को बनाए रखें । मैं इस विविधता को जबरदस्ती कठोर शिकंजे में कसने और खतम कर देने के पक्ष में नहीं हूं, लेकिन हम लड़ाई-झगड़े में पड़कर अपने-आपको खो न दें । हमें अक्सर किसी दूसरे की राय न चाहते हुए भी माननी पड़ती है । यही लोकतंत्र का तरीका है ।

हमें इस बात से सावधान रहना है कि क्षणिक आवेश में न बह जाएं, चाहे यह राजनीति में धर्म के गलत व्यवहार के कारण हो या संप्रदायवाद या प्रांतवाद या जातिवाद के कारण हो । इस महान देश को हमें एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में खड़ा करना है और शक्तिशाली के सामान्य अर्थ में ही नहीं अर्थात् बड़ी-बड़ी फौजें इत्यादि का होना ही नहीं, बल्कि विचारों और दृष्टि से शक्तिशाली, कर्मठता और संस्कृति की दृष्टि से शक्तिशाली, मानव की शांतिपूर्वक सेवा करने के लिए शक्तिशाली बनाना है ।

(जवाहरलाल नेहरू के भाषण से)

हमारा देश मजबूत देश है और इन पिछले सालों में कई ऐसे प्रबंध हुए हैं, जो इसको और मजबूत बनाते हैं । हर क्षेत्र में हमारी सेना आज मजबूती से और बहादुरी से सीमाओं पर डटी हुई है । दुनियावाले कुछ भी करें, हमको अपनी ताकत पर भरोसा रखना है, खासतौर से आजकल के जमाने में ताकत खाली सेना की ही नहीं होती है, उद्योग की ताकत होती है, समाज की ताकत होती है । इन सब में हमको भरोसा रखना है । एक सवाल यह भी कि क्या हम किसी देश के कहने से दब रहे हैं या दबेंगे ? मैं बहुत जोरों से कहना चाहती हूं कि यह सवाल ही नहीं उठता कि कोई हम पर दबाव डाले । वे कभी नहीं दबते, जिनका संकल्प दृढ़ नहीं होता है और हमारा संकल्प दृढ़ है ।

('छोटे कदम लंबा सफर'—इंदिरा गांधी

राष्ट्र की प्रगति में संकीर्णता से बड़ी कोई रुकावट नहीं है । हमारा यह कर्त्तव्य है कि हाल ही में मिली आजादी के इस नये युग में हम स्वयं को इस बीमारी से मुक्त रखें । राष्ट्रीय जीवन के स्वस्थ विकास के लिए इतनी खतरनाक कोई भी बीमारी नहीं है । यह बीमारी विचार तथा व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र में प्रकट हो जाती है । अभिनेता की भांति यह छद्मवेश धारण कर आ जाती है । धर्म के क्षेत्र में यह अंधविश्वास के रूप में आकर रुढ़िवादिता के नाम पर हमें धोखा देना चाहती है । ज्ञान तथा संस्कृति के क्षेत्र में यह संकीर्ण भावनाओं के नाम पर हमें आकृष्ट करती है ।

(● मौलाना अबुल कलाम आजाद)

हिंदुस्तानी क्लोपेत्राः गोबिंद कौर

औरत ही प्रेम करना जानती है

● अनंतराम

लाख पाबंदियां हों, लेकिन वे प्रेमियों के मिलन को नहीं रोक सकतीं, ऐसी ही एक प्रेम कहानी नहीं, बल्कि, कई कहानियों की नायिका थी— गोबिंद कौर। अंगरेजों का शासन था और रियासतों का जमाना। पंजाब की रियासतों और विशेषकर कपूरथला की रियासत के भोग-विलास और रंगीनियों के तो कहने ही क्या थे ? इसी कपूरथला रियासत की राजकुमारी थी— गोबिंद कौर। महाराजा निहालसिंह की बेटी और महाराज रंधीरसिंह की बहन। बाप की लाड़ली बेटी। राजशाही माहौल में पली-बढ़ी। बिगड़ैल हो गयी। जिस समय वह जवान हुई, उस समय उसका एकमात्र सगा भाई रंधीरसिंह महाराजा की गद्दी पर था।

कपूरथला नहीं छोड़ेगी

गोबिंद कौर की शादी की बात चली तो गोबिंद कौर ने शर्त रख दी कि वह कपूरथला छोड़कर नहीं जाएगी, जो भी शादी करेगा उसे कपूरथला आकर ही रहना पड़ेगा। भाई को अपनी प्यारी, जिद्दी और बिगड़ैल बहन की बात माननी पड़ी। उसकी शादी एक संभ्रांत, प्रतिष्ठित और प्रचुर धनी व्यक्ति से कर दी गयी। वह भी कपूरथला से १६ कि.मी. दूरी पर बसे अपने कस्बे करतारपुर को छोड़, कपूरथला रहने चला आया।

गोबिंद कौर को महाराज के शाही महल के पास का ही एक महल दे दिया गया। यह महल भारतीय परंपरागत वास्तुशैली का एक सुंदर छह मंजिला महल था। इसका एक ही प्रवेश द्वार था। यह आम रास्ते के समीप ही था और इसमें झरोखा बना हुआ था। इसी झरोखे से कभी राजा प्रतिदिन प्रातःकाल प्रजा को अपने दर्शन दिया करता था। इस झरोखे में एक और खास बात थी कि उसके चारों ओर ऐसी भी जाली लगी हुई थी कि इस झरोखे के अंदर बैठा आदमी बाहरवाले को देख सकता था लेकिन, बाहरवाला अंदरवाले की छाया भी नहीं देख सकता था। यह झरोखा गोबिंद कौर के बहुत काम आया।

गोबिंद कौर का पति बेचारा क्या करता क्योंकि, गोबिंद कौर तो भरपूरी जवान उन्मादी, विकृत मानसिकतावाली कामुक औरत थी जबकि, पति न तो सुंदर था, न ताकतवर, वह

कस्बाई मानसिकता का गंवार उज्जड़ किस्म का इनसान था। वह शरीर से ही नहीं दिमाग से भी कुछ ढीला था। अतः वह गोबिंद कौर को संतुष्ट करने में असफल रहा।

महल और मिलिटरी के बीच

इधर महल का एक ही दरवाजा था और उस पर भी मिलिटरी का सख्त पहरा रहता था। लेकिन पहरा क्या करता ? गोबिंद कौर पहरे पर आये किसी भी हट्टे-कट्टे गार्ड को किसी न किसी बहाने पास बुला लेती। वह अपना अधिकतर समय झरोखे में बैठकर बिताती। रास्ते पर आने-जाने वालों को देखती रहती। जो कोई हट्टा-कट्टा युवक दिखायी देता उसे किसी न किसी बहाने अंदर बुलवा ही लेती।

उसका पति यह सब देखता-भालता और शर्मिंदगी महसूस करता। गोबिंद कौर के व्यवहार और चाल-चलन से हताश-निराश हो उसने शराब का सहारा लिया, जिसने उसे धाकड़ शराबी और निकम्मा बना दिया। अंत में वह महल छोड़ बारादरी में रहने लगा। पति-पत्नी के संबंध खत्म । गोबिंद कौर को खुली छूट।

दीवान जरमनी दास ने 'महाराजा' शीर्षक अपनी पुस्तक में गोबिंद कौर को कामुक यौन संबधों में रूस की महारानी कैथरीन और मिस्र की क्लोपेत्रा से कम नहीं माना है।

लेकिन उसके अंदर एक औरत भी थी, जो प्रेम भी करना जानती थी, यह बात तब सामने आयी, जब कुछ समय बाद उसके जीवन में कर्नल वरयाम सिंह आया।

किस्सा यहीं खतम नहीं होता

रियासत का मुख्य दीवान था नवाब गुलाम गिलानी। हृष्ट-पुष्ट, ऊंची कद-काठी और आकर्षक व्यक्तित्व का धनी। उसने गोबिंद कौर की सुंदरता के बारे में सुन तो रखा था, पर देखा कभी नहीं था। उसका कार्यालय भवन-दीवान-खाना भी गोबिंद कौर के महल के सामने ही था। एक दिन उसने गोबिंद कौर को देख ही लिया। गोबिंद कौर उस दिन अपने महल की सबसे ऊपरी मंजिल की छत पर अपने लंबे, घने रेशम से काले बाल सुखा रही थी। बस, गुलाम गिलानी ने उसे देखा, तो देखता ही रह गया।

गुलाम गिलानी ने उससे मिलने की बहुत कोशिश की लेकिन, मुख्य दीवान जैसे उच्च पदस्थ अधिकारी का एक राजकुमारी के महल और वह भी मिलिटरी की सख्त पहरेदारी से घिरे महल में घुस पाना संभव नहीं था। लेकिन एक राह निकल ही आयी। राजकुमारी रोजाना दो घोड़ों की बंद बग्घी में सैर करने जाती थी। महल से बग्घी में बैठने तक उसके चारों ओर मोटे-मोटे परदे तान दिये जाते थे, ताकि उसे कोई देख न सके और वह भी किसी को न देख सके। गुलाम गिलानी अपने दीवान खाने से उसकी हर गतिविधि पर ध्यान रखने लगा।

एक दिन उसने गोबिंद कौर की एक विश्वस्त

नौकरानी को भारी घूंस देकर उसके हाथ अपना प्रेम-पत्र उस तक पहुंचवा दिया कि वह उससे मिलना चाहता है । वह तो तैयार बैठी ही थी कि कोई तो उसे मिले ।

लेकिन मिले कैसे ? तरकीब सोची गयी । गुलाम गिलानी ने अपने दीवान खाने के नीचे से एक सुरंग महल तक खुदवा दी । मिलने का रास्ता साफ हो गया । वैसे, दीवान-खाना ऑफिस था, लेकिन उसने इसमें रात-बिरात रहने की व्यवस्था भी कर ली थी । कुछ ही दूरी पर उसका अपना हरम भी था । उसके बाल-बच्चे जालंधर में रहते थे, जो कपूरथला से १९ कि. मी. की दूरी पर था ।

सुरंग खुदने पर गुलाम गिलानी उसके महल में आने-जाने लगा और यह सिलसिला बहुत समय तक चला, फिर भी इस तरह के मिलने से दोनों का मन नहीं भरा । दोनों चाहते थे कि महल से कहीं दूर और लंबे समय तक मिलने की व्यवस्था होनी चाहिए ।

जैसी बग्घी गोबिंद कौर की थी, वैसी ही बग्घी गुलाम गिलानी की भी थी । यानी बग्घी के बीच में एक लंबा बॉक्स था, जिसमें घोड़ों के लिए घास रखी जाती थी । दोनों ने योजना बनायी । गोबिंद कौर मेहतरानी बनकर मुंह ढककर महल से निकली और गुलाम गिलानी के घोड़े की लीद साफ करती हुई उसकी बग्घी में छिपकर बैठ गयी । बग्घी में बैठकर गुलाम गिलानी जालंधर रवाना हो गया । रास्ते में, तीन घंटे बॉक्स में बंद रहने के बाद उसने उसे निकाला । जालंधर पहुंचकर उन दोनों ने कई घंटे साथ-साथ बिताये और फिर कपूरथला लौट आये ।

इस तरह दोनों जालंधर जाकर मौज-मस्ती करते रहे । यह सिलसिला भी कई महीनों तक चला । लेकिन, एक दिन दोनों पकड़े गये । गुलाम गिलानी को तो देश निकाला दे दिया गया और गोबिंद कौर को महल में नजरबंद ।

उसके अंदर एक औरत थी

गोबिंद कौर ने कभी कोई चिंता नहीं की कि आखिर गुलाम गिलानी का क्या हुआ ? क्योंकि, उसे गुलाम गिलानी से नहीं, अपनी कामुकता से मतलब था ।

लेकिन उसके अंदर एक औरत भी थी, जो प्रेम भी करना जानती थी, यह बात तब सामने आयी, जब कुछ समय बाद उसके जीवन में कर्नल वरयाम सिंह आया ।

कर्नल वरयाम सिंह रियासत की मिलिटरी का एक उच्च पदस्थ अधिकारी था और उसके पूर्वजों ने रियासत की बहुत सेवा की थी । एक बार वह गोबिंद कौर के महल पर तैनात मिलिटरी गार्ड का मुआयना करने गया । जब उसकी निगाह उस पर पड़ी, तब वह भी उसके रूप-सौंदर्य पर मर मिटा । समस्या उसके सामने भी वही थी कि वह गोबिंद कौर तक पहुंचे कैसे ? उसने एक अजीब ही रास्ता निकाला । महल के अंदर जो कुआं था वह महल की चारदीवारी से सटा हुआ था । वरयाम सिंह ने बाहर से सुरंग खुदाई जो कुएं में खुलती थी । कुएं की दीवार की कुछ ईंटें निकालकर वह कुएं में पहुंचता और गोबिंद कौर अपनी उसी विश्वस्त नौकरानी, जिसके माध्यम से दोनों में प्रेम-पत्रों का आदान-प्रदान हुआ था, के साथ मिलकर उसे कुएं से बाहर निकाल लेतीं । जब सारी रात बिताकर वरयाम सिंह लौटता तो कुएं की दीवार

की ईंटों को उसी तरह जमा जाता, ताकि किसी की नजर न पड़े ।

इस तरह दोनों की मेल-मुलाकातें दो साल तक चलती रहीं लेकिन, एक दिन इसका भी भंडाफोड़ हो गया । हुआ यह कि घरेलू मामलों के दीवान को यह राज पता चल गया, वह उससे वैसे ही खार खाता था । लिहाजा एक रात वरयाम सिंह के महल में होने की सूचना पाते ही दीवान ने मुख्य पुलिस अधिकारी को साथ ले दल-बल सहित छापा मारा । पुलिस दल अभी दरवाजे पर ही था कि गोबिंद कौर और वरयाम सिंह को पता चल गया और दोनों पानी से भरे एक बंद नाले में घुसकर छिप गये । दरअसल, पानी की इस सुरंग द्वारा एक कुएं से महल में राजकुमारी के लिए पानी आता था । यह कुआं महल की चार दीवारी से कोई सौ कदम की दूरी पर था ।

पुलिस ने सारे महल की छान-बीन की लेकिन उसका शिकार तो हाथ से निकल चुका था । वे दोनों रातभर ठंडे पानी में ठिठुरते पड़े रहे और सुबह के झुरमुटे में बाहर निकलकर दोनों पैदल ही दौड़ पड़े रियासत से बाहर की ओर ।

बीस मील की दूरी तय करके वे दोनों सुलतानपुर के पास कल्यान नामक गांव में जा पहुंचे । यह गांव अंगरेजों के पास था, लिहाजा यहां पर कपूरथला का राज या उसकी पुलिस उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती थी । दोनों ने गांव में शरण ली, लेकिन उनके पास जीविका का कोई साधन नहीं था । दोनों के परिवारजनों ने उनसे संबंध तोड़ ही लिये थे । फलतः कर्नल वरयाम सिंह खेत मजदूरी करने लगा और राजकुमारी गोबिंद कौर एक देहातिन की तरह अपने चूल्हे को जलाने के लिए कंडे थापती और वरयाम सिंह के साथ सुखी और संतुष्ट जीवन जीने लगी ।

इसके बाद गोबिंद कौर के बारे में कभी कुछ नहीं सुना गया । ●

आह, गमये गन्ना बेगम

ग्वालियर से ग्यारह मील दूर एक रेलवे स्टेशन है—नूराबाद । यहां एक कब्र हुआ करती थी, जो अब नहीं है । कब्र पर लिखा था—आह, गमये गन्ना बेगम ।

कौन थी यह गन्ना बेगम ?

आगरा की एक तवायफ की बेहद खूबसूरत बेटी, जिस पर भरतपुर के जाट महाराजा सूरजमल का बेटा जवाहरसिंह मर मिटा था । बात शादी तक पहुंच गयी थी ।

सूरजमल को पता चला । सूरजमल बिगड़ पड़ा, तो जवाहर सिंह भी बिगड़ पड़ा और डींग चला गया । बाप-बेटे में युद्ध ठन गया । दोनों ओर से बाकायदे फौजी लड़ाई हुई पर जवाहरसिंह घायल हो परास्त हो गया ।

सूरजमल ने गन्ना बेगम को दिल्ली में अपने मित्र नजीर इमादुद्दौला के हरम में शामिल करा दिया, जहां उसने जहर खाकर आत्महत्या कर ली ।

रूस की साम्राज्ञी के रोचक प्रेम-प्रसंग

● शैलेन्द्र सिंह

रूस का सम्राट जार-पीटर तृतीय बहुत ही कुरूप व्यक्ति था । किंतु उसकी शादी कैथरीन नामक अनुपम सुंदरी से हुई थी । रूसी इतिहास में लिखा है कि कैथरीन का जन्म जरमनी के राज-परिवार में २१ अप्रैल सन् १७२९ में हुआ था । पर, उसे यह तो ज्ञात हू नहीं था कि एक दिन वह रूस की साम्राज्ञी बनेगी ।

विवाह के समय कैथरीन मात्र सोलह वर्ष की थी । स्वाभाविक था कि उसके पास भावी जीवन के तमाम सपने थे, पति के आलिंगन की अद्‌भुत आकांक्षा थी । किंतु कैथरीन के ये सारे सपने सपने ही रह गये । उसके जीवन में हरियाली तब आयी, जब सर्जियस साल्टीकोफ नाम का दूसरा पुरुष उसके जीवन में आया । लेकिन कैथरीन के जीवन में सर्जियस का पदार्पण बहुत दिनों बाद हुआ । लगभग सात वर्षों तक वह पुरुष संसर्ग से दूर रही । जबकि इन सात वर्षों में एलिजाबेथ को भी ज्ञात हो गया था कि पीटर कैथरीन को एक औरत नहीं बना सकता, क्योंकि वह न सिर्फ कुरूप है, बल्कि नपुंसक भी है ।

नींद नहीं आती रातभर

रूसी इतिहासकारों ने कैथरीन पर रहम करते हुए लिखा है कि एक औरत के लिए इससे बड़ी वेदना और क्या हो सकती है कि उसका पति उसे स्पर्श करने में भी अपने आपको अक्षम पाता हो । एकतरफ, कैथरीन की इस तरह की जिंदगी थी, दूसरी तरफ, साम्राज्ञी एलिजाबेथ को बिना पुरुष के नींद नहीं आती थी । इन सारी घटनाओं ने कैथरीन के जीवन को कटुता का पर्याय बना दिया था ।

समय गुजरा । महारानी एलिजाबेथ को अब अपने उत्तराधिकारी की तलाश थी । संभवतः इसीलिए उन्होंने अपनी मुख्य दासी के साथ मिलकर एक नीति तैयार की । बहुत ही सुनियोजित ढंग से सर्जियस साल्टीकोफ को कैथरीन के जीवन में प्रवेश दिलाया गया । इस काम के लिए पहले एलिजाबेथ ने कैथरीन को बाल्टिक द्वीप पर स्वास्थ्य लाभ के लिए भेजा । फिर सर्जियस को उसका प्रमुख अंगरक्षक नियुक्त कर दिया ।

अकेलेपन की दुनिया

एक रात जब द्वीप का मौसम काफी बिगड़

चुका था । कैथरीन ने अपनी दासी से अपने अकेलेपन का जिक्र किया । उस रात सर्जियस कैथरीन के कमरे के आसपास ही टहल रहा था । दो जवान जिस्म आंधी के एक झोंके के साथ करीब आये । इतने करीब कि सुबह उठकर कैथरीन जब आईने के सम्मुख खड़ी हुई, तब अपना रूप देखकर निहाल हो गयी ।अब वह औरत बन चुकी थी । उसका अंग-अंग एक नैसर्गिक स्पर्श की महक से सराबोर था । कहते हैं वह अपनी इस खुशी को रोक नहीं पायी और दासी को बुलाकर रात की घटना के एक-एक पल को सुनाने लगी । यह अलग बात है कि दासी को पहले से ही इन सारी स्थितियों का बोध था ।

रात...हर रात

द्वीप से राजमहल लौटकर भी कैथरीन और साल्टीकोफ एक-दूसरे को हर रात प्यार करते रहे । पीटर को उनकी इन हरकतों का ज्ञान था, पर वह कर भी कुछ नहीं सकता था । औरत बनने के साथ ही कैथरीन के स्वभाव में जहां एक साहसिक परिवर्तन हुआ, वहीं पीटर थोड़ा और अविचलित हो गया । पर कैथरीन इन सबसे बेपरवाह साल्टीकोफ को अपना हमबिस्तर बनाती रही ।

और वह दिन भी आ गया जब कैथरीन ने एक सुंदर बालक पॉल को जन्म दिया । इधर पीटर इस गम में अपना सर धुन रहा था, उधर एलिजाबेथ ने पूरे रूस में संदेश भिजवा दिया कि पीटर अब पिता बन गया है । विवश पीटर इस बात का खंडन तक नहीं कर सका ।

इस संदेश से रूस में खुशी की लहर दौड़ गयी । राजभवन में कैथरीन के पैर खुशी से


कैथरीन

जमीन पर नहीं पड़ते थे । पर, महारानी एलिजाबेथ को अब एक और चिंता सताने लगी । उन्हें भय था कि यदि सर्जियस साल्टीकोफ कुछ और दिनों तक रूस में रहा तो संभव है सारा भेद खुल जाए । इसलिए उन्होंने सर्जियस को स्वीडन भेज दिया ।

पहले प्रेम के बाद

यहां कैथरीन का पहला प्रेम खतम हुआ । सर्जियस की कमी उसे खलती तो थी, पर वह कर भी क्या सकती थी ? वैसे सत्य यह भी है कि कैथरीन ने कभी सर्जियस साल्टीकोफ को हृदय की गहराई से नहीं चाहा । सर्जियस उसकी शारीरिक भूख मिटाने का एक उपक्रम


सर्जियस साल्टीकोफ

भर था । और अब उसके नहीं रहने से यह भूख और तीव्र हो गयी थी । उधर सर्जियस स्वीडन जाकर भी कैथरीन को भूल नहीं सका ।

कुछ दिन यूं ही गुजरे । लेकिन जल्दी ही कैथरीन के जीवन में एक दूसरे पुरुष का प्रवेश हो गया । यह पुरुष पोलैंड के शाही परिवार का राजकुमार स्तानिसलास पोत्यातोवस्की था । पोत्यातोवस्की उम्र में कैथरीन से तीन वर्ष छोटा था । जल्दी ही कैथरीन पोन्यातोवस्की से भी ऊब गयी, हालांकि वह अंत-अंत तक कैथरीन के प्रति विश्वसनीय बना रहा ।

तीसरा प्रेमी

इसके बाद कैथरीन के जीवन में एक और प्रेमी ग्रिगोरी ओरलोफ का पदार्पण हुआ । ग्रिगोरी कैथरीन के जीवन में पहला ऐसा प्रेमी था जो शाही परिवार के सामने बैठने लायक नहीं था । लेकिन कैथरीन के लिए इतना ही पर्याप्त था कि ओरलोफ एक सुंदर, लंबा और गठीले शरीर का वाहक था । वह एक सैनिक अधिकारी था । ओरलोफ को वैसे तो कैथरीन ने बाद में प्रेम करना प्रारंभ कर दिया, पर वह प्रेम हेलेन कुराकिन से किया करता था जो किसी सैनिक अधिकारी की बेटी थी । हां, उसने कैथरीन की शारीरिक आकांक्षाओं से आंख नहीं मूंदी और कैथरीन के जीवन में वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण साबित हुआ ।

रूस की महारानी बनी

आखिर एक दिन ऐसा भी आया जब कैथरीन अपने उद्देश्य में सफल हो गयी । यह एक ऐसा दिन था जब पीटर उससे मिलने पीटर-हौफ के राजभवन आ रहा था । रूसी इतिहास में लिखा है कि वह जैसे ही पीटर-हौफ पहुंचा उसे बंदी बना लिया गया । जब उसने विरोध किया, तब कहा गया कि यह रूस की महारानी कैथरीन का आदेश है । राजनीतिक मोहरों से अनभिज्ञ सम्राट पीटर ने स्वयं ही राज-पाट त्यागने की घोषणा कर दी और घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर भी कर दिया ।

कहते हैं कि बाद में अलेक्सी ने पीटर की हत्या कर दी और उसे स्वाभाविक मौत करार दिया गया । ऐसा भी कहा जाता है कि महारानी बनने के बाद भी ओरलोफ के प्रति कुछ दिनों तक कैथरीन विश्वसनीय बनी रही ।

एक और शिकार

ओरलोफ के बाद उसने अलेक्सांद्र वासिलचिकोव को अपनी हवस का शिकार बनाया । बाद में वह उससे भी ऊब गयी । उसके बाद कैथरीन के जीवन में पोतेमकिन आया जो उम्र में उससे बहुत छोटा था । कहते हैं कि वह अपने पूरे प्रेम-जीवन में पोतेमकिन के प्रति सबसे अधिक वफादार थी । हो सकता है, यह उसकी ढलती उम्र का तकाजा हो, लेकिन पोतेमकिन कैथरीन के प्रति कभी भी निष्ठावान नहीं हो सका । दूसरी तरफ, कैथरीन की शारीरिक भूख इतनी तीव्र होती गयी कि अंत में वह नौकर-चाकरों की तरह प्रेमी भी नियुक्त करने लगी । ऐसे प्रेमी जो दिन में अंगरक्षक बने रहते और रात में पति का कर्त्तव्य निभाते । एक निश्चित अंतराल के बाद कैथरीन इन्हें बदल देती थी । अपने संपूर्ण जीवन में कैथरीन कितने पुरुषों के संपर्क में आयी, यह तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन रूसी इतिहास में ऐसी मिसाल एक ही है । कैथरीन की यह हवस रूसी इतिहासकारों और मनोवैज्ञानिकों के लिए आज भी शोध का विषय है ।

—बी-७२-ए, शकरपुर, दिल्ली-११००९२

संस्कृत साहित्य में प्रेम प्रसंग

अप्सराओं और सुंदरियों के बीच

• कु. शुभ्र तनया

धारानगरी के राजा भोज मृगया की उत्कंठा से वन में भ्रमण करने गये थे । सूर्य का ताप प्रखर हो जाने के कारण वे प्यास से व्याकुल हो उठे थे । आसपास कहीं भी जल न पाकर वे एक वृक्ष के नीचे जा बैठे । इसी बीच तक्र बेचनेवाली एक सुंदरी गोपबाला वहां आ पहुंची थी, "हे बाले । इस घड़े में तुम क्या ले जा रही हो ।" ..."यह आरोग्यकारक तक्र है, इसे पीकर अपनी प्यास शांत करें ।" राजा की मुखकांति से तरुणी समझ गयी थी कि वे राजा भोज ही हैं । प्यास शांत होने पर राजा ने उस कन्या से पूछा, "हे वरानने तुम क्या चाहती हो ?"

यौवनमद की चंचलताभरी दृष्टि फेंकती वह गोपबाला तत्काल कह बैठी, "हे नृपश्रेष्ठ जैसे कुमुदनी चंद्रमा की, चक्रवाक समूह सूर्य को, चातक मंडली मेघ को, भ्रमर पंक्ति सुमन समूह को, कोयल आम्रवृक्ष को, पत्नी परदेश गये पति को पाने के लिए सदैव उत्कंठित रहती है उसी प्रकार मेरी चित्त वृत्ति सदा आपको ही देखने के लिए उत्कंठित है... आप मुझे कुमारिका ही समझिए... ।" "राजा विस्मय से भर गये और कहा, "हे, कोमलांगी ! लीलादेवी से अनुमति प्राप्त कर हम तुम्हें स्वीकार कर लेंगे ।"

राजा भोज ने धारा नगरी ले जाकर उस कन्या को विधिपूर्वक स्वीकार कर लिया ।

गौतम बुद्ध के सौतेले भाई

स्निग्ध प्राण नंद अपनी प्रिया सुंदरी के आश्लेष में चक्रव[illegible] आबद्ध थे, प्रतिक्षण प्रिया के सौंदर्य पाश का आलिंगन उनका सर्वस्व था । सुंदरी भी रूप गर्व के कारण मानिनी और भामिनी रूप में जनपद में बहुश्रुत थी । रात्रि और चंद्रमा की भांति दोनों का अद्वैत प्रेम सहज सार्थक था । सुंदरी के सौंदर्यपान की नित नयी अभिलाषाएं लिए नंद का दिवस प्रारंभ होता था । आनंद केलि में मग्न नंद की तल्लीनता देख भिक्षा की आकांक्षा से पधारे तथागत उस दिन वेश्म द्वार से ही लौट गये थे । भागा गया था नंद तथागत के पीछे, किंतु सुंदरी के मोहपाश ने उसके मन प्राणों को प्रगाढ़ रूप से बांध लिया था । वासना [illegible]

करने का प्रयास किया । उसे भिक्षु रूप प्रदान किया । नंद के जाने के बाद सुंदरी प्रिया विरह के तीव्र तर संताप में जलती रही ।

प्रव्रजित नंद भी शरीर से ही प्रव्रजित हुआ था कि उसका मन अब भी प्रिया में ही पड़ा था । यौवन की ज्वालाओं में जलता वह नंद बार-बार गृह प्रयाण के लिए आतुर हो उठता था । अंतर्द्वंद्व से भरे हृदयवाला वह नंद तरंगों पर तैरनेवाले राजहंस की तरह न तो जा सका न ही रुक सका । मन प्राणों के लंबे संघर्ष के बाद काम पराजित हुआ । तथागत के प्रयासों से उसे सधर्म की दृष्टि मिली, विरहिणी सुंदरी ने भी प्रिय के अभीष्ट को ही अपना अभीष्ट माना । कामनाओं से विरत नंद को पाकर उसने भी अवदात चरित्रभरे जीवन का परिचय दिया ।

ये नंद शाक्यवंशीय महाराजा शुद्धोधन के पुत्र और गौतम बुद्ध के सौतेले भाई थे ।

मंडन मिश्र की पराजय

मृगया के समय अरण्य में ही महाराज अभरुक का देहावसान हो गया । वृक्ष के नीचे उनकी निश्चेष्ट देह के समीप अग्रमहिषी सहित सभी प्रमदाएं उच्च स्वर में विलाप कर रही थीं । तभी आकाश में भ्रमण करती कोई आकृति उतरी और परकाया प्रवेश विद्या द्वारा राजा के शरीर में प्रवेश कर गयी । महाराज जैसे निद्रा से उठे हों । ऐसा दृश्य देख सभी रानियां प्रमदाएं मंत्रीगण, परिजन प्रसन्नता से भर गये थे । महाराज राजधानी लौट आये... और नृप रूप धारी उसी काया ने अनेक सुंदरियों के साथ विलास करते हुए कामतत्व के सूक्ष्म रहस्यों को उद्घाटित करनेवाले उत्कृष्ट श्रृंगम ग्रंथ अभरुक शतक की रचना की । प्रणय के उन्माद में डूबे और विरह की व्यथा से पीड़ित नायक-नायिका की अनेक उद्दाम दशाओं का प्रसंग महाराज ने प्रस्तुत किया ।

महाराज अभरुक के बारे में जनश्रुति प्रचलित हुई कि मंडन मिश्र की धर्मपत्नी भारती से कामशास्त्रीय संवाद में पराजित होने पर जगद्गुरु शंकराचार्य ने अभरुक नामक एक राजा के शरीर में प्रवेश करके इस ग्रंथ को विरचित किया था ।

रति युद्ध में सब खो बैठा

देवराष्ट्रवासी राजपुत्र समरभट अपने परिजनों सहित काशी विश्वनाथ का दर्शन करने गया था । ... विपुल कोलाहल था । पूजा-अर्चना के बाद वह राजपुत्र वहीं एक स्थान पर बैठ गया... । नृत्य करनेवाले वंशीवादक, गायक, प्रकाश युवतियों और गणिकाओं का समूह भी बैठ गया । ...नगर श्रेष्ठी सहित सभी जनों ने उसका सम्मान किया । वैतालिक ने उस राजपुत्र का प्रशस्ति गान किया । नृत्यगान के अवसर पर नृत्याचार्य ने मंजरी के रूप गुण की व्याख्या उस राजपुत्र के समक्ष की । मंजरी भी अतिरिक्त उत्कंठा से भर गयी थी । "क्या यही है वह ?" कहते हुए समरभट ने वेत्रदंड से मंजरी का स्पर्श किया... । राजपुत्र के मन में मंजरी के प्रति अनुराग न जागे इसलिए मंत्री ने गणिकाओं की निंदा की । किंतु मंजरी की माता ने अपने

वाग्जाल से राजपुत्र को प्रभावित किया और मंजरी का नृत्याभिनय देखने की प्रार्थना की। मंजरी के नृत्य ने सभी को बांध लिया। मुग्ध राजपुत्र मंजरी के प्रति आकृष्ट हो गया... और उसी का चिंतन करता रहा। मंजरी इसी अवसर की तलाश में थी, अनेक स्तुतियों से राजा को प्रेमपाश में बांध लिया। वह राजपुत्र रति युद्ध में अमनी सुध-बुध खो बैठा...। काम विदग्धा मंजरी ने मोहक जाल बिछाकर उसका सर्वस्व हरण कर लिया और उसे त्वगस्थि शेष करके ही छोड़ा। वह राजपुत्र विलासभरे निष्फल प्रणय के पश्चात्ताप में जलता रहा।

मालविका का प्रेम प्रसंग

विदिशा की महारानी धारिणी ने मालविका को युक्तिपूर्वक महाराज अग्निमित्र से छिपा रखा था। ताकि इस सुंदरी पर महाराज की दृष्टि न पड़ जाए। महारानी की आज्ञा से मालविका संगीत नृत्य सीख रही थी। महाराजा ने एक दिन मालविका को देख ही लिया। वे चकित थे कि चेरियों के मध्य ऐसी असाधारण सुंदरी कैसे आ पहुंची ? उस रूपसी को पाने के लिए राजा व्याकुल हो उठे थे। महारानी बीच में बाधा थी। गौतम विदूषक के कूट प्रबंध द्वारा एक दिन महाराज को मालविका का नृत्य अभिनय देखने को मिल ही गया। रानी से यह चाल छिपी न रही। राजा को उपालंभ भी दिया था महारानी ने, किंतु महाराज का चित्त कहीं और था। मालविका को सामने पाकर वे स्तंभित हो उठे। मालविका ने भी गीत चतुष्पदी में अपने मन की व्यथा खोल दी, हे नाथ इस जन को अपने प्रति अनुरक्त ही जानो। मालविका भी महाराज के दर्शन के बाद काम पीड़ा से व्यथित थी, किंतु अपना दासी भाव जान और महारानी के भय से वह प्रेम प्रकट न कर सकी।

महाराज मालविका को पाने के प्रयासों में लगे रहे। दूसरी रानियों के मध्य भी यह प्रेम प्रसंग खुल चुका था। धारिणी के साथ-साथ वे भी क्रोधांध हो रही थीं। कामदेव की भांति राजा का हृदय इस प्रणय से हटेगा नहीं, ऐसा मान महारानी धारिणी ने उदारता से परिचय दिया और मालविका का विवाह महाराज से स्वयं करवाया। महाराज और मालविका का मनोरथ पूर्ण हुआ। मालविका दासी नहीं थी, किसी विपदा में फंस जाने के कारण रानी धारिणी की सेवा में जा पहुंची थी। वह मालवाधीश माधव सेन की भगिनी थी।

हंस क्रीड़ा और नल दमयंती

हंसों के क्रीड़ा विलास से नल-दमयंती परस्पर आकृष्ट हुए थे। दोनों एक-दूसरे से प्रभावित और कामदेव के बाणों से आहत थे। पुत्री की मनोव्यथा जान पिता स्वयंवर का आयोजन करते हैं। दमयंती निश्चय कर चुकी थी कि वह नल को ही पति रूप में वरण करेगी। अवसर पाते ही नल को संदेशा भेजती है, "नैषध नल होकर भी तुम मेरे लिए अनल हो गये हो..." नल भी स्वयंवर में जाने को उद्यत है, किंतु लोकपालों सहित इंद्र पधारते हैं

और नल से अपना संदेशा दमयंती तक पहुंचाने को कहते हैं... । उनके मन का द्वंद्व प्रबल हो उठा । दमयंती में कोई आनंद सुधा भरी है जो देवांगनाओं में नहीं है । नल लोकपालों की दौत्य दासता स्वीकार कर दमयंती के समक्ष जा पहुंचते हैं । संदेश सुनते ही दमयंती हरिणी की भांति छटपटा उठती है । नल भी संदेश सुनाकर जड़वत हो गये थे । "मैं स्वयंवर में आपका ही वरण करूंगी" दमयंती ने सहज प्रेम की निश्चलता से अपना मंतव्य प्रकट कर दिया ।

आश्चर्य था कि स्वयंवर के समय नल रूपधारी पांच पुरुष दमयंती के सामने थे । वह क्षणभर को रुकी पर अंतर को एकाग्र कर उन्होंने देवों से नल को पहचानने की शक्ति मांगी । दूसरे ही क्षण उसी अंतर्शक्ति से पहचान लिया कि उन पुरुषों में चार की पुष्प मालाएं पूरी तरह खिली हैं । उनके चरण धरती से ऊपर हैं । पांचवां व्यक्ति ही नल है । तब दमयंती ने नल का वरण किया । नल और दमयंती के प्रणय को अमरत्व मिला ।

प्रेम वासवदत्ता का

साक्षात् कामदेव रूप वत्सराज उदयन और रति की साकार मूर्ति वासवदत्ता का प्रणय विलास कौशाम्बी और अवन्ति महाजनपदों की अमर कथा के रूप में विख्यात हुआ था । अपने अप्रतिम पौरुष के साथ वीणा वादन और मृगया महाराज उदयन के प्रिय विलास थे । सुंदरी वासवदत्ता अवंति की परम सुंदरी रमणी है यह ख्याति उदयन के कानों में पहुंच चुकी थी... । उदयन की कलाप्रियता रूप, गुण और यौवन की प्रशस्ति से वासवदत्ता मन ही मन उनके प्रति लालायित थी किंतु राजकुलों की प्रतिस्पर्धिता बाधा थी ।

अवंति नरेश चंद्र प्रद्योत ने छलपूर्वक अपने मंत्रियों के सहयोग से उदयन को बंदी बना लिया और वासवदत्ता को वीणा सिखाने की शर्त रखी । उदयन के मंत्रियों ने सलाह दी कि वीणा सिखाते समय वासवदत्ता को अपने अधीन कर लेना... वीणा की स्वर लहरियों के साथ भावविभोर प्रणय लहरियां भी गूंज उठीं । निश्चित योजनानुसार उदयन वासवदत्ता का अपहरण कर निकल भागे । अपहृता वासवदत्ता कौशांबी की महारानी बनी । वासवदत्ता को पाकर कौशांबी के अंतःपुर में सभी कलाओं ने प्रश्रय पाया था । मदन महोत्सव के अवसर पर मदनोद्यान में महारानी वासवदत्ता ने साक्षात रति को भी परास्त किया था ।

यक्ष का संदेश

या तो वह तुम्हें पूजा अर्चना में व्यस्त मिलेगी या फिर मेरा चित्र बनाती मिलेगी या शारिका से पूछ रही होगी कि तुम अपने पति को स्मरण करती हो या नहीं... । या मलिन वस्त्र पहने ऊंचे स्वर में मेरे ही नाम के गीत गाती होगी । ऐसी मेरी प्रिया को राग के उतार-चढ़ाव का ध्यान न रह जाता होगा । अथवा देहरी पर रखे पुष्पों को देखकर शाप के बचे दिनों को गिन रही होगी । अथवा पिछली स्मृतियों का आनंद ले रही होगी । दिनभर तो उसे उसकी सखियां घेरे रहती होंगी । अतः उसके पलंग के पासवाली खिड़की पर रुककर बैठ जाना और जब सखियां सो जाएं, जब उसके पास पहुंचकर

ढूंढ़ लेना ।"

अलका निवासी उस यक्ष ने मेघ से प्रिया के प्रति अपने उद्‌गारों में अपनी व्यथा कही । यक्ष का अपराध कुछ न था । अपनी कांता में अतिशय अनुरक्त वह अपना कर्त्तव्य पालन भी भूल जाता था । ऐसे ही उसने अपने स्वामी कुबेर के कार्य में शिथिलता कर दी थी और कुबेर ने उसे शाप दिया, "जिस प्रिया के मोह में सब कुछ भूलकर तू अपने कर्तव्य में प्रमाद कर बैठा है, उससे तू एक वर्ष तक दूर रहेगा ।"

विरह व्यथित वह यक्ष भटकता हुआ अलका से चलकर कैलास, मानसरोवर, क्रौंचरंध्र, कनखल, ब्रह्मावर्त, कुरु प्रदेश, दशपुर, उज्जयिनी, दशार्न, अवंती, वेत्रवती, चर्मण्वती, आम्रकूट, रेवा और मालदेश होता हुआ राम गिरि पर्वत पर पहुंच गया था । कुछ महीने व्यतीत होने पर अचानक आषाढ़ के प्रथम दिवस मेघमालाओं को देखकर उसकी विरह वेदना बढ़ गयी और मेघ से ही अपने संदेश प्रेषित किये । उस कामार्त यक्ष ने अमर प्रणय की व्यथा अपने संदेश में प्रेषित की थी ।

इंद्र की प्रेम नीति

इंद्र की सभा रत्नजटित सिंहासनों से सुशोभित थी । मणि दीपों की आभा से पूरा कक्ष जगमगा रहा था । देवताओं सहित अप्सराएं गंधर्व आदि सभी जन वाद्ययंत्रों के साथ इंद्र के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे । सोम भांडों में सोम भरा जा चुका था । अप्सराओं की चरण गति थिरकने लगी थी । इंद्र अप्सराओं में रमे हैं, कहीं यह मोहक इंद्रजाल शची को इंद्र से दूर न कर दे । इसी चिंता से शची कई दिनों से विकल थीं ।

अंतर्द्वंद्व के हिंडोले में दोलायमान इंद्राणी का मन शांत न था । तभी इंद्राणी ने 'उपनिषत्सपत्नी बाधन मंत्र' की सिद्धि का विचार किया और निर्णय लिया कि इसे सिद्ध कर अपने पति सपत्नियों की छाया से दूर रखने का उपाय करूं ।

शची नंदन कानन में जा पहुंची थी और अति शक्तिशाली एक वीरुध (लतामयी औषधि) को खोदकर निकाला और मंत्र पाठ आरंभ कर दिया—

मैं इस बलशाली औषधि को खोदती हूं जिससे सपत्नी को बाधित किया जाता है और अपने पति को इतना आसक्त किया जाता है कि वह दूसरी स्त्री के पास जाने की इच्छा भी नहीं करता ।

श्रेष्ठ पत्तों वाली ऐश्वर्यमयी तू मेरी सपत्नी को दूर हटा और मेरे पति को केवल मेरा बना । इस उत्कृष्टत औषधि के सेवन से मैं उत्कृष्ट से उत्कृष्टतर हो जाऊं और मेरी सपत्नी निकृष्ट से निकृष्टतम होती जाए । मैं विजयिनी रूप में उस सपत्नी को कुचलनेवाली हूं । हे पतिदेव ! इस सपत्नी बाधक औषधि मंत्र से मैंने तुम्हें बांध दिया है । हे इंद्र ! इसकी सिद्धि से तेरा मन वैसे ही मेरा अनुगामी बने जैसे गाय बछड़े के पीछे दौड़ती है और नीचे बहते हुए जल की भांति तू मेरी ही ओर दौड़ता जा ।

इन मंत्रों की रचना करके इंद्राणी ने उपनिषत्सपत्नी बाधन क्रिया से आजीवन इंद्र को पूर्णतः अपने में बांधे रखा । अप्सराओं और सुंदरियों के साथ आनंद मनाकर भी इंद्र इंद्राणी के ही आधीन रहे ।

प्रेम की प्रतिरूप भारतीय मोनालिजा



• स्वामी वाहिद काजमी

पाश्चात्य चित्रकला-जगत में लियोनार्दो द विंची की अमर चित्र रचना मोनालिजा का बहुत ऊंचा मकाम है । इटली का निवासी विंची (जन्म: सन् १४५२, निधन सन् १५१९) केवल चित्रकार ही नहीं वैज्ञानिक विवेक-बुद्धि से सुसंपन्न अद्भुत विचारशील विभूति था । मोनालिजा के सृष्टा के रूप में सारे संसार में फैली उसकी प्रसिद्धि की तुलना में वैज्ञानिक रचनाओं की चर्चा कम हुई है जबकि आज हम अनेक ऐसे आविष्कार देख रहे हैं जिनकी पहली-पहली कल्पना विंची के दिमाग से रेखांकनों के रूप में कागज पर उतरी थी । जैसे गतिवर्धक यंत्र, हेलीकॉप्टर, स्वचालित तंदूर, पैराशूट, टैंक, पनडुब्बी तथा अन्य अनेक उपकरण व यंत्र आदि ।

पौर्वात्य चित्रकला संसार के माहिर चित्रकारों को छोड़कर कम ही लोग इस सचाई से वाकिफ हैं कि इटली निवासी विंची की मोनालिजा के अलावा एक भारतीय मोनालिजा भी रही है । सबसे अहम बात यह है कि भारतीय मोनालिजा वास्तविक जीवन से गुजरकर चित्रकला-जगत में अमर हुई । भारतीय मोनालिजा के जन्म की चर्चा से कहीं ज्यादा दिलचस्प है हुस्न-ओ-शबाब के उस माहताब की कहानी, सांचे में ढले जिसके नूरानी पैकर ने भारतीय मोनालिजा का रूप धारण किया था ।

तीन रुपये में मोल लिया अनमोल हीरा

जयपुर राज्य के लिवाण प्रदेश के कछवाहा राजवंश के राजा आनंदराम की एक पुत्री थी बांकावती । उसके वंशज भगवानदास को सम्राट अकबर ने उनकी शूरवीरता के कारण 'बांका' उपाधि प्रदान की थी । तभी से यह विशेषण उस कुल की पहचान-सी बन गया था । पुरुषों के नाम के साथ बांकावत और स्त्रियों के नाम के साथ बांकावती प्रयोग होने लगा । सन् १७०३ के लगभग जन्मी उस राजकन्या का विवाह किशनगढ़ के राजा राजसिंह के साथ सन् १७२१ में हुआ तो वह रानी बांकावती कहलायी जाने लगीं ।

किशनगढ़ के राठौड़ वंशीय राजघराने में कृष्ण-भक्ति के साथ-साथ काव्य-प्रेम भी एक परंपरागत संस्कार रूप में फलता-फूलता रहा है । इस राजवंश के कई राजा खुद कवि और कवियों के आश्रयदाता रहे और अनेक रानियां व राजकुमारियां भी काव्य रचना में निपुण रहीं । रानी बांकावती भी कवयित्री थीं और कृष्ण की

अनन्य उपासिका भी । भागवत के प्रति विशेष अनुराग होने के कारण उन्होंने उसका संपूर्ण छंदोबद्ध अनुवाद, 'ब्रजदासी' उपनाम चुनकर किया था । मध्यकालीन हिंदी कवयित्रियों में रानी बांकावती और उनके 'ब्रजदासी भागवत' का अपना एक स्थान है ।

किशनगढ़ राज्य के छठे उत्तराधिकारी थे राजा सावंत सिंह । सन् १७४८ में किशनगढ़ की गद्दी पर बैठकर शासन की बागडोर हाथ में ली । हिंदी, फारसी, संस्कृत के अच्छे ज्ञाता सावंत सिंह स्वभाव से बेहद रसिक, श्रृंगारप्रिय और भावुक थे । कला-मर्मज्ञ, कवि तथा चित्रकार भी । कुल मिलाकर उनकी शख्सियत अनेक प्रतिभाओं का पुंज़ भी थी । जीवन शैली रसात्मक । प्रजा-वत्सलता के कारण उनका बहुत सम्मान था । बल्लभ संप्रदाय द्वारा प्रशस्त पुष्टिमार्ग के अनुयायी राजा सावंत सिंह की विमाता थीं रानी बांकावती जी । शासन और जीवन सब कुछ सुचारू रूप से चल रहा था, तभी एक हसीन हलचल ने उनके जीवन में कयामत की शुरुआत कर दी ।

यह वह जमाना था, जब दिल्ली के मुगलिया तख्त पर रंगीन मिजाज बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला आसीन था । उसे डांवाडोल होते मुगल-साम्राज्य की चिंता से ज्यादा नृत्य, गान, काव्य आदि में गहरी दिलचस्पी थी । उसी में उसके प्राण रमते थे । रानी बांकावती दिल्ली-दरबार तक पहुंची तो किसी आवश्यक राज-काज से थीं, पर संयोग कुछ ऐसा घटा कि रानी बांकावती की आंखों में रंगीले बादशाह के दरबार की एक कमसिन गायिका से निगाह न हट सकी । उसकी भजन-गायकी सुनकर तो मानो वे अपनी सुध-बुध भूल गयीं । तय कर लिया कि इसे किसी भी कीमत पर, साथ लेकर ही वापस लौटना है । गायिका बेशक गजब की थी, पर थी तो अदना बांदी ही । केवल तीन रुपये में रानी बांकावती ने अनमोल हीरा खरीद लिया । मनचाही मुराद पाकर खुशी-खुशी किशनगढ़

विंची की इटैलियन मोनालिजा जहां सारी दुनिया में प्रसिद्ध है, वहां इंडियन मोनालिजा अपने ही घर-आंगन में गुमनाम रह गयी । कितने लोग जानते होंगे कि विंची की कल्पनाजन्य मोनालिजा के समकक्ष स्थान पाने योग्य एक वास्तविक मोनालिजा भारत में जन्मी, रही और बसी ।

लौटीं और उस नयी-नवेली को अपनी निजी सेविका के रूप में ड्योढ़ी की शोभा बना लिया ।

यह ऐसा समय था जब राजस्थानी रियासतें और राजघराने पूर्वज़ों से चली आती शूर-वीरता की आन-बान बरकरार रखते हुए कला, संस्कृति, नृत्य, संगीत व काव्य-साहित्य के प्रेमी और संरक्षक भी होते थे । एक ओर जहां उनकी अंगुलियां तलवारों पर कसी रहने की आदी थीं तो दूसरी ओर अंतःपुर अथवा रंगमहलों में नित्य सजती रंगीन महफिलों में सतरंगी चूनरों

और मरमरी जिस्मों पर फिसलती निगाहें मखमूर रहती थीं । हर राजा, रावल या ठिकानेदार की अपनी एक अलग शान, खास पहचान और महफिल का एक खास अंदाज होता था । दिन गुजरते थे, रियासती राज-काज की दम न मारने देती व्यस्तता और गंभीरता में । शामें गुजरती थीं रतनारे नयनोंवाली चंद्रमुखियों की आंखों से ढलती सुरा उनके सुरों का छककर पान करने में । सुनहले-रूपहले परदोंवाली जनाना ड्यौढ़ियों के भी बड़े कातिल जलवे और ऊंचे ठाठ रहते थे ।

जो सलीम न कर सका, सावंत ने कर दिखाया

किंतु यह चंद्रवदनी मृगलोचनी जो दिल्ली के रंगीले बादशाह के दरबार से तीन रुपये में खरीदी गयी थी । उसकी बात कुछ और ही थी । जैसे सितारों में चढ़ती चंद्रकला । कमसिनी में भी यह नाजनीं अपने-आप में रूप, गुण और सुरों का बेशकीमती खजाना थी । कृष्ण-भक्ति के रस से सराबोर कितने ही पद उसे कंठस्थ थे । तन्मय होकर गाती तो दरो-दीवार तक जैसे झूमने लगते । दुल्हन की तरह सजी रहने के कारण राजा सावंत सिंह उसे 'बनी' पुकारते थे ।

इधर कृष्ण-भक्त राजा सावंत सिंह परम रसिक, कवि और भावुक व्यक्ति । उधर आहिस्ता-आहिस्ता शबाब की सीढ़ियां चढ़ती बनी ठनी ।

सावंत सिंह का विवाह बहुत पहले सन् १७२० में रियासत भावनगर के राजा जसवंत सिंह की सुंदर-सुशील पुत्री के साथ हो चुका था । हसीन इत्तिफाक व इनकिलाब ने यह हालत कर दी कि सावंत सिंह का मन-पंछी किसी और तरफ तनिक भी न जाकर सिर्फ बनी ठनी के सतरंगे आंचल से लिपटने के लिए छटपटाने लगा । बनी ठनी की आंखों में भी यही प्यास थी । लोक-लाज, मर्यादा, प्रतिष्ठा, सत्ता और गद्दी की तनिक भी परवाह न कर वे अपनी हृदयेश्वरी बनी ठनी को अपनाने के लिए व्याकुल थे ।

इतिहास मानो एक बार फिर सलीम और अनारकली की दास्ताने इश्क दोहराने के लिए उद्यत हो उठा । कहां एक प्रतिष्ठित, सम्मानित राजा और कहां एक बांदी जो तीन रुपल्ली में मोल आयी थी । दोनों का संयोग भला किसे भाता, कैसे सुहाता । फूटी आंखों भी न देखा जाता । फिर भी सलीम से जो नहीं हो सका, सावंत ने कर दिखाया । प्रियतम और प्रिया का शाश्वत प्रणय-सूत्र तो भला कैसे टूट सकता था ? गृहस्थ-जीवन अवश्य छिन्न-भिन्न हो गया । नित्य के गृह-कलह, तिरस्कार, हर प्रकार के आघातों, भितरघातों के कारण राजा सावंत सिंह का मन विरक्ति से ऐसा भर गया कि सन् १७५७ में उन्होंने राज-पाट त्याग दिया और अपनी प्रिया बनी ठनी के साथ, किशनगढ़ छोड़कर सीधे वृंदावन की राह ली । कृष्ण-प्रेमी तो दोनों थे ही । अब कृष्ण के धाम आ बसे । सावंत सिंह अब कोई राजा नहीं 'नागरीदास' उपनामी कवि थे और उनकी प्रिया बनी ठनी का उपनाम था— 'रसिक विहारी' । कवि और कविता, राग और रागिनी को एकाकार होने के लिए न किसी पाणिग्रहण की आवश्यकता थी, न भांवरों की जरूरत । नागरीदास जी ने अनेक यात्राएं कीं, कई भ्रमण किये । बनी ठनी उनके

साथ छाया की भांति रहीं । भ्रमर की उन्मुक्त चेष्टाएं कलिका के जीवन में मुसकान भरकर सौरभ तो कब से बिखेरती आ रही थी, अब तो उसकी प्रतिभा के निरंतर स्पर्श से कलिका को अपनी गहनतम भावनाओं को अभिव्यक्त करने की कलात्मक क्षमता भी प्राप्त हो गयी ।

वृंदावन में इस प्रणयी-युगल को प्रेम-सुधा का छककर पान करते हुए अभी छह वर्ष ही गुजरे थे कि विधाता की भृकुटि पर कुटिलता से बल पड़ने लगे । सन् १७६३ में एक दिन वह कवयित्री, वह अप्रतिम गायिका, वह प्रेमदीवानी मृत्यु की गोद में हमेशा के लिए सो गयी । नागरीदासजी पर वज्रपात हो गया । अब उनके लिए इस संसार में रहने का कोई अर्थ ही नहीं रह गया था । जैसे-तैसे एक वर्ष गुजर सका । सन् १७६४ में वे भी इस लोक से प्रयाण कर अपनी प्रिया की आत्मा से जा मिले ।

किशनगढ़-शैली की श्रेष्ठतम कमनीयता

रियासत किशनगढ़ के राज दरबार द्वारा पोषित माहिर चित्रकारों ने चित्रकला की राजपूत शैली के समानांतर जिस शैली को विकसित किया उसने किशनगढ़ कलम या किशनगढ़-शैली के नाम से अपना स्थान बनाया और लोकप्रियता पायी । उस शैली को उन्नत व समृद्ध करने में राजा सावंत सिंह का भी भरपूर योगदान रहा । क्योंकि वे एक निपुण चित्रकार भी थे । अतः उन्होंने अपनी कविताओं की तरह चित्र-रचनाओं में भी अपनी और प्रियतमा बनी ठनी की उद्दाम भावनाओं तथा भाव-भंगिमाओं को राधा और कृष्ण के रूप में चित्रित किया । इस कला-कर्म में उनका दाहिना हाथ बनकर रहा उनके दरबार का प्रिय चित्रकार



निहालचंद । उसने राधा रूपी बनी ठनी की छवियों में अपनी कला-साधना से मानो रूह फूंक दी ।

बनी ठनी की छवि को इसी कसौटी पर परखा और खरी उतरने के बाद ही किशनगढ़ कलम की श्रेष्ठतम कलाकृति स्वीकार किया गया । यह कलाकृति सन् १७५० में तैयार हुई थी । कला-संसार में वह 'बनी ठनीजी की छवि' नाम से प्रसिद्धि के शिखर पर विराजमान है । वारांगना-वर्ग की एक दरबारी वारवधू को कवयित्री के रूप में हमने उसकी समाधि बनाकर याद रखा । कला-जगत में उसे भारत की मोनालिजा का दरजा मिला । उसकी यह शान और सम्मान अपनी जगह है । किंतु विंची की इटैलियन मोनालिजा जहां सारी दुनिया में प्रसिद्ध है, वहां इंडियन मोनालिजा अपने ही घर-आंगन में गुमनाम रह गयी । कितने लोग जानते होंगे कि विंची की कल्पनाजन्य मोनालिजा के समकक्ष स्थान पाने योग्य एक वास्तविक मोनालिजा भारत में जन्मी, रही और बसी, और आज वह कहां चिरनिद्रा में सो रही है । कैसी विडंबना ?

—१० राज होटल,
पुल चमेली, अम्बाला छावनी-१३३००१



● डॉ. सतीश मलिक

नीचा देखना पड़ता है

एस. एस. राजपूत, कैलारंस (म. प्र.) : तीस वर्षीय शासकीय सेवारत शिक्षक हूं । दस वर्ष पूर्व मां-बाप ने बिना देखे शादी कर दी । पत्नी आकर्षक नहीं, साथ ही क्रूर भी है । पत्नी को बहुत समझाने पर भी, उसकी समझ में नहीं आता । इसके कारण मुझे लोगों के सामने नीचा देखना पड़ता है । अकेले में रोता भी रहता हूं । मैं क्या करूं ?

आपकी पत्नी की मानसिक स्थिति की जांच आवश्यक है, जिससे यह पता चल सके कि उनकी इस अवस्था का कारण क्या है ? कई बार बुद्धि कम होने के कारण ऐसी समस्या उत्पन्न हो सकती है । या फिर कोई मानसिक रोग भी हो सकता है । इसकी चिकित्सा संभव है । यदि ऐसा वह जानबूझकर स्वस्थ होकर कर रही है तब प्रेमपूर्वक सूझ-बूझ के साथ उसके व्यवहार को बदलना होगा ।

सबसे माफी मांगती है

रमा, भगवानपुर : मेरी बेटी बीस वर्ष की है और मेधावी है । छह माह पूर्व उसका एक लड़के के प्रति आकर्षण हुआ । एक दिन वह लड़की के साथ लड़के के घर हमें बिना बताये जा पहुंची । बस इतनी-सी घटना से उसमें अपराध बोध की भावना आ गयी । वह सोचती है कि वह लड़का सारे शहर में उल्टी-सीधी बात मेरे बारे में फैलाएगा और इस कारण मेरे माता-पिता की बदनामी होगी । सोचते-सोचते वह कभी मुसकराने लगती है । इसके बाद उसमें अनेक मानसिक विकृतियां उभर आयीं । बताइए इसके लिए क्या उपाय है ?

आपकी बेटी बहुत ही संवेदनशील व भावुक है । वह इस समय 'स्क्रीजोफेनिया' रोग से पीड़ित है । यह रोग उसे एक घटना के पश्चात हुआ । मेरी राय में यह रोग मनो-चिकित्सा से ठीक हो सकता है । इसकी चिकित्सा की व्यवस्था हर बड़े शहर में उपलब्ध है । यदि व्यक्तिगत रूप से संपर्क करना चाहे तो हमें लिख सकती हैं ।

नाचने से डर

नथमल कसेरा, चुरू (राज.) : मैंने पांच साल पहले किसी पत्रिका में पढ़ा कि एक विख्यात अभिनेता को अधिक शराब पीने से गुरदे का रोग हो गया । इसकी चिकित्सा कराने उसे अमरीका जाना पड़ा । चिकित्सकों ने उसे कुछ माह के लिए नृत्य करने की सलाह नहीं दी । मेरे मन में डर बैठ गया है कि कहीं मुझे नाचने से गुरदे का रोग तो नहीं हो जाएगा । अब मैं शादी-ब्याह में कभी भी नहीं नाचता । कृपया कोई उपाय बतायें ।

शराब पीने से गुरदे यकृत आदि में रोग उत्पन्न हो सकते हैं । रोग उत्पन्न हो जाने के पश्चात ही चिकित्सकों ने उसे नृत्य आदि के लिए मना किया । इसका अर्थ यह कदापि

स स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा
रिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें । ---संपादक

ं कि नृत्य करने से गुरदे का रोग पैदा
ा है । नृत्य तो शारीरिक स्वास्थ्य के
ए उपयोगी है । 'सैक्स' के बारे में भी
पका भय सही नहीं है । ऐसा नहीं होता
ा आपने किखा है ।

घूरने की आदत

ंद्र कुमार, भिलाई : मैं बी. ए. अंतिम वर्ष
छात्र हूं । हमेशा प्रथम श्रेणी लाता रहा हूं ।
१९९१ में पहली बार ऐसा हुआ कि मैं हर
सान को घूरकर देखने लगा । सामनेवाला
का गलत अर्थ निकाल लेता है । तिरछी
र या घूरकर देखने की अब आदत बन गयी
अपने ऊपर नियंत्रण नहीं कर पाता हूं ।
री समस्या यह है कि पढ़ते समय सभी
र की छोटी-बड़ी आवाजों को सुनता रहता
इस कारण पढ़ाई में ध्यान कम हो गया है ।
चते-सोचते रात को दोहराता हूं कि कहीं मैं
ल न हो जाऊं ?

**पकी समस्या छह वर्ष से चल रही है ।
बीच आपने सारी परीक्षाएं प्रथम श्रेणी
ास की हैं । इसलिए आपका
गलपन का यह भय वास्तविक रूप में
ीं आएगा । आपकी समस्या को हम
 प्रकार का 'न्यूरोसिस' समझते हैं ।
पको अधिक व्यावहारिक होने और
ाई में ध्यान केंद्रित करने की कोशिश
नी चाहिए । अधिक तनाव की
स्थिति में ही आपकी समस्याएं पैदा हो
है । तनाव का सही कारण पता करने
की आवश्यकता है । तब ही निदान हो
सकता है । इसके लिए यदि स्वयं पहचान
न कर सकें तो मनोचिकित्सक से संपर्क
करें ।**

आक्रोश प्रकट नहीं करता

नरेश कुमार, दिल्ली : समस्या बड़े भाई को लेकर है । इनकी आयु २० वर्ष है । यह बचपन में अति मेधावी थे । लेकिन अब ९वीं में दो बार, दसवीं में एक बार अनुत्तीर्ण होकर घर पर ही रहने लगे । किसी से कुछ भी मन की बात नहीं बताते । पिताजी परोक्ष रूप से व्यंग्य करके पीड़ित करते हैं । मेरा भाई अपना आक्रोश प्रकट नहीं करता । चिड़चिड़ापन, रात को डरकर उठना, सरदियों में भी पसीने से तर-बतर होना और चुपचाप बैठे सोचते रहना ही आजकल वह करता है । केवल मां से ही प्यार व झगड़ा करते हैं । ऐसी स्थिति में उचित सलाह दें ।

आपका भाई इस समय मानसिक रूप से अधिक बीमार है । वह स्वयं चिकित्सा के लिए डॉक्टर के पास नहीं जाएंगे । आपके पिताजी को इसकी गंभीरता समझनी चाहिए, ताकि समय से सही उपचार हो सके । परीक्षा में एक अच्छे छात्र का अचानक अनुत्तीर्ण होना, फिर अपने में खो जाना यह सब मानसिक रोग के लक्षण हैं । शीघ्र ही मनोचिकित्सक से सलाह लें ।

●

बांस के पत्ते पर लिखा प्रेम पत्र

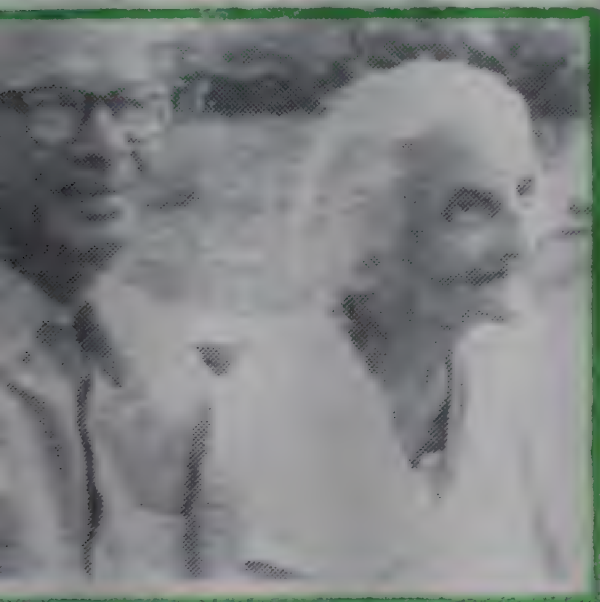
विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की नातिन तथा सुरेन्द्रनाथ टैगोर की पुत्री श्री...अनन्य खूबसूरत जयश्री टैगोर जिसने शांतिनिकेतन स्थित टैगोर आश्रम के चिल्ड्रेन होम के छात्रावास अधीक्षक के उस पुत्र से प्रेम किया, जो न केवल बदसूरत था, बल्कि ऊपर से नीचे तक काला भी । जयश्री जहां बंगाल के सबसे जाने-माने परिवार की ब्राह्मण कन्या थी, वहीं उसका प्रेमी उस समय की निम्न जाति का था । फिर भी, समाज की रूढ़ियों और विषमताओं का सामना करते हुए उन्होंने न केवल प्रेम किया, बल्कि बाद में भी आजीवन एक साथ रहे । जयश्री आज भी जीवित है, पर उनका प्रेमी अब इस दुनिया में नहीं है । प्रस्तुत है उनकी प्रेम कहानी, उन्हीं की जबानी—

प्रेम किया नहीं, हो जाता है । यह कब, कहां और किससे हो जाए— ? कहा नहीं जा सकता है ? प्रेम न उम्र देखता है न शरीर, प्रेम न ऊंच देखता है, न नीच, प्रेम प्रेम है जो कभी भी, किसी से भी, किसी स्तर पर, किसी क्षण हो जाता है । पता नहीं चलता, कब हुआ ? ऐसा क्या है कि हो जाता है । ऐसी कोई भी घटना, ऐसी कोई भी बात जो पता नहीं चलती, कब किसके दिल में घर कर जाए ? और जब यह हो जाता है, तब उसकी छटपटाहट, मिठास, सुगंध और भीनी-भीनी महक बयान करने वाले नहीं होती है ?

नब्बे साल की जयश्री बताती हैं—पता नहीं उसके मैं कब इतने करीब आ गयी । अपने प्रेमी की तसवीर को जेहन में उतारते और अतीत में खोते हुए कहतीं हैं—सन् १९२० के आसपास की बात होगी, हम लोग शांतिनिकेतन में रहते थे, लेकिन जिससे जब जुड़ना होता है,

नायास यह सब घट जाता है । एक समारोह हम लोग शांतिनिकेतन से रांची गये हुए थे । ने दिन तक शांतिनिकेतन में एक साथ रहे, यह कभी अनुभव नहीं हुआ । प्रेम का हसास हुआ रांची जाकर । वहां कुछ ऐसी बातें ौर कुछ ऐसे घटनाक्रम हुए जिसने हम दोनों के वन में भूचाल पैदा कर दिया ।

जयश्री नब्बे वर्ष की हो चुकी हैं । हाथ-पैर र्जर हैं, पर इन प्रसंगों को छेड़ते ही उनकी खों में चमक आ गयी, गाल सुर्ख लाल हो —हमारा परिवार उसके भाई की शादी में या हुआ था । हम लोग वापस उसी कार में



रहे थे । मैं कार में बैठी थी, वह कार के स आया दरवाजा खोला और अचानक मेरी द में एक खूबसूरत फूल आ गिरा । मैं चकी रह गयी । तब तक ऐसा कुछ नहीं । केवल सामान्य परिचय था । मैं अवाक गयी । उसने मुझे फूल क्यों दिया ? बताते पोपले मुंह से खिलखिला उठती —जयश्री ।

एक दूसरे घटनाक्रम को याद करते हुए ती हैं—मीनू (मालती चौधरी, जो उड़ीसा के पूर्व मुख्यमंत्री नवकृष्ण चौधरी की पत्नी व के. पी. सेन की बहन), मेरा भाई सुबीर टैगोर तथा वह और मैं रांची की कई जगहों पर घूमने गये थे । सारे लोग एक साथ एक ही कार में होते, बातें करते, खिलखिलाते, हंसते । रांची की कई जगहों में हम लोग कभी ऊंची-नीची पहाड़ियों पर चढ़ते, दौड़ते-नीचे उतरते । इधर-उधर भागते । विभिन्न प्रकार के खेल जो हम लोग आपस में उस दौरान खेल सकते थे, उन पहाड़ियों पर घूमते हुए हम लोग खेलते । एक दिन क्या हुआ कि घूमते-फिरते हम लोगों को शाम हो गयी । पहाड़ी से नीचे उतर रहे थे । मुझे लगा कि मेरा भाई मेरे साथ—मेरे बगल में चल रहा है । नीचे उतरते हुए मैंने उसे अपना भाई समझकर कसकर पकड़ लिया तथा उसे पकड़े-पकड़े ही मैं नीचे उतरी । आप कल्पना कर सकते हैं—मेरा क्या हाल हुआ होगा । जब नीचे पहुंचने पर मुझे पता चला कि वह जिसे मैं कसकर इतनी देर तक पकड़े हुए थी, वह मेरा भाई नहीं, बल्कि वह था—यानी के. पी. । मेरा तो बुरा हाल हो गया—शर्म से पानी-पानी । चेहरा रक्ताभ, हाथों में कंपन । किसी तरह अपने को संभाला ।

शायद यह वह क्षण रहा हो, जिसने हमें एक-दूसरे का बना दिया । जैसा कहा गया है कि प्रेम किया नहीं जाता—हो जाता है, वही हाल हुआ । मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था । जीवन की कब कौन-सी घड़ी आ जाए, जब युवक-युवतियों के बीच 'हो जाने' वाली घटना घटित हो जाए । मेरे साथ भी यही हुआ और शायद दूसरे प्रेमी-प्रेमिकाओं के बीच भी यही होता होगा । पता नहीं कौन-सा घटनाक्रम उनके

दिलों के तार परस्पर जोड़ दे । इस घटनाक्रम के बाद मैंने जब उससे उसका वह शर्ट मांगा कि दे दो—मैं धो देती हूं, तो पता नहीं किस शरारत में उसने वह शर्ट मुझे धोने के लिए नहीं दिया । मुझे बाद में पता चला कि उस शर्ट को उसने महीनों तक नहीं धोया और न किसी को धोने के लिए ही दिया ।

इस घटनाक्रम के कुछ दिन के बाद की बात है— उसने मुझे पत्र लिखा । वह पत्र उसने मुझे जैसे ही दिया मेरा तो पूरा शरीर सिहर उठा और मैं कांप गयी । उसका वह प्रथम प्रेम-पत्र पढ़ते ही मैं इतनी उत्तेजित और घबरा-सी गयी कि उस पत्र को पढ़ते ही मैं बाथरूम की ओर भागी और काफी उल्टी हुई । इन सब घटनाओं को याद करते हुए जयश्री रूंधे गले से बताती हैं—किसी तरह से वह दिन कटा । इसके बाद जैसे-जैसे दिन बीतते गये और उसके प्यार का रस गाढ़ा होता गया, वैसे-वैसे हम लोग साहसी हो गये । मुझमें भी बल आ गया । इसके बाद हम लोग रांची तथा शांतिनिकेतन के एकांत स्थलों में जाने लगे । उस समय किसी लड़के-लड़की का एक साथ बाग में जाना और एकांत में बैठना बहुत बड़ी बात मानी जाती थी । सबकी भौंवें यह देखकर तन जाती थी, पर हम लोगों ने किसी की परवाह नहीं की ।

अच्छी बात यह थी कि सुरेन टैगोर उसे पसंद करते थे । वह डाक सेवा में वरिष्ठ अधिकारी बने थे, पर उनकी चाची तथा घर के बुजुर्ग इस बात से क्षुब्ध थे । उन्हें हमारा जीवन-साथी के रूप में दिखना मंजूर नहीं था । सत्येंद्रनाथ टैगोर की पत्नी ज्ञाननंदिनी देवी इस बात से बेहद नाराज हुईं कि उनकी नातिन एक गैर ब्राह्मण से प्रेम कर रही है । वह भी उससे जो ऊपर से नीचे तक काला-कलूटा है । इस बात को उन्होंने अपने संस्मरण में इस तरह लिखा है, 'आमार शोनार प्रोतिमा जोले भासिये दिलो' (मेरी सोने-जैसी प्रतिमा को गंदे पानी में फेंक दिया गया) । उनकी चाची इंदिरा देवी ने भी विरोध किया और कहा कि जयश्री उस आदमी के साथ प्यार कर रही है जिसके खानदान का ही पता नहीं है !

घर में विरोध तो था ही । मिलने पर भी अब अड़चन थी । इसलिए संपर्क का माध्यम केवल पत्र ही थे । तब डाकिए को पटाया गया जो हमारे यहां पत्र देने आता था । मेरे पत्रों में लिफाफे के ऊपर विशेष प्रकार का एक चिह्न होता था जो मेरे लिए होता था । दोनों प्रेम में इतने पागल थे कि सिगरेट की कश से उसने अपने बांह में 'जे' का चिह्न बना लिया । वह निशान उसकी बांह में वर्षों तक वैसा ही बना रहा । सन् १९२० से १९२६ के बीच छह साल तक हम लोगों ने प्यार किया और घर-परिवार से संघर्ष किया । बंगाली माह फाल्गुन की चतुर्थ को हम लोग वैवाहिक बंधन में बंध गये । विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने हमारे विवाह के अवसर पर एक कविता भी लिखी थी—**'तोमादेर बिये होलो फागुनेर चौथा, अक्षय होय थाक शिंदुरेर कौथा'** (फाल्गुन की चतुर्थी को तुम्हारा विवाह हुआ, सिंदूर का यह टीका तुम्हारी मांग में हमेशा बना रहे) । जब तक वह जीवित रहे, मैंने उसके वे सारे प्रेम-पत्र संभालकर रखे जो उसने मुझे उस दौरान लिखे थे । उसके निधन के बाद मैंने उन प्रेम पत्रों में अधिकांश को जला दिया ।

प्रस्तुति : सुनीत

श्चय ही, 'कादम्बिनी' एक बेमिसाल पत्रिका है । बिछुड़े हुए प्रेमी युगलों को का इसने एक अद्वितीय रेकॉर्ड बनाया ादम्बिनी' के अक्तूबर '९२ के अंक में प्रतिम प्रेमिका का पत्र छपा था । इस पत्र ब्का ने अपने अतीत के कुछ प्रसंगों की रते हुए यह बताया था कि अपनी था में उन्होंने किसी से प्रेम किया था और मोहब्बत की टीस वह अब भी महसूस हैं । अंत में उन्होंने संपादक से यह किया था कि वह किसी तरह उनके का पता लगायें जो 'कादम्बिनी' के एक भी हैं ।

इस पत्र को एक सांस में पढ़ गया था, कि इसका संबंध सीधे मुझसे था विचलित हो उठा । मैं आश्चर्यचकित यह सोचने लगा कि क्या आज भी ऐसी ाएं हैं जो अपनी मोहब्बत की मूर्ति को मन-मंदिर में प्रतिष्ठापित करके पांच तक साधना करती रह सकती हैं कि कभी तो उनके महबूब का दीदार होगा

रा अतीत मेरी आंखों के सामने फ्लैश बैक ह घूम गया—

जादी मिलने के लगभग सत्तरह-अट्ठारह बाद रहमत हुसैन नामक एक निहायत और सुदर्शन, आकर्षक इनसान से मेरी थी । यह भेंट धीरे-धीरे अभिन्न मित्रता न गयी । वे पश्चिमी पाकिस्तान के पंजाबी ान थे जो देश के बंटवारे के समय र्थी बनकर, जी हां शरणार्थी बनकर, ाये थे । विख्यात आजाद हिंद फौज के

सत्यकथा

बिछुड़े हुए प्रेमी युगलों को मिलाया 'कादम्बिनी' ने

● अशोक

एक जनरल उनके रिश्तेदार थे । रहमत के वालिद अविभाजित पंजाब कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे, जिनकी लीगी मुसलमानों ने हत्या कर दी थी । उनकी बेगम अमीना कानपुर की ही बेटी थी इसलिए पनाह लेने दोनों पति-पत्नी कानपुर ही पहुंचे थे । यह बात अलग है कि अमीना जब इधर आयीं, तब उनके माता-पिता पाकिस्तान की तरफ मुड़ गये थे ।

एक दिन रहमत सिविल लाइंस स्थित अपने घर ले गये । अपनी बेगम से उन्होंने मेरा परिचय कराया जो हमारे बैठने के स्थान बरामदे से लगे कमरे में परदा करने के लिहाज से चिक से लगी खड़ी थीं । मैंने खड़े होकर बाअदब उन्हें आदाब अर्ज किया जिसके उत्तर में अंदर

से ही घुंघरुओं जैसी खनकती आवाज आयीं, 'नमस्ते, पंडितजी ।' वाह, ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कि आवाज के साथ ही भीनी-भीनी खुशबू का एक झोंका भी आया जो सारे वातावरण को नैसर्गिक बना गया । बेगम साहिबा बाहर फिर भी नहीं आयीं, उस चिक की आड़ में खड़ी रहीं, हमारी बातें सुनती रहीं । ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कि कोई मंद-मंद संगीत की स्वरलहरियां बिखेर रहा है । कभी तेज ठंडी हवाओं के झोंके भी आते हैं तो उस बीच बिजली भी कौंधती है जिसमें एक सुंदर, गुलनारी चेहरा भी चमकता है । चिलमन के पीछे एक छरहरा बदन, शायद सलवार-कुरते में खड़ा था, और जब मैं रहमत की बातों के बीच से चोर निगाहों से परदा करके देखने की कोशिश करता, तब हंसी की एक खनक गूंजती और मेरी चोरी पकड़ी जाती । चिक के परदे से लगकर खड़े रहना मुझे आज भी याद है । वह चिलमन से लगी खड़ी रहीं, साफ छिपी भी नहीं, सामने आयीं भी नहीं ।

रहमत का अनुरोध था कि मैं उनकी बेगम को हिंदी पढ़ाऊं क्योंकि यह उनका शौक है । साहित्य में उनकी रुचि है । उर्दू में लिखती भी हैं । मैं एकाएक नर्वस हो गया । पसीना आ गया । सोचने लगा कि ये अभी तो परदे में हैं तब यह आलम है कि मेरी नजरें नहीं उठ पा रही हैं और अगर वह बाहर आ गयीं, वैसे उम्मीद तो नहीं थी कि मुसलिम रिवाज छोड़कर गैर मर्द के सामने बाहर आएंगी, तो मेरा क्या हाल होगा ?

मैंने कहा, 'ठीक है, मैं अपने एक पत्रकार मित्र की पत्नी से कहूंगा कि वह जरूर आ जाया करेंगी ।' इस पर अंदर से एकदम विरोधी स्वर उठा, 'नहीं, नहीं । उस्तानियों से पढ़ने का मुझे शौक नहीं है । मैं अदबी (साहित्यिक) माहौल में ही कुछ सीखना-समझना चाहती हूं ।'

रहमत ने भी कहा, 'अमां, पंडित, तुम्हीं कुछ वक्त निकाल लिया करो । मुझे ऐसे ही भाई मानते हो ?'

दूसरे दिन जब मैं उनकी कोठी पर गया, तब उसी बरामदे में अमीना बेगम ने चिलमन से स्वयं बाहर आकर मेरा स्वागत किया । 'उफ', मेरे अंदर-ही-अंदर एक चीख निकली । इस बला का यह हुस्न ! अब मैंने जी भर कर उन्हें देखा । एकदम गोरा वर्ण, चेहरे पर साफ झलकती गुलनारी आभा, लंबी नाक, उसमें गोल हीरा जड़ी बड़ी-सी कील, ओंठों पर लिपिस्टिक बिना लाली, एक दमकता चेहरा, दिलकश मुसकान, फिर भी हर कोई अपनी नजर टिका नहीं सकता था ।

कोठी के अंदर पहुंचकर माहौल देखा । कमरे से होकर दक्षिण दिशा में एक और बरामदा था जिसमें एक मेज और उसके दोनों तरफ आमने-सामने दो कुरसियां लगी थीं । छोटा-सा बाग था जिसमें चारपाई डाले शरीफन बुआ कहलानेवाली नौकरानी धूप सेक रही थीं । समझ गया, घर में और कोई नहीं है । शरीफन को चौकीदारी के लिए नजदीक ही रखा गया है । फिर जब गरमी का मौसम आ गया, तब मेज-कुरसी कमरे में आ गयीं । जिस तरह मैं बाहर खौफजदा रहा करता था वैसा ही अंदर कमरे में भी आकर बना रहा, हां कुछ बेतकल्लुफी जरूर बढ़ गयी थी । यहीं धीरे-धीरे मैं यह कल्पना करके ही खुश रहने लगा था कि शायद उनसे मेरी मोहब्बत परवान

जाए और एक दिन वह घटना हो गयी कि की मैंने कल्पना भी नहीं की थी। रोज की दरवाजे पर दस्तक देकर जैसे ही मैं कमरे खिल हुआ कि एक तरफ ओट से लकर अमीना महबूबा ने मुझे अपने गाश में जकड़ कर मेरे ओंठों से होते हुए मेरे में प्रवेश कर लिया। मैं डर तो जरूर गया केंतु मेरी बांहों ने भी जब उन्हें पाश में बांधा खुशी में झूम उठा कि आज मेरी मोहब्बत न चढ़ गयी।

इस तरह हमारे जो संबंध बने उनमें उनकी वृद्धि भी हुई जिससे, उनके ही शब्दों में, "जीवन जीने का सहारा मिल गया।

हालात इस तरह बदले कि मेरा उस शहर ना संभव नहीं हो सका। मेरी ही कुटिलता रि-धीरे मिलना-जुलना बंद हो गया तथा लगभग ३०-३५ वर्ष बाद 'कादम्बिनी' ने दोबारा मिलाया। तब तक रहमत भाई की हो चुकी थी। पुत्र बड़ा होकर बाल-बच्चोंवाला हो चुका था। बेटी का भी घर बस गया था।

एक पत्र में उन्होंने लिखा था, 'मेरे सिर की कसम, एक वायदा करो। मेरी मौत की खबर सुनो तो किसी भी तरह मेरी मैयत पर पहुंच जरूर जाना, वरना मेरी रूह भटकती रहेगी, तुमको परेशान करेगी।' आखिर वह दिन आ ही गया। बुलावा आया, उनका मुझे, और उन्हें ऊपर से। हैदराबाद में मेरे पहुंचने के तीसरे दिन मेरी गोद में सिर रखकर उन्होंने सबको अलविदा कह दिया।

अमीना का व्यक्तित्व बहुत पवित्र था। पुनर्मिलन के बाद पहली भेंट में कही उनकी वह बात मुझे याद आ गयी; 'आपको पाने के तो मैं काबिल ही नहीं थी। मैंने जैसे फलक से तारे तोड़ लाने की कोशिश की थी। अगर कई जनम होने की बात सच है तो अगले जनम में अल्लाह मेरी मुराद जरूर पूरी करेगा।' और इस तरह वह मुझे अपने सामने बौना बनाकर मुझे छोड़कर चली गयीं। ●

प्रयास

● श्रीमती एम.

ह दृश्य वर्षों बाद भी स्मृतिपटल में उसी तरह अंकित है, जैसे कॉलेज के प्रथम ह में था। वर्षों पहले लाइफ साइंसेज के नाल की क्लास थी। लेक्चर थियेटर नये छात्राओं से भरा था। प्रोफेसर ने पोजीशन उच्च अंक पाने वालों का परिचय मांगा। उन दिनों लाइफ साइंसेज में गिने-चुने ही प्रथम श्रेणी पाते थे। जब पीछे मुड़कर देखा, तब मेरे साथ कुछ अन्य छात्र भी खड़े थे। उन छात्रों में से एक बुद्धिदीप्त चेहरा भी था। धीरे-धीरे अन्य सभी चेहरे धूमिल पड़ते गये, परंतु वह मेरे अंतःकरण में तब से हमेशा के लिए ही रह गये। चाहते हुए भी उनसे बहुत कम बातें होती थीं, क्योंकि तब सह-शिक्षा (को-एज्यूकेशन) में भी लड़कियों का झुंड अलग ही रहा करता था।

उस वर्ष प्रथम अप्रैल को मुझे 'बेवकूफ'

बनाते हुए एक सुंदर-सा कार्ड आया। नीचे नाम देखा तो कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध रह गयी। ये तो कक्षा के उस 'गंभीर, जीनियस' का कार्ड था जो पहले से ही मेरे हृदय में स्थान ग्रहण कर चुका था। छपे कार्ड में बहुत कुछ लिखा था। अंत में 'लॉटस ऑव लव' हाथ से लिखा था। रातभर इसी उलझन में मैं सो न सकी कि ये 'लव' मुझे पहली अप्रैल को बेवकूफ बनाने के उद्देश्य से लिखा गया है या कहीं प्रेम की धारा बह रही है। छोटी उम्र के कारण शायद मेरे विचार परिपक्व न थे। इसीलिए मेरे क्लास के सभी मुझे 'बच्ची' कहते थे। फिर भी, उत्तर में उन्हें बेवकूफ बनाते हुए एक पत्र लिखा। नीचे ढेर सारा प्यार भी लिखा। परंतु न जाने किस झिझक और डर ने मुझे घेर लिया और वह पत्र कभी पोस्ट न कर पायी।

मेरी एक सहेली के घर के लोग शायद उनके लोकल गार्जियन थे और आते-जाते थे। जब भी वह मिलती तो कहती, "क्या बात है, वह तो तुम्हारे विषय में हमेशा बहुत पूछता रहता है?" मैं पुलकित होकर भी दुखी हो जाती, सोचती, मेरे विषय में पूछताछ किसी अन्य से क्यों? मुझे भी बहुत कुछ जानने का मन करता पर चुप ही रहती थी। कुछ लड़कियां मिलकर वनस्पति संग्रह के लिए एक बार दूर गये थे। वहां मनसा देवी का जागृत मंदिर भी था। बहुत लोग वहां मन्नत मांगने दूर-दूर से जाते थे। पहली बार उन्हें पाने के लिए मैंने मन्नत मांगी। परंतु शायद ईश्वर को मेरी आवाज सुनायी न दी। समय शीघ्र ही बीत गया। वह मेडिकल लाइन में चले गये। मैंने एम. एस-सी. व रिसर्च लाइन को चुना। सोचा था शायद यह मोह क्षणिक है। अहसास तब हुआ जब उसके बाद किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा कुछ अन्य लोगों ने मुझसे विवाह का प्रस्ताव रखा।

मैंने रिसर्च इंस्टीट्यूट में पी. एच-डी आरंभ कर दी। इसी बीच घर के लोगों ने मेरी शादी भी तय कर दी।

एक दिन मैं लिफ्ट के पास खड़ी थी कि किसी ने मुझे आवाज दी। देखा तो मेरी वही सहेली थी। कुछ लाइब्रेरी वर्क के सिलसिले में वहां आयी थी। वर्षों बाद उससे मिलकर अच्छा लगा। उसे अपने होस्टल रूम में ही ठहरा लिया। डिनर के बाद गप-शप शुरू हुई। उसी से पता लगा कि वह अमरीका चले गये हैं। कुछ समय पूर्व ही एक बार भारत आए थे और बदरी केदार के दर्शन करने गये थे...आदि। अचानक उसने पूछ लिया, "क्या वह तुम्हें पसंद नहीं है? क्यों नहीं उन्हें पत्र लिखती? वह तो तुम्हारे विषय में पूछ रहे थे। हे ईश्वर! जिसके विवाह की तिथि निश्चित कर दी तुमने, उसकी ये परीक्षा क्यों?

अवस्थीजी, कुछ समय पूर्व आपकी प्रेरणा तथा यू. एस. ए. के डॉ. बी. एस. तथा डॉ. एल. डी. की सहायता से उनका पता मिला। अपने मनोभाव को छुपाकर केवल औपचारिक पत्र लिखे थे। अमरीका से रिसर्च, सर्विस आदि की सूचना मांगी थी। भाग्य की विडंबना कहूं, उनका उत्तर नहीं आया।

किंग ब्रूस के प्रयास अंत में सफल रहे। साथ ही उनका वह नामहीन मकड़ा सफलता के सोपान में अमर हो गया। हम कहां उनमें से हैं? साधना तो कर ली, पर अनुभूति की पराकाष्ठा उन तक पहुंचाने में क्या कभी सफल भी हो पाऊंगी? फिर भी कामना करती हूं कि इस अधूरे शीर्षक का प्रयास सम्पन्न हो। हे अंशुमाल।

— बी-४७, सेल कॉलोनी
पो. धुरवा, रांची-८३४००४

नज़रें झुकाकर प्रेम की अभिव्यक्ति

पारदर्शी : महेंद्र मोदी





इशारों इशारों में

पारदर्शी : ज्ञान दीक्षित





राजस्थान को रंगीला राजस्थान कहकर पुकारा जाता है जो ठीक ही है । इस प्रदेश में रंगों के लिए जो आकर्षण है, मोह और लगाव है वह निराला ही है । नर और नारी रंग बिरंगे वस्त्रों से अपने को सजाने-संवारने की शौकीन हैं । बिना दांतों के पोपले मुंह की स्त्री भी लाल, पीले रंग की ओढणी ओढ़ अपने को निखारती है। आभूषण से श्रृंगार करने में पीछे नहीं रहती ।

राजस्थान का पारंपरिक घाघरा ओढ़नी



सभी पारदर्शी : लियाकत अली भट्टी

प्रत्येक पर्व और त्योहार के अपने रंग और
ा हैं । जब आकाश में बादल छा जाते हैं,
र्षा की नन्हीं-नन्हीं बूंदें रिमझिम करके बरसती
उस समय पुरुष लहरिये के साफे और
पगड़ियां अपने सिर पर बांधते हैं । महिलाएं
ट से लहरिये की ओढनी ओढ सिर पर घड़ा
ब गीत गाती हुई कुएं पर पानी भरने निकल
ती हैं । लहरिये में कितने रंग ? उतने ही
तने वर्षा ऋतु में नभ में हर क्षण बदलते
। अनेक रंग, अनेक प्रकार, अनेक
जाइनें । बादल से गिरती पानी की फुहार पर
ज की तिरछी किरणें पड़ने पर बादलों में
गा इंद्र धनुष खिंच जाता है । ठीक उन्हीं रंगों
ओढनी रंगी जाती है, जिसे समंदर
र-लहरिया कहते हैं । हरेक राज्य के
कीन, रंगीन मिजाज के राजाओं ने अपनी
द के रंगों का सामंजस्य कर डिजाइन
ये । वे लहरिये उन राजाओं के नाम से जाने
ते हैं, सज्जनशाही, भोपालशाही, राजाशाही
रा । इस पिछले दशक में जोधपुर के
राज गजसिंह के नाम पर गजशाही लहरिया
ा है, जो आजकल बड़े फैशन में है ।
यपुर के महाराज अरविंदसिंह मेवाड़ ने पांच
के संयोजन के लहरिया की डिजाइन
ाली, यह अरविंदशाही लहरिया कहलाता
ये लहरिये और मोठड़े कितने रंगों में हैं,
की संख्या की जानकारी नहीं ।

सावन के महीने में जब खूब बरसात होती
चारों ओर हरियाली छा जाती है, तब
याली अमावस्या मनायी जाती है । खेतों में,
ों में गोठ, पिकनिक, नाच-गाने और झूलों
आनंद लिया जाता है, तब हरे रंग के वस्त्र

रंगीला राजस्थान

• लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत

राजस्थान को रंगीला राजस्थान कहकर पुकारा जाता है जो ठीक ही है । इस प्रदेश में रंगों के लिए जो आकर्षण है, मोह और लगाव है वह निराला ही है । नर और नारी रंग-बिरंगे वस्त्रों से अपने को सजाने-संवारने की शौकीन हैं । बिना दांतों के पोपले मुंह की स्त्री भी लाल, पीले रंग की ओढणी ओढ़ अपने को निरखती है ।

पहने नारियां झूले पर चढ़ जाती हैं । दिवाली की अमावस्या की घोर काली रात्रि । दीपक जलाकर उस काली रात्रि को स्वर्णिम रात्रि में बदल दिया जाता है । राजस्थान की महिलाएं भी अपने वस्त्रों की इससे होड़ करने में नहीं चूकतीं । उस रात्रि को जयपुर राजघराने की महिलाएं काजली रंग की पोशाक पहनती हैं,

जिस पर सुनहरी गोटा किनारी, दमकते सलमा-सितारों का सुनहरी प्रकाश काजली रंग पर फैल जाता है ।

शरद पूर्णिमा की रात

वर्षा ऋतु समाप्त होने के बाद निर्मल और साफ आकाश में पूर्ण चंद्रमा उदय होता है, आश्विन महीने की पूर्णिमा का दिन । शरद पूर्णिमा की रात्रि को बड़े उल्लास और आनंद से मनाया जाता है । देवालय की मूर्तियों को भी खुली छत पर विराजमान किया जाता है । इस दिन यहां की रमणियां चंद्र की ज्योत्सना में अपने आप को घुला-मिला देने का पूर्ण प्रयत्न करती हैं । हाथी दांत के रंग के वस्त्र पहनेंगी, रूपहली गोटा की ओढनी ओढ़ेंगी, अपने सोने के आभूषण उतारकर मोती या चांदी के आभूषणों से अपने को सजाएंगीं । पूर्ण चंद्र की किरणों में खुली छत पर बैठकर गाएंगी, भोजन करेंगी, भोजन में भी व्यंजन सफेद रंग के होंगे । मिठाई पर चांदी के वर्क लगे होंगे । खीर पकाकर खाएंगी-खिलाएंगी । बैठने के लिए भी सफेद रंग की चांदनी बिछा दी जाएगी । चांद की रूपहली रोशनी में घूमर लेती रूपसियों की लहराती उजली ओढ़नियां चंद्र किरणों में समा जाती हैं ।

बसंत आया तो फौरन बसंती रंग के परिधान, दुपट्टे, साफे, पगड़ी धारण कर बसंत के आगमन का स्वागत करने लगते हैं । पीला आंगन और उसमें गहरे लाल रंग के छींटे । बाहर खेतों में पीले-पीले सरसों के फूलों की बहार आयी हुई है । बसंती घाघरा और लूगड़ा पहन क्या वह सरसों के खेत का वह एक अंग दिखायी नहीं देगी ?

हरेक की अलग पहचान

जच्चा की पोशाक का डिजायन और रंगों का सामंजस्य अपने ही प्रकार का होता है । इसे पीला कहते हैं, पीले रंग की ओढनी का बोर्डर लाल सुरख होता है, बीच-बीच में लाल सुरख रंग के बड़े-बड़े गोल कलायुक्त डिजाइन बने होते हैं । कोई अनजान आदमी भी पीले की पोशाक में किसी महिला को देखकर एकदम समझ जाएगा, इसे पुत्र की माता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । इसी प्रकार बांह में और कलाई में लाल रंग की चूड़ियां बता देती हैं कि यह नवयौवना नव-विवाहित है । वक्षास्थल की कंचुकी की सिलाई में यहां की नारी अपनी पूरी दक्षता काम में लाती है । कई रंगों के टुकड़े जोड़कर रंगों की मेचिंग, रंगों का कोंस्ट्रास्ट, रूपहरी सुनहरी गोटे का जाल बड़ी सुघड़ता से किया जाता है । कंचुकी के रंग और बनावट से पता लग जाता है कि इसे पहननेवाली क्वारी है, विवाहिता है या विधवा ।

राज-परिवारों के अपने रंग होते हैं, जो विवाह के समय, मुख्य पर्व पर या विशेष अवसरों पर उसी रंग के परिधान पहने जाते हैं । जोधपुर महाराजा के विवाह के अवसर पर जो साफा बांधा जाता है, वह केसरिया रंग का होता है । शुद्ध कश्मीरी केसर को पीसकर घोलकर उसमें दस गज लंबा साफा रंगा जाता है । रंग के साथ केसर की सुगंध वातावरण को मनोरम बना देती है ।

चूंदड़ी में रंगों का जो समायोजन किया जाता है, उसका कोई मुकाबला नहीं । चूंदड़ी की एक-एक बूंदी में कला, दक्षता, बारीकी और सुघड़ता के दर्शन होते हैं । हजारों बुंदियों के

जन से एक साफा या एक ओढनी तैयार होती
। एक-एक बुंदी को धागे से बांध विभिन्न रंगों
रंगी जाती है । एक महिला कई सप्ताहों की
हनत के बाद ही एक ओढनी के बंधेज को
रा कर पाती है । इन बुंदियों से कई प्रकार के
डजाइन बनाती हैं, और वह भी कई रंगों में ।
ौथाई इंच भी वस्त्र की जमीन खाली नहीं
हती । सबसे बढ़िया चूंदड़ी होती है— 'बावन
ाग' डिजाइन । इसमें बावन डिजाइन होते हैं ।
ुकुमारता, सौंदर्य और कला से परिपूर्ण ।



चूंदड़ी सौभाग्य का प्रतीक है, कला का स्वरूप
और श्रम का वरदान । बहन के संतान के
विवाह पर भाई जाकर बहन को चूंदड़ी ओढाता
है । विवाह-संस्कारों में भाई के द्वारा बहन को
चूंदड़ी ओढाना भी महत्त्वपूर्ण संस्कार है । चूंदड़ी
के अनेक गीत गाये जाते हैं । बुजुर्ग लोग पुत्री
अथवा पुत्रवधु को आशीर्वाद देते हैं कि 'तुम्हारा
चूड़ा और चूंदड़ी अमर रहे ।' कच्छभुज,
जामनगर, जोधपुर और शेखावाटी चूंदड़ी के
बंधेज रंगने के केंद्र रहे हैं । शेखावाटी में आज
भी घरों में हजारों महिलाएं इस काम में लगी
हैं ।

राजाओं का संरक्षण

राजस्थान के राजाओं ने कला को बहुत
प्रोत्साहन दिया था, वस्त्रों की रंगाई, छपाई को
संरक्षण और बढ़ावा दिया था । जयपुर राज्य में
भी रंगाई का एक पूरा विभाग था, जिसमें अनेक
रंगरेज स्थायी रूप से कार्यरत रह प्रयोग करते
और अपना हुनर दिखाने की होड़ में लगे रहते ।
एक राज्य की दूसरे राज्य से स्पर्धा चलती ।

नये-नये तकनीक काम में लेने के प्रयास
करते । इस विभाग के पुराने रिकॉर्ड में दर्ज
विधियां, तकनीक, कार्य शैली हैरतअंगेज हैं ।
मेवाड़ राज्य में 'मलयागिरी' रंग में वस्त्र रंगे
जाते । इस रंग को बनाने और कपड़ा रंगने की
प्रक्रिया में तीन हफ्ते से अधिक लग जाते ।
चंदन की लकड़ी का बुरादा, कपूर और एक
सुगंधित जड़ी 'छाड़ छड़ीला' के मिश्रण से यह
रंग तैयार होता । साफे, पगड़ी और ओढनियां
रंगी जातीं । उन वस्त्रों में हमेशा एक खुशबू
आती रहती, जो स्थायी होती । जब वर्षा ऋतु
की पवन का झौंका आता तो उसकी शीतल,
मंद सुगंध से पूरा घर महक उठता । मेरे पास
मलयगिरी रंग की ओढनी थी । मैंने देखा
पचास वर्ष तक उसमें सुगंध आती रही । इसकी
विधि जाननेवाले अब भी कलाविज्ञ मौजूद हैं ।
इसी भांति कसूमल रंग तैयार किया जाता था ।
पलाश के फूलों से यह रंग बनता था । एक
लंबी प्रक्रिया तो थी ही साथ ही क्लिष्ट भी ।
विवाह आयोजन पर पलाश के फूलों को
गलाकर काफी मात्रा में बड़े-बड़े कड़ाह भरकर
रंग तैयार किया जाता । तब इष्ट मित्रों,
परिवारजनों, गांव के मुखियों आदि के वस्त्र रंग
लिये जाते । यह रंग बड़ा पक्का, टिकाऊ और
प्रसिद्धि प्राप्त था । पुराने घरों में दो सौ ढाई सौ
वर्ष पुराने वस्त्र पड़े हैं, उनका रंग अब तक
अपना दम रखता है ।

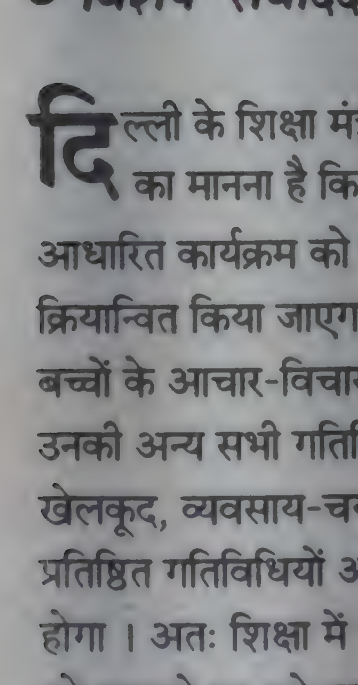
—डी-१९४ ए, जगदीश मार्ग,
बनीपार्क, जयपुर-३०२००६

मूल्य आधारित शिक्षा : एक प्रयोग

दिल्ली के शिक्षा मंत्री के रूप में डॉ. हर्षवर्द्धन राजधानी में शिक्षा के विकास तथा उसमें सुधार के प्रयासों में जोर-शोर से लगे हैं । इसके लिए उन्होंने कई कार्यक्रम बनवाये हैं और उन्हें लागू करने के लिए अध्यापकों, अभिभावकों तथा जनता का सहयोग मांगा है । वह मूल्य आधारित शिक्षा के हिमायती हैं और हाल ही वे दिल्ली के लगभग साढ़े तीन सौ स्कूलों में इसे लागू कराने में जुटे हैं । प्रस्तुत है उनके विभिन्न कार्यक्रमों पर एक दृष्टि :

● *विशेष संवाददाता द्वारा*

दिल्ली के शिक्षा मंत्री डॉ. हर्षवर्द्धन का का मानना है कि मूल्य आधारित कार्यक्रम को जब अपने पूर्ण स्वरूप में क्रियान्वित किया जाएगा, तो इसका प्रभाव बच्चों के आचार-विचार पर ही नहीं, अपितु उनकी अन्य सभी गतिविधियों यथा—पढ़ाई, खेलकूद, व्यवसाय-चयन, विकास एवं अन्य प्रतिष्ठित गतिविधियों आदि पर भी परिलक्षित होगा । अतः शिक्षा में जीवन-मूल्यों के महत्त्व को समझते हुए इसे इसके स्थान पर प्रतिष्ठापित करना होगा, ताकि स्वस्थ और अधिक संतुलित भावी नागरिकों का निर्माण किया जा सके ।



उनका कहना था कि विद्यार्थियों की व्यक्तिगत स्वास्थ्यकर आदतें, सफाई, खाद्य पदार्थों आदि के संबंध में जागरूक बनाने के लिए दिल्ली के स्कूलों में सकारात्मक स्वास्थ्य-चेतना कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है । हमारा प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के माध्यम से उनके अभिभावकों तथा समाज में इस कार्यक्रम का संदेश पहुंचाना है । उस समाज में जहां स्कूल स्तर पर स्वास्थ्य के मामलों पर चिंतन किया जाता है, वहां महामारी, संचारित रोग तथा स्वास्थ्य की अन्य समस्याएं, जो अज्ञानता के फलस्वरूप होती हैं, कम होंगी ।

इस उद्देश्य से मार्गदर्शी परियोजना के रूप में १०० स्कूलों को शामिल किया गया है । इन सभी स्कूलों के प्रधानाचार्यों/उप-प्रधानाचार्यों तथा एक-एक शिक्षक और संबंधित डॉक्टरों की दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की जा चुकी है ।

मूल्यों पर आधारित शिक्षा—कैलेंडर सुकृति

डॉ. हर्षवर्द्धन शिक्षा कार्यक्रमों की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि शिक्षक अथवा माता-पिता के प्रभाव के बिना स्कूल में पढ़नेवाले बच्चे तक पहुंचने के लिए 'सुकृति'

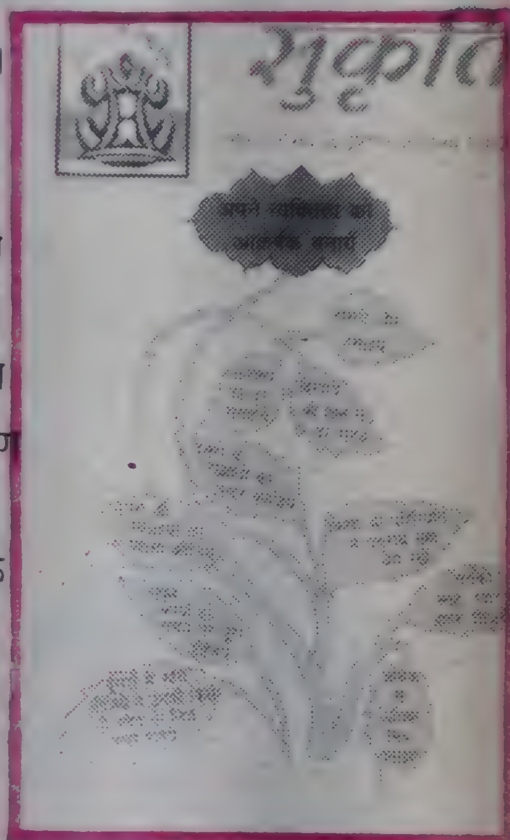
नामक एक कैलेंडर तैयार किया गया है । यह कैलेंडर वैयक्तिक परक है । समस्त सरकारी, सहायता प्राप्त तथा कुछ प्राइवेट स्कूलों के लगभग ३५० स्कूलों के ९ लाख विद्यार्थियों में ये कैलेंडर अभी अप्रैल मास के प्रथम सप्ताह में वितरित किये गये हैं ।इन कैलेंडरों के वितरण से पूर्व बच्चों के माता-पिता तथा शिक्षकों की प्रतिक्रिया जानने के लिए लगभग ८ हजार विद्यार्थियों को इसकी मार्गदर्शी योजना के दायरे में रखा गया था ।

यह कैलेंडर बच्चे द्वारा प्रतिदिन स्वयं-मूल्यांकन के लिए अभिकल्पित किया गया है । यह एक अत्यंत आसान तथा सूक्ष्म-क्रिया है, जो पढ़ाई अथवा दिनचर्या में व्यवधान डाले बिना बच्चे के मानस में छिपे प्रसुप्त मूल्यों को उजागर करने में मदद करेगी । इस कैलेंडर में बड़ों के प्रति आदर, संपत्ति का सम्मान, पर्यावरण-देखभाल, ऊर्जा संरक्षण, यातायात के नियमों का पालन, पढ़ने की अच्छी आदतें, सुंदर सुलेख, अन्य भाषाओं के साधारण अक्षरों का ज्ञान आदि मूल्य शामिल हैं । यह कैलेंडर मनोवैज्ञानिक आधार पर तैयार किया गया है, जो बच्चों को व्यक्तित्व-विकास, अच्छी आदतें एवं आचार-व्यवहार अपनाने, अपने स्वास्थ्य की देखभाल तथा रुचियां चुनने की युक्तियां सुझाएगा ।

इस कैलेंडर में प्रतिमास एक प्रमुख व्यक्तित्व का चित्र लगाने तथा उसके बारे में कुछ पंक्तियां लिखने का प्रावधान है । इससे बच्चे की मूल्य-प्रणाली की अंतर्दृष्टि को समझने में मदद मिलेगी कि वह उसे बड़ा क्यों मानता है ? साथ ही बच्चे तथा माता-पिता को उस व्यक्तित्व के संबंध में शोध करने के लिए प्रेरित भी करेगा ।

योग तथा खेलकूद पर विशेष जोर

उन्होंने आगे प्रकाश डालते हुए कहा कि आम धारणा के विपरीत योग शारीरिक तंदुरुस्ती के रख-रखाव के विभिन्न अभ्यासों की बजाय जीवन तथा मनोविज्ञान का एक बेहतर ढंग है । बुद्धिमत्तापूर्ण एवं प्रभावशाली तरीके से प्रयुक्त करने पर योग से स्मरण शक्ति, शैक्षणिक उपलब्धियां, अनुशासन तथा स्कूल के वातावरण में सुधार लाया जा सकता है । दिल्ली के सरकारी स्कूलों में लगभग ४०० योग के शिक्षक हैं । इनकी क्षमता का उपयोग करने के लिए आत्म-दर्शन साधना केंद्र के सहयोग से इन शिक्षकों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया ।



संगीत-चित्रकला को बढ़ावा

प्राणायाम तथा योग से स्मरण-शक्ति में सुधार होता है और यह जीवन की परिस्थितियों के बेहतर प्रबंधन में सहायक होता है । संगीत, चित्रकला, शारीरिक शिक्षा तथा कार्य अनुभव के शिक्षकों को भी इसका अभ्यास कराया जा रहा है, ताकि योग को एक आसान तरीके से उनके अध्यापन में एकीकृत करके उनके द्वारा पढ़ाये जानेवाले विषय में और बेहतर परिणाम प्राप्त किये जा सकें । ●

कहानी

बोझ एक प्रेम-पत्र का

• अशोक सेन



ाम का गुलाबी अंधेरा। इतवार का दिन। घर पर मैं अकेला था। बालकनी में खड़े ालोनी के लोगों को आते-जाते देखकर जी हला रहा था। अचानक देखा कि मृदुला ौधरी तेजी से डग भरते हुए मेरे क्वार्टर की रफ बढ़ रही है। मैंने सोचा आज तो इतवार । आज रवि के पढ़ने का दिन भी नहीं है। ह खेलने गया है, इसे मृदुला भी जानती है, र भी वह मेरे यहां क्यों आ रही हैं ?

मृदुला पिछले तीन महीने से मेरे बेटे रवि को फजिक्स पढ़ाने आ रही हैं। रवि का इस वर्ष टरमीडिएट का फाइनल है। उसे पढ़ाने के नए एक ट्यूटर की जरूरत थी। जितने भी ध्यापकों से बातें कीं, वे पांच सौ रुपये तिमाह मांग रहे थे। मैं ठहरा तहसील में अपर डवीजन क्लर्क। इतना रुपया प्रति माह कैसे दे कता था ? तभी मेरा ध्यान मृदुला की तरफ या। वह रिटायर्ड नायब तहसीलदार की बेटी । प्रथम श्रेणी में एम.एस-सी. करने के बाद क मांटेसरी स्कूल में पढ़ा रही हैं। शादी की म्र पार होती जा रही थी, इसीलिए सिर्फ समय ाटने के लिए वहां पढ़ा रही थी। मेरे अनुरोध र पहले तो वह ना-नुकुर करती रही, फिर वह ीन सौ रुपया प्रतिमाह पर पढ़ाने के लिए तैयार गयी।

मृदुला गोरी, साधारण नाक-नक्श की, और स्वस्थ नवयुवती है। उसकी उम्र यही कोई तीस वर्ष की होगी। उसके सौम्य और शांत हरे से लगता कि उसकी जिंदगी में उम्मीद नहीं गयी है, बल्कि ठहराव-सा आ गया है। रू-शुरू में जब वह पढ़ाने आने लगी तो मैं उसे चाय बनाकर सर्व किया करता। इसका कारण यह है कि पिछले वर्ष एक कठिन बीमारी में मेरी पत्नी का देहांत हो गया था। घर में मेरे और रवि के अलावा कोई और नहीं है।

मृदुला ज्यों-ज्यों रोज आने लगी, मैं उसके प्रति खिंचाव-सा महसूस करने लगा। समय के अंतराल में यह अनजाना खिंचाव बढ़ता ही गया। उसे अब चाय के साथ-साथ बिस्कुट और कभी-कभी पापड़, पकौड़ियां या कभी-कभी बाजार से मिठाइयां भी मंगाकर देने लगा। मृदुला हलकी-सी मुसकराहट के साथ 'थैंक्यू' कह देती। धीरे-धीरे मैं बेटे की पढ़ाई में दिलचस्पी भी लेने लगा। मैंने घर पर फिजिक्स का अध्ययन शुरू कर दिया और मृदुला से फिजिक्स पर थोड़ी-बहुत चर्चा भी कर लिया करता।

मैं ज्यादातर ऑफिस से आने के बाद घर पर ही रहा करता और पुराने फिल्मी गानों के टेप सुना करता। आजकल हर सिनेमा हॉल में अश्लील फिल्मों की बाढ़ लगी है। घर-घर में स्टार टी.वी. और एम.टी.वी. की धूम मची हुई है। मेरे पोर्टेबुल ब्लैक एंड व्हाइट टी.वी. में सिर्फ दूरदर्शन के प्रोग्राम एंटीना से आया करते थे। रवि के बार-बार अनुरोध पर केबल टी.वी. का कनेक्शन भी मैंने ले लिया। मेरे बाहर निकलने पर दोस्त-यार या तो मेरे तेजी से पकते हुए बालों पर ताना कसते या फिर दबाव डालते कि मैं दूसरी शादी कर लूं। ऐसे कशमकश के वातावरण में मृदुला ने एक ठंडी हवा की तरह मेरे जीवन में प्रवेश किया। जैसे वह एक झील है, जो मेरी जिंदगी की खाली हुई जगह को भर देगी। मेरे बेटे रवि के प्रति उसका प्यार और स्नेह को देखकर मैं और भी आश्वस्त हो जाता।

एक दिन बाजार से कुछ जरूरी सामान ले आया और बालों को डाई कर डाला । अब ऑफिस से आने के बाद मेरी रोज की दिनचर्या हो गयी, कपड़े बदलना, शेव करना और मृदुला के आने का इंतजार करना और किसी-न-किसी बहाने मृदुला के इर्द-गिर्द रहना ।

पता नहीं रवि मेरे अंदर आते हुए इन परिवर्तनों को नोट कर रहा था या नहीं, लेकिन मैं रवि के अंदर परिवर्तन जरूर देख रहा था । वह फिजिक्स बहुत मेहनत से पढ़ता और मृदुला से 'गुड' लेने के लिए उसके द्वारा दिये गये होमवर्क को बहुत मेहनत से करता । मैं इसे मृदुला का आशीर्वाद समझता रहा कि मेरे बेटे में पढ़ाई के प्रति रुचि जागी है । मैं जब टेप सुन रहा होता, तो रवि भी कोई गीत का मुखड़ा दोहरा रहा होता । एक दिन उसने मेरा शेविंग ब्रश और ब्लेड लेकर अपनी शेव भी कर डाली । मेरे डांटने पर कि इस तरह शेव करने से कम उम्र में दाढ़ी-मूंछ निकल आएगी, वह शरमाकर मुसकरा दिया ।

मेरे जेहन में रह-रहकर यह प्रश्न उठता कि क्या मृदुला भी मेरे प्रति आकृष्ट हो रही है ? न जाने क्यों मुझे लगता कि उसके अंदर भी मेरे प्रति खिंचाव जाग रहा है । मैं जितनी भी तरह से उसे अनुग्रहीत करने की कोशिश करता, वह ना कभी न करती । कभी-कभी मेरे कमरे में प्रवेश करते ही वह लगभग हंस ही देती और नमस्कार करते हुए खड़ी हो जाती । उसकी हंसी ऐसे लगती जैसे किसी ने शांत झील में तरंग पैदा कर दी हो । मैं इस हंसी पर मोहित हो जाता ।

आज जब मैं बालकनी से देख रहा था कि मृदुला मेरे ही क्वार्टर के ब्लॉक में प्रवेश कर रही है, मेरा दिल धक-से रह गया । मुझे लगा कि मेरी प्रेम तपस्या रंग लानेवाली है । तभी दरवाजे की घंटी बजी । मैंने दरवाजा खोला तो देखा मृदुला खड़ी है । ...गुलाबी शाम । मेरे आफ्टर शेविंग क्रीम की सुगंध से पूरा कमरा गमक रहा था । कमरे की बत्तियां भी नहीं जली थीं । पूरे घर में मैं और मृदुला अकेले एक-दूसरे के रूबरू खड़े थे ।

मृदुला कुछ घबरायी हुई-सी लग रही थी जैसे कुछ कहना चाहती हो । वह हाथ में पत्र जैसा कुछ पकड़े हुए थी । मृदुला घबराहट और परेशानी में बोली, ''मैं आपसे अकेले में कुछ कहना चाहती हूं ।' मेरे कान में लगा जैसे किसी ने असंख्य शहनाईयां फूंक दी हों । दिल तेजी से उछलने लगा । मैंने विषैली मुसकान के साथ कहा, 'बैठिए, प्लीज ! घर में कोई नहीं है ।'

वह ड्राइंग-रूम में कुरसी पर बैठ गयी । मैंने भी एक कुरसी लेकर उसकी तरफ को खींच ली ।

वह कहने लगी, ''मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मैं बात कहां से शुरू करूं ? कहते हुए भी शरम आ रही है ।'' सचमुच वह शरम से पसीना-पसीना हो रही थी । मैं मुसकरा रहा था ।

कुछ देर की चुप्पी छायी रही । वह हाथ में लिए कागज तो तोड़ती-मरोड़ती रही । वह फिर बोली, ''समझ में नहीं आता, कहीं आप बुरा तो न मानेंगे... ।'' अब मुझसे नहीं रहा गया । मैंने समझा वह मुझसे प्रेम जताना चाहती है और

पहल मुझे ही करनी चाहिए । झट-से मैं अपनी कुरसी उसके बहुत करीब खींचते हुए प्रणय-निवेदन करते हुए मैं कह बैठा, "बुरा मानने की क्या बात है ? जो आप कहना चाहती हैं, वह मैं भी आपसे कहना चाहता हूं ।"

मेरा इतना कहना क्या था, वह किसी घायल नागिन की तरह फुंफकार मारते हुए खड़ी हो गयी और मेरी ओर तीखी नजरों से देखते हुए बोली, "अब समझ में आया कि आपका बेटा इतना आगे क्यों है ?"

"क्या मतलब है आपका ? क्या मतलब है ?...मेरे बेटे ने क्या किया ?..." मैंने घबड़ाकर लगभग हकलाते हुए पूछा ।

"ये देखिए...ये देखिए..." हाथ में लिए हुए कागज को आगे बढ़ाते हुए बोली, "आपके साहबजादे ने मुझे प्रेम-पत्र लिखा है...होमवर्क की कापी में रखकर...मुझे इसी को दिखाना था आपको ।" अपमान-बोध, घृणा और क्रोध से वह थर-थर कांप रही थी । जैसे कोई शांत झील खौल उठी हो । वह आगे बोली, "क्या अब तक वह मुझे इसी नजर से देखता रहा...और आप ? आप भी !" उसकी क्रोध से दहकती आंखों में अपमान के आंसू झलक आये । लेकिन दूसरे ही क्षण उसने अपने आप को संयत किया और चिट्ठी फेंककर तीव्र गति से बाहर निकल गयी ।

मैंने कमरे में पड़े बेटे के कच्चे मन से लिखे प्रेम-पत्र की ओर देखा । और कोई वक्त होता, तो उसे उठाकर फाड़ देता और बेटे की खबर लेता । लेकिन, इस वक्त मैं उस पत्र को उठाने के लिए झुका और उठाते हुए ऐसा लग रहा था कि जैसे मैं कोई बोझ उठा रहा हूं ।

—भारतीय स्टेट बैंक, सिटी शाखा
वाराणसी-२२१००१

भ्रष्ट प्रेमिका से बना महाकवि

मां-बाप विहीन, परिजनों से दुत्कारा हुआ अनाथ बालक अपने गुरु के आश्रय में पल-बढ़कर जवान हुआ तो गुरू ने उसकी शादी करा दी । ममता, प्यार अपनत्व का अभाव झेलते उस युवक को जब स्नेहशील पत्नी मिली, तो वह उस पर अनुरक्त हो बैठा, जो स्वाभविक भी था ।

*पत्नी जब अपने मायके चली गयी तो कुछ दिनों का बिछोह भी उसे सहन नहीं हुआ । और वह चल पड़ा अपनी प्रेयसी-पत्नी से मिलने । कहते हैं कि उसे वहां पहुंचे-पहुंचते रात हो गयी । अमावस की काली रात । वर्षा ऋतु थी । नदी पूरे उफान पर थी, लेकिन उसकी परवाह न कर उफनती नदी को तैर कर जा पहुंचा । घर के द्वार बंद थे । दीवार पर एक सांप लटक रहा था । अंधेरे में उसे रस्सी समझ वह चढ़ गया ऊपरी मंजिल की अटारी पर । अनायास इस तरह आये पति को देख उसने प्यारभरा उलाहना दिया— **अस्थि चर्ममय देह मम तासौं ऐसी प्रीति***

जो होती श्रीराम सौं होती ना भवभीति

कहने की आवश्यकता नहीं ऐसे प्रेमी थे—महाकवि तुलसी दास ।



कृष्णमुखी सोनल बया
(वीवर बया)

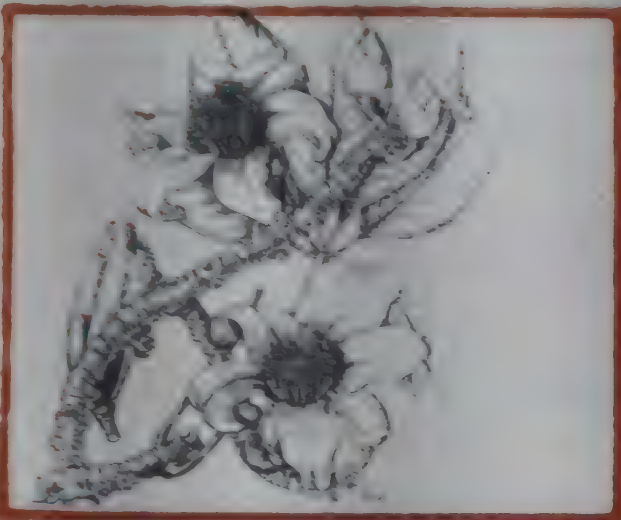
बया के घोंसले अपनी विशिष्ट बुनाई के लिए सुपरिचित हैं । नर बया घोंसला बुनता है, मादा अकसर उसका निरीक्षण करती है, पसंद आने पर नर-मादा मिलकर उसे बसाते हैं । अंडा देने पर, नर बया मादा पर शावक का पालन-पोषण का सारा भार छोड़कर, एक ओर घोंसला बुनता है । एक मौसम में कुशल नर बया औसतन चार-छह मादाओं के लिए घोंसला बुनता है, इस घोंसले में अंडे पर आक्रमण करना अन्य शिकारी जंतुओं (सांप आदि) के लिए बहुत कठिन होता है । बया के श्रम-विभाजन की यह पद्धति इतनी उत्तम है कि विश्व में बहुलतम पक्षी एक प्रकार का बया या बुनकर पक्षी ही है, जो अफरीका को आबाद करता है । कलकंठी सोनल बया गौरैया से मिलता-जुलता पक्षी है, बस इसका सिर सुनहला, मुख तथा कंठ काला तथा वक्ष सुनहला होता है, जो इसके वंश के अन्य बुनकरों से इसकी अलग पहचान बनाता है ।



कलसित शिखी चातक
(पाइड क्रैस्टैड कुक्कू)

इसे काला पपीहा भी कहते हैं । इसका रंग ऊपर काला, नीचे सफेद होता है । पपीहा इसलिए कि वर्षा ऋतु के आगमन पर यह पी कहां पी कहां की रट लगाता है । कोयल और चातक एक ही परिवार, किंतु अलग वंशों के पक्षी हैं । कोयल तो भारत का आवासी पक्षी है, जबकि पपीहा मात्र प्रजनन के लिए पूर्वी अफरीका से भारत में प्रवास करते हैं । यह शाव-परजीवी हैं अर्थात, चातक-मादा अंडे सतभाई या कस्तूरी आदि पक्षियों के घोंसलों में देती है, किंतु अकसर पहले उनके अंडों को बाहर फेंककर । यह सारा काम चोरी से होता है, इसलिए आनन फानन में होता है । जहां अधिकांश पक्षी अंडा देने के लिए एक से तीन मिनट लेते हैं, चातक मादा मात्र कुछ सैकंडों में अपना अंडा दे देती है । इसके विषय में यह भी भ्रम है कि ये मात्र वर्षा का जल, वह भी स्वाति नक्षत्र में, सीधा पीते हैं तथा इनके गले में एक छेद होता है । तथ्य यह है कि वर्षा ऋतु में इन्हें जल की आवश्यकता ही नहीं होती ।





शाल्मली

यद्यपि महाभारत में एक स्थल पर शाल्मली या सेमल के वृक्ष को सारहीन कहा गया है, किंतु इस वृक्ष का प्रत्येक अंग-उपांग उपयोगी है । वृक्ष की लकड़ी की माचिस की तीलियां बनती हैं, फल के अंदर से रेशमी रुई निकलती है, जो न केवल गुलगुली होती है वरन गरमी बचाने के लिए ऊन से भी अधिक गुणवाली है, इसके पत्ते तो जानवर खाते ही हैं, इसके फलों के बाह्य दल की सब्जी बनती है, इसकी गोंद न केवल स्वादिष्ट होती है वरन, औषधि के काम में आती है । इसके अति सुंदर रक्त वर्ण के विशाल पुष्पों (पंखुड़ियां दस-बारह सेंटीमीटर लंबी) का मकरंद पान करने के लिए अनेक पक्षी इस पर नाचते रहते हैं । इस पर्ण पाती दीर्घजीवी वृक्ष का कांड स्कंध (पींड़) सीधा तथा मोटा, किंतु कमजोर होता है । कम वय में इसके तने पर मोटे नुकीले कांटे लगे रहते हैं, जो जानवरों से इसकी रक्षा करते हैं । इसकी पत्तियां भी चमकदार हरी होती हैं और एक-एक पत्ती में पांच से सात पर्णक होते हैं, जो अंगुलियों की तरह फैले रहते हैं । यह छायादार ऊंचा वृक्ष वृक्षवीथियों के लिए बहुत उपयुक्त है ।

दारचीनी

(दालचीनी)

यह सदाबहार वृक्ष छह-आठ मीटर ऊंचा होता है । इसके आंख के आकार के पत्ते आठ से सोलह सेंटीमीटर लंबे होते हैं । इसके फूल



छोटे होते हैं, जो गुच्छे में लगते हैं । फल भी अंडाकार दो सेंटीमीटर लंबे तथा गहरे नीले या बैंगनी होते हैं । यह वृक्ष दक्षिण भारत में १५०० मीटर की ऊंचाई तक के क्षेत्रों में होता है । इसकी शाखाओं को काटकर उनकी छाल निकालकर सुखायी जाती है जो मसाले तथा मिठाइयों के काम आती है । छाल से तेल भी निकाला जाता है और ये दोनों ही औषधि का काम करते हैं । अतिसार, मतली, वमन रोगों में उपयोगी है । यह तेल पाचक, वायुसारी और उत्तेजक होता है । पेट का अफरा कम करता है तथा अंतड़ियों के लिए पौष्टिक है । कपूर का वृक्ष तथा तेजपात का वृक्ष, दोनों इसी के वंश के हैं ।

— विश्वम्

पुराण कथाएं— १५

सुंदरी सुकन्या

• डॉ. सुधा पांडे

महाराजा शर्याति के राजपुरोहित महर्षि च्यवन का प्रखर तेज आसुरी शक्तियों पर विजय का प्रतीक बनकर उनके जन्म से ही प्रारंभ हुआ । अपने कठोर तप से वे आध्यात्म के अमोघ कण संचित करते हैं, तो सोमयाग में इंद्र की भुजाओं को स्तंभित कर ब्रह्मतेज का दीप्त परिचय भी देते हैं... । तपस्वी का क्रोध भी दुर्निवार है । राजदुहिता सुकन्या के जीवन के रंग तपस्वी च्यवन के कुपित होने से किस प्रकार बदल गये, इसका विवरण देती है यह पुराण कथा... सुकन्या के सतीत्व और च्यवन के तपोतेज की साकार प्रतिमा...

महाराजा शर्याति की राजधानी में आज सर्वत्र उत्सव की लहर है । लाड़ली दुहिता सुकन्या अपने पति च्यवन के साथ सोमयाग में पधार रही है । बूढ़े च्यवन का कायाकल्प हो गया है । देवताओं सदृश कांति समेटे च्यवन इस सोमयाग के राज-पुरोहित बनेंगे । चारों दिशाओं में आनंद फूट पड़ा था । रथ्याएं, वीथिकाएं, राजपथ सभी उल्लास से भर उठे ।

महाराज के समक्ष वे दिन एक बार फिर साकार हो उठे, जब सुंदरी सुकन्या का पूरा जीवन क्षणभर के कौतुक से बिखर गया

पश्चिम आर्यावर्त के एकछत्र सम्राट थे महाराज शर्याति, न्यायप्रियता परदुःख कातरता में अग्रणी, प्रजावत्सल वे नृपति मानवलोक में ही नहीं देवों में भी प्रसिद्धि पा चुके थे । धर्म ही उनका रक्षक था, दंड उनका प्रहरी ।

उस दिन मृगया से श्रांत वह अपनी रानियों, एकमात्र पुत्री सुकन्या, पुत्र आनर्त और मंत्रियों, परिजनों सहित पुष्कर क्षेत्र तक आ पहुंचे थे, सरोवर के तटवर्ती मनोरम क्षेत्र में शिविर लगा दिये गये थे, कुछ दिवसों तक विश्राम के लिए ।

'यहीं पुष्कर के तट पर ही तो महायाग च्यवन का आश्रम है ?' महाराज ने मंत्रियों से जिज्ञासा व्यक्त की।

'हम सब तो मृगया की उत्कंठा में भूल ही गये थे...पर आश्रम है कहां ? कहीं आसपास दिखायी नहीं दे रहा और न महर्षि...' कुछ मंत्री इधर-उधर निकल पड़े...महर्षि को खोजने, किंतु सभी प्रयास व्यर्थ हुए।

एक ही स्थान पर बैठे उग्र तप करते-करते च्यवन अपनी ही सुध-बुध खो बैठे थे। मिट्टी के काफी बड़े ढेर ने उनकी देह को भी ढक दिया था। लताओं ने उस ढेर को आच्छादित कर रखा था। इसी कारण राजा के अनुचर उनके समीप तक जाकर भी उन्हें नहीं खोज पाये थे।

सुकन्या भी अपनी सखियों के साथ इठलाती, क्रीड़ा करती घूम रही थी—पुष्पों-वनस्पतियों से घिरे उस मनोरम प्रदेश में उन्माद से भर गयी थी वह। फूल-पत्ते वृक्षों की शाखाएं उखाड़ती, उछलती-कूदती वह सखियों को छोड़ काफी दूर आगे निकल गयी। फिर एक जगह ठिठककर रुक गयी। आश्चर्य से सोचने लगी, 'यह क्या ? कैसा अद्भुत दृश्य है इस बांबी के पास।'

महर्षि ने सुकन्या को देख लिया और तप से सूखे कंठ से क्षीण स्वर में पूछा, 'इस रूपवती कमनीय कायावाली तुम कौन हो कल्याणी ? यहां इस विजन वन में क्यों भटक रही हो ?'

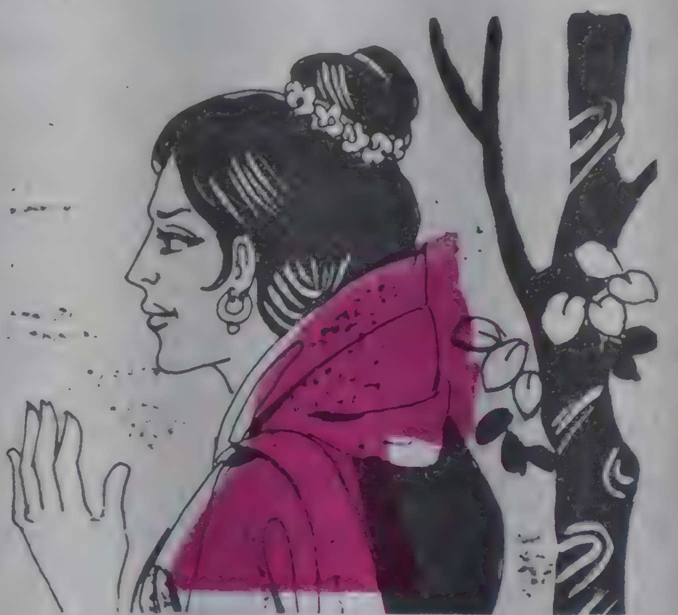
सुकन्या ने सुना ही नहीं। महर्षि कुछ और कहने को तत्पर हुए तभी क्षणभर में, 'अरे यह क्या है ? ये चमकती वस्तुएं क्या हैं ?' कहते-कहते सुकन्या ने हाथ में पकड़ी शाखा के अग्रभाग को उन दोनों बिंदुओं में घुसा दिया।

हाय, यह क्या अनर्थ कर डाला ?' मिट्टी के भीतर से करुण ध्वनि आयी। साथ ही रक्त की दो धाराएं बह चलीं। क्षणभर को लगा कि वह पूरा स्तूप कांप उठा है, सारी धरती हिल गयी है।

सुकन्या भय से वहीं आंख बंद किये खड़ी रही। फिर भाग पड़ी अपनी सखियों के पास।

शांत परिवेश म कोलाहल मच गया। ऋषि ने क्रोधित हो राजा और उसके सैनिकों को शाप दे दिया कि सभी अकाल मृत्यु को प्राप्त हों।

सारे शिविर में हलचल मच गयी थी। सभी भयानक उदर व्याधि से पीड़ित हो चीत्कार करने लगे।



पता नहीं अचानक यह विपत्ति कैसे आ गयी ? कहीं सरोवर का जल तो विषाक्त नहीं है ? अवश्य दैव का ही प्रकोप होगा यह...कोई कारण नहीं समझ आ रहा था...।

महाराज ने पीड़ित अनुचरों के शिविरों में आकर पूछा, 'यदि इस शांत आश्रम में किसी ने जान-बूझकर कोई अनुचित कार्य किया है या अनजाने में अपराध किया है तो स्पष्ट बता दें।'

सभी चुप थे।

तभी सुकन्या अंतर्द्वंद्व के सागर में डूबती-उतराती किसी प्रकार बोल ही पड़ी कि 'मैं हूं अपराधिनी ।' महाराज सहित सब चौंक उठे ।

'चौंकिए मत पिताश्री ! वन-प्रांतर में भ्रमण करती कौतूहलवश मैं स्तूपाकार मृत्तिका खंडवाले एक स्थान पर जब मैं पहुंची, तो दो चमकते बिंदुओं को मैंने जुगनू समझा और लकड़ी के अग्रभाग से उसे बींध डाला । क्षणभर में ही अनर्थ हो गया । रक्त की धाराएं बह चलीं तो पता चला कि उस बांबी से वे दो बिंदु जुगनू नहीं थे, किसी के नेत्र थे । मिट्टी से पूरे ढके होने के कारण मुझे पता ही न था कि उसमें कोई पुरुष तप कर रहा है । उसके क्रोध का परिणाम है यह विपदा ।'

मंत्रियों सहित महाराज थर-थर कांपती सुकन्या को लेकर उसी क्षण चल पड़े वाल्मीकि खंड के समीप ।

तपस्या में लीन बूढ़े च्यवन के नेत्रों से अभी भी रक्त की धारा बह रही थी । पीड़ा से व्याकुल थे वे । समीप पहुंचकर क्षणभर ठिठके महाराज, फिर साहसपूर्वक हाथ जोड़कर विनम्र भाव से बोले, 'हे महर्षिप्रवर ! मेरी कन्या ने अज्ञानतापूर्वक आपके प्रति जो घोर अपराध किया है, उसे क्षमा करने की कृपा करें...'

'मेरी धर्म-साधना में व्यवधान बनकर आयी है तुम्हारी राजपुत्री । मुझे अंधत्व प्रदान कर इस निर्जन वन में मुझे निरीह बनानेवाली, इसी से पूछो कि अब ऐसी दशा में मैं कैसे अपनी साधना पूरी कर सकूंगा ?'

'महाप्रभु ! मैं स्वयं बहुत अधिक लज्जित हूं । और मुझे इसी बात की अत्यंत पीड़ा है कि मेरी ही संतान के कारण आपको यह कष्ट पहुंचा, दया-दृष्टि रखें और कृपापूर्वक क्षमा करें ।'

'अनजाने में ? यह कैसे कह रहे हो राजन ? मैंने तो इसे पुकारा भी था और पूछा भी था कि तुम कौन हो ? किंतु इसने कोई उत्तर दिये बिना ही क्षणभर में मेरी आंखों में नुकीली शाखा भोंक दी ।'

'आप मेरी एकमात्र पुत्री को अभयदान देकर क्षमा करें महर्षि ! आपकी सेवा-सहायता के लिए मैं यहां अनेक सेवकों को नियुक्त कर दूंगा ।' महाराज ने विकल्प सुझाया ।

'हां-हां दया का पात्र बने मेरे लिए, अब इसी प्रकार का ही जीवन रह जाएगा...करुणा, ममता, आत्मीयता से रहित सेवकों के सहारे दीन-हीन मैं अंधा अपने जीवन के बचे-खुचे दिन व्यतीत करूंगा ? नहीं,यह संभव नहीं, तुम्हारी इस पुत्री को ही प्रायश्चित करना होगा, अन्यथा मैं शाप देकर तुम्हारे सारे कुल और राज्य को भस्म कर दूंगा । इसने मेरा अनादर जानबूझकर किया है ।' रोषभरा स्वर था महर्षि का ।

'धृष्टता क्षमा करें ऋषिवर, मैं और मेरी कन्या प्रायश्चित के लिए तत्पर हैं, आप आदेश दें ।'

'हे राजन । लोभ और मोह तथा रूप के मद में डूबी तुम्हारी इस कन्या को ही ग्रहण करके मैं तुम्हें क्षमा कर सकूंगा । तुम्हें इसे ही मेरी सेवा के लिए सौंपना होगा, यही इसका प्रायश्चित होगा ।'

महाराज की व्यथा बढ़ गयी । वे गंभीर चिंता में डूबे काष्ठवत खड़े रह गये । यदि वे अपनी कन्या को ऋषि को सौंपने से विमुख होते हैं, तो क्रोधी ऋषि की शापाग्नि पूरे परिवार सहित

राज्य को ही भस्म कर देगी और यदि पाषाण हृदय बनकर पुत्री को सौंपने की बात करूं, तो अपने ही हाथों एकमात्र पुत्री के सुख-सौभाग्य का बलिदान करना होगा । वे किंकर्तव्यविमूढ़ थे । सभी स्तब्ध थे । तभी सुकन्या ने आगे आकर कहा, 'आप चिंता न करें पिताश्री ! मैं अपने जीवन को महर्षि के श्री-चरणों में अर्पित कर रही हूं । अपने अपराध का मुझे ही प्रायश्चित करना होगा ।'

अवश थे राजा सहित सभी परिजन । नियति के क्रूर चक्र को कौन टाल सकता है ? सम्राट को अपनी पुत्री सुकन्या महर्षि च्यवन के लिए अर्पित करनी ही पड़ी, तभी उनका क्रोध शांत हुआ ।

व्यथित मन अपनी पुत्री से विदा लेकर राजधानी लौटे महाराज और अनंदिता सुंदरी सुकन्या निर्जन वन-पथ में सभी राजसिक सुखों को त्यागकर महर्षि की सेवा में तन्मय हो गयी ।

समय बीता । छाया की भांति प्रतिदिन उस क्रोधी अंधे वृद्ध ऋषि को अपनी प्रीति और तप से प्रसन्न कर लिया था उसने । समय इसी क्रम में व्यतीत हो रहा था, तभी अचानक एक विलक्षण घटना हुई जिससे सुकन्या को एक बार फिर कड़ी परीक्षा को झेलना पड़ा । विचलित हुए बिना वह पुनः अपने ही दृढ़ निश्चय से विजयी बन सकी ।

प्रातः की सुहावनी बेला थी । सूर्य की किरणों के साथ ही आश्रम की जीवनचर्या भी जीवंत हो उठी । प्रतिदिन की भांति सुकन्या महर्षि के सारे कार्यों को समाप्त कर सरोवर में स्नान के लिए उतरी ही थी कि नेत्रों के समक्ष एक देवयान प्रकट हुआ ।

सुकन्या ने तत्काल स्नान किया और वल्कल धारण कर आश्रम की ओर बढ़ी ही थी कि तभी आवाज आयी कि 'रुको देवि ! इस वन प्रदेश में वनदेवी की भांति तुम कौन हो ?'

चौंक पड़ी सुकन्या । उससे प्रश्न करनेवाले आगंतुक अश्विनीकुमार थे । पलभर को सुकन्या कांप उठी, किंतु अपने तेजस्वी पति का स्मरण



आते ही संयत हो गयी और उत्तर दिये बिना ही आगे बढ़ गयी ।

अश्विनीकुमार सुकन्या की इस अवज्ञा से खीझ उठे । अब वह धृष्टतापूर्वक उसका मार्ग रोककर खड़े हो गये, 'अरे सुंदरी, तुमने तो कोई उत्तर ही नहीं दिया, हम लोग देव-वैद्य अश्विनीकुमार हैं । अपनी इस सुंदर काया को वन की परुषता में क्यों गला रही हो ?'

सुकन्या का मुखमंडल तमतमा उठा, क्रोधभरे स्वर में उन्हें धिक्कारते हुए कहा, 'मैं राजा शर्याति की दुहिता और तप-तेज से सर्वत्र विख्यात महर्षि च्यवन की अर्धांगिनी हूं...तुम लोगों का इतना साहस कैसे हुआ कि मुझे इस तरह मार्ग में रोको ?'

अग्नि की ज्वाला के समान उस तेजस्विनी की वाणी से अश्विनीकुमारों का विस्मित होना स्वाभाविक था । अपनी माया से स्त्रियों को छलने में चतुर अश्विनीकुमारों ने अब दूसरा मार्ग अपनाया, मुसकराते हुए वे बोले, 'अरे, इसमें परेशान होने की क्या बात है ? तुम्हारे पिता ने ही तो तुम्हारे रूप और वय के प्रतिकूल इस बूढ़े और क्रोधी तपस्वी से तुम्हारा विवाह कर दिया है । उस क्लीव के साथ रहते तुम्हारा जीवन यों ही व्यर्थ जा रहा है ।'

'अनर्गल प्रलाप बंद करो । मेरे पति को यदि यह सब पता चल गया तो तुम्हें शाप दिये बिना नहीं छोड़ेंगे ।'

'क्रोधित क्यों होती हो देवि ? मानव जाति के ही कल्याण की कामना से हम यहां उतरे हैं । तुम्हारे रूप और यौवन के यों ही व्यर्थ जाने की पीड़ा से हमारा पीड़ित होना स्वाभाविक है । तुम च्यवन को छोड़कर हम दोनों में से किसी एक को पति रूप में वरण कर लो सुंदरी ।'

'फिर वही धृष्टता । मैं एकाग्र भाव से केवल अपने पति के प्रति ही समर्पित हूं । तुम लोगों के मुख से इस प्रकार की बातें शोभा नहीं देतीं । पति-सेवा ही मेरा परम धर्म है । तुम लोग इस प्रकार की दुर्भावना मत रखो ।'

'क्षमा करो देवि ! तुम्हारी दृढ़-निष्ठा और पतिव्रत धर्म ने हम देवों को भी दृष्टि दी है । हम देवों के श्रेष्ठ वैद्य हैं, हम शीघ्र ही तुम्हारे पति का रूप और यौवन लौटा देंगे ।'

अश्विनीकुमारों ने कोई उपाय न देख, यह प्रस्ताव रखा ।

'ठीक है । मैं महर्षि से यह बात निवेदन करूंगी, वे जैसा उचित समझेंगे, वैसा निर्देश देंगे । चलो तुम उन्हीं के पास चलो ।'

सुकन्या मेरे अनुरूप नहीं है— यह बात महर्षि च्यवन को भी भीतर-ही-भीतर पीड़ित करती थी । उस क्षण क्रोधाग्नि ने उनसे ऐसा अनर्थ करवा दिया था । एकांत क्षणों में वे प्रायः स्वयं को धिक्कारते रहते थे । देव-वैद्य अश्विनीकुमार उनका रूप लौटा देंगे । इस बात को सुनते ही उनका मन प्रसन्नता से भर उठा ।

'ठीक है जैसा वे कह रहे हैं, वैसा ही करो ।' कहकर च्यवन ने सुकन्या को अनुमति दे दी । अश्विनीकुमारों ने तत्क्षण बूढ़े च्यवन की देह पर औषधियुक्त तेल का विलेपन किया । अष्ट वर्ग युक्त प्राश खिलाया और फिर स्वयं अपने हाथों का सहारा देकर जलाशय में स्नान करने के लिए उतार दिया । साथ-साथ वे दोनों भी जल में उतर गये ।

तट पर बैठी सुकन्या उस अद्भुत दृश्य को विस्फारित नेत्रों से सांस रोके देखती रही ।

शय में तीनों के प्रवेश करते ही सारी प्रकृति त सौंदर्य से भर उठी । कुछ क्षण बाद या की दृष्टि जैसे ही जलाशय की ओर गयी ह आश्चर्यचकित रह गयी ।

लाशय से तो एक ही रंग-रूप के तीन युवक उत्तम कुंडल धारण किये दिव्य शि से शोभायमान मुसकराते हुए बाहर न रहे थे । मानो एक-दूसरे के प्रतिरूप

छ समझ न पायी सुकन्या । तभी कोई नों में पड़ा, "हे कल्याणी । अब हम से एक को स्वीकार कर अपना जीवन बनाओ । देखें, कैसे तुम अपने पति को न पाती हो ?'

ठिन परीक्षा में पड़ गयी सुकन्या । श्विनीकुमार अब भी चतुराई करने से न रहे । क्षणार्थ भर सुकन्या मौन रही, मूंदकर बैठी रही । दूसरे ही क्षण महर्षि चानने में लेशमात्र भी त्रुटि न की । पति अमोध तपस्या का परिणाम सुकन्या के आया । इस कड़ी परीक्षा में भी सुकन्या हुई ।

श्विनीकुमार के प्रत्युपकार और पतिव्रता के आचरण से महर्षि च्यवन का हृदय हो उठा था । जीवन का मंगलमय क्षण चा । कृतज्ञ च्यवन ने अश्विनीकुमारों को यी बनाने की प्रतिज्ञा दी ।

र्यति के महानयज्ञ में देव-वैद्यों को भी अर्पण किया गया । आयुर्वेद विद्या की ने सारी सृष्टि की कल्याण साधना का शस्त किया ।

—प्राचार्या

म.के.पी. पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, देहरादून

ऐसे भी हो जाता है प्रेम

एक रंगरेजिन के पास एक साफा (पगड़ी) रंगने आया । वह उसे रंगने चली तो देखा, उसके एक छोर पर गांठ लगी है । गांठ खोली तो एक पुरजा निकला, जिस पर एक ही काव्य-पंक्ति लिखी थी

कनक छरी-सी कामिनी काहे को कटि छीन

दूसरी पंक्ति शायद, लिखनेवाले से बनाये न बन पड़ी। रंगरेजिन को तत्काल दूसरी पंक्ति सूझी उसने उसी के नीचे लिख दी

कटि कौ कंचन काटि विधि
कुचन मध्य भरि दीन

साफा रंगकर जब पहननेवाले के पास पहुंचा और उसने खोला तो पुरजे पर अपनी काव्य-पंक्ति की पूर्ति देखकर अचंभित रह गया ।बस, यहीं से शुरू हो गया दोनों में प्यार ।

बढ़ते-बढ़ते प्यार उस मुकाम पर जा पहुंचा जबकि उन्हें लगा कि वे एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते । लेकिन, दोनों के अलग-अलग धर्म आड़े आने लगे तो प्रेमी-कवि अपना धर्म छोड़ने को तैयार हो गया । इस पर प्रेमिका ने कहा, धर्म बदलने की जरूरत नहीं, तुम अपना धर्म पालना और मैं अपना । दोनों ने शादी कर ली । दोनों की लिखी काव्य-रचनाएं हिंदी साहित्य में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती हैं ।

प्रेमी थे औरंगजेब के बेटे शाह मुअज्जम के आश्रित कवि जो 'आलम' नाम से काव्य-रचना करते थे, वैसे थे वह सनाढ्य-ब्राह्मण और रंगरेजिन थी मुसलमान, नाम था — शेख । ये दोनों 'शेख आलम' के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

विश्वविख्यात प्रेम-प्रसंग

● मेघराज जैन

प्रेम-आख्यानों से हमारा साहित्य भरा पड़ा है । लोक-कथाओं का तो मूल आधार ही स्त्री-पुरुष के प्रेम प्रसंग होते हैं । और ये इतने चर्चित हैं कि इनकी गूंज आज भी बरकरार है । इन पर फिल्में बनी हैं । नाटक खेले गये हैं । ऐसे ही कुछ प्रेम प्रसंग यहां प्रस्तुत हैं, जो वासना मुक्त पवित्र और अनन्य प्रेम के ज्वलंत उदाहरण हैं—

लैला-मजनूं

बचपन से ही लैला और कैस एक-दूसरे को बहुत चाहते । उनका पढ़ने में मन न लगता । तख्तियों पर एक-दूसरे का नाम लिखते रहते । मकतब में पढ़नेवाले लड़के-लड़कियों की जुबान पर इनकी परस्पर चाहत की कहानी ही रहती । लोक-निंदा के कारण लैला के माता-पिता ने उसका मकतब में जाना बंद कर दिया और महल से बाहर कदम रखने पर पाबंदी लगा दी ।

कैस ने अपनी किताबें फाड़कर फेंक दीं । तख्ती तोड़ डाली । नज्द के बाजारों में, गलियों में भूखा-प्यासा भटकने लगा । उसे उम्मीद थी कि उसकी आवाज कभी-न-कभी लैला का दीदार करा देगी । सुख-सुविधाओं में पले रईसजादे कैस को फटेहाल देख लोगों ने उसे मजनूं कहकर पुकारना शुरू कर दिया ।

संयोग से एक दिन कैस की आवाज लैला के कानों तक पहुंच गयी । वह दौड़कर बरामदे में आयी और रोते हुए कैस-कैस चिल्लाने लगी । बाजार की भीड़ को देखकर लैला का पिता क्रोध से तिलमिला उठा । उसने अपने सैनिकों को कैस को पकड़ने का आदेश दिया । सैनिकों ने कैस की जमकर पिटाई की और शहर से दूर जंगल में अधमरा कर छोड़ दिया ।

कैस के पिता शाह अमीर ने उसका बड़े प्रयत्न से हकीमों से इलाज कराया । लैला से शादी कराने का वचन दिया । लैला के पिता के पास कैस और लैला की शादी का पैगाम लेकर गये । लैला के पिता ने कहा कि आपके पागल बेटे के साथ अपनी बेटी की शादी कैसे कर दूं ? यदि वह सामान्य होता तो मुझे इनकार न था ।

उधर लैला के पिता ने एक अमीर शहजादे से लैला का निकाह कर दिया । बेबस लैला ससुराल तो आ गयी पर सुहागरात को ही पति को स्पष्ट बता दिया कि उसका पति कैस है । उसके अतिरिक्त वह किसी का स्पर्श भी नहीं करेगी । क्रोध और ग्लानि से झुलसे हुए बख्त लैला को अपने सवारों के साथ नज्द की ओर

कर दिया ।

लैला का कारवां अभी नज्द से दूर था कि कानों में मजनूं की दर्दभरी पुकार यी— 'हाय लैला— तू कहां है ?'

मैं आ रही हूं मेरे कैस', लैला ने बेचैन कहा और कूदकर उस ओर भाग छूटी । लैला ने कैस को देखते ही अपनी दोनों बांहें दीं । मजनूं ने लैला को अपने सीने से लिया । मुद्दत की भूख-प्यास ने दोनों को कमजोर कर दिया था कि वे इस खुशी को त नहीं कर पाये । एक-दूसरे को बांहों में त पर गिर पड़े और उनके प्राण पखेरू उड़

जनूं आज भी जिंदा है अपनी प्रेमिका के और कयामत तक जिंदा रहेगा । उन्हें उसी में दफन किया गया, जिस हालत में दूसरे में आबद्ध उनके बेजान जिस्म रेत पर ए थे ।

यूसुफ और जुलेखा

किसी-किसी पुरुष का व्यक्तित्व, स्वभाव व रिक गठन इतना आकर्षक होता है कि अपनी मान-मर्यादा का उल्लंघन कर हैं । ऐसे ही व्यक्तित्व का धनी था— । बहुत-सी रूपसियों का समूह उसके र्द मंडराया करता था । पर वह इन सबसे र अपने बूढ़े बाप की सेवा में दत्तचित्त था, जो एक दरगाह के मुजाविर थे । क रईस बाप की बेटी तो आशिकी की को भी पार कर गयी और कई बार उससे निवेदन किया । यूसुफ ने बड़ी संजीदगी समझाते हुए कहा, 'इस मिट्टी के शरीर इतनी आसक्ति क्यों ? इस नश्वर शरीर



के मोह में फंसकर अपने अनमोल जीवन को दांव पर लगाना मूर्खता है ।'

पर यौवनमत जुलेखा ने हार नहीं मानी, अपितु राज्य के शक्ति संपन्न अपनी उम्र से बहुत बड़े प्रधानमंत्री से शादी कर ली । प्रधानमंत्री अपनी रूपसी पत्नी की हर बात मानता था । जुलेखा ने यूसुफ की भरती अपने विशिष्ट सेवकों में करा ली । इस तरह यूसुफ को दिन-रात अपने पास रहने पर मजबूर कर दिया । जुलेखा कई वर्षों तक यूसुफ को अपने प्रेम-जाल में फांसने की कोशिश करती रही । लेकिन असफल रही ।

परेशान यूसुफ महल से भाग खड़ा हुआ और अपने पिता के पास खानकाह में रहने लगा । इसी दौरान प्रधानमंत्री की मृत्यु हो गयी । अब तो जुलेखा अपार संपत्ति की स्वामिनी बन गयी । उसने यूसुफ के पिता को धन का लालच देकर दबाव डालने की कोशिश की— किसी भी तरह यूसुफ से उसका विवाह करा दें । पर फकीरों की तरह रहनेवाले उस पिता को भौतिक संपत्ति से कोई लगाव नहीं था ।

यूसुफ की याद में जुलेखा दिन-रात उदास रहती । हमेशा रोते रहने से उसने अपनी आंखों

की रोशनी खो दी और बीमार रहने लगी। परिवारवालों ने उसे घर से बाहर कर दिया। उसकी सारी संपत्ति छीन ली।

अंधी-बीमार और बेसहारा जुलेखा की दुर्दशा देखकर यूसुफ के पिता को दया आ गयी और उसे वह खानकाह में ले आये। एक कोठरी में उसके रहने की व्यवस्था कर दी। उन्होंने जुलेखा को परामर्श दिया कि वह खुदा की इबादत में ही अपना अधिक-से-अधिक समय लगाये।

कुछ दिनों बाद जुलेखा की आंखों में रोशनी आ गयी। पिता ने यूसुफ को समझाया और जुलेखा के साथ शादी कर दी। पितृभक्त यूसुफ ने पिता की आज्ञा के सामने सिर तो झुका दिया पर अनिच्छा से हुई इस शादी से उसे न तो प्रसन्नता हुई और न सुख। यूसुफ को पति-पत्नी संबंधों में कोई रुचि नहीं थी। वह आध्यात्मिक संबंधों का पुजारी था। थोड़े ही समय बाद उसकी मृत्यु हो गयी। प्रेम दीवानी जुलेखा इस वियोग को सहन न कर पायी और उसके भी प्राण-पखेरू उड़ गये।

शीरीं-फरहाद

अर्मीनिया की शहजादी शीरीं की तसवीर देखकर ही फारस का बादशाह खुसरो उस पर मोहित हो राज-काज से विमुख हो बैठा तो उसके वजीर ने खुसरो की एक तसवीर शीरीं के पास भेजकर शादी का प्रस्ताव रखा। शीरीं शादी के तो लिए राजी हो गयी पर उसने एक शर्त रखी कि 'वह अपनी रियाया के लिए दूध का इंतजाम करने का वायदा करे।'

खुसरो ने वायदा कर लिया, शादी भी कर ली पर परेशान रहने लगा क्योंकि फारस में पानी की बेहद कमी थी, जिसकी वजह से दुधारू पशुओं के लिए चारा तक नहीं मिल पाता था।

वजीर ने उपाय सुझाया कि 'मेरे बचपन का दोस्त फरहाद बहुत बड़ा इंजीनियर है। वह इराक और अन्य देशों में बांध बनाकर नहरें निकाल चुका है।'

फरहाद को बुलवाया गया और उसे सारी बातें समझाने के लिए शीरीं के महल में भेज दिया गया। दोनों ने एक-दूसरे को देखा और दिल दे बैठे।

फरहाद ने शीरीं के लिए नहर बनाने का काम मंजूर कर लिया और काम पर लग गया। एक दिन शीरीं उस पहाड़ पर पहुंची जहां काम चल रहा था। उसने देखा कि फरहाद एक पत्थर से उसकी मूर्ति गढ़ रहा है। दोनों के बीच बढ़ते प्रेम के कारण शीरीं खुसरो के प्रति उदासीन होने लगी तो खुसरो ने शीरीं पर रोक लगा दी। फरहाद ने काम रोक दिया तो खुसरो ने फरहाद को बुलाकर कहा, 'हमें पता है तुम दोनों प्रेम करते हो। हम बीच में रुकावट नहीं बनेंगे। जैसे ही नहर का काम पूरा होगा, शीरीं तुम्हें दे देंगे।'

फरहाद दिन-रात काम में जुट गया। नहर पूरी हुई। खुसरो ने फरहाद के साथ धोखा किया। फरहाद के पास खबर पहुंचायी कि शीरीं ने आत्महत्या कर ली है। इतना सुनते ही फरहाद ने कुल्हाड़ी से अपना सिर काट लिया। जब यह खबर शीरीं को मिली तो भागी-भागी पहुंची और फरहाद की लाश पर पछाड़ खाकर ऐसी गिरी कि फिर कभी नहीं उठी।

दोनों को एक ही कब्र में दफना दिया गया।

—अरिहंत इंटरनेशनल,
२३९, दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६

नेपोलियन ने हालांकि पूरे दिल से प्यार और विवाह किया था जोसेफीन से, लेकिन भोग-विलास की शौकीन, एक के बाद एक प्रेमी बदलनेवाली जोसेफीन ने उसे केवल एक मोहरा बनाया। फिर भी नेपोलियन ने उसे साम्राजी बनाया, फिर तलाक दे दिया, लेकिन मरते दम तक भुला नहीं सका...

ढाई आखर प्रेम का

● संगीता बनर्जी 'अनुश्री'

ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय। प्रेम की इस सर्वव्यापी भावना से साधारण मानव क्या राजे-महाराजे और ऋषि-मुनि तक स्वयं को असंपृक्त नहीं रख सके।

कृष्ण-राधा, विश्वामित्र-मेनका और दुष्यंत-शकुंतला के प्रेम-प्रसंग सर्वविदित हैं। प्रेम की इस दुर्दमनीय भावना से भारत ही नहीं बल्कि विश्व के महान जननायक भी अछूते नहीं रहे।

महान विजेता नेपोलियन बोनापार्ट के पौरुष और पराक्रम से तो सभी परिचित हैं, किंतु बहुत कम लोग इस बात से परिचित होंगे कि उसके अंतर में प्यार करनेवाला अत्यंत संवेदनशील हृदय भी था, जिसने उसे जोसेफीन के प्यार का दीवाना बना दिया। कहते हैं कि प्यार अंधा होता है, बोनापार्ट की कहानी भी कुछ ऐसी ही धारणा की पुष्टि करती है।

जोसेफीन फ्रांस के एक सामंत विस्काउंट एलेक्सांडर ब्यूहार्ने की विधवा थी। उसके एक बेटा और बेटी थी। सन् १७८९ में जब फ्रांस में राज्य-क्रांति हुई, तो सम्राट लुई, महारानी एंत्वायनेत तथा उनके अनेक सामंतों के साथ ही जोसेफीन के पति ब्यूहार्ने की भी हत्या कर दी गयी। जोसेफीन को जेल में डाल दिया गया। जेल में रहते हुए उसने फ्रांस के एक प्रभावशाली सेनापति पाल बरास को अपने सम्मोहन में बांध लिया। बरास ने उसे जेल से छुड़ाया और हर तरह की सुख-सुविधा दी। किंतु जोसेफीन प्रारंभ से ही धन-वैभव की लालची तथा विलासी प्रवृत्ति की थी, जिसके चलते उसने सेनापति बरास के साथ ही सेनापति हॉच को भी अपने मोहपाश में जकड़ लिया। हॉच के साथ तो उसके संबंध इतने बढ़ गये थे कि वह उस पर अपनी युवा पत्नी को तलाक देकर उससे विवाह करने के लिए दबाव डालने

लगी । लेकिन, हॉच उसकी एय्याश प्रवृत्ति से खूब परिचित था । उसे मालूम था कि उसके कुत्तों के रखवाले वान एकर से भी जोसेफीन के संबंध हैं ।

जोसेफीन अपनी विलासिताओं की पूर्ति के लिए किसी धनी और प्रभावशाली पुरुष से विवाह की फिराक में थी । तभी उसे फ्रांस के एक सेनापति नेपोलियन बोनापार्ट के बारे में पता चला, जो कुआंरा था । उसने जानबूझकर नेपोलियन की पार्टियों में जाना और उससे पत्र-व्यवहार शुरू कर दिया । उसने लिखा, 'तुम अपनी उस मित्र से मिलने कभी नहीं आते, जो तुम्हारे ही बारे में सोचा करती है । तुम कल दोपहर भोजन पर मेरे यहां आओ । मैं तुमसे मिलना चाहती हूं ।'

अगले दिन नेपोलियन जोसेफीन के घर भोजन पर गया । फिर क्या था ? नेपोलियन जोसेफीन के मोहपाश में आबद्ध हो गया । उसने नेपोलियन से कहा, 'मैं अपने कृपालु मित्र बरास से तुम्हें फ्रांसीसी सेना का सेनापति नियुक्त करने की सिफारिश करूंगी ।' इसके बाद नेपोलियन प्रतिदिन उसके यहां जाने लगा । बरास को जब यह पता चला कि नेपोलियन न केवल जोसेफीन के घर जाता है, बल्कि वह उसे महंगे उपहार भेंट करता है, तब उसने सलाह दी कि नेपोलियन को अपने घर पर धन भेजना चाहिए ।

इस पर नेपोलियन ने बरास को बताया कि वह जोसेफीन से विवाह करना चाहता है । सुनकर बरास आश्चर्यचकित रह गया, किंतु नेपोलियन पर जोसेफीन का प्रेम इस कदर [illegible] था कि वह कुछ और सोचने में असमर्थ था ।

इसके बाद बरास जब जोसेफीन से मिला तो जोसेफीन ने उससे कहा कि, 'नेपोलियन से मुझे प्रेम नहीं है । मैं उससे विवाह करके सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहती हूं । तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम जैसा का तैसा बना रहेगा । मैं चाहे किसी से भी विवाह करूं, लेकिन रहूंगी तुम्हारी ही ।'

दूसरी ओर जोसेफीन ने नेपोलियन को प्रभावित करने के लिए उसे बताया कि बरास की नीयत उस पर खराब है । सुनकर नेपोलियन को क्रोध आ गया । किंतु जोसेफीन ने उसे शांत करते हुए कहा कि बरास उसे इटली में फ्रांसीसी सेना का सेनापति बना सकता है । इस पर नेपोलियन अपना सारा रोष भूल गया । अंततः ९ मार्च १७९६ को दोनों का विवाह हो गया । बरास और उसकी एक अन्य प्रेयसी तेलियन इस विवाह के साक्षी थे ।

विवाह के तीन दिन बाद ही नेपोलियन को युद्ध-क्षेत्र में जाना पड़ा । युद्ध-क्षेत्र में वह जोसेफीन की याद कर रोता रहा और उसे प्रेमभरे पत्र लिखता रहा, जबकि जोसेफीन पेरिस में विलासिताओं में मगन रही । उसने एक नया प्रेमी खोज लिया था— हिप्पोलाईट चार्ल्स । नेपोलियन के प्रतिदिन आनेवाले पत्रों का जवाब वह पांच-छह दिन में मात्र दो-चार पंक्तियों में देकर ही इति कर देती थी । इस पर परेशान होकर विरही नेपोलियन ने उसे अपने पास बुलाने के लिए एक व्यक्ति भेजा । लेकिन जोसेफीन नहीं गयी ।

नेपोलियन अपने पास हमेशा जोसेफीन का चित्र रखता था । एक दिन उस चित्र का शीशा टूट गया, जिसे देखकर उसने अपने साथी से कहा कि 'जोसेफीन या तो बीमार पड़ गयी है



नेपोलियन



जोसेफीन

विश्वासघात कर रही है ।'
लियन जोसेफीन से सारे दोषों को जानते
उसके प्रति आसक्त था । उसने एक बार
नापति से कहा था, 'मेरे मन में
न के लिए आदर नहीं था क्योंकि, मैं
था वह बहुत ही झूठी है । लेकिन, उसमें
छ जरूर था, जिसके कारण मैं उसे प्रेम
गा । मुझे लगा वह सही अर्थ में एक

क्षेत्र में नेपोलियन को एक-के-बाद-एक
हासिल होती जा रही थी । इसी बीच
न ने किसी अज्ञात बीमारी का बहाना
नेपोलियन इस बात से अनजान था
की पत्नी अपने नये प्रेमी के साथ
यां मना रही है । जोसेफीन की बीमारी
कर नेपोलियन ने फ्रांस सरकार से पांच
छुट्टी मांगी । नेपोलियन के भाई ने जब
ो ये पत्र दिखाया तो वह चिंतित हो
से पता था कि नेपोलियन की
ति फ्रांसीसी सेना के लिए घातक सिद्ध

होगी । अतः उसने जोसेफीन को नेपोलियन के पास जाने का आदेश दिया ।

जोसेफीन गयी तो सही लेकिन अपने प्रेमी चार्ल्स को भी साथ मिलान ले गयी । जोसेफीन के आगमन से अत्यधिक प्रसन्न नेपोलियन ने चार्ल्स का भी स्वागत किया और उसे रात्रि-भोज पर आमंत्रित किया । दो दिन मिलान में जोसेफीन के साथ रहने के बाद नेपोलियन इटली में अंतिम ऑस्ट्रियाई दुर्ग पर अधिकार करने चला गया । युद्ध की आपाधापी में जोसेफीन अपनी बग्घी पर सवार होकर मिलान से भाग निकली और पेरिस आकर पुनः अपनी एय्याशियों में डूब गयी ।

रणक्षेत्र में नेपोलियन विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करता रहा । युद्ध में सफलता मिलने पर नेपोलियन जोसेफीन से मिलने जब मिलान पहुंचा तो घर खाली पड़ा था । यह देखकर नेपोलियन रो पड़ा । उसने जोसेफीन को पत्र लिखा कि, 'मैं अपना सब काम छोड़कर तुमसे मिलने गया, लेकिन तुम वहां नहीं थीं । अब

तुम्हारे मन में मेरे लिए प्रेम नहीं रहा । कोई बात नहीं, तुम वहां अपनी खुशियों के साथ जिओ । मैं अकेला हूं और मेरे पास कोई खुशी नहीं है ।'

सन् १७९८ में मिस्र पहुंचने पर नेपोलियन को पता चला कि जोसेफीन अपने प्रेमी के साथ समय बिता रही है । जोसेफीन के प्रति उसके मन में नफरत भर गयी ।

सालभर बाद नेपोलियन दिग्विजयी होकर फ्रांस लौटा और ११ नवंबर १७९९ को उसे फ्रांस का प्रथम कोंसल बनाया गया । वह लक्झेमबर्ग राजमहल में रहने लगा ।

२ दिसंबर १८०४ को नेपोलियन की सम्राट के रूप में नोत्रेडेम गिरजाघर में राज्याभिषेक की रस्में पूरी की गयीं । अपने परिवार के दबाव के बावजूद उसने जोसेफीन को साम्राज्ञी बनाया । जोसेफीन के बारे में एक ज्योतिषी ने उसके बचपन में भविष्यवाणी की थी कि वह बड़ी होकर फ्रांस की साम्राज्ञी बनेगी, लेकिन जीवन के अंतिम समय साम्राज्ञी नहीं रहेगी । ज्योतिषी की भविष्यवाणी सच साबित हुई । कहा जाता है कि राज्याभिषेक के दिन जोसेफीन पच्चीस वर्ष की युवती-जैसी अद्भुत सुंदरी लग रही थी । उसके बालों में हीरे के पिन जड़े गये थे और उसे शाही पोशाक पहनायी गयी थी ।

राज्याभिषेक के बाद नेपोलियन के समक्ष सबसे अहम मसला उत्तराधिकारी का था । लेकिन जोसेफीन ने अपने पति की मृत्यु के बाद जिस प्रकार का भोग-लिप्सापूर्ण विलासी जीवन जिया था, उससे वह बांझ हो चुकी थी । स्वयं को दोषमुक्त रखने के लिए उसने नेपोलियन पर नपुंसकता का आरोप लगाना शुरू कर दिया, लेकिन उसे पता नहीं था कि नेपोलियन के उसके अलावा अनेक स्त्रियों से संबंध हैं ।

जोसेफीन की बातों से नेपोलियन के मन में हीन-ग्रंथि पलने लगी और वह स्वयं को अक्षम मानने लगा । तभी नेपोलियन को अपनी एक अन्य प्रेमिका मादाम तुषादेल से पता लगा कि वह नेपोलियन के बच्चे की मां बननेवाली है । फिर क्या था उसकी तो दुनिया ही बदल गयी अब उसे पक्का विश्वास हो गया कि वह नपुंसक नहीं है । ३० नवंबर १८०९ को उसने जोसेफी[न] को तलाक दे दिया ।

नेपोलियन ने बाद में ऑस्ट्रिया की राजकुमारी मेरी लुइस से दूसरा विवाह किया, जिससे सन् १८११ में उसे गद्दी का उत्तराधिकारी हासिल हुआ । लेकिन धीरे-धीरे उसका सितारा अस्त होने लगा था । सन् १८१४ में उसे एल्बा में नजरबंद कर दिया ग[या] जहां से वह बचकर फ्रांस लौट आया । वहां [से] वह मालमेसौं गया तथा जिस कमरे में जोसेफ[ीन] की मृत्यु हुई थी, उसमें बंद होकर घंटों फूट-फूटकर रोता रहा क्योंकि, मरते वक्त जोसेफीन के मुंह से यही निकला था, 'नेपोलियन, एल्बा ।'

कुछ दिनों बाद नेपोलियन को सेंट हेलेना द्वीप पर निर्वासित कर दिया गया । ५ मई १८२१ को अपने अंतिम समय उसने चार ही शब्द कहे थे, 'फ्रांस, सेना...सेनाध्यक्ष...जोसेफीन ।' जोसेफीन क[े] के बाद उसके होंठ सदा के लिए बंद हो गये थे ।

—द्वारा पी.आर. ब[...]
३७/५ साइट-२,किदवई [...]
कानपुर-२०८०१[...]

चाय पीकर अमित अखबार उठा लाया और नीलिमा ट्रे में बरतन रखते हुए उठी। सुबह का काम नीलिमा को तूफान की गति से करना होता—बच्चों को तैयार करना, स्कूल के लिए टिफिन पैक करना, बिस्तर-कपड़े सहेजकर खुद तैयार होना, नाश्ता बनवाना और तारा को दोपहर के खाने का आदेश देना। इस सब में उसे दम मारने का समय न मिलता। जल्दी-जल्दी नाश्ता करके और थोड़ा-सा टिफिन लेकर वह रिक्शे में जा बैठती। स्कूल तीन-चार मील दूर है और वह भागम-भाग वहां समय से पहुंच पाती।

वह रसोईघर की ओर मुड़ी ही थी कि बाहर से किसी के बातें करने की आवाज सुनायी दी। ट्रे फिर मेज पर रखकर उसने बाहर झांका। बरामदे के सामने रिक्शा खड़ा था और रिक्शेवाला सामान उतार रहा था। सहसा अपने जेठ-जेठानी को देख वह चकित रह गयी। क्षणांश को उसके दिमाग में बिजली-सी कौंधी और खिले चेहरे को बादल की हलकी-सी छाया ने ढक लिया, लेकिन अगले ही क्षण उसने उस बादल को झटक दिया और चेहरे पर

कहानी

बेमौसम की बरखा

• कौशल्या अश्क



बरबस मुसकान बिखेरती हुई वह बाहर को बढ़ गयी ।

जेठ-जेठानी के पैर छूते हुए बोली, "आपने पहुंचने का पता क्यों नहीं दिया ? हम स्टेशन से आपको ले आते ।"

जेठानी ने उसे आलिंगन में लेते हुए आशीर्वाद दिया । अमित और बच्चों का हाल-चाल पूछा । उसके कंधे पर हाथ रखे-रखे आगे बढ़ीं । नीलिमा ने डोलची उठा ली । रिक्शेवाले को सामान अंदर लाने को कहा और कमरे में जाते-जाते पति से बोली, "देखिए, कौन आया है !"

ताऊजी आये हैं । मैं उन्हें चाय देने जा रही हूं । फिर रसोई में आयी । बच्चों के नाश्ते और टिफिन तैयार करने का काम तारा को सौंपा और चाय-बिस्कुट लेकर गयी । पति से कहा, "आप दीदी और भाई साहब को चाय बनाकर दीजिए, मैं जरा बच्चों को देख लूं ।"

"अरे मैं बना लूंगी चाय, तुम चिंता न करो ।" जेठानी ने आत्मीयता से कहा ।

भागम-भाग बच्चों को नाश्ता कराया, टिफिन दिया, खुद तैयार हुई और फिर उनके पास आयी बोली, "मैं नाश्ता लगाती हूं, आप लोग आइए ।"

'मेरा अपना घर है...हम इकट्ठे रहते थे, तब भी तुम पढ़ाने जाती तो मैं करती थी न !'...कहकर जेठानी की आत्मीयता दर्शाना उसे बेवक्त की बरखा-सा लगा और उसकी आंखों में वे चार-पांच साल घूम गये, जब वे सचमुच इक्टठे रहते थे...

अमित अखबार में खोया था, उसे यह भी पता न चला कि नीलिमा बाहर गयी है । आंखें उठाकर उसने देखा और सहसा उठ खड़ा हुआ, "आइए, आइए ! यह अचानक कैसे ? आपने पता ही नहीं दिया !"

"अरे पता क्या देते, सहसा प्रोग्राम बना और हम चल पड़े ।"

"मैं चाय लाती हूं ।" नीलिमा तेजी से रसोई में गयी । तारा से पानी रखने को कहकर उसने बच्चों के कपड़े निकाले और उन्हें तैयार होने को कहा । छोटू तैयार होने में सबसे ज्यादा देर लगाता है । उसे समझाया कि आज तुम अपने आप जल्दी से तैयार हो जाओ, तुम्हारी ताई और

स्कूल को जाते समय जेठानी से बोली, "दीदी, मैंने तारा को समझा दिया है, आपको जिस चीज़ की जरूरत हो, उससे कहिएगा । वह खाना पकाकर आपको खिला देगी । मैं छुट्टी लेकर जल्दी आने की कोशिश करूंगी ।"

"मैं कोई परायी हूं, मेरा अपना घर है, मैं सब देख लूंगी । हम इकट्ठे रहते, तब भी तुम पढ़ाने जाती तो करती न ।"

तभी रिक्शेवाले ने घंटी बजायी और नीलिमा स्कूल के लिए चल पड़ी ।

'मेरा अपना घर है...हम इकट्ठे रहते तब भी...' कहकर जेठानी का ममता और आत्मीयता दर्शाना उसे बेवक्त की बरखा-सा

लगा और उसकी आंखों में वे चार-पांच साल घूम गये जब वे सचमुच इकट्ठे रहते थे ।

ससुरजी अपनी कच्ची गृहस्थी छोड़कर असमय ही चल बसे थे । केवल जीजी की शादी उनके सामने हुई थी । दोनों भाई पढ़ रहे थे । बीबी रानी और मीना छोटी थी । उनकी शिक्षा-दीक्षा और विवाह का भार अम्माजी पर आ पड़ा लेकिन, उन्होंने बड़ी हिम्मत से बच्चों को पाला-पोसा और बड़ा किया । अम्माजी के छोटे भाई खुशहाल और समर्थ थे साथ ही उदार भी । बहन की इस विपत्ति में वे उसके साथ खड़े रहे । लेकिन, अम्माजी उनसे उतना ही लेतीं, जितना अनिवार्य होता । शेष खर्च वे स्वयं कपड़े सीकर, छोटे बच्चों की ट्यूशन लेकर पूरा करतीं । मामा की सहायता और मां के परिश्रम से गाड़ी खिंचती गयी । फिर भी तंगी में ही बच्चे बड़े हुए । इन अभावों की प्रतिक्रिया दोनों भाइयों पर हुई । जेठजी के मन में ज्यादा-से-ज्यादा पैसा कमाने की लालसा जगी और अमित को पैसे से मोह न रहा । अम्माजी तो चाहती थीं कि बेटे खूब पढ़-लिख जाएं, लेकिन जेठजी इंटर के आगे नहीं बढ़े । उन्होंने पहले नौकरी की, फिर एक मित्र के साथ मिलकर एक्सपोर्ट-इंपोर्ट का बिजनेस ।

शादी के कुछ दिन बाद ही एक दिन जेठानी ने कहा था, 'शाम का खाना तुम बना लेना । मुझे बच्चों के साथ घूमने जाना होता है ।' तब से एक समय का खाना वही बनाती थी, चाहे उसकी तबीयत ठीक हो या न हो ?

छोटी-छोटी भाव-भंगिमाओं, [illegible] से नीलिमा को पता चल गया कि इस घर में उसका आना जेठानी को अच्छा नहीं लगा । पहले वही एक बहू थीं, उन्हीं की पूछ-प्रशंसा होती थी । अब कभी कोई नीलिमा की तारीफ कर देता, तो जेठानी का चेहरा तन जाता । एक दिन उसकी बनायी सब्जी की प्रशंसा करते हुए जेठजी ने कह दिया कि 'आलू-मटर नीलिमा ने बहुत लजीज बनाये हैं, मैं ज्यादा खाना खा गया हूं', तो जेठानी का मूड बिगड़ गया और उनकी भूख सूख गयी ।

अपने को श्रेष्ठ प्रमाणित करने के लिए वह बात-बात में नीलिमा की आलोचना करने लगी कि... 'चार कपड़ों में पूरी बट्टी लगा दी है, साबुन बहुत गलाती हो... ।'

अम्माजी सब जानती-समझती थीं उन्हें बड़ी बहू का यों ऐठना, बात-बात में ताने-तिश्ने देना अखरता था, पर वे बहुत धैर्य वाली थीं । वे कठोर रुख अपनातीं तो घर टूट-बिखर जाता, स्थिति में सुधार न होता, यह वे जानती थीं । इसलिए जेठानी की ऐसी बातों को सुनकर भी अनसुना कर देतीं । छोटा बेटा कहीं ठिकाने से लग जाए, नीना की शादी हो जाए, फिर उनके सब कर्त्तव्य पूरे हो जाएंगे । जहां भी उनका जी होगा, वे रहेंगी ।

...नीलिमा डबल एम.ए. थी, नौकरी करना चाहती थी, लेकिन नौकरी चाहने से ही तो मिल नहीं जाती । वह अखबार में विज्ञापन देखती रहती । तीन-चार महीने बाद उसे एक प्राइवेट कॉलेज में नौकरी मिल गयी । तब वह अपना वेतन भी अम्माजी को दे देती ताकि, जेठानीजी को यह न लगे कि अमित घर में कम पैसे देते हैं, लेकिन यह भी उन्हें अच्छा नहीं लगा । इतनी [illegible] भला कोई क्यों करे ?

रोज-रोज की खिटखिट से नीलिमा का दम घुटने लगा था और वह बुरी तरह ऊब गयी थी। दिल्ली में रहते हुए अलग रहना भी उसे उचित न लगा और वह अमित से कहती कि कहीं दूसरी जगह चलकर रहें। अमित सब देखता-सुनता था, नीलिमा की परेशानी भी समझता था। उसे उदास देखकर हंसते हुए आश्वस्त करता, "इक जरा सब्र की फरियाद के दिन थोड़े हैं।' लेकिन नीलिमा को फरियाद का एक-एक दिन भारी लगता।

तभी एक मित्र के बुलावे पर वह इलाहाबाद आया था, विश्वविद्यालय में कुछ नियुक्तियां होनी थीं। इसने इंटरव्यू दिया और चुन लिया गया। नीलिमा बहुत खुश थी कि अब इस घुटन से मुक्ति मिलेगी। जेठानी भी कम खुश न थी कि वे लोग चले जाएंगे और फिर से उनका एक-छत्र साम्राज्य होगा, उन्हीं की पूछ।

इलाहाबाद में अम्माजी आतीं, कई-कई महीने रहती हैं। कभी जीजी, बीबी रानी और मीना भी आकर रह गयीं। लेकिन दीदी, भाई साहब तो कभी नहीं आये और न कभी उन्होंने बुलाया ही। इलाहाबाद जाते समय वे उन्हें नीचे तक पहुंचाने भी नहीं आयीं। अब सहसा वे कैसे उदार हो गयीं।

उन चार-पांच वर्षों में वह दो-दो बच्चों की मां बन गयी, लेकिन जब तक वे दिल्ली में इकट्ठे रहे, वह स्कूल से लौटकर हमेशा शाम का खाना बनाती रही। बच्चों को कभी अम्माजी की गोद में देकर, कभी मीना के पास छोड़कर वह घर के छोटे-मोटे काम भी, जो उसके जिम्मे थे, करती रही। दिन में अम्माजी ही बच्चों को देखती थीं। अपना और बच्चों का काम वह रात में ही करती। तब तो कभी जेठानी ने नहीं कहा कि तुम पढ़ाने जाती हो, बच्चे छोटे हैं, मैं कर लूंगी और अब उनकी ममता का समुद्र उमड़ा पड़ रहा है। आखिर, इस कायाकल्प का रहस्य क्या है ? वह सोचने लगी। सहसा रिक्शा रुक गया। वह उतरी और स्कूल में चली गयी।

जो रहस्य दिन में उसकी समझ में न आ रहा था, रात में पति ने उसे खोल दिया, "भाई साहब के बिल पास नहीं हुए, काम ठप्प पड़ा है, वर्कर्स पैसा मांगते हैं, हड़ताल करने की धमकी देते हैं... उन्हें छह-सात हजार की तुरंत जरूरत है। यह सब बताते हुए अमित ने उससे पूछा था कि उन्हें क्या जवाब दिया जाए ?

कुछ पल वह चुपचाप सोचती रही। एक बार उसके मन में आया कि मना कर दे, लेकिन अगले ही क्षण अपने मामा का सौम्यं, शांत, गंभीर मुख उसके सामने घूम गया और उनका सुनाया शेर कानों में गूंजने लगा—

रोक लो गर गलत चले कोई
बख्श दो गर खता करे कोई

और उसने पति से हां कह दी।

जेठजी को वापस जाने की जल्दी थी। बैंक में उनका सेविंग फंड का खाता था। उसमें उतना रुपया नहीं था, अमित ने एक दिन की छुट्टी ली और कैश सर्टिफिकेट गिरवी रखकर छह हजार का प्रबंध किया। इस बीच नीलिमा दिनभर का तांगा करके जेठ-जेठानी को संगम-स्नान और नागवासुकी के दर्शन करा लायी, आनंद भवन और अजायबघर दिखा लायी। वहीं उसने जेठानी के लिए साड़ी और जेठजी के लिए बढ़िया लखनवी कुरता खरीद लिया और बच्चों के लिए मिठाई-नमकीन।

दूसरे दिन वे चलने को तैयार हुए, तो ये सब
ां उन्हें देते हुए उसने दोनों को प्रणाम
ा । जेठजी ने आशीर्वाद दिया, जेठानी ने
खींचकर गले से लगा लिया और उलाहना
लगी कि दिल्ली से आकर उसने तो उन्हें
ा ही दिया है...वे तो सदा उसे याद करते
आदि...आदि ।

घर से निकलने और रिक्शा में बैठने तक
नी निरंतर उसकी प्रशंसा और दिल्ली आने
अनुरोध करती रहीं ।

रिक्शा आंखों से ओझल हो गया, लेकिन वह कितनी देर वहीं खड़ी शून्य में ताकती रही । उसका मन अचानक भारी हो आया । काश, उन्होंने दिल्ली में उससे अच्छा व्यवहार किया होता, तब उनके लिए जो भी उसने किया, उसमें सूखे कर्त्तव्य के बदले आंतरिक उत्साह होता और उनका यह आडंबर भरा प्यार उसे कितना सहज लगता, उसे कितनी खुशी होती ?

—५ खुसरोबाग रोड, इलाहाबाद-२११००१

मीर मुंशी का वेश्या-प्रेम

मुगल बादशाह मुहम्मद शाह उर्फ रंगीले बादशाह का दिल्ली में दरबार लगा हुआ था । दरबारियों को चोरी-छिपे पता था कि मीर मुंशी दरबारी वेश्या सुजान से प्रेम करते हैं । दरबारियों ने बादशाह से कहा, 'जहांपनाह, मीर मुंशी ध्रुपद बहुत अच्छा गाते हैं ।'

बादशाह ने कहा, 'मीर मुंशी गा कर हमें भी सुनाओ ।' मीर मुंशी ने मना कर दिया ।

इस पर दरबारियों ने कहा, 'हजूर, अगर सुजान कह देगी, तो ये जरूर गा देंगे ।'

बादशाह के कहने पर सुजान ने मीर मुंशी से कहा । मीर मुंशी ने फौरन गाना शुरू कर दिया । क्योंकि, वह सुजान को सुना रहे थे, लिहाजा सुजान की ओर मुंह कर लिया, तो बादशाह की ओर उसकी पीठ हो गयी ।

बादशाह ने इस बेअदबी पर उन्हें शहर से निकाल दिया । मीर मुंशी ने अपनी प्रेमिका सुजान से साथ चलने के लिए कहा तो, उसने साफ मना कर दिया ।

टूटा दिल लिये वह वृंदावन चले आये और कृष्ण की भक्ति में लवलीन हो गये । लेकिन वह सुजान को न भुला सके । सुजान का नाम उन्होंने कृष्ण के लिए प्रयुक्त किया और हिंदी काव्य-जगत को विरह-वियोग की सर्वाधिक मार्मिक रचनाएं दीं ।

नादिरशाह की फौजों ने वृंदावन में लूट-मार करते समय उनका एक हाथ काट डाला । मरते हुए भी उन्होंने अपने तकिये पर अपने बहते खून से सुजान को संबोधित करते हुए यह कवित्त लिखा—

....अधर लगे हैं आनि करि कै पयान प्रान,
चाहत चलन ये संदेसौं लै सुजान कों ।।

सुजान के ये अनन्य प्रेमी थे ब्रज भाषा के मूर्धन्य कवि धनानंद ।

विधि-विधान

नोटरी का प्रमाण-पत्र

पी.के. नागवंशी, धमतरी : मेरे विरुद्ध न्यायालय में एक आपराधिक प्रकरण विचाराधीन है । इस प्रकरण में पुलिस ने जो गवाह बनाये थे, उन गवाहों ने वादी से रकम ऐंठने की योजना के तहत शपथ-आयुक्त (नोटरी) के समक्ष शपथ-पत्र दिया कि उन्हें प्रकरण के संबंध में कोई जानकारी नहीं है । यह शपथ-पत्र नोटरी द्वारा रजिस्टर्ड भी है । किसी तरह इनकी फोटो प्रतियां मुझे मिल गयी हैं । अब यदि सुनवायी के दौरान ये गवाह मेरे खिलाफ बयान देते हैं, तो क्या मैं उनके शपथ-पत्रों को पेश कर उन्हें झूठा साबित कर सकता हूं ?

शपथ-आयुक्त या नोटरी पब्लिक के समक्ष दिये गये शपथ-पत्र को न्यायालय में गवाह को दिखाया जा सकता है । इससे इनकी गवाही की विसंगति न्यायालय के समक्ष आ सकती है । लेकिन, फोटो प्रतियां प्रस्तुत करने के लिए उसकी असल भी न्यायालय को चाहिए होगी । जिस व्यक्ति के पास असल दस्तावेज हैं, उसे वह दस्तावेज न्यायालय में प्रस्तुत करने के लिए बुलवा लेना चाहिए ।

नियमानुसार नोटरी पब्लिक को शपथ-पत्र प्रमाणित करने का अधिकार होता है, और उसके प्रमाणित शपथ-पत्र न्यायालय को मान्य होते हैं ।

जनहित याचिका

रजतकुमार मुखर्जी, तारापुर : सामान्य रिट याचिकाओं और जनहित याचिकाओं में क्या अंतर है ? कोई भी याचिका कब जनहित याचिका कहलाती है तथा जनहित याचिकाएं लोक महत्त्व की हैं, यह सिद्ध करने की जिम्मेवारी किसकी होती है ? और क्या जनहित याचिकाएं केवल उच्च न्यायालयों एवं उच्चतम न्यायालयों में ही दी जा सकती हैं ?

किसी व्यक्ति विशेष द्वारा अपने अधिकार के संरक्षण के लिए दायर की गयी समादेश याचिका सामान्य मानी जा सकती है । इसमें व्यक्ति किसी नियम के उल्लंघन की शिकायत करता है । यदि याचिका द्वारा किसी ऐसी परेशानी या शिकायत के निवारण की बात की जाए, जो समाज, प्रदेश या जनता को प्रभावित करती हो, तो उसे जनहित याचिका माना जा सकता है । याचिका का महत्त्व प्रमाणित करने का काम वादी का होता है । समादेश याचिका चाहे सामान्य हो या जनहित, उच्च न्यायालय या सर्वोच्च न्यायालय में ही दायर की जाती है ।

बैंक ऋण

शशि, पटना : मेरे छोटे भाई ने शिक्षित बेरोजगार योजना के अंतर्गत अपनी पढ़ाई की

डिग्री बैंक में रखकर कुछ हजार रुपये का ऋण लिया था । भाई का स्वर्गवास हो गया । भाई अविवाहित था और उसके मां-बाप भी जीवित नहीं हैं । ऐसी स्थिति में अब क्या होगा ?

बैंक से ऋण लेनेवाला व्यक्ति ऋण की अदायगी का जिम्मेवार है । ऋण लेनेवाले की मृत्यु होने पर उक्त व्यक्ति की संपत्ति से ऋण की राशि वसूल की जा सकती है । डिग्री का उपयोग या लाभ तो मृतक को ही था । उसकी मृत्यु के बाद डिग्री की उपयोगिता ही शून्य हो जाती है ।

दूसरी शादी की कहते हैं

राजेंद्र प्रसाद, छपरा : मेरी पुत्री की शादी हिंदू विधि-विधान से सन् ९२ में हुई थी और गोना उसके दो साल बाद । वह एक महीने ससुराल में रहने के बाद आयी, तब से ससुरालवालों ने उसे बुलाया ही नहीं । उसके सारे जेवर, कपड़े उन्होंने रख लिये हैं और उसे छोड़ने की बात कहते हैं । वे दूसरी शादी करना चाहते हैं । बताइए, मैं क्या करूं ?

विवाह के समय पिता पक्ष या ससुराल पक्ष दोनों से ही मिलनेवाला जेवर वधू की संपत्ति होता है । अतः ससुरालवालों को जेवर रखने का अधिकार नहीं है ।

लड़की को छोड़ देने की धमकी का भी कोई औचित्य नहीं लगता । वे दूसरी शादी भी नहीं कर सकते ।

आपकी लड़की दांपत्य संबंधों की पुनर्स्थापना के लिए कार्यवाही कर सकती है । ससुरालवालों से जेवर वापस लेने की कार्यवाही भी की जा सकती है । दूसरी शादी करने के विरुद्ध रोक लगाने की कार्यवाही की जा सकती है । इसके लिए न्यायालय से आंतरिक निषेधादेश भी मांगा जा सकता है ।

> **विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ**
>
> **—रामप्रकाश गुप्त**

मामला आरक्षण का

डॉ. उमेश प्रसाद दास, जयपुर : मैंने श्रीजगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी में प्रवक्ता पद हेतु साक्षात्कार दिया । उसमें सफल घोषित किया गया, जिसका अनुमोदन विश्वविद्यालय सिंडीकेट ने भी कर दिया, परंतु इस तरह अनुमोदन किया कि यह पद आरक्षित है अतः राज्यपाल के अनुमोदन के पश्चात नियुक्ति दी जाए । जब यह पद विज्ञापित हुआ था, तब उस समय दो पद हेतु विज्ञापन था, जिसमें आरक्षण जैसा शब्द कुछ भी नहीं था । अब मैंने कुलपति और राज्यपाल के कार्यालय में संपर्क किया तो मुझे बताया गया कि ऐसा कोई नियम नहीं है, फिर भी समाज कल्याण विभाग से रिपोर्ट मांगी गयी है । लेकिन दो साल बीत गये बताइए, मुझे क्या करना चाहिए ?

साक्षात्कार के बाद आपकी नियुक्ति में विलंब हो रहा है । साक्षात्कार में आये व्यक्तियों में किस क्रम में वरिष्ठता निश्चित की गयी, आपका स्थान कौन-सा है ?

आदि की सूचना आपको आधिकारिक रूप में अभी नहीं मिली । चयन की प्रक्रिया अभी चालू लगती है । ऐसी स्थिति में पक्षपात या अधिकार हनन की बात आप नहीं कर सकते । राजभवन अभी दूसरे कार्यालयों से रिपोर्ट की प्रतीक्षा में है । ऐसी स्थिति में आप कोई कानूनी कार्यवाही नहीं कर सकते । प्रतीक्षा और प्रयास का ही रास्ता अपनाया जा सकता है ।

नकल करने का दंड

शंकरलाल अग्रवाल, नयी दिल्ली : मेरा पुत्र विश्वविद्यालय की परीक्षा में नकल करने का दोषी ठहराया गया और उसका वह सेमेस्टर रद्द कर दिया गया । अगली बार उसने परीक्षा उत्तीर्ण कर ली । क्या अब उसे सरकारी नौकरी मिल सकती है ? नौकरी में भविष्य में तो कोई परेशानी नहीं आएगी ।

परीक्षा में नकल (अनुचित साधन) उपयोग करने के कारण विद्यार्थी की एक सेमेस्टर की परीक्षा रद्द कर दी गयी । गलती करने की उसे सजा मिल गयी । अब नियमानुसार परीक्षा पास कर लेने के बाद उसे सरकारी नौकरी प्राप्त करने में कोई परेशानी नहीं आनी चाहिए और भविष्य में भी सरकारी नौकरी से हटाये जाने का कोई कारण नहीं लगता ।

काम समान : वेतन असमान

कदापि, नागदा : मैं एक टेक्सटाइल उद्योग में श्रमिक हूं । हम दो व्यक्ति एक समान कार्य करते हैं, फिर भी हम दोनों के वेतन (मूल वेतन) में भारी असमानता है । इस असमानता को दूर करने के लिए क्या किया जाए ?

एक-सा काम करनेवाले दो व्यक्तियों को समान वेतन मिलना चाहिए । समान कार्य के लिए समान वेतन देने का फैसला सर्वोच्च न्यायालय ने कई मामलों में दिया है ।आप जिस उद्योग में कार्यरत हैं वह सरकारी क्षेत्र में है या निजी क्षेत्र में ? सरकारी क्षेत्र में होने की स्थिति में उच्च न्यायालय में समादेश याचिका दायर की जा सकती है । निजी क्षेत्र में होने की स्थिति में श्रमिक न्यायालयों में आवेदन किया जाना चाहिए । वैसे सरकारी क्षेत्र में होने पर भी श्रमिक न्यायालय में आवेदन किया जा सकता है ।

शहजादों की प्रेमिकाओं का भाग्य

शाह, शहजादों और राजकुमारों की निम्नवर्गीय प्रेमिकाओं के भाग्य में प्रायः बेमौत मरना ही बदा होता था, चाहे वह शहजादे सलीम (जहांगीर) की प्रेमिका अनारकली हो या शहजादे खुर्रम (शाहजहां) की गुलारा बेगम, या पेशवा बाजीराव की मस्तानी, या औरंगजेब की हीराबाई जैनाबादी या भरतपुर के राजकुमार जवाहर सिंह की गन्ना बेगम । आदि-आदि ।

सभी फूल प्रेम के लिए नहीं

● डॉ. गिरिजा शंकर त्रिवेदी

फूल वृक्ष के हृदय का उल्लास होते हैं। वृक्ष पत्तों, फूलों और फलों के माध्यम से ही अपने को अभिव्यक्त करते हैं। इनमें भी फूल पादप की कलात्मक अभिव्यक्ति है। वृक्ष सत्य है तो फूल सुंदर और फल शिव। इस प्रकार वृक्ष का व्यक्तित्व सत्यं शिवं सुंदरम का समन्वय होता है। इतना ही नहीं, सरल से लेकर गहन-गूढ़ विषयों के प्रतिपादन तक में फूल माध्यम बनते आ रहे हैं। वन-श्रेणियों के लिए कनेर-पुष्प कर्णपूर हैं तो कुरवक-कुसुम बाणों के समूह, तिलक, ललाट में रचित तिलक और आम की मंजरियां कामदेव के बाणों की आकृतियां पर्वत के शिखरों पर अधिक संख्या में सुनहरे कुसुमों से शोभित सुंदर शेफालिका के पौधे मन्मथ के तोमर नामक बाण हैं— सिंधुवारांस्तयोदारान् मन्मथस्येव तोमतन। प्रास, विचित्र यंत्र और चमकीले शस्त्रों से पटी पृथ्वी जय काव्य के रचयिता को फूलों से ढकी हुई-सी प्रतीत हुई। चंपा वृक्षों की पंक्तियों से घिरी होने के कारण नगरी का नाम ही चंपा पड़ गया था।

भारतीय जीवन में फूलों का अतीव महत्त्व है। चाहे हमारे संस्कार हों या सामाजिक और पारिवारिक अनुष्ठान, फूलों के बिना वे पूरे नहीं होते। फूल के पर्यायवाची 'सुमनस्' की व्युत्पत्ति करते हुए महाभारत में कहा गया है— **"मनो ह्लादयते यस्माच्छ्रियं चापि दधाति च। तस्मात् सुमनसः प्रोक्ता नरैः सुकृतकर्मभिः"** फूल मन को आनंदित करते हैं तथा शोभा और संपत्ति का आधान। इसीलिए पुण्यात्मा मनुष्यों ने उन्हें सुमन कहा है। हमारी मान्यता रही है कि जो मनुष्य पवित्र होकर देवताओं को फूल अर्पित करता है, उसके प्रति देवता संतुष्ट होते और उसे पुष्टि प्रदान करते हैं।

सभी पुष्प पूजा के लिए नहीं

रंग और गंध की दृष्टि से फूल अनेक प्रकार के होते हैं। उनकी जातियां और प्रजातियां भी बहुत हैं। लेकिन सभी पुष्प पूजा के लिए नहीं होते। अच्छी गंधवाले फूल देवताओं को प्रिय होते हैं— **"इष्ट-गंधानि देवानां पुष्पाणीति विभावय"** जिन वृक्षों में कांटे नहीं होते, उनमें जो अधिकांश श्वेतवर्णवाले हैं, वे फूल देवताओं को सदैव प्रिय हैं। कमल, तुलसी और चमेली— ये सब फूलों में अधिक प्रशंसित हैं। महाभारतकार का निर्देश है कि जलं में उत्पन्न होनेवाले कमल और उत्पल आदि पुष्प हैं, उन्हें विद्वान पुरुष नागों और यक्षों को समर्पित करें। अथर्ववेद की ओर इंगित करते

हुए कहा गया है कि शत्रुओं का अनिष्ट करने के लिए किये जानेवाले अभिचार कर्म में लाल फूलोंवाली, कड़वी और कंटकाकीर्ण औषधियों का प्रयोग करना चाहिए— "**औषध्यों रक्त पुष्पाश्च कटुकाः कंटकान्वितः शत्रुणामभिचरार्थमाथर्वेषु निदर्शिताः ।।**" जिन पुष्पों के वृक्षों में कांटे अधिक हों, जिनका हाथ से स्पर्श कठिन जान पड़े, जिनका रंग अधिक लाल या काला हो तथा जिनकी गंध का प्रभाव तीव्र हो, ऐसे फूल भूत-प्रेतों के काम आते हैं ।

देवपूजा और फूलों का अर्पण

देवार्चन में फूल अर्पित करने की परिपाटी है । किंतु कोई भी फूल किसी भी देवता के ऊपर चढ़ा दिया जाए, ऐसा विधान नहीं है । आम के बौर से कामदेव की पूजा की जाती है । आम्रमंजरी के साथ ही अरविंद, अशोक, नवमालिका और नीलोत्पल तो काम के बाण ही हैं । पार्वती अपने हाथ से सुखाये कमल गट्टों की माला (पुष्कर बीज माला) शिव को पहनाती है । धतूरे का फूल भी शिव को प्रिय है । हरसिंगार का नाम ही प्रतिपादित करता है कि वह हर का श्रृंगार है । नागकेसर के विकसित धवल पुष्प भी भगवान शंकर को अर्पित किये जाते हैं । जहां तक आक के पुष्पों का प्रश्न है, उनसे शिव की नहीं, बल्कि उनके पांच प्रमुखगणों की पूजा करनी चाहिए, विशेष रूप से उन लोगों को जो स्वास्थ्य और प्रचुर धन की कामना करते हैं— "**अर्कपुष्पैस्तु ते पंचगणाः पूज्या धनार्थिभिः ।**" लेकिन पार्वती की रुचि शिव से भिन्न है । वे अपने कंठ में कनेर-पुष्पों की माला धारण करना ही उचित मानती हैं । देव-विग्रहों पर चंदन के पुष्प चढ़ाने का भी विधान है । सूर्य की पूजा कुटज (कट सरैया) के कुसुमों से की जाती है जबकि विद्याधरगण दिव्य मंदात-पुष्पों से सूर्यदेव की पूजा करते हैं । कालिदास का यक्ष कुटज के फूलों से मेघ को अर्घ्य देता है । देवार्चन में विकसित कदंब-पुष्प भी उपयोग में लाये जाते हैं । धीरे-धीरे देव-पूजा में अन्य पुष्पों का भी समावेश कर लिया गया जैसे अमलतास, पद्मक आदि ।

महाभारत में वनमालाधारी श्रीकृष्ण युद्धिष्ठिर के प्रति पुष्पों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि हे राजन् ! जो फूल मुझे बहुत प्रिय हैं, उनके नाम हैं— कुमुद, करवीर, चणक, मालती, जातिपुष्प, नन्धावर्त, नंदिक, पलाश, भृंगक और वनमाला । इन्हीं में वे दूर्वा को भी शामिल कर लेते हैं । गुणात्मक दृष्टि से सब प्रकार के फूलों से हजार गुना अच्छा माना गया है— उत्पल । उत्पल से बढ़कर है पद्म, पद्म से शतदल, शतदल से सहस्रदल और सहस्रदल से पुंडरीक, किंतु पूजा माहात्म्य में हजार पुंडरीक से बढ़कर तुलसी की प्रतिष्ठा है लेकिन उससे भी वक्रपुष्प को महत्त्व दिया गया है और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है सौवर्ण । इससे बढ़कर श्रीकृष्ण का अन्य कोई भी फूल प्रिय नहीं है— "**सौवर्णात् । तु प्रसूनाच्च मतिप्रियं नास्ति पांडव**"

त्याज्य फूल

सभी फूल ग्राह्य नहीं होते । वेदव्यास ने उन फूलों को भी गिनाया है जो त्याज्य हैं । ऐसे फूलों में हैं— किंकिणी, मुनिपुष्प, धुधूर, पाटल, लांगुली जपा, कर्णिकार, अशोक, सेमल, कुमुभ, कोविदार, वैभीतक, कुरंटक, कल्पक, कालक, अंकोल, गिरिकर्णी, नीले रंग के फूल और एक पंखुड़ीवाले फूल । आम और नीम के फूल भी वर्जित हैं । जो फूल श्मशान से लगे पेड़ों में उत्पन्न हुए हों, अथवा जीर्ण-शीर्ण

मंदिरों में, उनका प्रयोग पौष्टिक कर्म, विवाह और प्रिया के साथ एकांत व्यवहार में नहीं करना चाहिए । पर्वत शिखरों पर उत्पन्न फूलों को धोकर अथवा उन पर छींटे देकर देव-कार्यों में उनका यथोचित रूप में उपयोग करना चाहिए ।

यद्यपि पूजा-पाठ में वकुल अर्थात मौलिश्री की माला का भी उपयोग होता है और मांगलिक कृत्यों में उसके फूल भी काम में लाये जाते हैं किंतु वकुल पुष्पों की माला का सही उपयोग है— जयमाला के रूप में । एकांत प्रेमी मौलिश्री की माला से ही एक-दूसरे के साथ जीवन-सूत्र में बंध जाते थे । जयमाला का वास्तविक महत्त्व तभी है जब वह बाजार से न खरीदी जाए बल्कि प्रणयी अपनी प्रणयिनी के लिए और प्रणयिनी अपने प्रणयी के लिए अपने-अपने हाथों से गूंथकर तैयार करें तथा यथावसर एक-दूसरे के कंठ में अर्पित करें । इस तथ्य की पुष्टि नाटककार भवभूति 'मालती माधवम्' में करते हैं, जहां प्रेमी माधव अपनी प्रेमिका माधवी के प्रथम दर्शन से ही उत्पन्न अतिशय अनुराग की साक्षिणी, काम-कानन के अलंकार रूप केसर तरु के प्रसूनों की माला गूंथकर तैयार करता है और पहनाता है । उसे बहुत प्रसन्नता होती है कि उसकी प्रणयी-सखी ने ऐसी माला को प्रेमपूर्वक कुच-कुड्मलों के भारवाले अपने वक्ष-स्थल पर धारण कर उसे गौरवान्वित किया—

''विस्तारिस्तन-कुड्मल-भरोत्संगेन संभावि... ।''

माधव का शरीर भी मालती के वकुलपुष्प हार का अवलंबन बनता है ।

फूलों का किसी-न-किसी रूप में सर्वत्र उपयोग और महत्त्व है । हमारी प्राचीन मान्यता है कि फूलों की सुगंध से देवता प्रसन्न होते हैं तथा उनके अवलोकन से यक्ष और राक्षस तुष्ट हो जाते जबकि नाग उनका उपभोग करने से तृप्त होते हैं । जहां तक मनुष्यों का संबंध है वे गंध, दर्शन और उपभोग तीनों से ही आनंदित और मग्न होते हैं ।

फूल और शरीर श्रृंगार

शिरीष का फूल शरीर श्रृंगार के लिए प्रसिद्ध रहा है तो एक ऐसा समय भी आया जब लाल-लाल कुसुम कलियोंवाली करवीर की माला प्राण दंड के समय पहनायी जाती रही है— इसका साक्ष्य महाकवि शुद्रक अपने लोकप्रिय नाटक 'मृच्छकटिकम्' में प्रस्तुत करते हैं । फूलों का किसी-न-किसी रूप में सर्वत्र उपयोग और महत्त्व है । हमारी प्राचीन मान्यता है कि फूलों की सुगंध से देवता प्रसन्न होते हैं तथा उनके अवलोकन से यक्ष और राक्षस तुष्ट हो जाते जबकि नाग उनका उपभोग करने से तृप्त होते हैं । जहां तक मनुष्यों का संबंध है वे गंध, दर्शन और उपभोग तीनों से ही आनंदित और मग्न होते हैं ।— **''गंधेन देवास्तुष्यंति दर्शनाद् यक्ष राक्षसः । नागाः समुपभोगेन त्रिभिरेतैस्तु मानवाः ।''**

—लासंतम्

४२, इंदर रोड, देहरादून ।

कलेक्टर पर मोहित गवर्नर जनरल की पत्नी

● ब्रजेश वर्मा

आरंभिक ब्रिटिश भारत के प्रशासनिक इतिहास में वह संभवतः सबसे कम उम्र का कलेक्टर था, जिसकी मृत्यु बहुत ही कम उम्र (मात्र उन्तीस वर्ष) में विवादास्पद ढंग से हुई। बंगाल के गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स की पत्नी उस पर मोहित थी और वह तीन बार उसके आवास पर विशिष्ट अतिथि बनकर आयी थी। इतना ही नहीं, जब वह मृत्यु शैया पर था तो वह उसके सिराहने बैठी थी, और आखिरी समय में उसने उसे इंगलैंड भेजने का असफल प्रयास भी किया।

कोई कभी भागलपुर (बिहार) आये तो विश्वविद्यालय परिसर में गंगा के किनारे एक विशाल टीले पर इटली की वास्तुकला का नमूना देख सकता है। यह भवन भागलपुर के प्रथम कलेक्टर अगस्टस क्लीवलेंड का था। बाद में इसे भारत के महान कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के परिवार द्वारा खरीदा गया और अब रवीन्द्र भवन कहलाता है। इसी भवन में वारेन हेस्टिंग्स की पत्नी तीन बार आकर ठहरी थी, जिसके विषय में कहा जाता है कि वह क्लीवलेंड पर मोहित थी।

क्लीवलेंड के अतिथि : वारेन हेस्टिंग्स

बंगाल का गवर्नर जनरल बनने के बाद पहली बार १६ जुलाई १७८० को वारेन हेस्टिंग्स भागलपुर आया। उस समय वह बनारस के राजा चेत सिंह के खिलाफ युद्ध अभियान में निकला था और इसी क्रम में वह एक सप्ताह तक क्लीवलेंड निवास पर ठहरा। पहली बार श्रीमती हेस्टिंग्स भी भागलपुर आयी थीं और वह क्लीवलेंड पर मोहित हो उठीं। फिर तो सन् १७८१ और सन् १७८३ में वह भागलपुर आकर दो बार क्लीवलेंड हाउस में रही, पहली बार एक विशिष्ट अतिथि के रूप में और दूसरी बार उस समय जब क्लीवलेंड मृत्यु शैया पर था।

ब्रिटिश यात्री फ्रांसिस हेमिल्टन बुकानन, जिसने सन् १८१०-११ में भागलपुर का सर्वे किया था, ने अपनी पुस्तक 'एन अकाउंट ऑव डिस्ट्रिक्ट ऑव भागलपुर इन १८१०-११' में तथा विलियम होडेज ने 'ट्रेवल इन इंडिया' में इस बात का जिक्र किया है कि श्रीमती हेस्टिंग्स भागलपुर क्लीवलेंड हाउस में आकर ठहरी थीं। विलियम होडेज, जो एक यात्री के अलावा एक अच्छा चित्रकार भी था, ने अपने भारत भ्रमण के दौरान सन् १७८३ में भागलपुर की यात्रा की थी और उसने श्रीमती हेस्टिंग्स को क्लीवलेंड हाउस में देखा था।

कार्य की प्रशंसा

विलियन होडेज ने लिखा है कि अपना ास्थ्य सुधारने के खयाल से क्लीवलेंड टलास इंडियामेन' नामक जहाज पर इंगलैंड ने के लिए समुद्री यात्रा पर निकले। जिस हाज पर वे थे उस पर मिसेज हेस्टिंग्स (वारेन स्टिंग्स की पत्नी) भी थीं, जो सन् १७८१ में गलपुर में क्लीवलेंड की अतिथि रह चुकी , किंतु क्लीवलेंड की मृत्यु हुगली नदी के ह्ने पर ही १३ जनवरी १७८४ को हो गयी। की लाश पाइलट स्लूप द्वारा कलकत्ता लायी ी तथा दक्षिणी पार्क स्ट्रीट (कलकत्ता) के ब्रगाह में दफना दी गयी। उसकी कब्र पर रेन हेस्टिंग्स ने खुद उसके कार्य की प्रशंसा खी जो उसने कम समय में राजमहल की ाड़िया जातियों के लिए किया था।

इंगलैंड जाने की सलाह

अगस्टस क्लीवलेंड का जन्म सन् १७५५ इंगलैंड में हुआ था। उसके पिता का नाम क्लीवलेंड था। अगस्टस क्लीवलेंड सर न सोर का चचेरा भाई था जो २२ जुलाई ७७१ को मात्र १४ वर्ष की उम्र में भारत ाया। सन् १७७४ में मुर्शिदाबाद स्थित सिल ऑव रेवन्यू में सहायक बना तथा सन ७८० में उसे भागलपुर का प्रथम कलेक्टर ाया गया।

३० नवम्बर १७८३ तक क्लीवलेंड अपने पर भागलपुर में रहा। जब वह गंभीर रूप बीमार हुआ तब उसने अपना कार्यभार अपने ायक चार्ल्स कॉकरेल को सौंपा। डॉक्टरों ने के गिरते स्वास्थ्य के लिए उसे वायु परिवर्तन इंगलैंड जाने की सलाह दी। श्रीमती टंग्स स्वयं यही चाहती थी, किंतु भाग्य को कुछ और ही मंजूर था।



क्लीवलेंड की प्रेमिका : वारेन हेस्टिंग्स की पत्नी

तोप से नहीं प्यार से जीता 'मन

क्लीवलेंड ने अपने जीवन तथा प्रशासन के थोड़े ही समय में राजमहल को पहाड़ियों पर रहनेवाले आदिवासी पहाड़िया जातियों का मन जीत लिया था। पहाड़िया लोग उसे 'चिलीमिली साहब' के नाम से पुकारते थे। पहाड़ियों के जीवन स्तर में सुधार तथा ईस्ट इंडिया के प्रति उन्हें वफादार बनाने के लिए क्लीवलेंड ने २१ नवंबर १७८० को गवर्नर जनरल वारेन हेस्टंग्स को एक पत्र लिखकर २९,४४० रुपये वार्षिक की मांग की थी; किंतु हेस्टिंग्स ने इतनी बड़ी राशि स्वीकृत करने से इनकार कर दिया परंतु पहाड़िया सरदारों के लिए १० रुपया तथा उनके नाइब के लिए ५ रुपया प्रतिमाह की स्वीकृति दे दी गयी। क्लीवलेंड ने ही पहाड़ियों के लिए शहर में हाट लगाने की प्रथा चलायी। संभवतः वह पहला ब्रिटिश प्रशासनिक अधिकारी था जिसने आदिवासी जाति का मन तोप से नहीं, बल्कि प्यार से जीतने की कोशिश की।

—रोड नं. २, मकान नं. १०२,
श्रीकृष्ण नगर, पटना

व्यंग्य

वकील (गवाह से) : "जानते हो, शपथ लेने का क्या मतलब होता है ?"

"जी हां, गवाह बोला । इसका मतलब है कि अगर मैं झूठ बोलूं तो उस पर डटा रहूं, चाहे कुछ भी क्यों न हो जाए ।"

●

एक मरीज डॉक्टर के पास गया और पूछा : "डॉक्टर साहब एक माह पूर्व आपने मेरा गठिया का इलाज किया था और सलाह दी थी कि मैं भीगने से बचूं ।"

डॉक्टर : "जी हां, मुझे याद है ।"

मरीज : फिर कहिए, अब यदि मैं नहा लूं तो कोई नुकसान तो नहीं होगा ।"

● दीपेश बोकाड़िया

राम ने मोहन से पूछा : "मरते समय तुम्हारे पिता के अंतिम शब्द क्या थे ?"

मोहन : "कुछ भी नहीं, अंतिम सांस तक मम्मी उनके पास खड़ी थीं ।"

●

शालू (सीमा से) : "क्या बात है तुम पति-पत्नी हमेशा लड़ते रहते हो ?"

सीमा : "बात यह है कि हमारी पहली मुलाकात वाद-विवाद प्रतियोगिता में हुई थी ।"

●

एक नेत्र चिकित्सक ने अपने मित्र से अपना दुःख व्यक्त करते हुए कहा : "क्या बताऊं यार, यह धंधा ही ऐसा है कि जो भी आता है, आंखें दिखाता हुआ आता है ।"

● सुरेन्द्र श्रीवास्तव

प्रेमिका की गहरी आंखों में खोये प्रेमी ने कहा : "मैं तुम्हारी गहरी झील-सी इन आंखों में डूब जाना चाहता हूं ।" देहाती प्रेमिका ने प्यारभरी चेतावनी दी : "देखो जी, तुम इस तरह डूबने की बातें करोगे न, तो मैं तुमसे पहले किसी नदी-नाले में डूबकर अपनी जान दे दूंगी ।"

●

नवनियुक्त दरोगा (चोर से) : "तुम्हारी इन हरकतों से तुम्हारे बाप-दादा का सर शरम से झुक जाता होगा ।"

चोर : "सर, आपके बाप-दादा क्या करते थे ?"

दरोगा : "मेरे बाप, दादा, परदादा, सभी पुलिस विभाग में ही थे ।"

चोर : ..."तो क्या आपके पुलिस विभाग में होने से आपके बाप-दादा का सर शरम से झुक जाता होगा ?"

दरोगा : खानदानी परंपरा निभाने में सर झुकता नहीं, गर्व से ऊंचा हो जाता है ।"

चोर : "सर, वही तो मैं कहना चाहता हूं ।"

● ब्रिजेन्द्र कुमार

पत्रकार ने एक प्रसिद्ध क्रिकेट बल्लेबाज से सवाल किया : "आप घर में पत्नी और मैदान में दर्शकों को एक साथ खुश कैसे रख लेते हैं ?"

सर्द लहजे में जवाब मिला : " 'चौका' लगाकर ।"

●

गली में दो बच्चों के मध्य परंपरागत तकरार चल रही थी :

"मेरे पापा तुम्हारे पापा से अच्छे हैं ।"

"नहीं हैं ।"

"मेरा भैया तुम्हारे भैया से अच्छे है ।"

"नहीं है ।"

"मेरी मम्मी तुम्हारी मम्मी से अच्छी है ।"

"हां, यह हो सकता है । यह तो मेरे पापा भी कहते हैं ।"

● अरविन्द जैन

तरंग

उसमें भी

घोटालों का ज्ञानकोष
बनाने का उनका सपना
पूरा नहीं हो पाया
उनके साथियों ने उसमें भी
घोटाला कर दिखाया ।

चाल

नारी को अबला कहें
है यह भी उनकी चाल
जीवनभर वो फंसी रहे
ये शब्दों के ऐसे जाल ।

● विजय बजाज

मंत्र

जनता के पैसों से
खेलता यह जो तंत्र है
भूखे-नंगों की
उन्नति का मंत्र है
प्रश्नों से घिरा आज
यही प्रजातंत्र है ।

प्रजातंत्र

प्रजातंत्र में
बड़ी मछली
छोटी की सहेली होती है
कब कौन किसे खा जाए
यह एक पहेली होती है ।

● धर्मेन्द्र कुमार पोद्दार

भ्रष्टाचारी

नेताजी
बड़े भ्रष्टाचारी हैं
लाखों कमा रहे हैं
तभी तो
पुत्री की शादी में
करोड़ों लगा रहे हैं ।

उद्धार

उन्होंने कहा
नेताजी, देश पर बहुत
उधार हो गया
नेताजी गर्व से बोले
तभी तो
अपना उद्धार हो गया ।

● प्रमोद

इजाजत

संसद में स्पीकर ने
मार्के की बात कही
आरोप लगाओ तो बढ़िया
घटिया की इजाजत नहीं ।

गुस्ताखी

पुलिस और चोर ने
चोरी के माल को
कर लिया हाफ-हाफ
गुस्ताखी माफ ।

● दौलतराम डोटासरा

बाजा

पहले तो उन्होंने उन्हें
खूब नवाजा
फिर उनका
बजा दिया
बाजा ।

अटके

नेताजी अपनी
राह से भटके
आसमां से गिरे
खजूर में अटके ।

जयंत फर्रुखाबादी

मुसोलिनी की नीली आंखोंवाली प्रेमिका

• प्रस्तुति : सुजीत वाजपेयी

क्लारा पेटेशिया हां, यही नाम था उस नवयौवना अनिंद्य सुंदरी का, जो मुसोलिनी को दिलोजान से चाहती थी और जिसे मुसोलिनी भी बेहद प्यार करता था । जब मुसोलिनी को गोली से उड़ा देने का निश्चय किया गया, तो क्लारा भी अपने प्रेमी के साथ जान देने को तैयार हो गयी फिर क्या हुआ, पढ़ें इस रोचक ऐतिहासिक कहानी में

शाम के पांच बजे थे । नवंबर का महीना था, हलकी-हलकी सरदी पड़ने लगी थी । मौसम ठंडा था, लगता था—जैसे कुछ क्षण पहले ही वर्षा हुई हो । सामने हरी-भरी घास खुश बहार-सी थी । यह स्थान पहाड़ी का था, चारों तरफ बर्फीली पहाड़ियां थीं । यह स्थान बहुत ही रमणीक था । सामने गेट के पास से एक छोटी पगडंडी जाती थी, जो मुख्य सड़क पर मिल जाती थी और मुख्य सड़क, हरी-भरी पहाड़ियों से होती हुई उस स्थान तक । उस स्थान का नाम था टर्मिनिलो, जो रोम से साठ मील दूर था ।

क्लारा पैटेशिया हां, यही नाम था उस नवयौवना अनिंद्य सुंदरी का, जो मुसोलिनी को दिलोजान से चाहती थी और जिसे मुसोलिनी भी बेहद प्यार करता था । जब मुसोलिनी को गोली से उड़ा देने का निश्चय किया गया, तो क्लारा भी अपने प्रेमी के साथ जान देने को तैयार हो गयी फिर क्या हुआ, पढ़ें इस रोचक ऐतिहासिक कहानी में

युद्ध के दिन थे । वातावरण सहमा-सहमा था और अपने राजकाज के भारी बोझ को हलका करने के लिए यहां मुसोलिनी अक्सर आया करता था । इटली का महान सेनानायक मुसोलिनी थका-हारा अपनी प्रकृति से लदे इस महल के उद्यान में बैठा हुआ प्रकृति का मनोरम दृश्य देख रहा था । उसके आसपास कोई नहीं था । कुछ क्षण वह अकेले ही रहकर अपने को

हलका करता था । कुछ ही दिनों पहले अबीसीनिया की विजय के कारण वह उन्मादित किंतु बोझिल था । जवान हट्टा-कट्टा, सुंदर से व्यक्तित्ववाले मुसोलिनी के चेहरे पर थकान के चिह्न थे । सामने हरी-भरी घाटियां, पहाड़ियों से अच्छादित, प्रकृति को वह बड़ी तन्मयता और तल्लीनता से निहार रहा था । अपने विचारों के ताने-बाने में उलझा व्यक्तित्व, किसी के हास्य स्वर से मुखर हो उठता है । हास्य का यह स्वर बहुत ही मीठा व मधुर था । मुसोलिनी ने नजर घुमाकर देखा, कुछ दूरी पर एक यौवना अत्यंत सुंदर, आकर्षक मोनालिसा की प्रतिमा की भांति उज्ज्वल, फूल तोड़ने के उपक्रम में हंस रही थी । उसका शरीर गौर, चित्ताकर्षक, स्निग्ध छवि, गला, सभी कुछ अद्वितीय था । उसकी चितवन मदभरी और ओठ प्रफुल्ल पुष्प पंखुड़ियों के समान रक्ताभ थे । प्रकृति कितनी विलक्षण एवं मनोहर है, एक खिला फूल दूसरे खिले पुष्प को तोड़ रहा है, उन्माद में, आह्लाद में !

मुसोलिनी से रहा नहीं गया ।

"क्या मैं तुम्हारा नाम पूछ सकता हूं ?"

"क्लारा पैटेसिया... ।"

"कहां रहती हो...तुम ?"

"इन्हीं शुभ्र घाटियों में आपके इर्द-गिर्द ।" उसने मुसकराने की कोशिश की ।

"पहले तो नहीं दिखलायी दीं... ।"

"मैं...अभी कुछ दिन पूर्व ही यहां आयी हूं"—हकलाते हुए उसने कहा ।

"बहुत सुंदर व अद्भुत हो तुम... ।"

"महान विजेता, अबीसीनिया के मुसोलिनी से बहुत कम... ।"



"सुंदर होने के साथ तुम चतुर भी हो ।" मुसोलिनी मुसकराया ।

"मैं यहां की एक साधारण लड़की क्लारा हूं ।" वह हंसी ।

सचमुच यह प्रकृति तुम्हारे-जैसे फूल से सुगंधित एवं सुशोभित है"—मुसोलिनी ने युवती पर स्नेह उड़ेलते हुए कहा ।

"उसी प्रकार जिस प्रकार मेरा देश इटली मेरे प्यारे मुसोलिनी से सुशोभित है ।"

मुसोलिनी ने गंभीर होते हुए पूछा—"क्लारा, तुम मुसोलिनी को जानती हो ?"



"मैं उसकी पूजा करती हूं... ।" बात काटते हुए क्लारा इतना ही कह पायी ।

"तो फिर तुम मेरे साथ आज रात्रि का भोजन कर मुझे आप्यायित करोगी ?" मुसोलिनी बोला ।

"आज नहीं कल !"

इसके आगे मुसोलिनी कुछ कह पाता और संभलता, क्लारा ने लपककर उसके मुख पर जोरदार चुंबन जड़ दिया और जितनी चालाकी से उसने यह किया, उतनी ही फुरती से मुसोलिनी कुछ समझ न पाया । जब वह आंखों से ओझल हो गयी, तब सचेत होने पर वह मुसकराया और वापस उद्यान की ओर लौट पड़ा ।

○○○○

युद्ध के दिन थे । अबीसीनिया पर विजय प्राप्त कर ली गयी थी । चारों ओर मुसोलिनी के जयजयकार के नारे थे । कुछ विरोधी तत्त्व अंदर ही अंदर देश की एकता को विखंडित करने पर लगे थे । उन सबसे मुसोलिनी इस कदर मानसिक द्वंद्व के ऊहापोह में गुजर रहा था कि वह न सो पाता और न ही आराम के क्षण ही निकाल पाता । अबीसीनिया की विजय को कुछ लोग इतनी गंभीरता से ले रहे थे कि यह युद्ध इटली और मुसोलिनी के पतन का कारण ही बन गया । इटली पर दुश्मन चारों ओर से बमबारी कर रहे थे, जिसके फलस्वरूप गांव-के-गांव बमों की चपेट में आकर श्मशान बनते जा रहे थे । मुसोलिनी की कुछ भी समझ में नहीं आ रहा कि यह सब कैसे हो गया ?

कुछ ही दिनों में एकाएक रोम में यह भय व्याप्त हो गया कि क्लारा अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्रों की जड़ है । गुप्तचर विभाग चौकन्ना हो उठा । सेना के प्रधान, पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी एकत्र हो क्लारा के संबंधों पर विचार-विमर्श करने लगे । बोचनी ने कहा, "मुसोलिनी ने क्लारा को हीरों-जवाहरात से लाददिया है तथा वह क्लारा के संबंध में विरोध की एक बात भी नहीं सुनना चाहता है । मुझे कहना यह चाहिए कि मुसोलिनी पर क्लारा का अबाध नियंत्रण है । उसने कुछ रुककर और गंभीर स्वर में कहा कि "इस तरह हम इटली का विनाश नहीं देख सकते । गुप्तचर विभाग के प्रधान गारगानों ने तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा—"मुसोलिनी की प्रेमिका उसे भोग-विलास में लिप्त रखकर कर्त्तव्यच्युत कर रही है । इतना ही नहीं, वह राज्य की गोपनीय सूचनाएं शत्रु राष्ट्रों को भी प्रदान कर रही है ।"

लेकिन इन सब बातों, अफवाहों के बावजूद मुसोलिनी से कहने का साहस किसी में नहीं था । बात यह तय हुई कि तीनों प्रधान मिलकर एक स्मरण-पत्र तैयार करें और गुप्तचर तथा सेना के प्रधान को जाकर पेश करें ।

स्मरण-पत्र पढ़ते ही मुसोलिनी क्रोध से भर गया । उसने स्मरण-पत्र को फेंकते हुए गुस्से में कहा—"इस स्मरण-पत्र को तैयार करने का साहस किसने किया है ?"

दोनों प्रधान चुपचाप खड़े रहे, "इसको किसने तैयार किया है ? जाओ और इसको, जिसने तैयार किया है उसको मेरे सामने हाजिर करो ।"

संभलकर गुप्तचर के प्रधान ने कहा—"सेना के सलाहकार गारगानों ने ।"

मुसोलिनी क्षणभर के लिए गंभीर हो गया । उसने देखा उसके प्रधान सावधान की हालत में

खड़े थे । मुसोलिनी के चेहरे की भावभंगिमा तथा उस पर क्या प्रभाव पड़ा, यह सब पढ़ने की कोशिश वे लोग कर रहे थे । मुसोलिनी पर उनकी बातों का प्रभाव पड़ा । उसने स्मरण पत्र पर विचार करना स्वीकार कर लिया । तीनों प्रधान स्वीकारोक्ति पा जा चुके थे ।

मुसोलिनी अपने कक्ष में शंका और चिंता की चेहरे पर हलकी परतें लिए चहलकदमी करने लगा । उसके पास उस क्षण न क्लारा थी, न उसकी पत्नी । न सहायक थे, न सैनिक । संदेह के भंवर जाल में डूबते-उतराते हुए अपनी प्रियतमा के प्रति लांछन व देश द्रोह से उसका मन उद्वेलित हो उठा । क्या ऐसा हो सकता है, वह बुदबुदाया । पाया कि क्लारा के आचरण मूल्यांकन में उसे भोलापन और बुद्धिमत्ता के सिवाय कुछ नहीं मिला । संदेह की कहीं भी गुंजाइश ही नहीं, पर गुप्तचरों द्वारा किये गये संदेह पर भी स्पष्टीकरण आवश्यक ही नहीं असह्य भी था । वह अज्ञात पीड़ा से भर उठा । क्लारा एक मीठी मुसकराती छविवाली भोली-कमसिन...निश्चल...न न ।'' तभी फोन की घंटी बजी । क्लारा को पता लग चुका था कि उसके प्रति संदेह व देशद्रोह—जैसा लांछन लगाया जा चुका है । उसने मुसोलिनी से कहा—''मैं तुरंत आप से मिलना चाहती हूं । अंतिम बार ।'' मुसोलिनी भागा-भागा क्लारा के आवास में पहुंचा तो देखा उसका रो-रोकर बुरा हाल था । मुसोलिनी को देखते ही वह मुसोलिनी के वक्ष से लिपट गयी । जोर-जोर से सिसकियां लेती रही । मुसोलिनी का सारा भ्रम धुल चुका था । हिचकियां लेते हुए उसने कहा—''आखिर आपको मेरे कारण भ्रमित होना पड़ा मेरे ड्यूक ?''

''कह दो क्लारा सब झूठ है, तुम निर्दोष हो ।''

''मैं आपकी हूं ड्यूक, सिर्फ आपकी । मुझे दुनिया से क्या लेना-देना ? मैं आपकी पूजा करती हूं और पूजा में निःस्वार्थ त्याग के सिवा कुछ नहीं होता । मुझे आखिर आपके विरोधियों का शिकार बना दिया गया है, मुझे माफ कर दीजिएगा ।''

मुसोलिनी से विलग हो, उसने अपनी कीमती पोशाक व गहने उतार डाले । मुसोलिनी

मुसोलिनी ने दो कदम पीछे हट झुककर इटली की धरती का नमन किया और आर्द्र स्वर में कहा—'मेरे देश, मैंने निस्वार्थ भाव से जो भी किया, उसे माफ कर देना ।' क्लारा के पास आया और आलिंगन में लेते हुए धीमे स्वर में कहा— अंतिम बार, विदा प्रिये... हम फिर मिलेंगे

का धैर्य जवाब देने लगा । उसने क्लारा को अपने आलिंगन में लेते हुए कहा—''क्लारा ! मुझे कुछ सोचने का अवसर दो ।''

''अब आप मुझे जाने की इजाजत दीजिए । मैं और कुछ भी सह न सकूंगी... ।''

''ठहरो क्लारा...मुझे सोचने तो दो... तुम निर्दोष हो... मेरी सजा तुम क्यों भुगतो...ठहरो मेरे लिए... ।''

क्लारा प्रेमावेश में मुसोलिनी के अंक में समा गयी । प्रेम का निर्बाध झरना बह चला ।

○○○○

इस बीच इटली में बहुत से परिवर्तन हुए ।

उसके सलाहकार, सैनिकों को गिरफ़्तार कर लिया गया । मुसोलिनी इधर-उधर बचाव करता रहा । क्लारा भी इस भागदौड़ में पता नहीं कहां खो गयी । हफ़्तों, महीने बीतते गये । मुसोलिनी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि यह सब कैसे हो गया ? वह हैरान था, व्याकुल था । उसके सगे, संबंधी अपने सभी कुछ छूट चुके थे । इटली में उसकी पकड़ छूट चुकी थी और राष्ट्रवादियों ने देश पर कब्जा कर लिया था । रोम में हाहाकार मचा हुआ था । पूरा इटली आशंका से ग्रस्त था । फासिस्ट सेना भंग कर दी गयी थी । उसके कुछ साथियों ने विश्वासघात किया और कुछ ने आत्मसमर्पण कर दिया । हिटलर के सहयोग से मुसोलिनी भाग कर जरमनी पहुंचना चाहता था, लेकिन सेवकों द्वारा विश्वासघात के कारण उसे गिरफ़्तार कर लिया गया । उसकी सुरक्षा के लिए सौ से अधिक सैनिक पहरे पर तैनात थे । कभी इधर कभी उधर । यहां वहां उसे गिरफ़्तार कर ले जाया जाता । मुसोलिनी को गोली से उड़ा देने की सजा दी गयी । एक बंद कमरे में उसे रखा गया जिसके चारों ओर सख्त पहरा था । क्लारा उससे बहुत दूर थी । पता नहीं कहां । उसका क्या हुआ होगा ? क्लारा के बारे में वह कुछ पूछ नहीं पाया । तभी उसे तुरंत वह स्थान छोड़ देने का आदेश दिया गया । वहां से उसे रातों रात मैनागियो लाया गया । वहां उसे थोड़ी देर विश्राम करने को कहा गया । वह अभी विश्राम के लिए सोच ही रहा था कि क्लारा ने पहुंचकर उसे अचंभित कर दिया । वह हड़बड़ाया । किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा वह भरति स्वर में बोल उठा—''क्लारा तुम ! प्रिये भाग जाओ यहां से और अपने जीवन की रक्षा करो ।'' आवेग में वह बोला ।

''मैं भी तुम्हारे साथ अंतिम समय तक रहना चाहती हूं...मुझे मत रोको...मेरे ड्यूक...मुझे अपने साथ रहने दो प्रिय !'' कहकर वह मुसोलिनी के कदमों में झुक गयी ।

''क्या तुम भी मेरे साथ मृत्यु का वरण चाहती हो ? नहीं प्रिये, भाग जाओ और अपनी रक्षा करो । पाप मैंने किये हैं, उसकी सजा मुझे ही मिलनी चाहिए । तुम निर्दोष हो क्लारा...हम फिर मिलेंगे...)।''

क्लारा को भी गिरफ़्तार कर लिया गया और उसे मुसोलिनी के साथ ही बंद कर दिया गया । कहा यह जाता है कि क्लारा इतनी दृढ़ थी कि उसकी आंखों में आंसू नहीं आये ।

''विदा मेरे ड्यूक ! मैं कितनी खुश हूं । जी तो तुम्हारे आलिंगन के सहारे और मृत्यु भी तुम्हारे आलिंगन के साथ ही...विदा मेरे प्रिय अब हम वहां फिर मिलेंगे... ।''

क्लारा इसके आगे कुछ न कह पायी । वह जड़ हो गयी थी । आंखें निर्निमेष, एकटक, क्षितिज के पार...अपनी तलाश में । वह अपने हाथ उठाकर दीवार के सहारे खड़ी हो गयी । मुसोलिनी भी अपने स्थान पर आया और दीवार की ओर मुंह करके खड़ा हो गया । एक दो तीन...धांय-धांय की दो आवाजें गूंजी । दो फड़फड़ाते पक्षी मर्माहत हो निश्चेष्ट जमीन पर गिर पड़े । जोर से कहीं बिजली गिरने की आवाज आयी और अनगिनत तारे टूटकर बिखर गये ।

—ई-८२४ ए-एम. आई. जी.
प्रताप विहार, गाजियाबाद

उन्नीस प्रेमियोंवाली खातून

• डॉ. जगदीश चंद्रिकेश

दरिया-ए-खातून नाम था उसका । अत्यंत रूपवती सुंदरी थी वह । केसर मिले दूध-जैसा चंपकवर्णी रंग, भरे-पूरे यौवन से गदराई देह, बड़ी-बड़ी आंखें नागिन-सी लहराती काली-काली जुल्फें—अद्‌भुत आकर्षण था उसमें । और उसकी अदाएं व नाज-नखरे तो उसके सौंदर्य से भी दो हाथ आगे थे । जो भी उसे एक बार देख लेता तो उस पर मर मिटता । और जिस पर वह अपनी नजरें डाल देती, वह तो दीन और दुनिया दोनों से ही चला जाता ।

पैसे की हवस

दरिया-ए-खातून जितनी सुंदर थी उसका दिमाग उतना चालाक और शैतान । बस, उसकी एक ही कमजोरी थी—और वह थी पैसे की हवस । वैसे, उसके पास पैसे की कोई कमी नहीं थी । उसकी अपनी जागीर थीं, अपने ठिकाने की मालकिन । उसके पास पर्याप्त धन-दौलत और मान-सम्मान था फिर भी अधिक-से-अधिक धन बटोरने के चक्कर में रहती थी वह हमेशा । और इसके लिए उसने नैतिकता-अनैतिकता, मान-अपमान और भले-बुरे के बीच कभी भेद नहीं किया । वह पैसे के लिए कुछ भी कर सकती थी और पैसे के लिए ही उसने उन्नीस आशिक बनाये और इन आशिकों से उसने शादियां भी कीं, वह भी दिखावेभर की ।

इस खातून का काम था काबुल में आनेवाले देश-विदेश के सौदागरों को फंसाना । वह यह पता कराती रहती कि बाहर से आया सबसे धनी सौदागर कौन है ? सबसे धनी सौदागर के पीछे वह अपनी दासियों को लगा देती, जो उस सौदागर को किसी न किसी तरह पटा कर उसके पास ले आती । वह उस सौदागर का इस तरह स्वागत-सत्कार करती कि वह निहाल हो उठता । वह उस पर धीरे-धीरे अपना सारा का सारा हुस्नो-इश्क, धन-दौलत और साजो-सामान कुछ इस तरह निछावर कर देती कि नये सौदागर को लगता कि उसकी तकदीर ही बदल गयी है ।

धीरे-धीरे वह उसे अपनी ऐसी गिरफ़्त में कैद कर लेती कि वह अधिक से अधिक समय उसी के साथ बिताता । वह उसे दूर दराज के बाग-बगीचों और अपने आरामगाहों में ले जाती । इस तरह सौदागर अपने काफिले और साथियों से दूर होता चला जाता । इधर रंग-रलियों के साथ वह खातून सौदागर को व्यापार-धंधे या ऐशो-आराम में मनचाहा धन

दरिया-ए-खातून पैसे से पैसा खींचना बाखूबी जानती थी । वह सौदागर को व्यापार के लिए अपना पैसा भी देती । उसकी शाही ठाठ-बाट से मेहमाननवाजी करती । महफिलें जमतीं, सुरा-सुंदरियों का जमघट लग जाता । सौदागर को लगता कि वह सौदागर न होकर कोई शहंशाह है और उसके बगल में बैठी गजब की सुंदरी उसकी बेगम ।

खर्च करने के लिए ऐसे उकसाती कि सौदागर को लगता कि वह धन खातून का न होकर उसका ही हो ।

कुछ दिनों के इस प्रणय-व्यापार के बाद सौदागर से खातून कहती कि वह उसके बिना अब नहीं रह सकती । वह उससे विवाह कर हमेशा उसके पास रहे, हरदम उसकी नजरों के आगे । सौदागर को लगता कि वह जिस धन-दौलत को कमाने के लिए देश-परदेश की धूल फांकता फिर रहा है, उसका तो पूरा का पूरा खजाना उसके सामने है जिसमें धन-दौलत, जमीन-जायदाद और जागीरदार का मान-सम्मान ही नहीं बल्कि, खातून- जैसी जोश-खरोश भरी गजब की सुंदरी भी है । और सौदागर चाहे वह बूढ़ा हो या जवान खातून से 'हां' किये बिना न रह पाता । खातून उस प्रेमी सौदागर से विवाह कर लेती ।

इस तरह उस खातून ने एक के बाद एक उन्नीस सौदागरों को अपना प्रेमी बनाया और उनसे शादियां रचायी और मजेदार बात यह है कि उसने एक भी पति को कभी तलाक नहीं दिया ।

दरिया-ए-खातून की यह कहानी कोई काल्पनिक या मनगढ़ंत कहानी नहीं है, बल्कि एक सच्ची घटना है मुगल सम्राट शाहजहां के दरबार की, जिसका उल्लेख यूरोपियन यात्री मनीची ने अपने यात्रा-संस्मरण 'स्टोरी ऑव द मुगल्स' में किया है । मनीची इस घटना का प्रत्यक्षदर्शी था, क्योंकि वह चालीस साल तक मुगल बादशाहों के दरबारों में रहा ।

मुहब्बत में नजरबंद

हां, तो दरिया-ए-खातून की यह कहानी आगे बताती है कि वह हर नये सौदागर पति के साथ कुछ दिन बड़ी मौज-मस्ती के साथ बिताती । इस दौरान सौदागर खातून में इस तरह डूबा रहता कि वह अपने कार-व्यापार, संगी-साथियों को बिलकुल भुला बैठता ।

काबुल के सूबेदार महाबत खां को उसकी इस हरकत का पता चला । उसने खातून को गिरफ़्तार करा लिया और उसकी सारी करतूतों के सिलसिलेवार ब्यौरे के साथ उसे शाहजहां के दरबार में दिल्ली भेज दिया । शाहजहां ने इस शातिर सुंदरी को ऐसी कठोर सजा दी जो एक मिसाल बन गयी । शाहजहां ने उसे दिल्ली के भरे बाजार चांदनी चौक के चौराहे पर आधा जमीन में गड़वाकर उस पर कुत्ते छुड़वा दिये, जो उसे जिंदा ही नौंच-नौंचकर खा गये ।

वैद्य की सलाह

—कविराज वेदव्रत शर्मा

निर्मल, जौनपुर ।

प्रश्न : उम्र तीस वर्ष है । मासिक ठीक नहीं होता, पेट में अफारा बना रहता है । भूख कम लगती है । कभी-कभी पेशाब में जलन होने लगती है । शरीर में सुस्ती बनी रहती है । किसी भी प्रकार का काम करने को मन नहीं करता । अच्छी दवा लिखें । जीवन से परेशान हूं ।

उत्तर : चंद्रप्रभावटी एक, गोक्षुरादि गूगल एक वटी, आरोग्यवर्धनी वटी एक सुबह-शाम गरम पानी से लें । दशमूलारिष्ट एक चम्मच और अशोकारिष्ट एक चम्मच में समभाग जल मिलाकर भोजन के बाद लें । दही, चावल, अरबी, भिंडी, राजमा आदि का परहेज कर तीन माह औषधि सेवन करें ।

रामलुभाया, अंबाला

प्रश्न : उम्र पचास वर्ष है । कमर से नीचे हर समय दर्द रहता है । कभी-कभी तो बैठना भी मुश्किल हो जाता है । नींद कम आती है । कब्ज भी बना है ।

उत्तर : अश्वगंधाचूर्ण साठ ग्राम, महायोगराज गूगल पंद्रह ग्राम और मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर सभी दवाओं की साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम गरम पानी से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच, दशमूलारिष्ट दो चम्मच के साथ उतना ही जल मिलाकर भोजन के बाद लें । शीतल पेय और देर से पचनेवाली वस्तुओं का परहेज कर तीन माह औषधि सेवन करें ।

के. एल. जोशी, अलवर

प्रश्न : चालीस वर्षीय हूं । आंख के ऊपर पलकों पर एक छोटा-सा दाना हो गया है । वैसे कोई परेशानी नहीं है । यदि बढ़ गया तो परेशानी पैदा कर सकता है ।

उत्तर : लौंग पानी में चंदन की तरह घिसकर यथास्थान आंख बंद कर दाने पर लेप करें । नियमित इसको करें । लाभ मिलेगा ।

महावीर सिंह, गाजियाबाद

प्रश्न : पैंतीस वर्षीय हूं । पेट में हलका-हलका दर्द रहता है । हवा बहुत बनती है । शौच में चिकनाहट है । थोड़ी बदपरहेजी करने पर परेशानी भी बढ़ जाती है । अकसर कब्ज रहता है ।

उत्तर : हिंग्वाष्टक चूर्ण एक-एक चम्मच सुबह-शाम गरम पानी से लें । लवण भास्कर चूर्ण एक-एक चम्मच भोजन के बाद पानी से लें । एक चम्मच इसबगोल रात सोने से पहले गरम दूध से लें । मीठी व तली वस्तुओं का सेवन कम करें । अरबी, भिंडी, राजमां, उड़द, बेसन आदि का प्रयोग न कर तीन माह नियमित औषधि सेवन करें ।

बिमला देवी, रायपुर

प्रश्न : छत्तीस वर्ष की युवती हूं । शरीर में सुई

की तरह चुभन होती रहती है। किसी समय फफोले हो जाते हैं। कभी-कभी परेशानी इतनी बढ़ जाती है कि दर्द सहन नहीं होता।

उत्तर : हरिद्राखंड एक-एक चम्मच सुबह-शाम पानी से लें। चंदनासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें। चाय, दही, खटाई, लहसुन और प्याज का प्रयोग कम मात्रा में कर तीन माह नियमित औषधि सेवन करें।

जी. एस. रेड्डी, नयी दिल्ली

प्रश्न : उम्र साठ वर्ष है। गुप्तांग के चारों ओर बहुत खारिश होती है। काफी दवाओं का प्रयोग किया, पर फायदा नहीं हुआ। कृपया खाने व लगाने की दवा लिखें।

उत्तर : **केशोर गूगल एक वटी और आरोग्यवर्धनी एक वटी सुबह-शाम पानी से लें। सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें। महामरिच्यादि तेल यथास्थान प्रतिदिन लगायें।**

सुमति प्रकाश, अमृतसर

प्रश्न : सत्तर वर्षीय हूं। पैरों में झनझनाहट, नींद कम आना, सिरदर्द, शाम के समय थकान के साथ-साथ पेशाब जल्दी-जल्दी आती है। कभी ठीक रहता है। सभी प्रकार की जांच करा ली है। कोई बीमारी नहीं है। अच्छी दवा सुझायें।

उत्तर : **बसन्तकुसमाकर एक वटी, चंद्रप्रभावटी एक सुबह दूध से लें। ब्रह्म रसायन एक-एक चम्मच रात दूध से लें। आहार-विहार का ध्यान कर नियमित छह माह औषधियां सेवन करें।**

सुभाष चंद्र, पटोरी

प्रश्न : उम्र २१ वर्ष है। छह माह पूर्व विवाह हुआ। अचानक पेट के नीचे के हिस्से में दर्द हुआ। अंडकोष में भी दर्द हुआ। अंडकोष अपेक्षाकृत कुछ बढ़ गया है। चिंतित हूं। जीवन और संतान दोनों के प्रति आशाहीन हूं।

उत्तर : **चंद्रप्रभावटी एक, पुनर्नवागूगल एक वटी और आरोग्यवर्धनी एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें। कांकायन वटी दो-दो, भोजन के बाद पानी से लें। आहार-विहार का परहेज कर तीन माह नियमित औषधि सेवन करें।**

उत्तम कुमार, त्रिलोकपुरी

प्रश्न : बेहोशी के दौरे बार-बार आ जाते हैं। काफी चिकित्सा करायी, पर लाभ नहीं है। परिवारवाले भूत-प्रेत की बाधा बताते हैं। गरीब हूं। कृपया सस्ती दवा सुझायें।

उत्तर : **वच चूर्ण पंद्रह ग्राम और वात्त कुलांतक रस तीन ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें। एक-एक मात्रा सुबह-शाम दूध से लें। अश्वगंधारिष्ट एक चम्मच, दशमूलारिष्ट एक चम्मच और सारस्वतारिष्ट एक चम्मच भोजन के बाद लें। दही, चावल, शीतल पदार्थ और वायुकारक वस्तुएं सेवन न कर कम-से-कम एक वर्ष नियमित औषधि सेवन करें।**

ममता, लुहसाना

प्रश्न : विवाहिता हूं। दो संतानें हैं सुबह-शाम हिचकियां आती हैं। घबराहट, कफ की शिकायत, हाथ-पैरों में सूजन, कब्ज और कमजोरी है। किसी कार्य में मन नहीं लगता।

उत्तर : **सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, मयूर पिच्छ भस्म दस ग्राम और मुक्ताशुक्ति भस्म**

दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । द्राक्षारिष्ट दो चम्मच लेकर सम भाग जल मिलाकर भोजन के बाद लें । सुपाच्य भोजन सेवन करें ।

प्रकाश चंद, बरेली

प्रश्न : छोटा पुत्र २९ वर्ष का है । हमेशा गला खराब रहता है । टांसिल, खरखराते रहना और थूकने की इच्छा बनी रहती है । कई बार तो मुंह से सांस लेना पड़ता है । पहले स्रोफिलिया रहा है ।

उत्तर : **कांचनार गूगल एक वटी और लक्ष्मीविलास रस एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । व्योशादि वटी दो-दो दोपहर और रात गरम पानी से लें । कम-से-कम छह माह नियमित औषधि सेवन करें ।**

एस.एम. प्रकाश, ब्रहरामपुर

प्रश्न : मैं पचहत्तर वर्षीय हूं । दो साल से दायां हाथ व दायें पैर में कंपन रहता है । सुबह के समय कुछ चक्कर भी आ जाते हैं ।

उत्तर : **ब्रह्मरसायन एक-एक चम्मच सुबह और रात दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच और दशमूलारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद लें ।**

सुमन लता, रामगुलाम टोली

प्रश्न : उम्र ३४ साल है । दो साल पहले बच्चेदानी का ऑपरेशन करवाया था । कई बार बहुत पानी की शिकायत हो जाती है । मासिक बार-बार हो जाता है । कमर दर्द रहता है । भूख नहीं लगती, कमजोरी बहुत है ।

उत्तर : **सुपारीपाक एक-एक चम्मच सुबह-शाम दूध से लें । अशोकारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद लें । पुष्यानुग चूर्ण साठ ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा दोपहर-रात पानी से लें । दही, चावल और खटाई सेवन न कर तीन माह नियमित औषधि सेवन करें ।**

बेलासिंह, जींद

प्रश्न : उम्र तीस साल है । दो वर्ष से कभी भी घबराहट हो जाती है । घरवाले बहुत परेशान हैं । नींद कम आती है । डॉक्टर को भी दिखाया । परीक्षण भी हुए । ज्ञात हुआ कि कोई बीमारी नहीं । डॉक्टर कहते हैं सोचना बंद करो । कृपया दवा लिखें ।

उत्तर : **ब्रह्मरसायन एक-एक चम्मच सुबह और रात दूध से लें । बलारिष्ट एक चम्मच और अर्जुनारिष्ट एक चम्मच बराबर की मात्रा में पानी मिलाकर खाने के बाद लें । सुबह प्रतिदिन सैर करें ।**

सुकमाल चंद जैन, सोनीपत

प्रश्न : उम्र साठ वर्ष है । दो वर्ष से दिन और रात में अनेक बार मूत्र त्याग करना पड़ता है । फिर भी इच्छा बनी रहती है । कभी-कभी पेट के निचले हिस्से में दर्द हो जाता है । अधिक चलने पर थकान हो जाती है । अकसर पैरों में दर्द हो जाता है । शारीरिक कमजोरी काफी है ।

उत्तर : **चंद्रप्रभा वटी एक, गोक्षुरादि गूगल एक वटी और बसंतकुसमाकर रस एक वटी सुबह-रात दूध से लें । दही, खटाई और देर से पचनेवाली वस्तुएं कम सेवन करें । तीन माह नियमित औषधि सेवन करें ।**

रूसी लेखक दोस्तोवस्की की बात अगर सच मान लें कि इस दुनिया को अब सिर्फ खूबसूरती ही बचा सकती है, तो वन्या को इस दुनिया की सबसे खूबसूरत औरत माना जाना चाहिए क्योंकि वन्या एक पूरी दुनिया को अपने आंचल में छुपाकर उसे झुलसने से बचा रही थी। वह मासूम जज्बातों को टूटने से बचा रही

कहानी

तुम्हें मैंने बेहद प्यार किया

• पद्माशा झा

थी— वह उम्मीदों की रोशनी अपनी आंखों से जला रही थी। वह तार-तार हो चुके प्यार को अपनी मुसकराहट के धागों से सी रही थी।

तो कहानी रुकती नहीं। मौसम बदल जाता है। बात आगे बढ़ जाती है। जैसे जिंदगी बिना बताये चलती जाती है आगे-और-आगे। धूल हो या धूप—या घनी बरसात। घटनाएं नहीं रुकतीं— एक-एक दिन पीछे छूट जाता है, बहुत-बहुत यादों के उपहार देकर। कभी रुलाकर, कभी हंसाकर—ये यादें अपनी राहें तय करती हैं। पारिजात के श्वेत पुष्प गुच्छ की तरह अपनी सुगंध बिखेरता हुआ अतीत कभी-कभी कितना मोहक, कितना अपना हो उठता है कि वर्तमान-जैसे धूमिल हो जाता है उन स्मृतियों के बीच।

उस रात आधी रात को— जैसे नींद से जग पड़ी थी वन्या। बहुत दिनों बाद— जैसे सैकड़ों, हजारों रातों के बाद अचानक रोहित उसके सपनों में आया था। हमेशा— जैसे पहले आया करता था, वह दबे पांव चुपके से आकर उसके सिरहाने बैठ गया था और अपनी मजबूत उष्ण हथेलियों से उसका माथा सहलाने लगा था। वन्या इस मीठे स्पर्श से एक अवश नींद में डूबने लगी थी। काश ! यह नींद कभी न टूटे और रोहित उसका जलता हुआ माथा इसी तरह सहलाता रहे युग-दर-युग। यही वह चरम बिंदु था जहां से भावुकता फूटकर प्रेम का सोता बहा ले जाती थी। उसने अपनी दोनों बांहें उठाकर रोहित के गले में डालकर कहा, 'रोहित, तुम अब मुझे छोड़कर कभी नहीं जाओगे ? वादा करो रोहित ?' तभी मसहरी के डंडे से उसे चोट लगी और उसकी नींद खुल गयी। वह झटके-से उठकर बैठ गयी। कमरे में अंधेरा था। उसने बेड स्विच दबाकर बत्ती जलायी। कहीं कोई नहीं था। रात के सन्नाटे में झींगुरों की आवाजें सुनायी दे रही थीं। रोहित इस तरह सपने में क्यों आया ? क्या उसे कुछ हो गया है ? वह बेचैनी से उठकर बॉलकनी तक चली आयी। रोहित क्यों चला गया उसकी जिंदगी को झंझावातों से लड़ने के लिए छोड़कर ?

आज बारह वर्षों बाद सोचना चाहती है वन्या, कि कहां चूक हुई ? अगर उस रात वह आगे बढ़कर उसका रास्ता रोक लेती तो क्या

रोहित नहीं जाता ? अगर वह उसके पीछे दौड़ पड़ती तो क्या रोहित रुक जाता और वापस लौट आता— धीरे-धीरे उसकी कलाई पकड़े हुए ? अगर नन्हा बाबुल उसकी गोद में मचल रहा होता तो क्या रोहित कभी नहीं जाता ? नन्हे की तोतली अदा में बंधकर रह जाता ? अगर वह चुपचाप उसकी बौखलाहट झेलती हुई आंसू बहाती रहती तो क्या वह नहीं जाता ? अगर उसके पैरों पर गिरकर रिश्ते की दुहाई देती तो क्या वह रुक जाता ?

अकसर ऐसा होता था । रोहित मित्रों के यहां से, अथवा क्लब से देर रात को घर लौटता था । अकसर रात बारह बजे के बाद ही वह लौटता था । नौकर खाना मेज पर लगाकर सो जाता था । वन्या दस बजे के बाद तैयार होकर उसका इंतजार करने लग जाती थी । हर खटके पर वह दरवाजे की तरफ दौड़ पड़ती थी और मायूस होकर लौट आती थी । इंतजार करती हुई वह थक जाती थी । उसका हौसला टूटने लगता था । चेहरे की ताज़गी मुरझा जाती थी । उसे लगता था कि उसका पूरा जीवन एक इंतजार बनकर रह गया है । आधी रात के ठीक बाद वह लौटता । शराब के नशे में बोझिल टांगों को किसी तरह संभालता हुआ । लड़खड़ाता-सा दरवाजे के भीतर घुसता तो शराब की दुर्गंध उस घर की हवा में भर उठती और वन्या का रहा-सहा धैर्य भी टूट जाता— वह लगभग बिफरकर चीखती, ''शर्म नहीं आती तुम्हें रोहित । यह समय क्या भले लोगों के लौटने का है ? जहां अब तक थे— वहीं यह बची हुई रात भी काट लेते । सबेरे घर आ जाते तुम ?'' सुनकर रोहित हंसता— नशे में डूबी हुई विद्रूप हंसी, वह कहता, ''ठीक है, कहो तो लौट जाऊं ? और लौटने का अभिनय करता हुआ दरवाजे की तरफ मुड़ने लगता । वह सहम जाती, कहीं फिर चला न जाए । आगे बढ़कर रास्ता रोक लेती, लेकिन एक तनाव-सा रातभर बना रहता । दूसरे दिन फिर वही रवैया । फिर तो धीरे-धीरे उनका संबंध सिर्फ औपचारिक बातों तक ही सीमित रहने लगा । यहीं से शुरू हुई वन्या की अकेली जीवन यात्रा । जब उसे लगने लगा— इस तरह रोहित की प्रतीक्षा करते-करते तो वह खतम हो जाएगी । उसे अपनी दिनचर्या में भी परिवर्तन करना चाहिए । उसके भी कुछ दोस्त होने चाहिए जिनसे वह कम-से-कम बातें तो कर सके । हंसने का, मुसकराने का कोई बहाना तो हो ।

बहुत मुश्किल होती है, किसी के लिए भी, दिनचर्या बदलने में । दिनचर्या सिर्फ आदत नहीं होती । धीरे-धीरे जीवन का अंग बन जाती है । मांस-मज्जा और रक्त में घुल जाती है दिनचर्या । वन्या को भी हुई थी यह मुश्किल । कितना कठिन था खुद को बदल डालना— अपने समय की डोर को रोहित की डोर से अलग करके जीना । अब तक उसका जीवन एक खास ढर्रे पर चल रहा था । सुबह उठकर चाय बनाना— रमुआ को जल्दी-जल्दी नाश्ता बनाने में मदद करना— रोहित के कपड़े निकालकर देना— नाश्ता देकर ऑफिस भेजना— इसी बीच पति-पत्नी की मीठी नोक-झोंक, हंसी-ठिठोली होती रहती थी— घर का वातावरण हलका-फुलका तरोताजा हो जाता था— फिर रोहित को ऑफिस भेजने के बाद नन्हें बाबुल को तेल लगाकर स्नान कराना, उसको तैयार करके दूध पिलाना और फिर उसे

रमुआ की गोद में देकर स्वयं कॉलेज जाने की तैयारी करना, जल्दी में जैसे-तैसे बालों का जूड़ा लपेट वह कॉलेज की तरफ भागती । लौटते हुए रिक्शे पर घर के लिए ढेरों वस्तुएं लादे हुए घर लौटती । बाबुल के लिए तरह-तरह के खिलौने— रोहित की पसंद के शेविंग क्रीम, ब्रेड, मक्खन, फल, बिस्कुट, काजू जाने क्या-क्या । घर लौटकर दरवाजा खोलते ही मिट्टी में सना हुआ बाबुल उसकी तरफ हिलककर दौड़ता, डगमगाता हुआ । वह सब कुछ सोफे पर पटककर उसे गोद में उठा लेती— रमुआ को डांटती कि वह क्यों उसे जमीन में छोड़कर सो जाता है ? फिर बाबुल के हाथ-मुंह साफ कर कपड़े बदलती । दूध पिलाती । स्वयं चाय पीती और रमुआ को रात के खाने के बारे में हिदायतें देती । देखते-देखते शाम कैसे गुजर जाती पता भी नहीं चलता ? रात का खाना तैयार करने के बाद वह स्वयं तरोताजा होने के लिए स्नानघर में घुस जाती । यह उसका नित्य का नियम था । शॉवर के नीचे बैठकर वह दिनभर की थकान को मल-मलकर धो डालती । गीले बालों को पीठ पर फैलाकर हलकी शिफान साड़ी पहने कोई गीत गुनगुनाती हुई खाने की मेज सजाती । बिस्तर की चादर बदलती और अस्त-व्यस्त चीजों को करीने से लगाती । इस बीच दूध पीकर बाबुल सो चुका होता और वह बाहर आंगन में टहलती हुई रोहित के आने का इंतजार करती । रोहित जब जल्दी घर लौट आता तो दोनों मिलकर कोई अच्छी-सी फिल्म देखने चले जाते और मनपसंद दुकान से पान खाकर लौटते गुनगुनाते हुए । पहले रोहित अकसर शाम को जल्दी लौट आता था । अगर कभी देर होती तो फोन कर देता, "जानेमन, आज आने में जरा देर होगी । बुरा तो नहीं मानोगी ?" वह निहाल हो जाती— चलो कभी-कभी काम तो निकल ही आता है । लेकिन बाद में धीरे-धीरे वह अकसर देर से आने लगा । पूछना तो दूर, कारण बताने में भी आनाकानी करने लगा । फिर घर लौटने का समय आधी रात को पार करने के बाद तय-सा हो गया । कौन पूछे, किसे पूछे और क्या पूछे ? किसी की नीयत पर कौन पहरेदारी



कर सकता है। इसीलिए वन्या ने पूछना छोड़ दिया। मौसम चुपचाप बदलने लगा। बारिश की बड़ी-बड़ी बूंदों से लरजती हुए बेगन बोलिया के फूलों पर एक दूसरे का हाथ पकड़े वे अब कोई टिप्पणी नहीं करते थे। अचानक आधी रात को बिजली कड़कने पर चिहुंककर वन्या अब रोहित से लिपट नहीं पड़ती थी। रोहित भी उसे अपने पास खींच लेने की कोई बेताबी नहीं दिखाता था। अपनी चादर में खुद को लपेटे वन्या घुटने मोड़कर खुद को ठंडी बयार से बचा लेती थी। किंतु आखिर कब तक ? उसने शाम को लगनेवाला ड्रामा स्कूल ज्वायन कर लिया। अभिनय ही तो करना था। अभिनय और अभिनय और अभिनय। फिर तो उसकी दुनिया ही बदल गयी। घर बहुत पीछे छूटने लगा। कंधे पर जनवादी झोला लटकाये अपने साथी कलाकारों के साथ इस-उस थियेटरों में घूमने लगी। बाबुल नौकर और दाई के सहारे पलने लगा। वह अभिनय के स्कूल से काफी देर गये घर आ पाती। अकसर उससे पहले रोहित आ चुका होता। उसकी ओर सवालिया निगाहों से देखता। फिर ये निगाहें बोलने लगीं। आवाजें धीरे-धीरे चीख में बदलने लगीं। रोहित को उसका अभिनय करना नागवार गुजरने लगा। वह ऐतराज करता, उसे स्कूल जाने से रोकता— बल्कि अब तो ऑफिस से सीधे घर आ जाता। उस समय वह ड्रामा स्कूल जाने के लिए तैयार हो रही होती। उसकी पीठ पर हौले-से हाथ रखकर वह मनुहार करता— आज स्कूल मत जाओ। बहुत दिनों से हम साथ निकले नहीं हैं। चलो कहीं घूमने चलते हैं— बाबुल को भी साथ ले लेंगे...लेकिन वन्या अपनी धुन में होती— कहती, ''आज बहुत महत्त्वपूर्ण रिहर्सल है— जाना जल्दी है— घूमने किसी और दिन जाएंगे।''

उस समय अगर वह रोहित के कहने से रुक जाती, उसके साथ घूमने चली जाती— तो क्या रोहित उसके जीवन से कभी नहीं जाता।

तभी एक शाम रोहित अचानक आया।

रोहित ड्राईंग रूम के सोफे पर बैठता हुआ बोला, ''तुम्हारा एक पंक्तिवाला खत मिला तो अचानक तुमसे मिलने की इच्छा तीव्र हो गयी। एक सप्ताह की छुट्टी लेकर दिल्ली आया और वहां से सीधे मुजफ्फरपुर पहुंचा। वहां वीमेंस कॉलेज के गेट पर वही पुराना चपरासी भोला मिल गया। उसी ने तुम्हारे बारे में बताया कि तुम यहां सहारनपुर में कला एवं संस्कृति निगम की डायरेक्टर होकर आ गयी हो। बस चला आया सहारनपुर और तुम्हारा पता पूछता हुआ यहां तक आ पहुंचा। रोहित एक सांस में इतना बताकर चुप हो गया। काफी देर तक दोनों चुप रहे— जैसे कहने-सुनने के लिए कुछ बचा नहीं हो। रोहित ने इस बीच एक सिगरेट सुलगा ली और आंखें मूंदकर सिगरेट के कश लेता रहा।

भोजन के बाद वन्या रोहित को ड्राईंगरूम में बैठाकर अंदर से पान ले आयी। रोहित चौंककर हंसा, ''अच्छा तुम्हें अभी तक पान का शौक लगा हुआ है ?'' ''हां, कभी-कभी'' वन्या ने कहा, ''याद है, अकसर हम पान खाने पैदल निकल जाया करते थे ?'' ''हां, और रास्ते में तुम जबरदस्ती मेरे ओवरकोट का बटन बंद कर देती थीं— कि मुझे खांसी आने लगेगी।'' रोहित ने याद दिलाया तो वन्या चुप होकर अतीत में खो गयी। रोहित ने उसका

हाथ छूकर धीमे-से टोका, "वन्या, बाबुल दिखायी नहीं दे रहा है । वह कहां है ?" "वह दिल्ली में पढ़ता है— वहीं बोर्डिंग हाउस में रहता है", वन्या बोली । रोहित ने पूछा, "क्या मैं उसे मिल सकता हूं ?" "अवश्य, लेकन अभिभावकों की सूची में तुम्हारा नाम नहीं है—मैं वार्डेन के नाम एक पत्र दे दूंगी । तुमने शादी कर ली ?" वन्या ने कहा ।

जख्मों को भूलने की कोशिश करता हूं ।" और तुम ? रोहित ने पलटकर पूछा । वन्या बिना जवाब दिये नाखूनों से फर्श कुरेदती रही । रात गहरी होती जा रही थी । रामदीन शायद सो गया था । बाहर बारिश का अनवरत शोर जारी था । पानी की भारी बूंदों से लदकर हवा बोझिल हो उठी थी । समय— जैसे ठहर गया था । दो आहत हृदयों में दर्द की आग सुलग

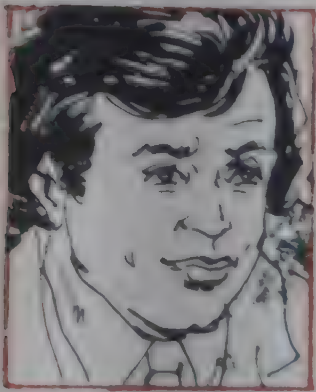
वन्या की पलकों पर सावन की वह रात थरथरा रही थी । मौलश्री के गिरते हुए सफेद छोटे फूल धुंधलाने लगे थे । रोहित भारी कदमों से चलकर गाड़ी में बैठ गया । तेज बारिश और हवा के थपेड़े झेलती हुई वन्या उसे जाता देखती रही । उसकी आंसुओं में डूबी हुई आंखों के सामने सारे दृश्य धूमिल होने लगे— धीरे-धीरे । सूरजमुखी का लहलहाता हुआ एक बाग तेज बरसात में डूब रहा था ।

रोहित ने स्वीकृति में सिर हिलाया । "भारतीय अथवा...वन्या पूछ ही रही थी कि रोहित ने वन्या को काटकर कहा, "नहीं भारतीय नहीं, आइरिश है । भारतीय को तो पहले ही आजमा चुका था, यह जीनिया मेरे ही दूतावास में काम करती थी । यहीं जान-पहचान हुई— फिर शादी भी ।"

"कोई बच्चा ?" वन्या ने पूछा ।

"हां, एक बेटी है ।" वन्या मुसकरायी, "नाम क्या रखा है ?" "मीता" रोहित बोलकर हौले-से हंस पड़ा । फिर पूछने को— जैसे कुछ रह नहीं गया । फिर भी वन्या ने यों ही पूछ लिया, "तुम खुश हो न ?" रोहित ने— जैसे अपने आप से कहा, "हां, किसी के दिये हुए

पड़ी थी । वन्या ने रोहित को— जैसे नींद से जगाया, "अब तुम्हें लौटना चाहिए । रात बहुत बीत चुकी है ।" रोहित ने कहा, "अब इतनी देर रुक गया तो डॉक्टर साहब से मिलता चलूं । इंतजार कर लेता हूं ।" वन्या हलके-से हंसी, "तब तो तुम्हें रात को यहीं रुकना पड़ेगा ।" "क्यों ?"— रोहित ने पूछा । "क्योंकि वे अकसर एक बजे रात के बाद ही लौटते हैं । क्लिनिक से क्लब या कहीं और चले जाते हैं । वहां से आधी रात बीत जाने पर ही घर आते हैं ।" वन्या की आवाज टूटने लगी । रोहित ने वन्या के चेहरे की तरफ गौर से देखा । उसे लगा— वन्या ऊपर से जितनी प्रफुल्ल दिखायी देती थी उतनी थी नहीं । आंखों के चारों तरफ

हलकी कालिमा उसकी जागी हुई रातों की गवाही दे रही थी । होंठ पर अव्यक्त उदासी ।

वह बोला, ''पर तुम्हें तो किसी का आधी रात गये घर लौटना पसंद नहीं था । मेरी इसी आदत को तुम बरदाश्त नहीं कर पायी थी और हम दोनों...'' रोहित चुप हो गया । शायद उसे अब यह नहीं कहना चाहिए । वन्या ने कहा, ''हां, तब बरदाश्त नहीं था रोहित ? तब और बात थी । अब कोई फर्क नहीं पड़ता । आदत-सी हो गयी है । जिंदगी को कितना आजमाया जाए ।''

रोहित को कुछ याद आया जैसे, ''बाबुल के कोई और भाई या बहन ?''

''नहीं''

''क्यों''— रोहित चौंका ।

''वे पहले से ही बाल-बच्चेवाले हैं ।'' वन्या ने सपाट स्वर में कहा । रोहित वन्या का चेहरा देखता रह गया । बादल से घने बालों के पीछे छुपा हुआ एक उदास चांद । उसके हृदय में कचोट-सी हुई । वन्या को छोड़कर उसने बड़ी भूल की । एक जुनून में वे कहां-से-कहां तक चले आये थे । रोहित ने बेचैन होकर वन्या की निश्चेष्ट कलाई थाम ली, ''वन्या, तुमने यह सब क्यों किया ?''

''क्योंकि बाबुल को पिता की जरूरत थी ।'' वन्या ने निस्संग स्वर में कहा । ''और तुम्हें ?'' रोहित की आवाज में व्यंग्य का पुट झलक उठा ।

वन्या ने उसकी आंखों में सीधा देखकर कहा, ''अपनी जिंदगी के सूनेपन को ढकने के लिए एक तसल्ली ।'' वन्या का उत्तर रोहित को सकते में डाल गया । उसे महसूस हुआ वह आज तक वन्या को पहचान नहीं सका । उसने कहा, ''वन्या, मैंने तुम्हें खोया है और तुमने मुझे । शायद भूल मेरी थी । उस रात अगर मैं क्रोध में बेकाबू होकर घर से न निकल पड़ता तो— वन्या ने उसके होंठ पर अंगुली रख दी । उसे हटाता हुआ रोहित बोला, ''वन्या मेरे साथ लंदन चलो । बाबुल को अच्छे स्कूल में एडमिशन करा देंगे । तुम्हें भी कोई जॉब मिल ही जाएगी ।'' कई अच्छे अवसर मिल जाएंगे और किसी गीत की पंक्ति गुनगुना पड़ा । वन्या मुसकरायी, ''बड़ी देर की पावस तुमने आने में ।'' फिर जैसे कोई सपना टूटता हो उस तरह जागकर बोली, ''रोहित चलो, तुम्हें छोड़ दूं— बारिश तेज होती जा रही है ।'' रोहित उठ खड़ा हुआ । शायद अपनी डबडबायी आंखों को उसने रुमाल से पोंछा । वन्या उसे छोड़ने गेट तक आयी । बाहर तेज बारिश हो रही थी । वन्या की पलकों पर सावन की वह रात थरथरा रही थी । मौलश्री के गिरते हुए सफेद छोटे फूल धुंधलाने लगे थे । रोहित भारी कदमों से चलकर गाड़ी में बैठ गया । तेज बारिश और हवा के थपेड़े झेलती हुई वन्या उसे जाता देखती रही । उसकी आंसुओं में डूबी हुई आंखों के सामने सारे दृश्य धूमिल होने लगे— धीरे-धीरे । सूरजमुखी का लहलहाता हुआ एक बाग तेज बरसात में डूब रहा था ।

— ८/१३, आर. ब्लॉक पटना, बिहार

कहानी

प्रेम गली अति सांकरी

• मीनाक्षी दीक्षित

माना की आंखों ने रोते-रोते पूरा तकिया भिगो दिया था । माना जब से जीत को छोड़कर आयी थी, रो रही थी । माना पिछले दिनों से जीत से मिलने के लिए उतावली थी, क्योंकि वह चौबीस घंटे से अधिक रह ही नहीं पाती थी, जीत से मिले बिना, उसका दम घुटने लगता था, बेचैनी और घबराहट से वह टिककर बैठ नहीं पाती थी, उसकी मनपसंद पुस्तकें क्रौंच वध, कोणार्क, नदी के द्वीप, कनुप्रिया भी उसे बांध नहीं पाती थीं, बस जीत की मुसकान उसकी आंखों में तैरती रहती थी । हर आहट उसे जीत की आहट लगती थी । उसी जीत से तीन दिन बाद मिलकर आयी थी और फिर भी रो रही थी । माना को क्रोध आ रहा था जीत पर या वह दुःखी थी, यह तो माना को समझ में ही नहीं आ रहा था । माना को गुस्सा क्यों न आये, उसे दुःख क्यों न हो ? अभी शनिवार को माना ने जीत से कहा था कि जीत सोमवार को उसे विश्वविद्यालय से लिवा लें— उसे बहुत-से काम हैं, तो जीत ने कह दिया कि सोमवार का कार्यक्रम शनिवार को कैसे तय कर लें ? जीत ने मना कर दिया तो विश्वविद्यालय में माना जीत की प्रतीक्षा भी नहीं कर पायी ।

येन-केन-प्रकारेण शाम को जीत माना को मिला तो माना को अपना वृत्तांत सुनाने के मनोभाव के वशीभूत होने के पूर्व ही जीत ने अपने पूरे सप्ताह का कार्यक्रम सुना दिया, "तुम्हारा जो काम हो आज ही कर लो, आज के बाद मैं अगले सोमवार को ही मिलूंगा ।"

"क्यों ?" माना चौंक पड़ी थी, उसे तो बताया ही नहीं था जीत ने । माना ने तो मंगलवार को पूरे दिन के आवश्यक कामों और थोड़ी-सी अनावश्यक चहलकदमी का कार्यक्रम बना रखा था जीत के साथ ।

"क्यों ? क्या ? मैं बाहर का रहनेवाला हूं ।"

"कहां जा रहे हो ?" माना ने उदास स्वर में पूछा था ।

"कल कानपुर, परसों सुल्तानपुर, बृहस्पतिवार को हरदोई, शुक्र को फैजाबाद जाऊंगा । वहां से शनिवार की रात लौटूंगा ।"

अब माना क्या कहती ? क्या जीत को पता नहीं है कि माना के बहुत ढेर सारे आवश्यक काम जीत के सहारे पड़े रहते हैं, इसलिए नहीं कि माना ये सारे काम अकेले कर नहीं सकती बल्कि इसलिए कि इसी बहाने उसे जीत के साथ समय बिताने को मिलता है । काम से अधिक महत्त्व वह जीत के साथ को देती है ।

माना और जोर से रोने लगती है । माना तो इसलिए नहीं बोली उससे, क्योंकि अगर माना बोलती तो उसके मुंह से कोई कड़वी बात निकल जाती और जीत आहत हो जाता, लेकिन माना के न बोलने से भी तो वह उतना ही आहत

हो गया । माना क्या करे ? कैसे अपना गुस्सा निकाले न बोलकर ? निकाल सकती है न चुप रहकर । जीत से नाराज होना तो माना का अधिकार है, जीत को इतना प्यार जो करती है माना । फिर माना का मान भी तो है, अभिमान भी तो है । माना कुछ बोली नहीं तो जीत उसे प्यार से मना तो सकता था, कह तो सकता था, कि उसका बाहर रहना विवशता है । जीत रूठ जाए तो माना कितनी मनुहार करती है, उसे हंसाकर ही मानती है । जीत ने तो आज तक कभी उसे मनाने का या उसकी नाराजगी का कारण जानने का भी यत्न नहीं किया । माना का मान-अभिमान कितना आहत होता है इससे । जीत तो जानता था उसके बाहर जाने की बात से ही माना रूठ गयी है, तो उसे मना नहीं सकता था ? माना ही क्यों हमेशा जीत को मनाये ? क्या जीत कभी माना को मना नहीं सकता ? यह तो माना के मान का अपमान है, प्यार का अपमान है । मनाना तो दूर, माना रूठ जाए तो जीत बस इसी बात पर रूठ जाता है कि माना उससे रूठी क्यों ? माना का प्यार भी कैसा है, स्वयं रूठो स्वयं मान जाओ, रूठने की सजा पाओ सो अलग । जीत की भी क्या गलती ? माना के पहले वह मनुहार का अर्थ ही कहां जानता था । यह तो इतने प्यारे, इतने निर्मल, सहज और स्वच्छ वातावरण में रहा ही नहीं जहां कोई उसे प्यार से मनाता हो, इसलिए रूठे को मनाने का संस्कार उसमें आया ही नहीं । माना सो जाए तो उसके पापा उसे प्यार से जगाकर मनुहार करके अपने हाथ से एक-एक कौर खिलाते हैं । जीत के साथ ऐसा तो शायद बहुत बचपन में होता होगा जब उसके मां-पिताजी जीवित थे । उनके बाद में तो ऐसा पल उसके जीवन में आया ही नहीं होगा । जीत के साथ ऐसा क्यों हुआ ? जीत तो बेइंतहा प्यार का अधिकारी है । जीत के भीतर तो प्यार का झरना है । हर दिन ही तो माना उसे अपने पर झरते अनुभव करती है । जीत की प्यार की फुहार से माना का रोम-रोम पुलकित हो जाता है । माना का गुस्सा या दुःख जो भी है, वह फिर भी कम नहीं होता । जीत तो मेरी हर बात, हर चाहना मेरे बोलने से पहले ही जान जाता है, तो आज क्या उसे समझ में नहीं आया कि मैं क्यों चुप हो गयी ? माना का मन इधर-उधर टहलकर वापस अपने आपके आंसुओं पर आ गया था ।

प्रेम गली अति सांकरी जामें दुई ना समाएं ।

इसका अर्थ केवल आध्यात्म या रहस्यवाद तक ही सीमित नहीं, लौकिक जगत में भी उतना ही है । अहं के साथ प्रेम नहीं होता ।

यदि जीत को समझ में आ गया था तो जीत ने ऐसा बहाना क्यों किया कि जीत को माना के मन की बात समझ में नहीं आयी ? यह तो माना की भावना को जबरन आहत करने की चेष्टा हुई । यदि सचमुच जीत को समझ में न आया हो तो, नहीं यह माना नहीं सह सकती । जीत उसे समझ न सके, उसके कहने या अनकहने पर भी यह माना नहीं सह सकती । जीत को उसे समझना ही पड़ेगा । जीत प्यार की इस कसौटी पर हमेशा खरा उतरता है । वह माना

को बहुत गहरे तक समझता है, तभी न माना को मान है अपने और जीत के बीच की आपसी समझदारी पर । फिर आज ऐसा क्यों हुआ ? जीत कहीं खोया, किसी परेशानी में उलझा तो नहीं था ? माना ने अपने गुस्से के आगे आज जीत से उसके पिछले तीन दिन कैसे बीते यह भी नहीं पूछा । माना से गलती हो गयी । जीत अपनी परेशानियां माना के सिवा किसी से नहीं कहता । माना के भीतर अकुलाहट मच गयी । उसने जीत से कुछ पूछा क्यों नहीं ? माना का मन किया तुरंत आंसू पोंछे और जाकर जीत से बात करे । माना उठते-उठते रुक गयी, ऐसी कोई बात थी तो अपने आप नहीं कह सकता था ? क्या आवश्यक है माना दस बार पूछे तभी वह बताये ? समझता क्या है अपने आपको ? माना हमेशा इतना प्यार करती है तभी उसका इतना दिमाग खराब रहता है, माना को कुछ समझता नहीं ? माना क्यों बात करे उससे जब उसका मन करेगा अपने आप आएगा । माना नहीं रोएगी ।

माना उठी, मुंह धोया । ढेर-सी अपनी पसंद की पुस्तकें चारों ओर बिखेर लीं । समाचार-पत्र, पत्रिकाएं, दैनंदिनी, कलम सब कुछ उठा लायी । माना दिखा रही थी कि वह व्यस्त है किंतु उसके कान लगे थे फोन की घंटी पर । काश बज जाए । जीत फोन कर ले । हे भगवान जीत को थोड़ी बुद्धि दे दो ना, फोन कर ले । घड़ी की सुई बढ़ती जा रही थी और माना के दिल की धड़कन भी ।

माना फोन मिला ही रही थी कि द्वार की घंटी बजी । सामने जीत खड़ा था । जीत के चेहरे से स्पष्ट था पिछले छह-सात घंटे उसने भी माना की तरह बिताये हैं । वह भी अपना मान धोकर आया है ।

"क्या कर रही थीं ?" जीत के स्वर में प्यार और सच्चाई की मिठास थी ।

"तुम्हें फोन करने जा रही थी ।"

"क्यों ?"

"तुम नाराज जो थे, मेरा मन ही नहीं लग रहा था ।"

"पागल ! मैं कहां नाराज था, नाराज तो तुम हो गयी थीं ।"

"तुम मुझे बगैर पहले से बताये, बगैर मुझसे पूछे, एक सप्ताह बाहर रहने का कार्यक्रम बना लोगे तो मुझे कैसा लगेगा ?"

"तुमने कुछ कहा भी ? कह नहीं सकती थी ? मैं इतने दिन बाहर रहूंगा तो तुम्हें कितनी तकलीफ होगी ?"

"यह अनुभूति की बात है जीत ! कही नहीं जाती ।"

"और मुझे क्या सदा स्वयं को स्पष्ट करना होगा, मैं तो अनुभूति के योग्य हूं नहीं ?"

"धत्, ऐसा नहीं कहते । तुम तो...सबसे...प्यारे हो !"

माना की बांहें जीत के गले में थीं ।

उनके बीच सिर्फ प्यार ही सच था । पिछले घंटों के मान-अभिमान पानी के बुलबुलों की तरह बुझ गये थे ।

प्रेम गली अति सांकरी जामें दुई ना समाएं ।

इसका अर्थ केवल आध्यात्म या रहस्यवाद तक ही सीमित नहीं, लौकिक जगत में भी उतना ही है । अहं के साथ प्रेम नहीं होता । प्रेम के लिए अहं को तिलांजलि देनी पड़ती है ।

—१२३, फतेहगंज, गल्ला मंडी
लखनऊ-२२६००४

बाल्ज़ाक

प्रेम स्वरूप नहीं देखता

• अशोक जैन

बाल्ज़ाक इतने कुरूप थे कि अपनी खुद की शक्ल शीशे में देखकर उन्हें शर्म लगती लेकिन जिस प्रेम से वे वंचित रहे उसे किसी भी तरह प्राप्त करना चाहते थे । प्रेम से निराश हुई युवतियां उनके उपन्यास पढ़कर अक्सर उन्हें पत्र लिखा करतीं । इन पत्रों में या तो उनका प्रणय निवेदन होता या फिर क्रोध की अभिव्यक्ति ।

प्रथम प्रेमिका : मैडम द बेरनी

बाल्ज़ाक ने अपने जीवन में अनेक स्त्रियों से प्रेम किया और इस प्रेम से अद्भुत प्रेरणा प्राप्त कर वे आगे बढ़ सके । मैडम द बेरनी उनकी पहली प्रेमिका थी जिससे उन्हें अंततः प्रेरणा के साथ-साथ आर्थिक मदद भी मिली । बेरनी बाल्ज़ाक से उम्र में बाइस वर्ष बड़ी थी और नौ बच्चों को जन्म दे चुकी थी । दरअसल जिस मातृप्रेम से बाल्ज़ाक वंचित रहे, वे उसकी खोज में थे और कुछ अंशों में वह प्रेम उन्हें बेरनी से मिला ।

करीड़ बाल्ज़ाक की दूसरी प्रेमिका थी । साहूकार और प्रकाशकों से तंग आकर बाल्ज़ाक प्रायः इसके घर में छिपे रहते । करीड़ से बाल्ज़ाक अतिशय प्रेम करते और यदि कभी पंद्रह मिनट भी उसके साथ प्रेमालाप करने का मौका मिल जाता तो उसे वे सुंदरियों के बाहुपाश में बितायी जानेवाली रातों से भी अधिक आनंददायी मानते ।

उनकी तीसरी प्रेमिका का नाम था—कैस्ट्रीज । कैस्ट्रीज बाल्ज़ाक की रचनाओं को पढ़कर उनकी ओर आकृष्ट हुई थी । पहले प्रेमपत्र में उसने अपना नाम नहीं लिखा था लेकिन बाल्ज़ाक इस पत्र से इतने प्रभावित हुए कि इन्होंने छह पृष्ठ में उसका उत्तर लिखा । दोनों का परिचय बढ़ता गया और बाल्ज़ाक पैसे की तंगी होने पर भी काफी खर्च करके उससे मिलते रहे ।

सहृदय मित्र से मिलन

बाल्ज़ाक जीवन से तंग आ चुके थे । दिन-रात जी तोड़ मेहनत करके भी कर्ज से मुक्ति पाने का कोई मार्ग दिखायी न देता था । कई महीने से मकान का किराया नहीं दिया गया था । पाव रोटीवाले के सात सौ फ्रैंक उधार हो गये थे और जूते दुरुस्त कराने तक के पैसे जेब में न थे । उनके मन में विचार आया कि यदि किसी संपन्न घराने की विधवा से शादी कर ली जाए तो जीवन का सब संकट ही दूर हो जाए ? लेकिन वह मिले कहां !

संयोग की बात...इस समय रूस की किसी युवती का पत्र बाल्ज़ाक को मिला । पत्र में लेखक की कृतियों की प्रशंसा करते हुए प्रणय

निवेदन किया गया था । पत्र पढ़कर बाल्जाक इस अज्ञात युवती के प्रेम में पागल हो उठे, उससे मिलने की उत्कंठा उनके मन में जाग उठी । उत्तर में उन्होंने लिखा—मेरी अनजानी ! तुमसे मैं प्रेम करता हूं । मैं एक 'दरिद्र कलाकार' हूं जो धन और यश की चिंता न कर केवल प्रणय की याचना करता है ।... केवल तुम्हीं मुझे सुखी बना सकती हो । तुम्हारे आगे मैं घुटने टेकता हूं । मेरा जीवन और मेरा हृदय तुम्हारे हाथ है । अपनी चोट से मुझे मार डालना, लेकिन तकलीफ न होने देना ।'

बाल्जाक की इस प्रणयिनी का नाम था मैडम द हास्का । उसके पति उम्र में पचीस वर्ष बड़े थे और अकसर रोग शैय्या पर पड़े रहते थे । परिचय बढ़ जाने पर बाल्जाक को रूस आकर मिलने का निमंत्रण मिला । चार दिन और चार रात के लंबे सफर के बाद बाल्जाक अपनी प्रेमिका के पास पहुंचे । एक सहृदय मित्र से मिलकर उन्हें जो खुशी हुई वह वर्णनातीत है । बाल्जाक को जब पैसे के अभाव में एक-एक दिन काटना मुश्किल हो रहा था, अकस्मात मैडम द इन्सका का पत्र मिला जिसमें लिखा था कि उसके पति का स्वर्गवास हो गया है । पत्र पढ़कर उन्हें लगा—अब अवश्य उनके दिन फिरेंगे और इतने दिनों की तपस्या के बाद उनके नीरस जीवन में सुख और शांति का संचार होगा । बाल्जाक ने प्रणय-याचना करते हुए इन्सका को पत्र लिखा—मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूं कि आज से तुम्हारा जीवन संपूर्ण रूप से मेरा हो गया है । अब हम लोग सुखी बनेंगे और अब किसी बादल की छाया पड़ने की संभावना न रहेगी ।

आखिर एक दिन उन्हें सेंट पीट्सबर्ग आने का निमंत्रण मिला । निमंत्रण पाते ही पांडुलिपियां बेचकर वे अपनी प्रेमिका से मिलने चल दिये । आठ वर्ष बाद खुलकर मिलने का अवसर मिला । बाल्जाक की खुशी का ठिकाना न था । मैडम इन्सका सात बच्चों की मां होकर भी कितनी आकर्षक और स्नेहमयी जान पड़ रही थी ।

पहले तो मैडम इन्सका ने बाल्जाक की प्रार्थना अस्वीकार कर दी लेकिन बाल्जाक भी लिखते रहे । आखिर एक दिन उन्हें सेंट पीट्सबर्ग आने का निमंत्रण मिला । निमंत्रण पाते ही पांडुलिपियां बेचकर वे अपनी प्रेमिका से मिलने चल दिये । आठ वर्ष बाद खुलकर मिलने का अवसर मिला । बाल्जाक की खुशी का ठिकाना न था । मैडम इन्सका सात बच्चों की मां होकर भी कितनी आकर्षक और स्नेहमयी जान पड़ रही थी ।

— भाषाध्यापक,
रामजस उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नं. १,
दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२

मिजोरम

औरतें भी कम कारीगर नहीं

• लेख व छाया : सर्वेश

पूर्वोत्तर भारत के रत्न मिजोरम का इतिहास कोई बहुत अधिक पुराना नहीं है । करीब दो सौ साल पहले की बात है । रूस और चीन के बीच स्थित देश मंगोलिया से खानाबदोशों का एक काफिला अपने लिए नये ठिकाने की तलाश में निकला । अरसे तक चीन और बर्मा की खाक छानने के बाद आखिरकार यह काफिला पहुंचा पहाड़ों के एक खूबसूरत इलाके में । हरे-भरे नीले पहाड़ों और वादियों ने बरबस काफिले के लोगों को अपनी ओर खींच लिया । पहाड़ों और वादियों की खूबसूरती देखकर मंगोलियाई लोगों के मुंह से अनायास ही निकल पड़ा—'लुशाई ।' और इन पहाड़ों का यही नाम पड़ गया लुशाई ।

इसके बाद मंगोलियाई मूल के ये लोग लुशाई पहाड़ों के होकर रह गये । जल्दी ही पहाड़ों की चोटियों पर इन लोगों ने अपने घर बनाये, गांव बसाये । बरसों से वीरान पड़े पहाड़ों पर जिंदगी झूमने लगी । लुशाई पहाड़ों ने भी इन लोगों को पूरी तरह अपना लिया । करीब सौ साल पहले सन् १८९१ में अंगरेज भी मिजोरम पहुंचे । सात-आठ सालों में ही अंगरेजों ने मिजोरम पर भी अपना कब्जा जमा लिया । मिजोरम के बाशिंदों ने अंगरेजों के धर्म—ईसाइयत और उनकी भाषा अंगरेजी को अपना लिया । लेकिन फिर भी उन्होंने अपनी भाषा—मिजो का साथ नहीं छोड़ा । आज भी मिजो और अंगरेजी मिजोरम की दो प्रमुख भाषाएं हैं ।

आज का मिजोरम प्रदेश पूरा का पूरा पहाड़ी प्रदेश है । इन पहाड़ों की खासियत है कि ये उत्तर-दक्षिण दिशा में फैले हुए हैं जबकि भारत के ज्यादातर पहाड़ों का विस्तार पूर्व-पश्चिम दिशा में है ।

मिजोरम की भौगोलिक स्थिति कई मामलों में अद्वितीय है । गरमी के दिनों में बंगाल की खाड़ी से उठनेवाली मानसूनी हवाएं मिजोरम के ऊपर से गुजरती हैं । सरदियों में चीन सागर से बहनेवाली हवाएं (या लौटता मानसून) भी मिजोरम के ऊपर से गुजरती हैं । इस तरह गरमियों और सरदियों के मानसून के रास्ते में पड़ने के कारण मिजोरम में सालभर अच्छी बारिश होती है और यही बारिश मिजोरम के जीवन को शहरों व गांवों की बनावट को, कला को, संस्कृति को और रीति-रिवाजों को तय करती है ।

पहाड़ की चोटियों पर बसे लोग

सालभर अच्छी बारिश होने से मिजोरम की घाटियों में बहुत ही घने जंगल हैं । वहीं दूसरी ओर पहाड़ों की चोटियों पर वनस्पतियों का घनत्व बहुत ही कम है । ज्यादातर गांव दूर-दूर छितराये हुए और पहाड़ियों की चोटियों पर बसे हुए हैं । शायद इन चोटियों पर बसे इनसानों के कारण ही इस प्रदेश का नाम मिजोरम पड़ा । मिजोरम का शाब्दिक अर्थ ही होता है पहाड़ की चोटियों पर बसे लोगों की भूमि । नीचे घाटियों में बहुत घने जंगल फल-फूल रहे हैं । इन जंगलों में बांस मुख्य वनस्पति है । इसके अलावा साल, सागौन, शीशम, चीड़ और न जाने कौन-कौन से पेड़ भी इन जंगलों में पाये जाते हैं । इन लंबे पेड़ों के तनों पर लगभग पेड़ की ऊंचाई तक मोटी-मोटी बेलें फैली हुई हैं । इन्हीं बेलों से बेंत की करामाती लकड़ी मिलती है ।

बांस और बेंत मिजो लोगों के जीवन के हर क्षेत्र में गहरे तक रचे-बसे हुए हैं । भोले-भाले मिजोरमवासी अपनी ज्यादातर जरूरतें प्रकृति से पूरी कर लेते हैं । वे इस बात का ध्यान भी रखते हैं कि प्रकृति से उतना ही लिया जाए जितना जरूरी है । इससे प्रकृति का संतुलन भी बना रहता है । मिजो पुरुष बेंत और बांस से सुंदर-सुंदर और कलात्मक चीजें बनाने में माहिर हैं । बेंत, बांस, पत्तियों और घास की बनी खूबसूरत टोकरियां मिजो पुरुषों की कारीगरी दर्शाने के लिए काफी हैं । इन टोकरियों को अगर मिजो जीवन का प्रतीक कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । इनमें वे अपनी सभी चीजें रखते हैं और ढोते हैं । चावल, सब्जियां, फल, लकड़ी, कपड़े और यहां तक कि पानी भी इन्हीं बांस और बेंत की बनी टोकरियों में रखा जाता है । है न हैरानी की बात !

मिजोरम के गांवों में घर भी बांस से ही बनाये जाते हैं । दो-दो, तीन-तीन मंजिले घर भी बांस के बने दिख जाएंगे । इन घरों की दीवारें और फर्श बांस के बने होते हैं और छत पुआल या ताड़ की पत्तियों की बनी होती है । ये घर हलके लेकिन मजबूत और टिकाऊ होते हैं । साथ ही ये भूकंप से भी बेअसर होते हैं । घरों का फर्नीचर भी बांस और बेंत से ही बनाया जाता है । अलमारी, कुरसी-मेज, चारपाई, पलंग सभी फर्नीचरों में मिजो पुरुषों की हस्तकला और कारीगरी की छाप नजर आती है । बेंत के बने टोप और जालियां भी मिजोरम में आम चलन में है । बेंत के बने छतरीनुमा टोपों से पानी की एक बूंद भी नहीं टपक सकती है । अधिक बारिशवाले प्रदेश मिजोरम में इन टोपों का महत्त्व कम नहीं है । खेत में काम करते वक्त या बाजार में खरीददारी करते समय अगर अचानक बारिश होने लगे तो यही टोप भीगने से बचाते हैं ।

लाजवाब कलात्मकता

मिजोरम की औरतें भी कम कारीगर नहीं हैं । यहां की लड़कियां कम उम्र में ही बुनाई करना सीख जाती हैं । बाद में हाथ से चलनेवाले परंपरागत करघों पर ये ऊनी और सूती सभी तरह के कपड़े बुनती हैं । इनके हाथ की बुनी शालें, चादरें और पुआन की खूबसूरत और कलात्मकता देखते ही बनती है । पुआन यहां की औरतों का खासा पहनावा है । हथकरघों पर बने कपड़े यहां के शहरों और

कस्बों में सैलानियों को खूब लुभाते हैं । ऐजाल छितेवेंग, बेथलहेम यंग, सेहा, सरछिप, लुंगलेइ, चंपाहाइ, लुआंग मुआल, बिखावधिर आदि शहरों व कस्बों में सैर करते वक्त आप हथकरघा केंद्रों से मिजोरम की पहचान हाथ के बुने कपड़े जरूर खरीद लेंगे ।

यह बहुत अजीब बात है कि मिजोरम में कुंवारी लड़कियां बहुत कम जेवर पहनती हैं । वहीं शादीशुदा मिजो औरतें खूब जेवर पहनती हैं । मजे की बात यह है कि इनके जेवर भी सोने-चांदी से न बने होकर प्रकृति में मिलनेवाली चीजों के बने होते हैं । दार-थी (कांच के मोतियों की माला) दिथस (अंबर के मोतियों की माला) और थी-केन (छोटे मोतियों की माला) पहने औरतें मिजोरम के बाजारों, हाटों, उत्सवों, जलूसों या कोई भी मौका हो दिखायी दे जाएंगी । परंपरागत चीजों से बने ये गहने सोने-चांदी के गहनों की तरह कीमती भले ही न हों लेकिन खूबसूरती और कलात्मकता में इनका कोई जवाब नहीं । मिजोरम यात्रा की यादगार के रूप में पर्यटक इन गहनों को भी खूब खरीदते हैं ।

जिंदादिली की झलक

मिजो लोगों की जिंदादिली उनके पहनावों, लोकगीतों, संगीत और बाजों (वाद्ययंत्रों) में झलकती है । उत्सवों-त्यौहारों पर मिजो औरतें एक खास तरह का ताज—वाकिरिया पहनती हैं । यह छल्लेनुमा ताज बांस का बना होता है और इस पर तोते के पंखों और रंग-बिरंगे भुनगों की सजावट की जाती है । मिजो औरतें और आदमी धूम्रपान के बेहद शौकीन होते हैं । लेकिन दोनों के धूम्रपान का तरीका अलग-अलग होता है । जहां औरतों को कबाड़ी के बने हुक्के पसंद हैं वहीं पुरुष बांस के बने पाइपों से दम भरना पसंद करते हैं । इसी तरह संगीत मिजो जीवन का अभिन्न अंग है । टिंग-टिंग (एक तरह का इकतारा), बेजबंग, रिउदेम आदि मिजोरम के परंपरागत बाजे हैं । आधुनिक बाजों में गिटार अधिक लोकप्रिय है ।

देश के अन्य भागों की तरह मिजोरम भी आधुनिक चमक-दमक से अछूता नहीं है । आज मिजोरम के दूर-दराज स्थित गांवों में भी





आइजोल की एक बड़ी चर्च

मिजोरम के तीन बड़े शहरों ऐजाल, लुंगलेई और छिम्तुपुई में डिस्को क्लबों, और आधुनिकता का पर्याय बन चुकी पश्चिमी संस्कृति आम चलन में है। मिजोरम के बुजुर्ग मानते हैं कि आधुनिकता की दौड़ में यहां की परंपरागत चीजें लुप्त होती जा रही हैं।

केबल टीवी पहुंच चुका है। स्टार टीवी, जी टीवी, ईएसपीएन आदि पर दिखाये जानेवाले विदेशी कार्यक्रमों की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है। वहीं मिजोरम के तीन बड़े शहरों ऐजाल, लुंगलेई और छिम्तुपुई में क्लबों, डिस्को और आधुनिकता का पर्याय बन चुकी पश्चिमी संस्कृति आम चलन में है। मिजोरम के बुजुर्ग मानते हैं कि आधुनिकता की दौड़ में यहां की परंपरागत चीजें लुप्त होती जा रही हैं। यहां के परंपरागत बाजे, पहनावे, लोकगीत व संगीत जो पहले आम होते थे अब कुछ खास त्यौहारों या उत्सवों पर ही नजर आते हैं।

लेकिन फिर भी मिजोरम आने पर २००० मी. की औसत ऊंचाईवाली पहाड़ियों पर बसा यह मनोरम प्रदेश आपको अपने मोहजाल में फांस लेगा। यहां का सबसे नजदीकी हवाई अड्डा और रेलवे स्टेशन सिलचर है। सिलचर से सड़क के रास्ते आप मिजोरम की राजधानी ऐजाल पहुंच सकते हैं। मिजोरम राज्य परिवहन की बसों के अलावा टैक्सियां और जीपें भी सहज उपलब्ध होती हैं। राजधानी ऐजाल में पूरे मिजोरम की झलक साफ नजर आती है। यहां के आदिवासी रिसर्च इंस्टीट्यूट में आप मिजोरम के गांव-देहातों की झलक पा सकते हैं। यह इंस्टीट्यूट मिजोरम की लुप्त होती आदिवासी कलाओं को बचाने में लगा है।

बड़ा बाजार से आनेवाली हथकरघों की आवाजें भी किसी संगीत से कम नहीं लगती हैं। ठहरने के लिए ऐजाज में टूरिस्ट बंगला और लाज उपलब्ध हैं। इसके अलावा ढेरों निजी होटल भी हैं। ज्यादातर सैलानी ऐजाल में ही मिजोरम की झलक देख वापस लौट आते



ऐजाल का एक विहंगम दृश्य



भविष्य की आशाएं : युवक-युवतियां →



मिजोरम की एक महिला जिसके आंचल में है उसका भविष्य

हैं, पर असली मिजोरम तो अभी भी गांवों में ही बसता है। ऐजाल से आगे बढ़ना सचमुच चुनौतीपूर्ण काम है। अब आगे मर्जी आपकी।

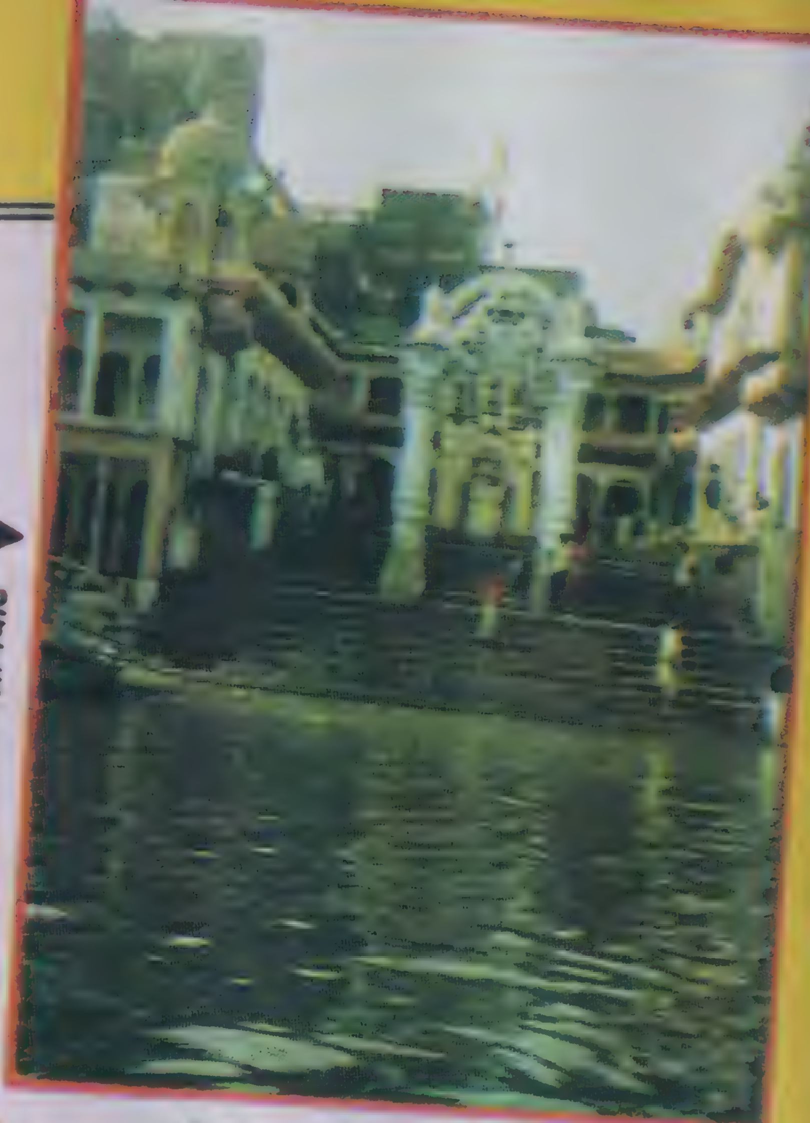
—१०३-डी, ब्लॉक-२६
डी. डी. ए. फ्लैट
सराय काले खां, नयी दिल्ली-११००१३

सभी चित्र : सर्वेश

गीता मंदिर



विश्रामघाट ▶



सभी चित्र : विपा प्रकाश श्रीवास्तव

प्राचीनकाल से मथुरा एक ऐतिहासिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध रहा है । यह आर्यों का पुण्यतम् नगर है तथा दीर्घकाल से प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का केंद्र रहा है । भारतीय धर्म दर्शन, कला एवं साहित्य के निर्माण तथा विकास में मथुरा का महत्त्वपूर्ण योगदान सदा से रहा है । आज भी महाकवि सूरदास, संगीत के आचार्य

कंस किला



स्वामी हरिदास, स्वामी दयानंद के गुरु स्वामी विरजानंद, कवि रसखान आदि महान आत्माओं से इस नगरी का नाम जुड़ा है।

मथुरा भगवान श्रीकृष्ण जन्म भूमि के रूप में विश्वविख्यात है। यहां जैन तथा बौद्ध धर्म भी शताब्दियों तक फलते-फूलते रहे, जिनके मंदिर-मठों के अवशेष इस क्षेत्र में दृष्टिगत हैं। मथुरा, दिल्ली-आगरा रेल मार्ग पर स्थित है। यह आगरा से मात्र ५६ कि.मी. तथा दिल्ली से लगभग १४५ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। मथुरा स्टेशन पर लगभग सभी मेल, एक्सप्रेस गाड़ियां रुकती हैं। मथुरा की महत्वपूर्ण धार्मिक गरिमा के कारण यहां से बस यातायात भी हर दिशा के लिए सुविधाजनक है।

मथुरा के दर्शनीय स्थल

श्रीकृष्ण जन्म-भूमि : मथुरा में भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। कहा जाता है कि कटरा केशवदेव राजा कंस का भवन था, यहीं पर श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। यहीं प्राचीन मथुरा बसी हुई थी। यहां पर समय-समय पर अनेक बार भव्य मंदिर का निर्माण हुआ, जिसे हर बार विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा नष्ट-भ्रष्ट किया जाता रहा। अंततः सन् १६६९ ई. में औरंगजेब ने इस प्राचीन स्मारक को तोड़कर उसी के मलबे से ईदगाह मसजिद का निर्माण कराया, जो कि आज भी विद्यमान है। अंगरेजी शासनकाल में ही यह समस्त स्थान बनारस के राजा पटनीमल ने खरीद लिया, ताकि यहां फिर

कन्हैया की प्रेम नगरी : मथुरा-वृंदावन

● *विभा प्रकाश श्रीवास्तव*

मथुरा भगवान श्रीकृष्ण जन्म भूमि के रूप में विश्वविख्यात है। यहां जैन तथा बौद्ध धर्म भी शताब्दियों तक फलते-फूलते रहे, जिनके मंदिर-मठों के अवशेष इस क्षेत्र में दृष्टिगत है। मथुरा दिल्ली-आगरा रेल मार्ग पर स्थित है। यह आगरा से मात्र ५६ कि. मी. तथा दिल्ली से लगभग १४५ कि. मी. की दूरी पर स्थित है। मथुरा स्टेशन पर लगभग सभी मेल, एक्सप्रेस गाड़ियां रुकती है। मथुरा की महत्त्वपूर्ण धार्मिक गरिमा के कारण यहां से बस यातायात भी हर दिशा के लिए सुविधाजनक है।

से श्रीकृष्ण मंदिर का निर्माण हो सके । महामना पंडित मदनमोहन मालवीय एवं श्री जी. के. बिरला के प्रयत्नों से श्रीकृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट का निर्माण हुआ, जिसने अब यहां एक विशाल मंदिर का निर्माण कराया है ।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर लगभग दो करोड़ रुपये की लागत से श्रीमद् भागवत भवन का निर्माण किया गया है, जिसमें श्री राधाकृष्ण, श्री लक्ष्मी नारायण एवं जगन्नाथजी की विशाल मनोहारी झांकियां हैं, शिवजी का पारे का शिवलिंग अनोखा आकर्षण है । मां दुर्गे एवं हनुमानजी की मूर्ति दर्शनीय है । ट्रस्ट द्वारा 'श्रीकृष्ण संदेश' नामक पत्रिका एवं अन्य ग्रंथों का प्रकाशन भी किया जाता है ।

श्री द्वारिकाधीश मंदिर : मथुरा नगर का यह प्रमुख मंदिर है, जो विश्राम घाट के समीप है । इसका निर्माण सन् १८१४ ई. में गुजराती वैश्य श्री गोकुलदास पारिख ने किया था । मंदिर के गर्भगृह में श्री द्वारिकाधीश (श्रीकृष्ण) का श्रीविग्रह स्थापित है । इसके बायीं ओर लक्ष्मीजी और श्रीनाथजी के मंदिर हैं । सभा मंडप की छत पर कृष्ण लीला के चित्र बने हुए हैं । यह मंदिर कांकरोली के द्वारिकाधीश मंदिर के अधीन है और इसकी सेवा-पूजा बल्लभ संप्रदाय के अनुसार होती है । मंदिर के पीछे एक गली है, जिसमें वराह का प्राचीन मंदिर है ।

विश्राम घाट एवं यमुना मंदिर : विश्राम घाट नगरी के मध्य में स्थित है । इस घाट के उत्तर-दक्षिण में १२-१२ घाट हैं । इस घाट पर यमुनाजी के मंदिर के अलावा अन्य कई मंदिर हैं । सायंकाल यहां यमुनाजी की आरती का दृश्य मनोहारी होता है । ओरछा के राजा वीरसिंह जूदेव ने इसी घाट पर ८१ मन सोने का दान किया था । बाद में रीवा, काशी एवं जयपुर के राजाओं ने भी यहां स्वर्णदान किया था । जनश्रुति है कि श्री यमुनाजी ने गौलोक से आकर तथा श्रीकृष्ण बलराम ने कंस का संहार करने के उपरांत, यहीं विश्राम किया था । महाप्रभु चैतन्य ने ब्रज यात्रा के समय विश्राम घाट पर ही विश्राम किया था ।

सती बुर्ज : यह विश्रामघाट के समीप सन् १५७० ई. में लाल पत्थरों द्वारा निर्मित, सत्रह मीटर अर्थात् ५५ फुट ऊंचा एक गुंबद है, कहा जाता है कि कंस वध के पश्चात् उसकी रानी यहीं सती हुई थी । विश्राम घाट के सम्मुख गतश्रमनारायण मंदिर है, जिसमें श्रीकृष्ण-राधा और कुब्जा की मूर्तियां हैं ।

रंगेश्वर शिव मंदिर : यह मंदिर रंगेश्वर महादेव का विशाल मंदिर है । यहां शिवलिंग के ऊपर ताम्रपत्र का पंचमुखी शिवलिंग है । इस मंदिर के प्रांगण में छोटे-छोटे कई देव मंदिर हैं । इसी मंदिर के समीप श्रीकृष्ण-बलदेव का मंदिर है ।

चौरासी : जैन मंदिर का स्थल चौरासी अति प्राचीन है । कहा जाता है कि जैन गुरु जंबू स्वामी ने यहां तपस्या की थी । इस स्थान पर प्रति वर्ष जैन मेला लगता है ।

बिरला मंदिर (गीता मंदिर) : यह मंदिर मथुरा शहर से बाहर मथुरा-वृंदावन सड़क पर बिरलाजी द्वारा बनवाया गया था । मंदिर में पांचजन्य शंख एवं सुदर्शन चक्र लिये हुए श्रीकृष्ण भगवान, सीताराम एवं लक्ष्मी नारायण की मूर्तियां हैं । एक स्तंभ पर संपूर्ण गीता लिखी हुई है । मंदिर की दीवारों पर सुंदर चित्र एवं

उपदेशी रचनाएं दर्शकों का मन मोह लेती हैं। मंदिर के सामने ही बिरला धर्मशाला है।

राम मंदिर : यह मंदिर रामजी द्वारे में स्थित है, जिसमें राम और सीता की मूर्तियां हैं। कहा जाता है कि पहले इस मंदिर म राधाकृष्ण की मूर्तियां थीं। एक बार गोस्वामी तुलसीदासजी पधारे थे, उनकी प्रेरणा से भगवान ने धनुष-बाण लेकर उन्हें रामरूप का दर्शन दिया था। वहीं रामरूप इस समय विद्यमान है।



श्रीकृष्ण जन्मभूमि

होली दरवाजे के समीप कंस-निकंदन मंदिर है। इसके आगे दाऊजी का मंदिर है। माहोली की पौर महल्ले में पद्मनाभ का मंदिर है। डोला बाजार मंदिर में गोपीनाथ का मंदिर है। होली दरवाजे के बाहर कंस टीला है, टीला स्थित भवन में कृष्ण-बलराम और कंस की मिट्टी की प्रतिमाएं हैं। कहा जाता है कि यहीं कंस का राजप्रासाद था, जहां श्रीकृष्ण ने कंस का वध किया था।

पुरातत्व संग्रहालय : मथुरा का राजकीय पुरातत्व संग्रहालय देश में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। यहां कुषाण, बौद्ध, जैन काल की अनेक मूर्तियां हैं, इनमें अधिकांश मूर्तियां ४०० ई. पू. से लेकर २२वीं शताब्दी तक की हैं।

मथुरा में इन स्थानों के अलावा दशमुखी गणेश मंदिर, श्रीनाथजी मंदिर, श्री कन्हैयालाल मंदिर, विजय गोविंद मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर, गोवर्धन नाथ मंदिर, श्रीजी बाबा मंदिर, स्वामी नारायण मंदिर दर्शनीय हैं।

ब्रज का हृदय स्थल : वृंदावन

वृंदावन मथुरा से लगभग १० कि. मी. की दूरी पर उत्तर-पश्चिम दिशा में यमुना तट पर स्थित है। वृंदावन जाने के लिए स्टेशन मथुरा जंक्शन से छोटी लाइन की गाड़ियां जाती हैं। मथुरा स्टेशन एवं बस स्टैंड से बस द्वारा या टैंपो-तांगे आदि से वृंदावन जाया जा सकता है। वृंदावन का नाम जिह्वा पर आते ही मन आनंदित हो उठता है। योगेश्वर श्रीकृष्ण की मनोहारी मूर्ति आंखों के सम्मुख आ जाती है। वृंदावन ब्रज का हृदय स्थल है, जहां श्री राधा-कृष्ण ने अपनी अवर्णनीय दिव्य एवं अंतरंग नृत्य लीलाएं की हैं। सन् १५१५ ई. में श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु वृंदावन पधारे। इसके अतिरिक्त स्वामी हरिदासजी, श्री हित हरिवंश, श्री निंबार्काचार्य, श्री लोकनाथ, श्री अद्वैताचार्यपाद, श्री मन्नित्यानंदपाद आदि अनेक संत-महात्माओं ने वृंदावन में निवास किया था। गुप्तकालीन महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य 'रघुवंश' में कुबेर के चैत्ररथ नामक उद्यान से वृंदावन की तुलना की है। १४वीं शताब्दी में वृंदावन की विद्यमानता का उल्लेख अनेक जैन ग्रंथों में भी मिलता है।

वृंदावन के नामकरण के बारे में अनेक मत हैं। 'वृंदा' तुलसी को कहते हैं, चूंकि वृंदावन में तुलसी के पौधों की मात्रा अधिक है, इसी कारण इस पावन स्थली का नाम वृंदावन पड़ गया। इसमें जरा-सा भी संदेह नहीं कि वृंदावन का कण-कण रसमय है। यहां चारों और प्रेम-भक्ति का ही साम्राज्य है।

वृंदावन के दर्शनीय मंदिर :

श्री गोविंद देवजी का मंदिर : यह मंदिर बहुत प्राचीन मंदिर है। इसे जयपुर के राजा मानसिंह ने बनवाया था। कहते हैं कि यह मंदिर सात मंजिल का था। चार मंजिलें मुगल बादशाह औरंगजेब ने तुड़वा दी थीं। तभी मंदिर की मूर्ति जयपुर पहुंचा दी गयी थी। वर्तमान में यह मंदिर पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है।

रंगजी का मंदिर : यह विशाल और दक्षिणी स्थापत्य कला की एक सुंदर कृति वाला मंदिर सेठ लक्ष्मीचंद्र के भाई सेठ राधाकृष्ण और गोविंददास ने बनवाया था। यह मंदिर लगभग सात वर्षों में बनकर तैयार हुआ था। मंदिर प्रांगण में सोने का साठ फुट ऊंचा स्तंभ दर्शनीय है।

लाला बाबू मंदिर : यह मंदिर सन् १८६० के लगभग मुर्शिदाबाद के जमींदार कृष्णचंद्र द्वारा बनवाया गया था। इन्हीं कृष्णचंद्र को लाला बाबू कहा जाता था। मंदिर में स्थापित देव प्रतिमा बड़ी आकर्षक है।

राधा गोविंदजी का मंदिर : यह मंदिर ग्वालियर के महाराज जीवाजी राव सिंधिया ने अपने गुरु गिरधारी दासजी ब्रह्मचारी के आदेश से सन् १८६० ई. में बनवाया था। इसमें ब्रह्मचारीजी निवास करते थे। इसलिए यह मंदिर ब्रह्मचारीजी के नाम से भी प्रसिद्ध है।

युगल किशोर मंदिर : यह मंदिर नानकरण चौहान ने बनवाया था। बाद में मंदिर जहांगीर बादशाह की अमलदारी में संवत् १०६४ में बनवाया गया। इस मंदिर की मूर्ति मनोहर तथा दर्शनीय है।

बांके बिहारीजी का मंदिर : स्वामी हरिदासजी द्वारा निर्मित यह मंदिर वृंदावन के प्रमुख मंदिरों में से एक है। श्री बिहारीजी के चरण दर्शन केवल अक्षय तीज को होते हैं। सावन मास में सोने के हिंडोले के दर्शन होते हैं। इसमें स्थापित मूर्ति बहुत आकर्षक एवं चमत्कारी है।

श्रीकृष्ण-बलराम मंदिर : इसे अंगरेजों का मंदिर भी कहते हैं। इस मंदिर में क्रमशः श्री गोरी निताई, श्री कृष्ण-बलराम, श्री राधा-कृष्ण युगल, ललिता विशाखा सहित हैं। यह मंदिर श्री कृष्ण भावना संघ द्वारा बनवाया गया है। यहां अनेक विदेशी भक्त वैष्णव धर्म में दीक्षित होकर निवास करते हैं।

वृंदावन में, इसके अलावा पागल बाबा का मंदिर, जयपुर वाला मंदिर, श्री जानकी-वल्लभ मंदिर, मदन मोहनजी का मंदिर, सवामन शालिग्राम मंदिर, शाह बिहारीजी लालजी का मंदिर, गोपेश्वर मंदिर, राधा-रमण मंदिर, गोदा विहार, कांच का मंदिर आदि दर्शनीय हैं।

यात्रियों के ठहरने के लिए मथुरा-वृंदावन में सैकड़ों आश्रम, धर्मशालाएं, होटल उपलब्ध हैं।

—संपादिका 'स्वीकृति'
रेलवे कॉलोनी, बाद (मथुरा)-६

एक साहित्यकार का प्रेम-प्रसंग

प्रेमियों का अहं विस्फोटक होता है

• दुर्गाप्रसाद शुक्ल

मेरा प्रश्न शायद कुछ जटिल है ।

प्रेम क्या हमेशा अपने उसी चिरंतन रूप में दिखायी पड़ता है ?

वही आवेग-विह्वल अथवा अश्रुजल !

घृणा भी क्या सदा घृणा ही रहती है ?

प्रेम क्या अभिनय मात्र है ?

अथवा सत्य से अभिन्न-सा कुछ— यदि यही सत्य है तो उस अंतर्वह्नि में क्या है, जो विशुद्ध है, अप्रत्यक्ष है । वही सब-कुछ जलाकर, भस्मीभूत कर डालने में समर्थ नहीं है क्या ?

आपने प्रेम नहीं किया । प्रेम के कितने रूप हैं ! आपने देखे नहीं । प्रेम पाना तो दूर की बात है । प्रमाण देंगे विवाह का ! किंतु वह प्रमाण मेरे पक्ष का होगा, यानी विवाहित हैं... इससे पता चल गया, आप प्रेम के बारे में कुछ नहीं जानते !

... विवाह ही जिनका प्रमाण है, वे नहीं जानते कि प्रेम क्या है ? कंठ में विष धारण करना क्या सबके वश की बात है ? शायद इसीलिए आप लोगों के शरीर पर विवाह का रक्षा-कवच पहना दिया गया है— मंत्रपूत कवच ?

भगवान आप सबको निरापद रखे... पर मैं जन्म-जन्मांतर तक इस गरलामृत का पान कर सकूं ।''

और वह सचमुच जीवनभर इसी 'गरलामृत' का पान करते रहे !

वह अर्थात बंगला के सुप्रसिद्ध लेखक विभूति भूषण मुखोपाध्याय ! आज से कोई ३५-४० बरस पहले विभूति बाबू के एक उपन्यास नीलांगुरीय का हिंदी अनुवाद पढ़ा था । बेहद मर्माहत करनेवाली कृति थी यह 'नीलांगुरीय' अर्थात 'नीलम की अंगूठी' ! उपन्यास पढ़कर लगा था कि यह उपन्यास काल्पनिक नहीं है । वास्तविकता को ही कल्पना का आवरण पहना दिया गया है । मैंने विभूति बाबू को तब एक पत्र लिखा था— शिकायत की थी कि मीरा के साथ उन्होंने यह अन्याय क्यों किया !

मीरा—'नीलांगुरीय' की नायिका— कलकत्ता के बैरिस्टर गुरुप्रसाद राय की ज्येष्ठ पुत्री । वह उसकी छोटी बहन है, जिसके लिए ट्यूटर चुनने का दायित्व पिता ने उसे ही सौंपा है । ट्यूटर के रूप में वह नियुक्त करती है शैलेन को, जो लेखक भी हैं । मीरा सांवली है, पर नयन-नक्श तीखे हैं । धीरे-धीरे मीरा और शैलेन में प्रेम होता है लेकिन अव्यक्त !

सामाजिक मर्यादा-सभ्यता के नीति-नियम दोनों को रोकते हैं । गुरुप्रसाद और उनकी पत्नी अपर्णा राय को शैलेन में एक सुंदर, सुशील, होनहार जामाता के सारे गुण दिखते हैं । पर वे जानते हैं कि आभिजात्य संस्कारों में पली मीरा का अहम शायद विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार न करे, भले वह शैलेन से प्रेम ही क्यों न करती हो ? वे शैलेन को इंगलैंड भेजने का प्रस्ताव रखते हैं । शैलेन उनका मंतव्य भांप जाता है और इस प्रस्ताव को विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर देता है । निम्नमध्यमवर्गीय अहं भी आभिजात्यीय अहं से किसी कदर कम नहीं होता ।

मीरा के पीछे अनेक अभिजातीय युवक दीवाने हैं । पार्टियों में वे उसकी प्रशंसा में अन्य युवती सरमा की उपेक्षा करते हैं, यह अशिष्टता शैलेन को बर्दाश्त नहीं । वह सरमा का पक्ष लेता है । मीरा तिलमिला जाती है और शैलेन को याद दिलाती है कि 'उस के ट्यूशन का समय हो गया !' प्रकारांतर से वह शैलेन को उसकी औकात जतला देना चाहती है । शैलेन मनोविज्ञान का पारखी भी है । वह सब समझ जाता है ।

गुरुप्रसाद राय और अपर्णा राय दोनों में मेल-मिलाप की बहुत कोशिश करते हैं । पर दोनों के अपने अहं हैं । एक हिमालय-सी दीवार ! अंततः मीरा निशीथ नामक एक अभिजातीय युवक से विवाह की सहमति दे देती है ।

पार्टी आयोजित होती है । शैलेन एक टेलीग्राम लेकर अपर्णा देवी से मिलता है । वह पार्टी में उपस्थित नहीं हो पाएगा । घर से तार आया है ।

गुरुप्रसाद राय रोकने की कोशिश करते हैं, पर वह अपनी बेटी और शैलेन की व्यथा भी जानते हैं । अनुमति दे देते हैं ।

रही मीरा !

जब शैलेन मीरा के कमरे में पहुंचकर उसे यह सूचना देता है, वह कहती है, 'बाबा और मां को बता दी यह बात ! मुझे भी ।'

और नहीं कह सकी । छाती में असह्य वेदना होने पर जैसे अव्यक्त आवाज होती है, उसी तरह की आवाज आकर रुक गयी । और साथ-साथ मानो बरबाद-सी बिस्तर पर लेट गयी ।

मैं संयत नहीं रह सका । दो दिन बाद मीरा के साथ संबंध-विच्छेद की बात ! क्या उचित है, क्या अनुचित— यह सब सोच नहीं पा रहा हूं । उस समय केवल एक अनुभूति थी— मीरा की छाती में और मेरी छाती में... एक ही वेदना है । मैंने पलंग के पास खड़े हो, आहिस्ता से मीरा की पीठ पर दायां हाथ रखकर पुकारा—"मीरा ।"

केवल रोने की आवाज और भी तेज हो गयी ।

मीरा, उसी तरह उल्टी हो, क्रंदन से टूटे स्वर में बोली, "नहीं-नहीं, यह करके आपने मेरा सर्वनाश कर दिया । अब कुछ न कहिए । मैं अपने को आपके सामने ठीक से प्रस्तुत नहीं कर पायी । किंतु आपने क्यों नहीं पहचान लिया ? बाहर से जिसे देखा, क्या सचमुच मीरा वही है ? बताइए... मेरे सर्वनाश में से मुझे क्यों बलपूर्वक खींच नहीं लिया ? क्यों ? मैं क्या इतनी-सी भी आपसे उम्मीद नहीं कर सकती

थी ? बताइए... बताइए !"

उस दिन की प्रत्येक बात मेरे मन में गुंथी है। भूला नहीं हूं। मीरा इससे ज्यादा कुछ नहीं कह पायी।

यही मेरा घृणा मिश्रित प्रेम ! असंभव प्रतीत होता है। मुझे भी कभी-कभी संदेह होता है। इतनी विरोधी दो चीजें, क्या सचमुच इस जीवन में एक दिन हाथ की पकड़ में आयी थीं ?

'नीलम की अंगूठी' पढ़कर लगा, शैलेन ने और प्रकारांतर से विभूति बाबू ने मीरा के साथ घोर अन्याय किया। रहा न गया। मैंने विभूति बाबू को एक पत्र लिखकर शिकायत भी की कि मीरा के साथ उन्होंने ऐसा क्यों किया ?

संदेह होता है, तब अपने दायें हाथ की अनामिका देख लेता हूं। बहुत दिन बाद किसी अनाम व्यक्ति के पास से चिट्ठी आयी थी—रजिस्ट्री ! लिफाफा खोलकर देखा। अंदर मुड़े हुए कागज में एक नीला पत्थर।... एक छोटे-से कागज के टुकड़े पर लिखा था—"इसे बनवाकर पहन लेना।"

'नीलम की अंगूठी' पढ़कर लगा, शैलेन ने और प्रकारांतर से विभूति बाबू ने मीरा के साथ घोर अन्याय किया। रहा न गया। मैंने विभूति बाबू को एक पत्र लिखकर शिकायत भी की कि मीरा के साथ उन्होंने ऐसा क्यों किया ? पुस्तक में ही मुझे उनका पता मिल गया था, 'कांटाल बाड़ी, दरभंगा, बिहार।'

मुझे विभूति बाबू ने उत्तर भी दिया। पर मीरा वाली शिकायत पर वे मौन रहे। यही लिखा कि यदि आप बंगला में उसे पढ़ते तो शायद आपको और आनंद मिलता। फिर एक सलाह भी दी कि आप बंगला क्यों नहीं सीखते ? इसलिए नहीं कि आप मेरा उपन्यास पढ़ें, बल्कि इसलिए कि बंगला साहित्य बहुत समृद्ध है।"

वर्षों बाद दिल्ली में एक बार फिर मीरा की व्यथा याद आयी। 'कादम्बिनी' में एक दिन श्री सुकुमार चटरजी से 'नीलांगुरीय' और उसके लेखक विभूति बाबू की चर्चा चली, तो उन्होंने बताया कि वह तो उनके पड़ोसी हैं। चटरजी भी दरभंगा के कांटालबाड़ी के हैं। उन्होंने बताया कि 'नीलांगुरीय' की कहानी वास्तविक प्रसंगों पर आधारित है। शैलेन और कोई नहीं, स्वयं विभूति बाबू हैं। और यह भी कि इस घटना के बाद उन्होंने विवाह ही नहीं किया। कुंवारे ही रहे।

"और मीरा, वह कौन थी ?" उत्सुकता से पूछा।

"पता नहीं, और अब तो बूढ़ी हो गयी होंगी। स्वयं विभूति बाबू भी अस्सी के हो गये हैं।"

लेकिन क्या बुढ़ापे में तरुणाई का प्रेम धूमिल पड़ जाता है ? शायद नहीं !

बाद में श्री चटरजी के साथ विभूति बाबू के छोटे भाई और उनकी भतीजी से भी दिल्ली में मुलाकात हुई।

उनसे मिलकर एक बार फिर मीरा की वेदना व्यथित कर गयी। ●

फिल्म जगत के रोचक प्रेम-प्रसंग

• इस्मत जहीर

हिंदी फिल्मों में प्रेम एक विषय के रूप में उसी तरह समाया हुआ है, जैसे वातावरण में हवा । और, यह प्रेम फिल्म बनानेवालों, उसमें काम करनेवालों की जिंदगी का भी अहम हिस्सा बना रहा है । ऐसा वह कल भी था, आज भी है, और शायद आनेवाले कल में भी रहेगा ।

फिल्मी जगत के प्रेम-प्रसंगों की चर्चा बहुत-सी यादों को इकट्ठा कर लेती है । स्वाधीनता के पूर्व फिल्मी जगत में अनेक प्रेम परवान चढ़े, लेकिन कुछ में फूल खिले, तो कुछ बीच में ही मुरझा गये । आजादी के बाद भी यह सिलसिला जारी रहा, जो आज भी बरकरार है ।

जद्दन बाई—मोहन बाबू

पुराने जमाने के फिल्मी प्रसंगों की याद की जाए, तो बहुत-सारे चेहरे आ जाते हैं । किशोर शाहू-स्नेहप्रभा प्रधान, नूरजहां और शौकत हुसैन रिजवी, डब्लू. जेड. अहमद और शाहिदा उर्फ 'नीना' ! ये सब सन् ४७ के पहले के नाम हैं और उन्हीं नामों के साथ एक नाम और आ जुड़ता है, जद्दन बाई और मोहन बाबू का । जद्दन बाई मशहूर गायिका थीं, नरगिस और अख्तर हुसैन तथा अनवर हुसैन की मां । मोहन बाबू पंजाब के थे । लखनऊ के किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज में डॉक्टरी पढ़ने आये थे, पर जद्दन बाई ने उन्हें प्रेम की ऐसी सीख पढ़ायी कि उन्होंने अपने परिवारवालों की रंचमात्र भी परवाह न करते हुए उससे शादी कर ली । आज से ३५-४० बरस पहले दैनिक हिंदुस्तान में एक लेख पढ़ा था । लेखक कोई स्वामीजी थे । उस लेख में उन्होंने एक रहस्य खोला था और वह यह कि जद्दन बाई और मोहन बाबू का विवाह स्वयं मौलाना अबुल आजाद ने करवाया था, या वह उस समय मौजूद थे । यह विवाह शायद कलकत्ता में हुआ था । यह एक सुखांत प्रेम कहानी थी ।

किशोर शाहू—स्नेहप्रभा प्रधान

लेकिन किशोर शाहू और स्नेहप्रभा प्रधान का प्रेम जब समाप्त हुआ, तो एक तलखी छोड़ गया । किशोर शाहू नागपुर के पास के एक शहर भंडारा के हैं । तब भंडारा मध्य प्रदेश में था । स्नेहप्रभा प्रधान, जैसा कि नाम से स्पष्ट है, महाराष्ट्रीयन थीं । 'पुनर्मिलन' अपने समय की एक मशहूर फिल्म थी । उसके नायक थे किशोर शाहू और नायिका थीं स्नेहप्रभा प्रधान । दोनों के बीच प्रेम हुआ और उसकी तार्किक परिणति विवाह में हुई ।लेकिन यह प्रेम विवाह

के बाद स्थायी न रह पाया और स्नेहप्रभा प्रधान ने किशोर शाहू से तलाक का मुकदमा ठोक दिया । इलजाम में किशोर शाहू के पुरुषत्व पर शायद प्रश्न चिह्न लगाया था । उन्होंने कोई विरोध नहीं किया । तलाक हो गया । बाद में किशोर शाहू ने विवाह किया, उनकी खूबसूरत संतानें हुई । एक अभिनेता से अधिक एक सफल कहानीकार, फिल्म निर्माता और निर्देशक के रूप में प्रतिष्ठित हुए । बीना राय और आशा माथुर उन्हीं की खोज थीं ।

फिल्मी जगत के प्रेम-प्रसंगों की चर्चा बहुत-सी यादों को इकट्ठा कर लेती है । स्वाधीनता के पूर्व फिल्मी जगत में अनेक प्रेम परवान चढ़े, लेकिन कुछ में फूल खिले, तो कुछ बीच में ही मुरझा गये । आजादी के बाद भी यह सिलसिला जारी रहा, जो आज भी बरकरार है ।

नूरजहां—शौकत हुसैन रिजवी

आज पाकिस्तान की 'मलिका-ए-तरन्नुम' नूरजहां ने अपनी जवानी बंबई में ही बितायी थी । यों तो उनके कई आशिक थे, पर नूरजहां का प्रेम हुआ सैयद शौकत हुसैन रिजवी के साथ । मशहूर फिल्म 'खानदान' के शौकत ही डायरेक्टर थे । नूरजहां इसी फिल्म की नायिका थीं । शौकत हुसैन रिजवी नफासत पसंद तबीयत के थे । खिलाने-पिलाने के शौकीन । नूरजहां और उनके बीच लाहौर के पांचोली स्टूडियो में ही प्रेम शुरू हो गया था । फिर वे दोनों बंबई आ गये थे । पर दोनों अलग-अलग थे, लेकिन एक-दूसरे से मिलने के लिए बेहद बेताब ! कहा जाता है कि लाहौर में किसी बात पर मुकदमेबाजी हुई थी और नूरजहां ने अदालत में बयान दिया था कि शौकत तो उसके भाई के समान हैं । अदालत में असलियत बयान नहीं की जा सकती थी । खैर, बंबई में भी दोनों प्रेमियों के बीच कम दीवारें खड़ी नहीं की गयीं । नूरजहां 'सोने की खान' थी । उठान पर थी । लोगों को गवारा नहीं था कि वह शादी कर परायी हो जाए । पर वह प्रेम ही क्या, जो मुश्किलों से न गुजरे । अंततः एक दिन सैयद शौकत हुसैन रिजवी और नूरजहां की शादी हो गयी । फिल्म 'जुगनू' के निर्माता-निर्देशक शौकत साहब ही थे । नूरजहां नायिका थीं । नायक थे दिलीप कुमार ! इस फिल्म का एक गीत बेहद मशहूर रहा । वर्षों लोगों की जबान पर चढ़ा रहा ।

'यहां बदला वफा का बेवफाई के सिवा क्या है ?
मोहब्बत करके भी देखा, मोहब्बत में भी धोखा है !

नीना; मोहसिन और अहमद

एक फिल्म बनी थी 'मन की जीत', जो जोश मलीहाबादी के गीतों के कारण बेहद मशहूर हुई थी । इन गीतों में नौटंकी के गानों-जैसा खुलापन था । इस फिल्म की नायिका थीं— 'नीना'— बला की खूबसूरत ।

लेकिन अभिनय के मामले में वह बुलंदी को नहीं छू पायीं । नीना का असली नाम शाहिदा था । अलीगढ़ में उसने मोहसिन अब्दुल्ला नामक एक खूबसूरत जवान से न केवल इश्क किया बल्कि शादी भी कर डाली । उनकी पारिवारिक जिंदगी बेहद खुशगवार थी ।

काम की तलाश में मोहसिन बंबई आये तो शाहिदा को भी साथ ले आये । डब्लू. जेड. अहमद नामक एक फिल्म निर्माता की नजर उस पर पड़ी । उन्होंने पूना में शालीमार स्टूडियो बनाया । एक फिल्म की भी घोषणा कर दी, जिसकी नायिका का नाम बताया गया 'नीना' । यह नीना शाहिदा का ही नाम था । फिल्म का नाम था 'मन की जीत' । शायद अलनासिर उसके नायक थे । अहमद ने शाहिदा यानी नीना के पति को शालीमार स्टुडियो की लेबोरेट्री का इनचार्ज बना दिया । एहसान का बोझ कभी-कभी जानलेवा भी हो जाता है । अहमद ने मोहसिन साहब पर एक के बाद एक कई एहसान लाद दिये और बदले में उसकी बीवी को, यानी शाहिदा को, बाकायदा अपनी बीवी बना लिया । शायद वह इस खयाल पर पूरा-पूरा यकीन रखते थे कि 'इश्क और लड़ाई में सब जायज है !'

प्रेमिका के लिए फिल्म बना दी

अपनी प्रेमिकाओं के लिए तो कई लोगों ने फिल्में बनायीं, अपनी प्रेमिकाओं को 'आला दरजे की अदाकारा' के बतौर मशहूर करने में कोई कसर नहीं छोड़ी । इनमें से ही एक थे— बाबूराव पटेल, 'फिल्म इंडिया' के तेज तर्रार संपादक । सुशीला रानी उनकी प्रेमिका थीं और उन्हें लेकर बाबूराव पटेल ने एक फिल्म बनायी,





जिसमें प्रख्यात अभिनेता चंद्रमोहन भी थे ।

फिल्म-निर्माता और निर्देशक और अभिनेत्री के बीच बेहद आत्मीय रिश्ता-सा बन जाता है कभी-कभी, और फिर उनके पति-पत्नी बनने में देर नहीं लगती । जैसे सोहराब मोदी ने मेहताब से न केवल प्रेम किया, वरन शादी भी की । सोहराब मोदी पारसी थे, उनके इस विवाह का विरोध भी किया गया, पर उन्होंने किसी की कोई परवाह नहीं की । इसी तरह महबूब ने भी अपने समय की मशहूर अभिनेत्री सरदार अख्तर से इश्क किया और अपनी बेगम भी बना लिया ।

आजादी के बाद के मशहूर 'इश्क'

आजादी के बाद फिल्म जगत में जो 'इश्क' बहुत मशहूर हुए, वे सुरैया-देवानंद, राजकपूर-नरगिस, दिलीप कुमार-मधुबाला, प्रेमनाथ-बीना राय, गीताबाली-शम्मी कपूर, जेनिफर-शशि कपूर के थे । सुरैया-देवानंद की दुखांत प्रेम-कहानी सभी को पता है । दोनों बंबई से भी भाग जाना चाहते थे । पर सामाजिक-पारिवारिक दबाव के कारण दोनों को झुकना पड़ा । खासकर सुरैया को ।

शम्मी कपूर-गीताबाली

बाद में देवानंद और कल्पना कार्तिक के बीच प्रेम हुआ । इस बार दोनों ने हिम्मत की और शादी कर डाली । इसी तरह शम्मी कपूर और गीताबाली के बीच प्रेम, और प्रेम से ज्यादा विवाह का कपूर खानदान में जोरदार विरोध



आ, लेकिन शम्मी सिर्फ फिल्मों में ही विद्रोही
ौर 'एंग्रीमैन' नहीं रहे, उन्होंने अपने 'पापाजी'
थ्वीराज कपूर की चेतावनियों और धमकियों
बावजूद गीताबाली से शादी की। उनकी इस
म्मत से प्रेरणा ली, उनके दो भतीजों ने—
ज कपूर के बेटों— रणधीर कपूर और ऋषि
पूर ने। रणधीर कपूर ने बबीता से विवाह
या और ऋषि कपूर ने नीतू सिंह से। वे कई
ल्मों में उनकी नायिकाएं थीं।

राज कपूर-नरगिस

लेकिन राज कपूर शादी-शुदा होने के कारण
ने खुशकिस्मत नहीं रहे। नरगिस के साथ
सका 'प्रेम' जग-जाहिर था। और बकौल
ख्यात फिल्मी फोटोग्राफर राम औरंगाबादकर
राज कपूर ने इस संबंध को खूब
क्सप्लाइट' भी किया। राज कपूर और
गिस की, सबकी जुबान पर चढ़ी प्रेम-चर्चा
भी उनकी फिल्मों की कामयाबी में एक
सा रहा है।

प्रेमनाथ-मधुबाला-बीना राय

प्रेमनाथ और मधुबाला के बीच फिल्म
दल' के साथ प्रेम शुरू हुआ। बाद में
ौल प्रेमनाथ के उन्होंने अपने मित्र दिलीप
ार की खातिर मधुबाला से प्रेम का नाता
ड़ लिया और 'सेमसन डिलाइला' की नकल
बनी फिल्म 'औरत' की अपनी नायिका बीना
से प्रेम किया और शादी भी कर ली।

दिलीप-मधुबाला

लेकिन प्रेमनाथ का यह 'प्रेम'-बलिदान भी दिलीप कुमार और मधुबाला को एक न कर पाया। प्रेमियों का अहं जब टकराता है तो सिवाय गम और आंसुओं के और कुछ नहीं हासिल होता। कहा जाता है कि फिल्म 'अमर' के निर्माण के दौरान दोनों के बीच तलखी ज्यादा ही बढ़ गयी थी। इस फिल्म में दिलीप के साथ मधुबाला और निम्मी थीं। इसी फिल्म की एक गजल बहुत लोकप्रिय हुई थी—

न मिलता गम तो बरबादी के अफसाने कहां जाते !
अगर दुनिया चमन होती तो वीराने कहां जाते !
चलो अच्छा हुआ अपनों में कोई गैर तो निकला
सभी होते अगर अपने तो वीराने कहां जाते।

फिल्मों में इश्क की रफ़्तार आज कुछ ज्यादा ही तेज हो गयी है। उसने जाति, धर्म की दीवारों और सामाजिक-पारिवारिक मर्यादाएं भी तोड़ दी हैं। अब किसी विवाहित प्रेमी का 'घर' उजाड़ अपना घर बसाने में कोई अभिनेत्री कोई गुरेज नहीं करती। न उसे 'कुंवारी मां' बनकर जिंदगी गुजारने में कोई परहेज है। फिल्मों की मौजूदा पीढ़ी के प्रेम-प्रसंग किसी फिल्म की तरह एक शुक्रवार को परदे पर चढ़ते हैं, तो अगले शुक्रवार तक नयी फिल्म के लिए, यहां प्रेम के लिए, जगह खाली कर देते हैं। इन फिल्मी प्रसंगों को पढ़ना और किसी सस्ते रोमानी किस्सों को पढ़ना, एक-जैसा ही लगता है! पर इश्क तो इश्क ही है— इसीलिए 'गालिब' बहुत पहले कह गये हैं—

'इश्क पर जोर नहीं, है ये वो आतिश गालिब
कि लगाये न लगे और बुझाये न बने !

सोवियत संघ के प्रसिद्ध उपन्यासकार पिरिमकुल कादिरोव ने बाबर की जीवनी पर एक इतिहास उपन्यास लिखा है, जो काफी चर्चित रहा । रादुगा प्रकाशन, मास्को ने इस उपन्यास का हिंदी अनुवाद भी प्रकाशित किया है । यहां प्रस्तुत है, 'बाबर' से बाबर का अपनी मंगेतर से प्रेम-प्रसंग ।

कुछ वर्ष पूर्व पिरिमकुल कादिरोव भारत भी आ चुके हैं । यह यात्रा उनके अगले उपन्यास 'हुमायुं' के संबंध में तथ्यान्वेषण के लिए थी । पिरिमकुल कादिरोव कादम्बिनी-संपादक के भी अच्छे मित्र हैं । कादम्बिनी-संपादक ने उन्हें हुमायुं के मकबरे की सैर करायी थी तथा अन्य प्रकार से सहायता की थी ।

बाबर-आयशा प्रेम-प्रसंग

बाबर और आयशा बेगम

• पिरिमकुल कादिरोव

हुस्न का तेरे चर्चा हर जगह पर, माहरू
वस्ल तेरा मुझको कब होगा मुयस्सर, माहरू !

गजल का यह पहला शेर लिखा था बाबर ने अपनी प्रेमिका आयशा के लिए, जो उसकी मंगेतर भी थी । पांच वर्ष की उम्र में बाबर की मंगनी आयशा से कर दी गयी थी । वह समरकंद के शासक सुलतान अहमद की बेटी थी । आज वह चौदह वर्ष की हो गयी थी, लेकिन दुश्मनों की कैद में थी । अपने पिता की मौत के बाद बाबर बाकायदा गद्दीनशीन हो गया था । वह अंदीजान में था । उधर समरकंद पर वायसुंकूर ने हमला कर, उस पर कब्जा कर लिया था ।

बाबर तुरंत अपनी फौज के साथ समरकंद पर चढ़ बैठा था । उसकी प्रेमिका,उसकी मंगेतर आयशा भी तो समरकंद में ही थी । बाबर की फौज सारी गरमी और सारी पतझड़ समरकंद का घेरा डाले रही । अंततः वायसुंकूर को समरकंद से भागना ही पड़ा । लेकिन बाबर अभी भी अपनी माहरू यानी चंद्रमुखी आयशा का दीदार नहीं कर पा रहा था । सामाजिक मर्यादाएं पहरा लगाये बैठी थीं ।

नजात दहिंदा के लिए

'कितनी बेइंसाफी है यह !' बाबर ने सोचा । आयशा बेगम की याद में तड़पता हुआ वह अंदीजान से भागा-भागा यहां आया और उसे देख नहीं पा रहा था । उनके लिए मिलना निषिद्ध था; नहीं तो रिवाज़ टूट जाता, बुराई होने लगती, उसकी अधीरता से उसकी माशूका, उसकी मंगेतर के रिश्तेदारों को ठेस पहुंच सकती थी ।

नुयान कुकलदाश बाबर का हमउम्र दोस्त था । शाम को जब बुस्तान-सराय में चिराग जलाये गये, तो नुयान बाबर के कक्ष में आया । बाबर इसी सराय में ठहरा था । बाबर ने उसे आयशा की खोज-खबर लेने भेजा था । और वह पूरी-पूरी खबर ही लेकर नहीं आया था, कुछ और भी लेकर आया था । वह बाबर के लिए एक थैली लाया था, जिसमें दो हीरे थे ।

'इसे उलटकर देखिए ।' नुयान ने कहा ।

बाबर ने थैली उलटी । नन्हें-नन्हें मनकों से सजी उस थैली के भीतरी हिस्से में रेशमी धागे से एक शब्द काढ़ा गया था—*नजात दहिंदा के लिए'*

बाबर को यही शब्द किसी मुहब्बतनामे से



बाबर समरकंद में सौ दिन रहा, लेकिन एक बार भी आयशा बेगम से आमने-सामने नहीं मिला । इसमें रीति-रिवाज बाधाएं डालते थे और युवाओं की लज्जाशीलता भी थी ।

भी ज्यादा मधुर लगे । स्पष्ट था, आयशा बेगम ने यह कशीदाकारी पहले से कर ली थी; वह जुयान के सामने तो यह काम कर नहीं सकती थी । इसका मतलब, उसे विश्वास था कि बाबर आकर उसे मुक्त करा देगा । . . .

दीदार के लिए गजल

उस शाम बाबर ने अपनी मंगेतर से, अपनी गायबाना मोहब्बत से दीदार की तमन्ना से एक गजल लिखनी शुरू की, जिसकी पहली पंक्ति का भावार्थ था—

'हुस्न का तेरे है चर्चा हर जगह, माहरू'

बाबर समरकंद में सौ दिन रहा, लेकिन एक बार भी आयशा बेगम से आमने-सामने नहीं मिला । इसमें रीति-रिवाज बाधाएं डालते थे और युवाओं की लज्जाशीलता भी थी ।

इसी बीच अंदीजान पर दुश्मन ने घेरा डाल दिया और बाबर को समरकंद छोड़ने का फैसला करना पड़ा । इस बीच वह बीमार भी पड़ गया था । बड़ी मुश्किल से उसे तीन घोड़ोंवाली गाड़ी में बैठने के लिए मनाया गया था । गाड़ी में बैठा-बैठा बाबर परदा हटाकर पीछे छूटते रास्ते को कभी-कभी देख लेता ।

खेमे अलग-अलग

उसकी फौज के कोई तीन मील पीछे एक और गाड़ी आ रही थी । उसके साथ घुड़सवार दस्ता था । गाड़ी में बाबर की मौसी मेहर निगार खानम और मंगेतर आयशा थी । उनकी मंजिल ताशकंद थी, जहां बाबर का मामा महमूद खां राज कर रहा था ।

जिज्जाव नामक एक स्थान से आगे रात का पड़ाव हरी पहाड़ियों पर डाला गया । बाबर और आयशा के खेमे दूर, अलग-अलग गाड़े गये ।

अगले दिन मेहर निगार सुलताना और आयशा ताशकंद रवाना हुई तो बाबर एक टेकड़ी पर खड़ा-खड़ा उनकी ओझल होती गाड़ियों को देखने लगा । अचानक उसे अपनी गजल की पहली पंक्तियां याद आ गयीं ।

फिर वह सारा दिन घोड़े पर सवार उस गजल को आगे बढ़ाने की कोशिश करता रहा ।

उसने लिखा भी, भावार्थ है—

सिर न पहुंचा तेरे जानू तक तो जाऊंगा चला
जाएगा लेकर जहां मुझको मुकद्दर, माहरू

भाई की जंग भाई के खिलाफ

बाबर और आयशा की मुलाकात हुई अंदाजानी आर्क के हरम में। आयशा एक हफ्ते से बाबर का इंतजार कर रही थी। लेकिन इस बीच बहुत कुछ घट गया था। बाबर की रियासत फरगाना दो हिस्सों में बंट गयी थी। अंदीजान के युद्ध में बाबर घायल भी हो गया था। उसके छोटे भाई मिर्जा जहांगीर ने बड़े भाई के खिलाफ लड़ाई छेड़ दी थी।

पारिवारिक झगड़े को निपटाने के खयाल से बाबर और जहांगीर के खालू ने एक सुझाव रखा था—दोनों भाई सुलह कर लें। आखसी जहांगीर को दे दिया जाए और अंदीजान बाबर को। बाबर की मां भी इस प्रस्ताव से सहमत थी। उसने कहा था, 'इस वक्त और कोई चारा नहीं बाबर जान। फिर हमें सिर्फ सल्तनत के बारे में ही नहीं सोचना चाहिए। ताशकंद में आपकी मंगेतर ऊब रही है।'

सपना साकार नहीं हुआ

बाबर कुछ कह न सका था। वह खुद आयशा से मिलने के लिए बेताब था।

और आज अंदीजानी आर्क के हरम में उसी आयशा से उसकी भेंट होनेवाली थी।

लेकिन बाबर ने जिस चंद्रमुखी परी के सपने देखे थे, वह उसकी कल्पना में वैसी ही रह गयी। वास्तविकता ने उसकी आशाओं पर पानी फेर दिया। आयशा अकसर बीमार रहती थी।उसने बहुत से कष्ट भोगे थे। वह सूख गयी थी। अशक्त थी। वह उसकी आत्मा प्रबुद्ध नहीं कर सकी, न ही वह उसमें पुरुष सुलभ वासना जागृत कर सकी। शायद इसका एक कारण बाबर की अपनी समस्याएं भी थीं। पीड़ाएं थीं।

बाबर पिछले कई महीनों से अपने हृदय की पीड़ाओं को कागज पर उतारने की कोशिश कर रहा था। वह लगभग रोज नज़्में लिख रहा था। उसने एक पन्ना आयशा बेगम की ओर बढ़ाया उसमें एक नज़्म की चार पंक्तियां लिखी थीं—

आयशा बेगम ने पन्ने को खोलकर पंक्तियों पर नजर दौड़ायी—

तख्त से चिमटे हैं, इनका आसरा कुछ भी न
हाय दुनिया ! अब तो कानूने वफा कुछ भी न
बन जा मुफलिस बेग तू बाबर कि बेहतर होगा य
एक और शाह दो, इससे बुरा कुछ भी नहीं

बाबर और आयशा के बीच गुफ़्तगू होती रही। बाबर दोबारा समरकंद पर चढ़ायी करना चाहता था और आयशा उसे रोक रही थी। उसने कहा, "ओह, मैं डरती हूं . . .गाड़ियों से भी और रास्तों से भी।"

"तो मैं आपको, बेगम, गोदी में उठाकर ले जाऊंगा।" बाबर ने शरारत से कहा।

"मेरा मजाक मत उड़ाइए। मैं इस लायक नहीं।"

बाबर को आयशा बेगम के शब्द कुछ अ प्रकार के, प्रेम और आह्वान से ओत-प्रोत लगे। उसने लपककर उसे गोद में उठा लिया और सेज के पास आकर उसने पैर से परदा हटाया और फूंक मारकर सिरहाने जलती शमा बुझा दी।

आयशा बेगम ने उसके प्रेम का ऐसा प्रतिदान कभी नहीं किया था, जैसा कि उस रात !

वह पूरे शहर की प्रेमिका थी

• सुरेश नीरव

ईश्वर आदमी की जिंदगी में मेहरबानियां बरसाने के अनेक तरीके जानता है। सुंदर देहयष्टि और मनमोहक आवाज उसकी मेहरबानियों के खजाने की सबसे कीमती मेहरबानी है, जिसकी बदौलत आदमी सफलता के सर्वोच्च शिखर तक पहुंच जाता है। सुंदरता और मधुर आवाज का ही जादू था, जिसने झोंपड़ी की एक साधारण नवयौवना को राजसत्ता के सिंहासन पर लाकर बैठा दिया। एक ऐसा तिलिस्म बनकर, जिसके कि रूप और स्वर के सैलाब में पूरा एक जमाना डूबता-उतराता रहा था। रूप और स्वर के सम्मोहनकारी लमहे आज भी अंकित हैं इतिहास के पृष्ठों में, एक यादगार प्रेम कथा बनकर, अखनातून और नाफरीतिती की प्रेम कथा के रूप में। नाफरीतिती अखनातून की बेगम थी।

लोकप्रिय राजा अखनातून

ईसा पूर्व इजिप्ट के इतिहास के जिस दौर की यह कहानी है, उस दौर में, राजवंश की अठारहवीं पीढ़ी का राजा अखनातून इजिप्ट की राजसत्ता की बागडोर संभाले हुए था। उस समय इजिप्ट के राजा को फेरो (कहीं-कहीं फराहो संबोधन का भी उल्लेख है) कहा जाता था। कलामर्मज्ञ, प्रखर योद्धा अखनातून अपने इतिहास में एक लोकप्रिय राजा के रूप में आज भी याद किया जाता है और वहां के बाजारों में आज भी नाफरीतिती और अखनातून की छवि शिलाकृतियों में टंकी हुई, अप्रतिम प्रेमी युगल के रूप में, इतिहास की याद को ताजा बनाये हुए है।

वह बसंत की गुनगुनी शाम थी। आकाश से उतरता सुरमई उजाला वातावरण को और मोहक बना रहा था। पक्षी अपने-अपने नीड़ की ओर चहचहाते हुए जाने लगे थे। मंद-मंद बहती हवा चारों दिशाओं में खुशबू की रंगोली सजा रही थी। इन सबसे बेखबर अपने विचारों में डूबे नगर प्रमुख की विचारतंद्रा को हवा में तैरती एक संगीत-लहरी ने अचानक भंग किया। "रथ रोको !" आदेशात्मक लहजे में सारथी से उन्होंने कहा। और फिर ध्यानपूर्वक दूर से आती संगीत-लहरी को सुनने लगे। यह एक अल्हड़ नवयौवना की आवाज का बेतकल्लुफ जादू था, जिसके सैलाब में नगर प्रमुख आहिस्ता-आहिस्ता डूबते ही चले गये।

सौंदर्य एवं संगीत की प्रतिमा नाफरीतिती

सन्नाटे के उस छोर से आती आवाज की ओर उन्होंने निहारा। वीरान मार्ग के उस तरफ, रंगबिरंगे परिधानों में सज्जित, श्रोता समुदाय की धुंधली आकृति उन्हें दिखायी पड़ी। 'लगता है कोई कबीला अपना पारंपरिक उत्सव मना रहा

है और उसी में कोई गायिका गाना गा रही है मन-ही-मन उन्होंने सोचा और फिर सारथी को तर्जनी से संकेत करते हुए कहा, ''उस दिशा में चलो ।'' और धूल उड़ाता रथ उस ओर दौड़ने लगा । भीड़ के केंद्र में आग प्रज्वलित की गयी थी, जिसे घेरे वर्तुलाकार ढंग से व्यवस्थित थे श्रोता । अग्नि की प्रदीप्ति में तपे कुंदन-सा दीप्त हो रहा था गायिका का चेहरा । उसके हाथ में थी ढफली जो संगीत के आरोह-अवरोह के साथ बड़े लयात्मक ढंग से थिरक रही थी । बदन पर तार-तार हो गया एक गंदला-सा लिबास । गायिका की पुष्ट देह और मादक उठान को ढकने में सर्वथा असमर्थ था वह लिबास । सब तरफ से लापरवाह और बेखबर, आंख बंद कर, गाने में डूबी हुई थी वह नवयौवना । नगर प्रमुख ने उस रूपराशि को निहारा तो मंत्रमुग्ध-से हो गये ।

जीवन का नया मोड़

नगर प्रमुख के आगमन के एहसास से श्रोता-समुदाय में खलबली-सी मची, मगर गायिका का गायन अब भी जारी था —निर्विघ्न और निर्बाध । जब उसकी संगीत लहरी थमी, तो प्रसन्नता में कबीले के लोग 'हो-हो' कर आवाज निकालने लगे । नगर प्रमुख भी मुसकुराये । अपनी ओर एक अभिजात वर्ग के व्यक्ति को निहारता देख अल्हड़ युवती को तनिक विस्मय-सा हुआ ।

''क्या नाम है तुम्हारा ?'' नगर प्रमुख ने उसे संबोधित करते हुए पूछा ।

''नाफरीतिती ।'' उसने पांव के अंगूठे से धरती को कुरेदते हुए, लजाते-लजाते, धीमे से कहा ।

''तुम बहुत अच्छा गाती हो, सुंदरी ।'' नाफरीतिती की ओर मुखातिब हो नगर प्रमुख बोले और मानो प्रशंसा की बरसात में भीग नाफरीतिती अपने आप में ही सिमटने लगी ।

''सुनो !! क्या तुम यह गीत फेरो के दरबार में गाओगी ?'' नगर प्रमुख ने नाफरीतिती को उत्साहित करते हुए कहा ।

''क्यों मेरी निर्धनता का उपहास कर रहे हैं ?'' उसने अविश्वास से नगर प्रमुख की ओर देखते हुए कहा ।

''मैं उपहास नहीं कर रहा ।'' नगर प्रमुख की आवाज में दृढ़ता थी और उधर नाफरीतिती ने भी स्वीकृति में सिर हिलाकर 'हां' कर दी ।

रोमांचक अनुभूतियों के क्षण

नाफरीतिती की मंत्र-मुग्धकारी आवाज ने, फेरो के राजमहल के भव्य कपाट पर, दस्तक देना शुरू कर दी । उसकी आवाज के जादू से दीवाने हो गये नगर प्रमुख ने फेरो से नाफरीतिती की संगीत-संध्या का प्रस्ताव रखा, जिसकी कि अखनातून ने सहज ही स्वीकृति दे दी ।

राजमहल का 'खुला सभागार' श्रेष्ठियों, सामंतों और अभिजात जनों से खचाखच भरा हुआ था । राष्ट्र के निपुण सज्जाकारों ने मंच-सज्जा की थी । ठंडी-ठंडी बहती बयार, केवड़ा, खश और गुलाब के इत्र की गंध अपने दामन में समेटे आहिस्ता-आहिस्ता वातावरण को और मधुमय किये जा रहे थी । यक-ब-यक नाफरीतिती मंच पर प्रकट हुई । मानो सब-कुछ ठहर-सा गया । एक विचित्र-सी हतप्रभता थी, जो वातावरण में व्याप्त थी । प्रतीक्षा, जिज्ञासा और आगत आनंद की अनुभूति के विचित्र मिश्रण ने सभी के मन में अनचीन्हा और

अघोषित रोमांच भर दिया था।

सम्राट का प्रणय निवेदन

सभा समाप्त हुई। फेरो नाफरीतिती की तरफ ऐसे बढ़ रहे थे, मानो बीन की आवाज पर मंत्र कीलित सर्प।

"मैं तुम्हें अपना बनाना चाहता हूं, नाफरीतिती।" भावातिरेक से फेरो ने कहा। और अपनी बलिष्ठ बांहों में नाफरीतिती को समेट लिया।

सारा शहर उसके संगीत के सैलाब में एक तिनके-सा तैरता हुआ चला आता। नाफरीतिती की लोकप्रियता की बुलंदियों पर बैठकर राज्य कर रहा था अखनातून इजिप्ट में।

अखनातून को विश्वस्त अनुचर ने सूचना दी कि आज से ठीक दो दिन बाद विद्रोही सेना हमला करेगी राजमहल पर। फेरो यह सुनकर बड़ी जोर से हंसा। दूसरे ही दिन राजा ने महल के परकोटे के बाहर मंच लगवाया। जहां खड़ी

नगर प्रमुख की विचारतंद्रा को हवा में तैरती एक संगीत-लहरी ने अचानक भंग किया। "रथ रोको!" आदेशात्मक लहजे में सारथी से उन्होंने कहा। और फिर ध्यानपूर्वक दूर से आती संगीत-लहरी को सुनने लगे। यह एक अल्हड़ नवयौवना की आवाज का बेतकल्लुफ जादू था, जिसके सैलाब में नगर प्रमुख आहिस्ता-आहिस्ता डूबते ही चले गये।

आवाज और रूप का बेशकीमती हीरा अब फेरो के खजाने की अमूल्य संपत्ति बन चुका था। एक साधारण कबीले की लड़की अब इजिप्ट के राजा के हृदय की धड़कन बन चुकी थी। समय की एक करवट ने भिखारिन को महारानी बना दिया था। फेरो और नाफरीतिती अगले ही दिन भव्य ढंग से पति-पत्नी बन गये। नाफरीतिती के रूप और स्वर का जादू अब इतिहास को संचालित करने लगा। शुक्रवार के शुक्रवार वह अपना गायन प्रस्तुत करती, पूरे नगर के नागरिकों के समक्ष। अपने सारे कष्ट भूलकर जनता को बस नाफरीतिती के गीत कार्यक्रम की ही प्रतीक्षा रहती। एक अघोषित कर्फ्यू-सा लग जाता पूरे शहर में।

नाफरीतिती गाना गा रही थी और सम्राट फेरो अपने विश्वस्त सैनिकों के साथ हर गतिविधि का संचालन कर रहा था। अपार जनसमूह के समक्ष विद्रोहियों के हौसले पस्त हो गये। बचे-खुचे साहस का रूप और संगीत के जादू ने हरण कर लिया। संपूर्ण विद्रोही सेना नाफरीतिती के समक्ष नतमस्तक थी। रूप और संगीत ने विद्रोह को पराजित कर दिया। पर भीतर-ही-भीतर विद्रोही कसमसा रहे थे। अब की बार उन्होंने नाफरीतिती को ही अपने रास्ते से हटाने की क्रूर योजना बना डाली। क्योंकि नाफरीतिती की अजेय लोकप्रियता ने विरोधियों की संभावनाओं के सभी मार्ग अवरुद्ध कर दिये थे।

नाफरीतिती की हत्या का षड्यंत्र

यक्ष प्रश्न यह था कि नाफरीतिती को रास्ते से हटाया कैसे जाए ? खुलेआम उसका कत्ल करना अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारना था । आखिरकार खाने में जहर देकर उसे मारने की योजना पर विद्रोही संगठन ने अपनी स्वीकृति की मुहर लगा दी । और एक दिन वह अपनी इस योजना में सफल भी हो गये । आवाज की जादूगर को षड्यंत्रकारियों ने हमेशा-हमेशा के लिए मौत की नींद सुला दिया था ।

नाफरीतिती की मौत से एक बहुत बड़ा झटका लगा फेरो को । सफलता के जिस महल की चमचमाती रोशनी में वह बैठे थे विरोध की आंधी ने उस फानूस को बुझा दिया था । निराशा के अंधेरे में सूरज की किरण बनकर एक विचार उनके मन में सूझा । 'क्यों न नाफरीतिती का शव पारदर्शी ताबूत में सजाकर महल के मुख्य प्रवेश द्वार पर रख दिया जाए ?'

सचमुच उनकी यह तरकीब कामयाब हुई । विरोधियों पर नाफरीतिती के रूप का जादू भारी पड़ा । जनता में जहर देकर नाफरीतिती की हत्या किये जाने का षड्यंत्र खुल चुका था । अब फिर सारी सहानुभूति अखनातून फेरो के ही साथ थी । लोग-बाग संगीत और रूप की देवी के रूप में नाफरीतिती की पूजा करने लगे ।

मरने पर भी कायम रहा जादू

विरोधियों का यह दांव भी उलटा पड़ा । पर हार उन्होंने भी नहीं मानी । उन्होंने अखनातून की लोकप्रियता के कवच नाफरीतिती के ताबूत को ही गायब करने की ठान ली । और एक दिन बगावती अपनी इस योजना में सफल भी हो गये । अब फेरो से नाफरीतिती की लोकप्रियता की तलवार और सहानुभूति की ढाल दोनों ही दुश्मनों ने छीन ली थीं । क्रांतिकारी सैनिकों के हौसले बुलंद थे । मौका देखकर एक दिन उन्होंने फेरो को खदेड़कर देश छोड़कर भागने को मजबूर कर दिया ।

अपने कुछ विश्वस्त सैनिकों के साथ अखनातून यूरोप की सीमा में घुस गया । यहां रहकर वह नाफरीतिती के ताबूत को बड़ी शिद्दत से तलाशता रहा । और अपनी सेना का पुनर्गठन करने में लगा रहा । एक दिन आखिर उसे सफलता मिल ही गयी । फ्रांस के एक चर्च के पीछे बने कब्रिस्तान से उसने नाफरीतिती का ताबूत ढूंढ़ ही निकाला । सैनिकों में उत्साह का मानो लावा फूट पड़ा । नाफरीतिती का ताबूत फिर विजय का मंत्र सिद्ध हुआ । राजा अपनी सेना लिए, ज़िसके बीचों-बीच एक रथ पर नाफरीतिती का ताबूत खड़ा हुआ था, अपने पूर्व राज्य की ओर बढ़ गया ।

जनता में खबर फैल गयी कि फेरो फिर नाफरीतिती के ताबूत को ढूंढ़ लाये हैं । उत्साह और उमंग से जनता नाचने लगी । शत्रु सेना के पैर फिर उखड़ गये । रूप और स्वर के जादू ने एक बार फिर अपना असर दिखा दिया था । फेरो फिर सिंहासन पर बैठे । उसके बाद विद्रोहियों ने फिर कभी सिर नहीं उठाया । नाफरीतिती मरकर भी अपने पति को विपत्तियों से बचाती रही । नाफरीतिती को सारा शहर एक अमर प्रेमिका के रूप में पूजता रहा । और उसकी प्रेमकथा इतिहास की एक अमरगाथा बनकर जनश्रुतियों और किंवदंतियों में आज भी महक रही है ।

—आई/२०४ गोविंदपुरम,
गाजियाबाद

वह अपने प्रेमी के साथ सती हो गयी !

● श्रीनिवास बालाजी हार्डीकर

मराठा इतिहास के वीरों की तालिका में महत्त्व की दृष्टि से शिवाजी के बाद बाजीराव को ही द्वितीय स्थान प्राप्त है । वह वीर था, साहसी था और महत्त्वाकांक्षी भी था । वह छत्रपति शाहू का अनन्य भक्त था । मराठा राज्य का हित ही उसका प्रमुख उद्देश्य था । उसके पास योजना बनाने के लिए जहां चतुर मस्तिष्क था, वहां उन योजनाओं को मूर्त रूप देनेवाली शक्तिशाली भुजाएं भी थीं । उसके व्यक्तित्व तथा पराक्रम से यूरोपियन लेखक भी प्रभावित थे ।

बाजीराव की विजय-लालसा असीम थी । एक भाग पर विजय प्राप्त करते ही उसकी आंखें तत्काल दूसरे भाग की ओर जातीं । एक विजय के बाद दूसरी विजय प्राप्त करना ही उसकी महत्त्वाकांक्षा थी । प्रत्येक विजय उसकी महत्त्वाकांक्षा की परिधि को विस्तृत करती जाती थी ।

बाजीराव रण में तो वीर था ही । वह प्रणय के क्षेत्र में भी दृढ़ और साहसी था । वह अपनी प्रेयसी मस्तानी से, जो एक मुसलिम महिला थी, अगाध प्रेम करता था । कोई कौटुंबिक दबाव, सामाजिक बंधन या लोकमत उसे मस्तानी के प्रेम-मार्ग से विचलित न कर सका ।

मस्तानी के माता-पिता तथा कुल आदि के संबंध में निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है । इस संबंध में समकालीन लेखकों ने परस्पर विरोधी मत व्यक्त किये हैं । बाजीराव के एक प्राचीन जीवन चरित्र के अनुसार मस्तानी हैदराबाद के नवाब (निजाम) की पुत्री थी । नवाब की बेगम ने उसका विवाह बाजीराव से कर देने का आग्रह किया ताकि निजाम-बाजीराव मित्रता स्थायी बन सके । विवाह संस्कार संपन्न किया गया, पर प्रत्यक्ष बाजीराव से नहीं वरन् उसके खंजर से । बाद में बाजीराव ने उसे अपने पास बुला लिया । कुछ अन्य लेखकों के अनुसार मस्तानी छत्रसाल की एक रखैल की पुत्री थी । जब उसने बाजीराव द्वारा दी गयी सहायता के लिए उसे अनेक उपहार आदि दिये तो मस्तानी भी उनमें से एक थी । कुछ और लेखकों ने केवल इतना ही लिखा है कि वह हिंदू माता तथा मुसलिम पिता की पुत्री थी ।

कलाविज्ञ और व्यवहार-चतुर मस्तानी

मस्तानी अनिंद्य सुंदरी थी । वह सुसंस्कृत, कलाविज्ञ तथा व्यवहार-चतुर थी । वह

जाकर एक गंभीर गृह-कलह आरंभ करने के बजाय उसने वहां से दूर रहने का ही निश्चय किया ।

अतः वह सीधा अपने नवप्राप्त जिलों की व्यवस्था करने वहां पहुंचा । उसकी प्रियतमा मस्तानी की गिरफ़्तारी के कारण उसका हृदय अत्यंत दुःखी था । नासिर जंग से जो युद्ध हुआ था, उस अवसर पर बाजीराव तथा चिमणाजी आपस में मिले थे । उस समय चिमणाजी ने बाजीराव की चिंताजनक मनःस्थिति की नानासाहब (बाजीराव के पुत्र बालाजी) को सूचना देते हुए लिखा था, "पूना आने पर मैं उसे (मस्तानी को) उसके (बाजीराव के) पास भेज दूंगा ।" अपनी नवीन जागीर के निरीक्षण के सिलसिले में बाजीराव नर्मदा तट के रावेर नामक गांव में पहुंचा । यहीं वह बीमार हो गया और २८ अप्रैल, १७४० ई. को उसकी मृत्यु हुई । इस समय बाजीराव की आयु केवल ४२ वर्ष की थी । २० वर्षों तक लगातार सैनिक अभियानों में अथक परिश्रम करने के कारण उसका स्वास्थ्य बिगड़ चुका था । मस्तानी के विरह तथा उसे मुक्त कराने में अपनी अक्षमता से उसे मानसिक क्लेश और क्षोभ था । उसकी मृत्यु से मराठा राज्य ने एक योग्य, वीर तथा सच्चा हितैषी खोया ।

उसकी मृत्यु के समय उसके पास उसकी क्षमाशील पत्नी काशीबाई भी थी । मस्तानी अपने प्रियतम के साथ सती हो गयी । "इस संसार में वह अपने प्रियतम से अलग की गयी थी । वह अग्नि की भयंकर ज्वालाओं के बीच से गुजरकर दूसरे संसार में उसका स्वागत करने पहुंच गयी ।" ●

इनके भी बयां जुदा-जुदा

कदमेशौक बढ़े उनकी तरफ क्या अकबर
दिल से मिलते नहीं ये हाथ मिलानेवाले

—अकबर इलाहाबादी

जिंदगी तल्खिए-अय्याम का अफसाना है
ज़हर भरने के लिए उम्र का पैमाना है

—चकबस्त

वफा का नाम कोई भूलकर नहीं लेता
तेरे सलूक ने चौंका दिया जमाने को

—जिगर मुरादाबादी

मोहब्बत के लिए कुछ खास दिल मखसूस होते हैं
यह वह नगमा है जो हर साज पर गाया नहीं जाता

—मखमूर देहलवी

गुमराहियां उन्हीं के मुकद्दर में आयी हैं
जिन काफिलों में काफिलासालार भी चले

—ऐजाज सिद्दिकी

जो अह्देवफा मुल्क बचाने के लिए था
तोड़ा है उसे आपने तोड़ा नहीं हमने

—इशरत किरतपुरी

जो लोग कम हों तो कंधा जरूर दे देना
सिरहाने आके मगर भाई-भाई न करना

—मुनव्वर राना

भीख पर जोर क्या फकीरों का
दे न दे हो तेरा भला मत दे

—हिलाल सिवेहारवी

हम भी दरिया हैं हमें अपना हुनर मालूम है
जिस तरफ भी चल पड़ेंगे रास्ता हो जाएगा

—बशीर बद्र

अल्लारे बेबसी कि जहां भी गए सुना
बिगड़ा हुआ मिजाजे सियासत है आजकल

—कमाल सालारपुरी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

बुद्धि विलास

१. क. सौर-मंडल का सबसे बड़ा ग्रह कौन-सा है ?

ख. उसके कितने उपग्रह हैं ?

२. क. भारतीय इतिहास में स्वर्ण-युग किसे कहा जाता है ?

ख. किस सम्राट को भारत का नेपोलियन कहते हैं ?

३. क. विश्व का सबसे ऊंचा हिमनद (ग्लेशियर) कौन-सा है ?

ख. 'ऑपरेशन मेघदूत' क्या था ?

४. क. ब्रजभाषा के अंतिम महाकवि कौन-से हुए हैं ?

ख. उनके किन्हीं दो काव्य-ग्रंथों के नाम बताइए ।

५. क. गत मार्च के शुरू में किस मिसाइल पोत का और कहां से जलावरतण किया गया ? उसकी क्या खूबी है ?

ख. वह किस अन्य देश के सहयोग से निर्मित हुआ ?

६. क. सन् १९९६ के मार्च के अंत तक देश का विदेशी ऋण कितना था ?

ख. उससे पिछले वर्ष के मुकाबले यह घटा है या बढ़ा है ?

७. क. वह अप्रवासी भारतीय कौन हैं जो गत वर्ष ब्रिटिश हाउस ऑव लार्ड्स के आजीवन सदस्य बनाये गये और जो पहले भारत के राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मभूषण' से सम्मानित भी किये जा चुके हैं ?

ख. ब्रिटेन के सर्वाधिक धनी एशियाई व्यक्ति कौन हैं ?

८. निम्नलिखित पुरस्कार तथा सम्मान किन्हें प्राप्त हुए हैं :—

(क) यूनेस्को का 'कलिंग पुरस्कार' (सन् १९९६),

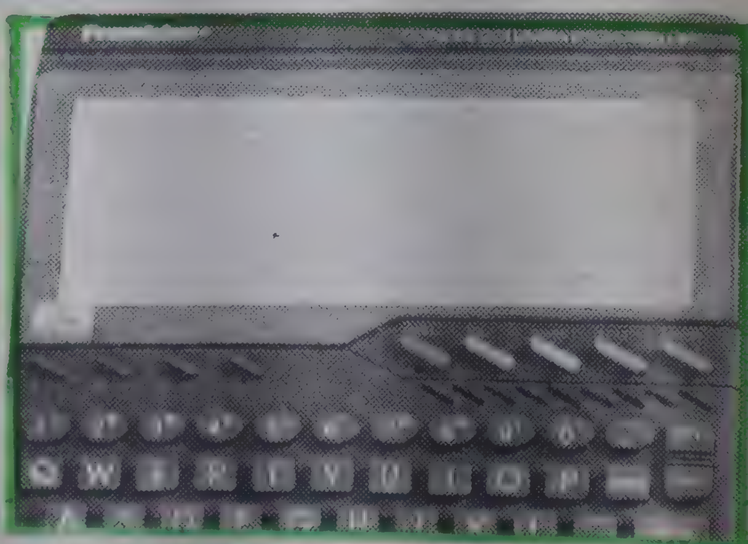
(ख) जी.डी. बिरला पुर. (सन् १९९६),

(ग) के.के. बिरला फाउंडेशन का वाचस्पति पुरस्कार (सन् १९९६), (घ) बिहारी पुरस्कार (सन् १९९६), (च) फिल्म फेयर पुर. (४२वां) (छ) होप यूनिटी एवार्ड (सन् १९९६) ।

९. क. विगत मार्च में राष्ट्रपति ने 'सर्वश्रेष्ठ सांसद' के सम्मान से किसे अलंकृत किया है ?

ख. दिल्ली विधानसभा का 'सर्वश्रेष्ठ विधायक' का सम्मान किसे दिया गया है ?

१०. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए कि यह क्या है—



अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जायेंगे । यदि आप सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में सामान्य और आधे से कम में अल्प

— संपादक

शहजादा खुर्रम (शाहजहां)-गुलारा

प्रेम की गवाह बारादरियां

● सरिता नागपाल

गुलारा एक तवायफ थी ।
अहमदनगर के मलिक अंबर के विद्रोह को कुचलने के लिए शहजादा खुर्रम जब दिल्ली से चला, तो उसने बुरहानपुर में पड़ाव डाला । वहीं उसकी भेंट एक नृत्यांगना गुलारा से हुई थी । गुलारा के नृत्य-संगीत में डूब शहजादे ने मलिक अंबर के विद्रोह को भुला दिया । उसने गुलारा को अपनी बेगम मान लिया । खुर्रम और गुलारा के इस प्रेम का क्या अंजाम हुआ ?

करारा । बुरहानपुर से दस-बारह किलोमीटर दूर, ताप्ती के उस पार एक गांव । प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर । खानदेश के फारूकी सुलतानों की आनंदगाह । गांव के पास से गुजरती है उतावली नदी । फारूकी सुलतानों ने नदी पर एक सौ गज लंबी दीवार बनवा दी, ताकि नदी का जल छलांग लगाता नीचे उतरे तो जलप्रपात बन जाए । बाद में शाहजहां ने उतावली के दोनों ओर दो बारादरियां बनवायीं और उन्हें एक सफील से जोड़ दिया । कहा जाता है, शाहजहां ने ये बारादरियां अपनी प्रेमिका गुलारा के लिए बनवायी थीं ।

कौन थी यह गुलारा ?

कहा जाता है, गुलारा बोरवाड़ी की थी । बोरवाड़ी-बुरहानपुर की वारांगनाओं का एक महल्ला । मुगल इतिहास में बुरहानपुर का एक खास स्थान है । यहीं पर शाहजहां की प्रिय बेगम मुमताज महल ने अपनी आखिरी सांस ली थी । यहीं ताप्ती के उस पार आवागढ़ में उसे दफनाया गया । तब ताजमहल नहीं बन पाया था । वर्षों बाद मुमताज महल की 'मिट्टी' को आगरा ले जाया गया, ताजमहल में दफन करने के लिए ।

मुगल फौजें जब दक्षिण की मुहिम पर दिल्ली से निकलती थीं, तो आगे बढ़ने से पहले बुरहानपुर में ही पड़ाव डालती थीं । अबुल फजल, अब्दुर्रहीम खानखाना आदि भी यहां आये और औरंगजेब के जीवन का एक दर्दनाक हिस्सा भी इसी बुरहानपुर में गुजरा ।

गुलारा बुरहानपुर की इसी बोरवाड़ी की एक गायिका-नर्तकी थी ।

सन् १६१६ !

अहमदनगर के मलिक अंबर ने जहांगीर के खिलाफ बगावत कर दी थी और उसे सबक सिखाने के लिए शहजादा खुर्रम को भेजा गया था । खुर्रम —जो बाद में शाहजहां नाम से ख्यात हुआ । इसी मुहिम के सिलसिले में शहजादा खुर्रम बुरहानपुर में कुछ समय के लिए रुका था । वह ताप्ती नदी के किनारे बने मुगल महल में ठहरा था । वह रसिक तो था ही । उसने गुलारा के रूप और गुण के चर्चे सुने, तो उसी समय उसने उसे हाजिर करने का हुक्म दे दिया ।

फौरन पालकी भेजी गयी और गुलारा बोरवाड़ी से मुगल महल जा पहुंची । शहजादा खुर्रम ने उसे देखा, तो देखता ही रह गया । वह गुलारा में डूब गया ।

शहजादा खुर्रम और गुलारा के इश्क की खबर मुगल दरबार तक पहुंचते देर नहीं लगी । इस खबर से सबसे ज्यादा परेशान हुआ आसफ खां, जिसकी बेटी आर्जुमंद बानू खुर्रम को ब्याही थी । यही बाद में मुमताज महल के नाम से जानी गयी । आसफ खां ने फौरन रत्ती-रत्ती हाल जानने के लिए अपने जासूस रवाना किये ।

बाद में जासूसों ने आसफ खां को शहजादा खुर्रम के बारे में हर छोटी-बड़ी सूचनाएं भेजीं । उनसे वह परेशान हो उठा । शहजादा खुर्रम और गुलारा का प्रेम उसकी बेटी की राह में कांटे बोने लगा था । एक और बात थी । वह और नूरजहां खुर्रम को भावी मुगल सम्राट बनवाना चाहते थे । आसफ खां नूरजहां का भाई भी था । एक योजना के अनुसार ही उसने और नूरजहां ने खुर्रम को मलिक अंबर को दबाने के लिए भेजा था, ताकि वह जहांगीर की नजरों में चढ़ जाए ।

लेकिन गुलारा की मौजूदगी बहुत बड़ी बाधा बन रही थी । खुर्रम बुरहानपुर से आगे बढ़ ही नहीं रहा था । अंततः आसफ खां ने एक खतरनाक फैसला कर डाला ।

उसने बुरहानपुर में अपने खास मनसबदार को एक गोपनीय संदेश भेजा ।



और फिर गुलारा के साथ भी वही हुआ, जो जहांगीर की प्रेयसी अनारकली के साथ हुआ। फर्क इतना था कि अनारकली दीवार में चिनवा दी गयी थी, गुलारा बेगम को ताप्ती में जल समाधि दे दी गयी। कथाकार शरद पगारे ने अपने उपन्यास 'गुलारा बेगम' में खुर्रम की इस प्रेमिका के करुण अंत का मर्मस्पर्शी चित्र खींचा है। औरंगजेब द्वारा आगरा के किले में बंदी शाहजहां गुलारा की याद में खोया हुआ है। यहीं गुलारा की रूह उससे अपनी मौत के बारे में बताती है। यहां पढ़िए 'गुलारा बेगम' उपन्यास से वही प्रसंग : गुलारा शाहजहां से कहती है :

''आप उस दिन अहमदनगर के अहम मसले में, बाहर दरबार-ए-खास में, अमीर-उमरा और सिपहसालारों से घिरे चर्चाओं में मशगूल थे। इसलिए आपको तकलीफ देना हमने ठीक नहीं समझा और अपनी बेचैनी दूर करने के लिए अपनी बांदियों के साथ बजरे पर ताप्ती की सैर को निकल गये। मैं अपने खयालों में डूबी हुई थी और जब मुझे होश आया तो बजरा किनारे से काफी दूर गहरे में बहा जा रहा था। शहर की रोशनियां आसमान के तारों-सी टिमटिमाती दिखायी दीं। मैंने महसूस किया कि महलसरा से मैं काफी दूर हो गयी हूं। मैंने नावड़ों को फौरन लौट चलने का हुक्म दिया। कुछ देर बाद मुझे 'छपाक' की आवाज सुनायी दी। अचानक हमारा बजरा उलट गया... मैं गहरे पानी में डूबने-उतराने लगी... किनारे लगने के लिए तैरने लगी। जब मैं हाथ-पांव चलाने की कोशिश में थी कि मुझे ऐसा लगा, जैसे कोई मेरे पांव खींच रहा है। मैं चीखूं और मदद के लिए आवाज दूं, उससे पहले ही मैं और मेरी चीख पानी में डुबो दिये गये। और फिर मैं... मेरे सर-ताज सदा के लिए आपसे बिछड़ गयी।''

• • • •

शहजादा खुर्रम, भावी शाहजहां और गुलारा के इस प्रेम की साक्ष्य हैं, उतावली नदी के किनारों पर बनी दो बारादरियां!

साहित्य सदन, अमृतसर ने सन् १९२९ में एक पुस्तक प्रकाशित की थी 'वारवधू-विवेचन' अर्थात् 'वेश्याओं का इतिहास'। तब इसके राज संस्करण का मूल्य १० रुपये था और साधारण संस्करण का तीन रुपये। जुलाई, १९२९ को मैनेजर, साहित्य सदन ने पुस्तक के प्रारंभ में एक विशेष वक्तव्य भी प्रकाशित किया, जिसमें लिखा गया था—

'लगभग ६ वर्ष हुए जब वारवधू-विवेचन का पहला विज्ञापन बांटा गया था। हमें खेद है कि हम इस पुस्तक को आज से पहले प्रकाशित न कर सके।'

इस समूची पुस्तक में लेखक का कहीं नाम नहीं है। लेकिन जैसा कि बाद में ज्ञात हुआ, इस पुस्तक के रचनाकार थे —गोस्वामी श्री सुधाकर देव शर्मा।

वार-वधु विवेचन

आज से कोई डेढ़ सौ वर्ष पूर्व की घटना है।

तब इलाहाबाद में बाबू मोनीशाह नामक एक साहूकार रहा करते थे। वह खत्री थे, कपूर। सुंदर, साथ ही संगीत विद्या में भी निपुण। उदार प्रवृत्ति, सरल चित्त और गुण



ाहकता से भरपूर । प्रयाग के तत्कालीन ायनाचार्यों में भी उनका नाम आदर से लिया ाता था ।

प्रयाग में ही एक गायिका थीं रहिमन या हीमवाली' । रहिमन बाई भी एक सिद्ध, नुभवी गायिका थीं । स्वाभाविक था कि दोनों कभी मेल-मुलाकात होती और जब ऐसी ुलाकात हुई, तो दोनों को लगा कि अब क-दूसरे के बिना जीना मुश्किल है । ोनीशाह संगीत प्रेमी होने के साथ-साथ सच्चे मी भी थे । उन्होंने समाज की रंचमात्र चिंता न र रहिमन बाई से दांपत्य संबंध स्थापित कर नया ।

एक ओर यदि बाबू मोनीशाह संगीत निधि , तो दूसरी ओर रहिमन संगीत तरंगिणी की रह उनमें समरस हो गयीं । दोनों ने एक-दूसरे एक वायदा भी किया कि दोनों में से जो हले मरणासन्न हो भूमि पर लिटाया जाए, सरा व्यक्ति सारा शोक छोड़कर मृत्यु शैया पर गीत नाद सुनाये ।

दिन हंसी-खुशी से बीतने लगे । पचास वर्ष त गये । कुछ समय बाद बाबू मोनीशाह ाग्रस्त हो गये । इतने कि चिकित्सकों ने हार न ली । बाबू मोनीशाह का अंत निकट नकर उन्हें भूमि पर लिटा दिया गया ।

घर में रोना-पीटना मच गया ।

सहसा रहिमन को पचास वर्ष पूर्व किये गये यदे की याद आयी । वह तानपूरा लेकर भूमि पड़े बाबू मोनीशाह के पास जा बैठीं । ंने लोगों को अपने वायदे के बारे में बताया शांत रहने के लिए कहा ।

क्षणभर में सारा वातावरण शांत-स्तब्ध हो गया ।

अब रहिमन ने तानपूरे के तारों को छेड़ा और आलाप प्रारंभ किया । षड्ज से रिखब, गांधार और मध्यम से होते हुए जब वह पंचम पर पहुंचीं, तो लोगों की आंखें आश्चर्य से फटी-की-फटी रह गयीं ।

बेसुध मोनीशाह की अंगुलियों में गति आ गयी । लोगों को ऐसा लगा, जैसे वे तानपूरे के तारों पर अंगुलियां फिरा रहे हैं ।

रहिमन गाती ही रहीं ।

धीरे-धीरे बाबू मोनीशाह ने आंखें खोल दीं । अस्फुट स्वरों में कुछ कहा भी ।

चिकित्सकों और वैद्यों की आशा जगी । उन्होंने फिर से चिकित्सा शुरू कर दी । उनकी दवा चलती रही । इधर रहिमन भी दिन-रात बाबू मोनीशाह को अपना गायन सुनाती रहीं ।

धीरे-धीरे बाबू मोनीशाह पूरी तरह स्वस्थ हो गये । रहिमन उन्हें यमराज की पकड़ से निकाल लायी थीं —बिलकुल सावित्री की तरह ।

इस घटना के बाद बाबू मोनीशाह छह वर्ष और जिंदा रहे ।

(सन् १९२९ में अमृतसर से प्रकाशित 'वार वधू विवेचन' से)

पुरुष कभी स्वयंवर के पक्ष में नहीं रहा !

● सत्यनारायण भटनागर

आधुनिक काल में विवाह की समस्या एक प्रमुख समस्या के रूप में उभरी है, कन्याओं की उच्च शिक्षा, उन्हें स्वतंत्रता तथा व्यावसायिक प्रतियोगिता के इस युग में योग्य वर की तलाश एक कठिनतम कार्य हो गया है । जातिप्रथा का कुंडली मारे नाग इस समस्या को और भी भयानक रूप देने में सहायक होता है । ऐसे में इस समस्या के समाधान के लिए जहां परिचय सम्मेलन सामने आ रहे हैं, इन्हें हम आधुनिक स्वयंवर का आयोजन भी कह सकते हैं ।

भारतीय पुरा साहित्य में स्वयंवर का आयोजन प्रमुख रूप से योग्य वर की तलाश का एक मार्ग था, इस स्वयंवर में कन्या को यह स्वतंत्रता रहती थी कि वह मनचाहे युवा को पुष्प हार पहनाकर अपनी पसंद की घोषणा करे, किंतु इन स्वयंवरों में भी शर्तों का उल्लेख पाया जाता है । जैसे सीताजी के विवाह में राजा जनक द्वारा शिव के धनुष को तोड़ने की शर्त या अर्जुन द्वारा मीन की आंख का संधान । ये ऐसी शर्तें थीं, जो वधु प्राप्ति के लिए योग्यता की घोषणा करती थी । जिनमें ये योग्यता हो वे वधु को प्राप्त कर सकते थे, किंत् इन पूर्ववर्ती शर्तों के होने से एक सीमारेखा पूर्व में निश्चित हो जाती है, इसलिए हमारी संस्कृति में वर की तलाश का जो दायित्व वधु पर डाला गया है, वह अधूरा रह जाता है । वर की खोज भारतीय संस्कृति के अंतर्गत वधु का पूर्णतः दायित्व है । कन्या के माता-पिता इस खोज में आनेवाली अड़चनें समाप्त कर कन्या को समस्त सुविधाएं प्रदान करते हैं, ताकि वह पूर्ण स्वतंत्रता के साथ भावी जीवन साथी का चयन कर सके । इस पूर्ण स्वतंत्रता के साथ जीवन साथी के चयन की घोषणा का नाम है स्वयंवर ।

स्वयंवर सावित्री का

महाभारत के वन पर्व में सावित्री स्वयंवर का वर्णन इस दृष्टि से आधुनिक काल में एक दिशा दर्शन देता है । राजा अश्वपति की एकमात्र कन्या सावित्री परम सुंदर थी । किंतु उसके युवावस्था में प्रविष्ट होने पर भी किसी वर ने उसकी याचना नहीं की ।

तब राजा अश्वपति ने उससे कहा—"बेटी ! अब किसी वर के साथ तेरा विवाह कर देने का समय आ गया है, परंतु कोई भी मुझसे तुझे मांग नहीं रहा है । इसलिए तू स्वयं ही ऐसे वर की खोज कर ले, जो गुणों में तेरे समान हो । जिस पुरुष को तू पति रूप में प्राप्त करना चाहे, उसका मुझे परिचय दे देना, फिर मैं सोच-विचारकर उसके साथ तेरा विवाह कर दूंगा । तू मनोवांछित वर का वरण कर ले ।"

भारतीय पुरा साहित्य में स्वयंवर का आयोजन प्रमुख रूप से योग्य वर की तलाश का एक मार्ग था, इस स्वयंवर में कन्या को यह स्वतंत्रता रहती थी कि वह मनचाहे युवा को पुष्प हार पहनाकर अपनी पसंद की घोषणा करे, किंतु इन स्वयंवरों में भी शर्तों का उल्लेख पाया जाता है ।

राजा अश्वपति बेटी सावित्री को वर चयन का यह निर्देश देकर मंत्रियों को यात्रा का प्रबंध करने के आदेश भी देते हैं । यात्रा के लिए वाहन सामग्री आदि के प्रबंध के साथ मंत्री भी इस यात्रा में साथ जाते हैं । विश्व के इतिहास में यह प्रथम दृष्टांत है, जब पिता के निर्देश के अंतर्गत कोई कन्या अपने योग्य वर की खोज के लिए कई देशों का भ्रमण करने गयी । आज हम आधुनिकता की कितनी ही चर्चा करें, किंतु कन्याओं को स्वयंवर की यह स्वतंत्रता कल्पना के बाहर है । वस्तुतः स्वयंवर की यह स्वतंत्रता ही स्त्री स्वतंत्रता की घोषणा है ।

नारद उवाच

सावित्री ने अपनी खोज यात्रा पूर्ण की । उसने नारदजी की उपस्थिति में बताया ''शाल्व देश में द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान, जो पैदा तो नगर में हुए हैं, परंतु उनका लालन-पालन, पोषण एवं संवर्धन तपोवन में हुआ है, वे ही मेरे योग्य पति हैं । उन्हीं का मैंने मन-ही-मन वरण किया है ।''

नारदजी ने सत्यवान को सर्वगुण संपन्न घोषित किया, किंतु उनमें एक दोष बताया कि उनकी आयु एक वर्ष पूर्ण हो जाने पर समाप्त हो जायेगी ।

चरित्र की जीत

राजकन्या सावित्री द्वारा पति चयन की प्रक्रिया में सर्वोच्च स्थान गुणों को देना और अपने दृढ़ निश्चय पर अटल रहना एक ऐसा गुण है, जो आज किसी भी नायक-नायिका में नहीं खोजा जा सकता । इस प्रकार स्वयंवर का यह प्रथम उदाहरण है, जिसमें वर की खोज का पूर्ण दायित्व कन्या द्वारा नैतिक गुणों के आधार पर किया गया और समस्त बाधाओं को मानने से इनकार किया गया ।

इस एक स्वयंवर के बाद भी कई स्वयंवर पुरा साहित्य में उपलब्ध होते हैं, किंतु उनमें महिला गौरव का वह गीत गुंजायमान नहीं होता, जो इस दृष्टांत में है ।

कोई भी पुरुष कन्या को बिना किसी पूर्ववर्ती शर्त के वर की तलाश की स्वतंत्रता देने के पक्ष में नहीं होता । दुनिया के इतिहास में सावित्री द्वारा वन क्षेत्रों में भ्रमण कर स्वतंत्रतापूर्वक, स्वेच्छा से, नैतिक आधार पर सत्यवान का वर के रूप में चयन किया जाना, एक अद्‌भुत घटना है । यह घटना वर्तमान प्रेम विवाह से भिन्न होते हुए भी स्त्री के पति चयन के अधिकार की घोषणा करती है ।

—२, एम. आई. जी. देवरा देवनारायण नगर,
रतलाम (म. प्र.) ४५७००१



रेनु और रचना, डीग (भरतपुर)

● मीरा बेन का नाम क्या था ?

□ **मीरा बेन का वास्तविक नाम मैडलीन स्लेड था ।**

सविता इंदुवाली रमण, रायबरेली

● कितने पुराण हैं और उनके नाम क्या हैं ?

□ **कुल अठारह हैं, जिनके नाम हैं —ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, वायु, नारद, अग्नि, ब्रह्मवैवर्त, वराह, स्कंद, मार्कंडेय, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़, ब्रह्मांड और लिंग पुराण ।**

अनवर अहमद, बहराइच

● अपराधियों के बदलते रूप को पुलिस फोटो विभाग कैसे अद्यावधिक रख सकता है ?

□ **एडवांस ग्रैफिक्स डिस्प्ले टर्मिनल एक ऐसी कंप्यूटर युक्ति है, जिससे अपराधी के समस्त बदलते रूपों का विवरण रखना संभव है । अपराधी के बालों के विभिन्न प्रकारों और दाढ़ी के रखने या न रखने की स्थिति को इस यूनिट में दिखाया जाता रहता है । उसका हुलिया विभिन्न प्रकार के चित्रों में बनाया जाता है ।**

ज्योति सागर, पंतनगर

● संसार का विशालतम पुष्प कौन-सा है ?

□ **संसार का विशालतम पुष्प टाइटन ऐरम माना जाता है । यह सड़े मांस की गंध के कारण भी जाना जाता है । हाल ही में इंगलैंड स्थित कीउ उद्यान में यह खिला है ।**

सौरभ गांगुली, इलाहाबाद

□ अवंतिका किस क्षेत्र का नाम था ?

□ **राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों से लगे मालवा क्षेत्र को अवंतिका कहा जाता था । यह स्थिति १०वीं शताब्दी तक रही । इस क्षेत्र की जलवायु सुहावनी और ग्रामीण क्षेत्र सुंदर है ।**

अमिता खन्ना, नयी दिल्ली

● दिल्ली का रोशनआरा बाग ऐतिहासिक किस प्रकार है ?

□ **शाहजहां की अविवाहित पुत्री रोशनआरा ने इस बाग को अपनी पसंद का बनवाया था और यह इच्छा व्यक्त की थी कि मरने के बाद उसे यहीं दफनाया जाए । बाग बनाये जाने के २० वर्ष बाद सन् १६७१ में उसकी मृत्यु हुई थी ।**

पी.आर. गर्ग, सांचोर

● हिंदू धर्मशास्त्रों में वर्णित नियोग प्रथा क्या थी ?

□ **नियोग का शाब्दिक अर्थ है 'नियोजन' अथवा 'योजना', अर्थात् पति की असमर्थता या अभाव में ऐसी व्यवस्था, जिससे संतान उत्पन्न हो सके । वैदिक काल से लेकर ई.पू. ३०० तक पति के साथ विधवा का सती होने का विधान नहीं था । प्राचीन काल में नियोग प्रथा अनेक सभ्यताओं में प्रचलित थी, क्योंकि तब स्त्री**

अपने पति की ही नहीं, बल्कि उसके परिवार की संपत्ति समझी जाती थी । इसी कारण पति के मरने के बाद स्त्री का देवर उसे ग्रहण करता था, ताकि संतानोत्पत्ति हो सके । तब दत्तक पुत्र की अपेक्षा नियोग से उत्पन्न पुत्र श्रेष्ठ समझा जाता था । देवर या सगोत्र के अभाव की स्थिति में ब्राह्मण से नियोग कराया जाता था । परवर्ती स्मृतियों में नियोग द्वारा एक ही पुत्र पैदा करने की आज्ञा दी जाती थी । पांडु इस संख्या से संतुष्ट नहीं थे, किंतु तीन के बाद कुंती ने इनकार कर दिया । क्षत्रियों को अनेक पुत्रों की कामना रहती थी । ई.पू. ३०० तक नियोग प्रथा प्रचलित रही, किंतु बाद में उसका विरोध हुआ । आपस्तंव, बौधायन तथा मनु इसके विरोधी थे । मनु ने इसे पशु धर्म कहा है । गर्भाधान के बाद स्त्री और नियोजित पति अलग हो जाते थे । धीरे-धीरे जब संतानोत्पत्ति आवश्यक नहीं रही, तो नियोग प्रथा का अंत हो गया । विधवा विवाह को भी उचित माना जाने लगा ।

गोविंद राजे, बड़वाह

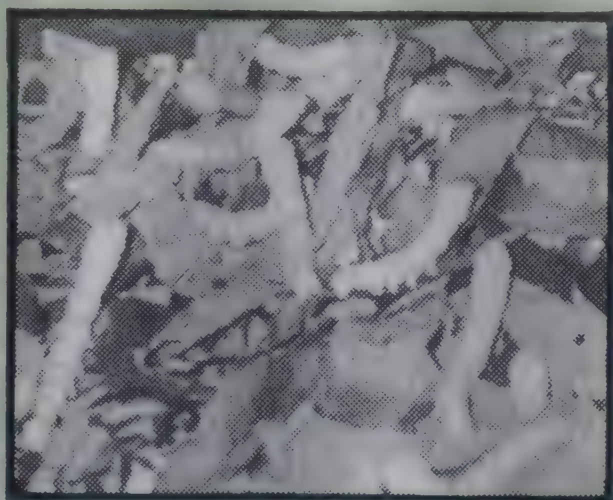
● गायत्री मंत्र का स्रोत और अर्थ क्या है?

□ **गायत्री, जिसका एक नाम 'सावित्री' भी है, ऋग्वेद का एक छंद है । सावित्र (सविता अर्थात सूर्य संबंधी) मंत्र इसी छंद में उपलब्ध है (ऋग्वेद ३.६२.१०) । गायत्री का अर्थ है 'गायंतं त्रायते इति' । अर्थात गानेवाले की रक्षा करनेवाली । पूरे गायत्री मंत्र, 'ऊं । भूः । भुवः । स्वः । तत्सवितुवरिण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्' का अर्थ है 'हम सविता देव के वरणीय प्रकाश को धारण करते हैं । वह हमारी बुद्धि को प्रेरित करे ।' ऋग्वेदीय काल में सूर्योपासना अनेक रूपों में की जाती थी । सभी द्विजों की प्रातः एवं संध्या काल की प्रार्थना में गायत्री मंत्र को स्थान प्राप्त होना सूर्योपासना को निश्चित करता है ।**

सूर्यबली पाण्डेय, उन्नाव

● हारमोनियम वाद्य यंत्र कितना पुराना है ?

□ **प्राप्त रेकार्ड के अनुसार इटली के एलेक्झांद्रे डिवेन (सन् १८०९-७७) ने सबसे पहले इसे सन् १८४० में बजाकर दिखाया था, और सन् १८४८ में उसने इसे पेरिस में पेटेंट कराया था । भारत में इसका एकल वादन ग्वालियर के भैया**



चंद्रिका सोनी, हाजीपुर

● क्या कुछ कीड़े मनुष्य जाति के लिए लाभदायक भी होते हैं ?

□ **जी हां, सिल्क वर्म (रेशम कीट) से हमें रेशम मिलता है, मधुमक्खी से शहद प्राप्त होता है तथा लैसिफर लीसा वह कीट है जो लाख बनाता है ।**

गणपतरावजी ने सन् १८९६ में कलकत्ता में किया था ।

रामेश्वर रुइया, कलकत्ता

● तक्षशिला का ऐतिहासिक महत्त्व क्या है ?

□ **तक्षशिला, वृहत्तर भारत का एक प्राचीन विद्या केंद्र और गंधार की राजधानी था । रामायण में इसे भरत द्वारा राजकुमार तक्ष के नाम पर स्थापित बताया गया है, जो यहां का शासक नियुक्त किया गया था । जनमेजय का नाग यज्ञ इसी स्थान पर हुआ था (महाभारत : १.३.२०) । रामायण या महाभारत में इसके शिक्षा केंद्र होने की चर्चा नहीं है, किंतु ई. पू. सातवीं शताब्दी में यह विद्याकेंद्र के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था । सिकंदर के आक्रमण काल में यह दार्शनिकों के लिए प्रसिद्ध था ।**

राजीव निगम, लखनऊ

● 'क्लोनिंग' से भेड़ कैसे तैयार की गयी ?

□ **'क्लोन' का अर्थ है टहनी या उप-शाखा । क्लोनिंग का तात्पर्य है आनुवांशिक रूप से समान जीव का निर्माण करना । जहां भी अमैथुनिक प्रजनन होता है (बैक्टीरिया की तरह) वहां प्राकृतिक रूप से क्लोनिंग ही होती है । अपने बाग-बगीचों में तो आप आम, गुलाब तथा अन्य पौधों की कलम लगाते ही आये हैं, यही क्लोनिंग है । ब्रिटेन में वैज्ञानिकों ने एक वयस्क भेड़ के थनों से एक कोशिका लेकर उसका एक अन्य भेड़ के अनिषेचित अंडाणु के साथ संधान किया । इस अंडाणु से डी. एन. ए., अर्थात डिआक्सीरिबोन्युक्लिएक एसिड, पृथक कर दिया गया था । डी. एन. ए. एक प्रकार का सीरियलाइज्ड प्रोटीन है और इसी से शरीर के जीन निर्मित होते हैं । उक्त विधि से तैयार भ्रूण को एक अन्य भेड़ के गर्भाशय में प्रतिष्ठापित करके क्लोनिंग की गयी भेड़ को प्राप्त किया गया ।**

घनानंद प्रसाद झा, धनबाद

● सिगबी-१६ ग्रह की खोज कब हुई, हाल में देर से ?

□ **सिगबी-१६ ग्रह की खोज हाल ही में की गयी है । यह ग्रह पृथ्वी से कई खरब किलोमीटर दूर तथा बृहस्पति ग्रह से कई गुना बड़ा है । यह सूर्य के एक नक्षत्र की परिक्रमा कर रहा है । उत्तरी अक्ष के तारामंडल में स्थित सिगबी-१६ की पिंड और रासायनिक संरचना सूर्य-जैसी ही है, किंतु इनकी ग्रह प्रणालियां भिन्न हैं ।**

रमेश दत्त काला, पटना

● 'ए वीक विद गांधी' के लेखक कौन हैं ?

□ **अमरीका के लुई फिशर ने सेवाग्राम में गांधीजी के साथ एक सप्ताह रहकर यह पुस्तक लिखी थी ।**

चलते-चलते

मुझे यदि मनपसंद पति नहीं मिला, तो इसे किस्मत का खेल कहेंगे या माता-पिता की जिद ?

दोष है आपके मन में पहले से बैठे चेहरे का—बेचारा न पति बन सका, न प्रेमी ही रहा ।

—सूत्रधार

अनुभवी होते हैं प्रौढ़ प्रेमी

• माइकल वेंतुरा

प्रिय पापा,

आपका पत्र मिला । पढ़कर अत्यधिक हैरानी हुई । पचहत्तर वर्ष की उम्र में आपके जीवन में एक नया मोड़ आ गया है और जीवन की ढलती शाम को रंगीन बना गया है । यों तो आपकी रंगीन मिजाजी से मैं बचपन से ही वाकिफ तो था ही क्योंकि मैं जब छोटा था, तो मेरी मम्मी ने मुझे छोड़कर तीसरा ब्याह कर लिया था और आपकी दूसरी प्रेमिका शादी की प्रतीक्षा में घर में ही रहने लगी थी । पिताजी ! कभी तो आपको मेरा ध्यान भी आता । मुझे उम्रभर यही खटकता रहा कि मैं अपनी सारी संपत्ति से हाथ धो बैठूंगा । मेरे पालन-पोषण और स्कूल के खर्चे में भी घर में आयी नयी माताएं हाथ खींच लिया करती थीं ।

अब इस उम्र में आकर आपका यह नया प्रसंग पढ़कर मेरा सर शर्म से झुक गया है ।

भारत में तो चालीस-पैंतालीस साल में ही मां-बाप घर-बार को त्याग देने की इच्छा में रहते हैं । अपने बच्चों का स्नेह से लालन-पालन करते हैं । उनके सुख और आराम के लिए अपना तन-मन-धन पूरी तरह से लगा देते हैं और फिर स्वयं वानप्रस्थ आश्रम में चले जाते हैं । वहां के बच्चों का जीवन ममता के आंचल में बीतता है । पिता का प्यारभरा आशीर्वाद उनके सिर पर रहता है । सच कहूं तो पापा जो सुख ममता की छांह में है किसी भी देश की हवाओं में नहीं । किसी तरह के प्रलोभनों में नहीं । काश प्यार और ममता के सिक्के होते, जिन्हें जी-जान लगाकर भी चाहे कुछ भी कीमत देनी पड़ती, मैं खरीद लेता । अपने हृदय से लगा लेता । मैं उम्रभर वंचित रहा, पर आप दोनों अपनी मनमानी से बाज नहीं आये और मनमानी करते रहे । बच्चे तो मां बाप की गलतियों की ही उपज हैं । यह वह उपज है, जो बिना स्नेह से सींचे हुए भी खुद व खुद पनप जाती है ।

पापा ! आपको भी यही संस्कार मिले होते, आप भी इसी संस्कृति से अवगत होते तो आज मैं इतना अकेला न होता ।

हमारी मजबूरी यही है कि हम अपने अनुकूल मां-बाप नहीं चुन सकते । अपने मां-बाप का 'मेरी मरजी' की तर्ज पर जीवन शैली ढोते रहते हैं ।

मुझे नफरत है ऐसे लोगों से, पर अपने पापा और अपनी मां से तो मैं कहीं न कहीं जुड़ा हूं । मां अपने चौथे पति के साथ या शायद छठे-सातवें के साथ रंगरलियां मना रही होगी और पापा अपनी छह प्रेमिकाओं और तीन-चार पत्नियों के साथ मौज-मस्ती की जिंदगी जीते

रहे । शुक्र है आपने बच्चों की कतार नहीं लगायी, नहीं तो गालियों के पुलिंदे हर कोने से आपके पास आते । नफरत की बौछार शायद आपको आत्मग्लानि का एहसास देती ।

वैसे आपके जीवन से मैंने भी काफी सबक सीखा है । आजकल मेरी तीन प्रेमिकाएं हैं और चौथी पत्नी । चारों पत्नियों से जो पुत्र रत्न मेरे जीवन में आये, उन सबको मैंने पिता के प्यार से वंचित नहीं होने दिया । आपको तो याद ही होगा, जब आपकी बहू ने स्मेकल और जेकब को जन्म दिया था तो मैंने कितनी खुशी मनायी थी । खुशी सचमुच मनाने की चीज है । खैर आप तो हर उम्र में सिर्फ खुशी ही मनाते रहे और उस खुशी का नाम सिर्फ एक ऐसा संबंध ही हो गया जिसमें व्यक्ति बस प्रेम में अंधा ही रहता है । जब कोई आंखें खोल दे, झटका दे दे तो उस खुशी को झटककर नये संबंध स्थापित कर ले ।

पापा क्या जीवन केवल भोग का ही पर्याय है । क्या नैतिकता कुछ भी नहीं ? क्या बच्चों को दंड देना एक धर्म है । कर्म करते रहना, कर्मकांड ही जीवन है ? आपके इस धर्म और कर्म से मेरे दिल पर जो बोझ आ पड़ा है, मैं नहीं बता सकता ।

काश ! मैं चरित्रहीनता की चरम सीमा लांघकर आपके कार्मकांड पर अंकुश लगा सकता ।

फिर भी आपको बहुत बधाई । भगवान करे आपके हर वर्ष में एक ऐसा ही नया संबंध स्थापित होता रहे और आप प्रेम और शादियों के क्षेत्र में अपना रेकॉर्ड बना सकें, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ ।

आपका माइकेल

पुनश्च—आपके खत खुले दस्तावेज हैं । प्यार के यह दस्तावेज जीवन के वे खुले पृष्ठ हैं, जो आनेवाली पीढ़यों को नैतिक बल प्रदान करेंगे । बहकी हुई पीढ़ी के, भटकती पीढ़ियों के नाम कुछ पुलिंदे भी आप भिजवा दें तो मैं प्रकाशित करवाकर पिता, दादा और परदादा के अनुभवों का एक पिटारा प्रचार-प्रसार के लिए दे दूंगा...

आपका ही आघातों का मारा सुपुत्र...

मेरे बेटे माइकेल

तुम्हारा पत्र मिला और तुम्हारी बधाई देने की शैली मन को झकझोर गयी । तुम्हारी हिदायतें और नसीहतें सुइयों की नोक की तरह चुभ रही हैं । तुम्हारा शब्द-शब्द ईर्ष्या और जलन से जल रहा है ।

मेरे बेटे ! याद है मैं किन स्थितियों में विदेश आया था ? तुम्हारी मां के चार पतियों ने इस घर को नरक बनाया और वह पांचवें की तलाश में इसलिए चल दी थी कि वह एक ही जगह टिककर नहीं रह सकती थी । मैंने तो जिसे भी प्रेम किया उससे विवाह किया, संबंध स्थापित किये, लेकिन तुम्हें वह भी बर्दाश्त न हुआ । जब तुम्हारी दूसरी मां तुम्हें छोड़कर चल दी थी, तो तुम्हारी खुशी का पारावार न था । बहूरानी ने जोर से कहा था—''अब तो हमारे हवाले हो गये । उधरवाला छोटा कमरा उन्हें दे दो ।''

मैं तुम्हारी दूसरी मां का जाना बर्दाश्त नहीं कर सका था और मैंने खाट पकड़ ली थी, तो तुमने अपने बच्चों को भी मेरे पास फटकने से मना कर दिया था । मैं लाखों रुपया होते हुए भी ऐसे लाचार, असहाय और विवश-सा, सबकी सहानुभूति का पात्र बन चुका था, पर किसी के

पास सहानुभूति नाम की चीज नहीं थी । मेरी खांसी से तुम्हारी नींद उचट जाती थी । इसीलिए मेरा कमरा घर के बाहर के कोने में सबसे अलग कर दिया जहां दो-घूंट पानी के लिए भी जब मैं उठकर आता था, तो तुम दोनों की आंखों में नफरत का जैसे पूरा एक पुराण लिखा हुआ होता था । मैं तो शुरू से बहुत भावुक रहा हूं । भावावेश में आकर मैंने प्रेम भी किया और उसके छूटने का दुःख मेरे लिए मानसिक आघात बन जाता था । मैं अपने भाई रूडोल्फ से बात करता रहा और एक दिन चुपचाप अपना सारा सामान समेटकर यहां सिसली में आ गया ।

यहां मेरे भाई ने मेरा परिचय यूशी से करवाया था । वह मेरे जीवन में आना चाहती थी पर मेरे घाव अभी हरे थे । मेरी पत्नियों से अधिक दुःख, तो मेरे बेटे ने दिये जो हरवक्त नफरत की भट्ठी में मुझे झोककर मेरे जीते जी समाप्त प्रायः जीवन को भी, समाप्त नहीं होने देना चाहते थे ।

सुनो बेटे ! तुम्हें मैं अपने जीवन के हर पल, हर क्षण का विवरण दूं तो तुम सहन न कर सकोगे । तुम चाहते थे कि उसी बिस्तर पर एक आज्ञाकारी पिता की तरह अपने प्राण त्याग दूं, ताकि तुम मेरा संस्कार कर सको । तुम्हारा वश चलता, तो मेरे इतने अधिक जीने पर तुम रोक लगा देते और किसी रिमोट कंट्रोल से मेरी सांसों पर भी प्रतिबंध लगाकर मेरी जमा पूंजी को पा लेने की कोशिश करते । मुझे पूरी तरह याद है जब मेरी बहू रानी का भाई बार-बार मेरा हाल पूछने आता था और दूसरे कमरे में घंटों तुम्हारी खुसफुस चलती थी कि मुझे पागल घोषित करके मेरी सारी जायदाद से मुझे मुक्ति निलवायी जाए ताकि मैं इस चिंता से भी मुक्त होकर प्राण त्याग सकूं ।

जब मैंने घर छोड़ा था, तो तुमने बड़े व्यंग्य से कहा था—''संस्कार करने के लिए तो मेरी जरूरत पड़ेगी ही, वरना आपकी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी । उम्र भर तो भटकते रहे अब आत्मा भी भटकती रही तो मुश्किल होगी ।

मेरे वत्स ! तुम तो जीते जी कलाप-क्रिया के लिए भी तैयार थे, मैंने ही तुम्हें उससे वंचित किया और यहां आकर अपनी नयी जिंदगी शुरू की ? क्या एक उम्र के बाद सिर्फ आदमी की लाभ और हानियों के सवाल ही बचे रहते हैं ? मेरी दवाइयों पर खर्चा करने से क्या लाभ ? मेरी दवाइयों के रुपयों से हानि ही हानि होगी ?

भारत में तो चालीस-पैंतालीस सालों में ही मां-बाप घर-बार को त्याग देने की इच्छा में रहते हैं । अपने बच्चों का मोह से लालन-पालन करते हैं । उनके सुख और आराम के लिए अपना तन-मन-धन पूरी तरह से लगा देते हैं और फिर स्वयं वानप्रस्थ आश्रम में चले जाते हैं ।

रुपयों की हानि... ! क्योंकि स्वास्थ्य लाभ करके मैं और अधिक जीने लगा तो सारी जायदाद फिर हाथ नहीं आएगी ।

मैंने स्वयं को मोहताज पाकर जब कदम उठाया था, तो मेरे पांव लड़खड़ाये, लेकिन मैंने संकल्प किया मैं समाप्त नहीं होऊंगा, बल्कि अपनी पीढ़ी के नाम एक ऐसा कच्चा चिट्ठा छोड़कर जाऊंगा कि नैतिकता की दुहाई देकर मां-बाप का जीवन हराम करके, उनसे जीने का हक छीननेवाली पीढ़ियों को सबक मिले ।

प्यार की कोई उम्र नहीं होती । ऊर्जा का कोई समापन बिंदु नहीं होता । प्यार तो वह ऊर्जा है जो भुस्स भरे ढेर में चिंगारी की तरह आकर आग लगा दे ।

जब डिसोजा मेरे जीवन में आयी, उसने प्यार से मेरा हाथ थामा तो मेरी सुन्न होती शिराओं में भी झनझनाहट हो उठी । मेरी आंखों में डिसोजा को एक स्वप्न दिखायी दिया । उसका प्यारभर स्पर्श और दो-टूक बातचीत से एक ऐसा अपनापन झलकता था कि मुझे अपने बारे में ही आश्चर्य हुआ । नफरत की आग में झुलसे बदन पर जैसे फफोले हो गये थे, उसने कोमल अंगुलियों से मरहम लगा दिया । मेरी नैतिकता आड़े आने लगी तो मेरे भाई रूडोल्फ ने मुसकराकर संकेत दिया ''अपनी शक्ति पहचानो । अपनो पर संदेह मत करो । जीवन बार-बार नहीं मिलता । पुरानी भावुकता को झटककर निर्ममता से अलग कर दो ।

मुझे लगा था जैसे मेरे थके-हारे टूटे मन को कोई, 'कर्म करो' का बार-बार संदेश दे रहा था । पचपन वर्ष की उम्र में मैंने डिसोजा का हाथ कसकर थाम लिया था । डिसोजा मुझे बेहद प्यार करती थी, क्योंकि यों तो उसने उससे पहले भी तीन विवाह किये थे लेकिन वह भी भावुक थी और भावुकता को ठेस पहुंचते ही उसका स्वाभिमान उसे वहां नहीं रहने देता था । हम लोग कुछ वर्ष यों ही निभाते भी रहे, फिर हम एक सूत्र में बंध गये । दस वर्ष के सूखी जीवन के बाद भी एक दुर्घटना में उसकी अचानक मृत्यु हो गयी थी ।

कितने आश्चर्य की बात है जब जीवन के अंतिम छोर पर हम आ पहुंचे हों, जहां साथी के नाम पर सिर्फ कुछ पुस्तकें और शून्य ही बाकी बचा हो, तब एक ऐसी बयार बहे कि तन-मन महक उठे । कोई जादूगर मुसकान की जादू की छड़ी से छू दे और झुर्रियों तले दबे चेहरे, कुंठाओं और अकेलेपन से त्रस्त चेहरे सहसा अंग-अंग में नयी स्फूर्ति महसूस करने लगे । उम्र कोई भी हो, ऐसे क्षणों को हमेशा थाम लो तो बुढ़ापे के बढ़ते चरण भी थम जाते हैं । चरित्र और नैतिकता के नाम पर जो हम स्वयं को कष्ट देते हैं, स्वयं को प्रताड़ित करके आत्मग्लानि और हीनता की भावना से त्रस्त रहते हैं उस बोझ से मुक्त होने के लिए सिर्फ एक जादूभरी मुसकान ही पर्याप्त है । इसका जैसे महाज्ञान मुझे मिला है... मेरे सम्मुख अनेक दार्शनिकों के प्रवचन सार और दर्शनशास्त्रियों और नैतिकता की पोथियों के वे पन्ने फीके पड़ गये हैं । मेरा मन गीत गाता है । प्रेम भरी कविताएं दोहराता है । मैं जवान हूं की एक लंबी न खतम होनेवाली तान को मैंने छेड़ा है और तुम्हारी नयी मां रोजा भी चौसठ वर्ष की होकर भी किसी कमसिन किशोरी-सी प्रतीत हो रही है ।

उसके चेहरे पर जो मुरदनी छायी थी वह मेरा स्पर्श पाते ही ऐसे गायब हुई है जैसे लेजर से ट्रीटमेंट किया हो । कौन किस नक्षत्र से आ उतरा, किसका गुरु प्रबल था, कब तक राहू केतु के पंजे में हम जकड़े थे या हमारे मंगल-बुध-शुक्र की दशा हमारे मिलन में बाधा बनेगी आदि के ज्ञान की अब अपेक्षा न रही । वास्तव में जब कभी कर्मक्षेत्र में हम कूदने को आतुर होते हैं तो हमारे अपने मन के ही दुराव, पुराने क्षणों के खट्टे-मीठे अनुभव और अपना मन हारकर भी मनचाहे मीत का मन न जीत पाने की विडंबनाएं आड़े आती हैं ।

रोजा ने मेरे जीवन में अचक-अचानक प्रवेश करके फिर एक बार मुझे नयी जिंदगी दी है । वह ऊंचा सुनती है । मैं भी जब कुछ सुनने लायक हो तो कान में सुनने की मशीन लगा लेता हूं ।

हमें एक-दूसरे से न अधिक अपेक्षाएं हैं, न ही गिले-शिकवे । वे ऊंचा सुनती हैं तो मैं भी तो ठीक प्रकार से देख नहीं पाता । हम दोनों रोज सुबह नये फैशन और नये लेटेस्ट डिजायन के कपड़े पहनकर सैर पर निकलते हैं ।

सिर्फ एक ही प्रश्न है मेरे मन में—हमें जीने का हक मांगना क्यों पड़े—तुम्हारी इच्छा थी मैं बीमार अवस्था में भी किसी वृद्धाश्रम में फिकवा दिया जाऊं पर वह पूरी न हो सकी । मुझे औरों के पिताओं की व्यवहार शैली और उनके अपने बेटे के लिए त्याग की कथाएं तो तुमने उसी दिन शुरू कर दी थीं जिस दिन मैंने रूडोल्फ के पास जाने का सोचा था ।

तुम्हारी पीढ़ी के लोग क्यों चाहते हैं कि घर के बड़े बूढ़े कचरापेटी में फैंकने की स्थिति में होते हैं । उन्हें किसी से प्यार करने का हक नहीं और मेरे किस्से कहानी तुम पर हर रोज नया आघात करते रहे होंगे ।

मैं तो तुम्हें भी नेक सलाह दूंगा । तुम घर में फालतू पड़ी वस्तुओं की नाई कभी मत रहना । जब तुम्हारे बच्चों के बच्चे भी तुम्हारी उपेक्षा करने लगे । पत्नी तुम्हें व्यर्थ समझकर भाग खड़ी हो तो भी, तुम अपने आप को संभाल कर भरपूर जीना । तुम्हारी पीढ़ी के नाम यह कुछ खुले पत्रे प्रचार-प्रसार के मोहताज हैं—दया के पात्र बनकर औरों की कपाल क्रिया की प्रतीक्षा कैसी—

खुद जियो औरों को भी जीने दो—न मुझे आर्थिक सहायता चाहिए न ही दया और सहानुभूति ।

तुम्हारी ईर्ष्या और जलन देखकर मुझे प्रतीत होता है दया के पात्र तुम हो । हो सके तो नैतिकता के मेरे इन पाठों को अपने पाठ्यक्रम का अंग बना लेना । अगर जिंदगी में धोखाधड़ी हो, अगर तुम्हें भी मेरी मनःस्थिति से गुजरना पड़े तो मेरे पास आ जाना । अगर मैं जीवित रहा तो मैं तुम्हें जीवन का नया दृष्टिकोण दे सकता हूं । मेरी दृष्टि बिलकुल ठीक हो चुकी है । तुम्हारे पास रहकर मुझे सब कुछ धुंधला-सा नजर आने लगा था । यहां धुंधलके तो हैं पर दृष्टि साफ है, दृष्टिकोण स्वस्थ !

तुम्हारी लंबी और खुशहाल उम्र के लिए हमेशा कामना करता रहा हूं । मेरी हार्दिक इच्छा है तुम अपनी नयी मां से आ मिलो । जिस दिन मन करे, मुझे लिखना मैं यहां से टिकट भिजवा दूंगा ।

तुम्हारा भी—बाप

व्यंग्य

पी. एच. डी. पुराण : गंदर्भ शोध छात्राएं

कोई भी शिक्षा नीति न होने के कारण पढ़ाई की अंधाधुंध दौड़-सी लगी है। भटकती पीढ़ियों को पता नहीं कि उन्हें कहां जाना है ? उनका गंतव्य क्या है ? यह भटकन लड़कियों की जिंदगी में तो और अधिक व्याप्त है। एम. ए. कर लेने के बाद उन्हें विवाह की प्रतीक्षा रहती है और इसी प्रतीक्षा का समय कई बार पी. एच. डी. करने का माध्यम बन जाता है।

लेकिन इस देश में पी. एच. डी. करना कितना कठिन है, वह भी खासकर लड़कियों के लिए, यह तो उन्हीं से पूछिए।

संगीता देव ने सीताप्रसाद नाम के प्रसिद्ध लेखक पर रिसर्च का सोचा तो उनके कृतित्व व्यक्तित्व और उनके प्रेम प्रसंगों पर शोध करना अपेक्षित था किंतु सीता प्रसाद की दस पीढ़ियों पर रिसर्च करके ही उनके सम्यक विवरण पर काम किया जा सकता था। आदिकाल से इतिकाल का ब्यौरा क्यों अपेक्षित है ? चार-पांच सौ पृष्ठों के इस थीसिस की क्या प्रासंगिकता है, यह सब भी शोध का विषय है।

महिलाओं को प्रायः विश्वविद्यालय के पुरुष प्राध्यापकों को ही गाइड चुनना पड़ता है। यह वर्ग प्रायः पचास से साठ वर्ष के आयुवर्ग का है, उनके व्यवहार, प्यार, मनुहार और रिसर्च के लिए उन्हें गाइड करने के तौर-तरीके कई बार अपने आप में नये महाभारत के अध्याय हैं।

संगीता देव ने जब सीताप्रसाद पर रिसर्च का कार्य शुरू किया था तो प्रौढ़ प्राध्यापक ने उन्हें अपने घर के प्रथम तल पर बने, रिसर्च के छात्रों के लिए पुस्तकों आदि की व्यवस्था का विवरण दिया। बस वहीं बैठकर काम करती रहो और फिर प्राध्यापक महोदय चिटखनी लगा देते। संगीता देव ने बताया कि उन्होंने गुरु दक्षिणा की बात की और नजदीकियां बढ़ाते हुए कहा था 'हमें रुपये-पैसे का लोभ नहीं, न ही किसी का हम दक्षिणा में अंगूठा मांगते हैं। बस सुख-चैन के क्षण ही सबसे बड़ी कीमत अदा कर देते हैं। संगीता से वे घर का भी सारा काम-काज करवाते और हालांकि उसने शोध के सारे कागज तैयार कर दिये थे लेकिन शिकार हाथ से न निकल जाए इसीलिए किसी-न-किसी

प्रकार की गड़बड़ का संकेत दे देकर उसे लटकाते रहे ।

हारकर बेचारी ने जिन पर शोध किया था उन्हीं से मदद मांगी, तो उनकी आंखों में भी एक आमंत्रण था । बेचारी अपनी पी. एच. डी. आधी ही छोड़कर वहां से चल दी और उसने शादी करके घर बसा लेना बेहतर समझा ।

भाव बनाये रखने पड़े लेकिन इस महंगाई के युग में, खरीदने जाइए तो—हर सौदा मंहगा ही तो पड़ता है ।

शिलांग, रांची-मेरठ, गुजरात, राजस्थान या यों कहें देश के किसी कोने में भी आप शोध करने चले जाइए तो आपका शोधग्रंथ प्रतिशोध ग्रंथ की नाई बन चुका होता है । शोध-संस्थान

महिलाओं को प्रायः विश्वविद्यालय के पुरुष प्राध्यापकों को ही गाइड चुनना पड़ता है । यह वर्ग प्रायः पचास से साठ वर्ष के आयुवर्ग का है, उनके व्यवहार, प्यार, मनुहार और रिसर्च के लिए उन्हें गाइड करने के तौर-तरीके कई बार अपने आप में नये महाभारत के अध्याय हैं ।

बिहार के एक विश्वविद्यालय की सूक्ति शर्मा ने तो कहा कि विषय चुनते भी उसे जो मात्र विषय मिला था वह था 'खजुराहो के प्रतीकात्मक बिंब और हमारा साहित्य' । गाइड महोदय ने यह भी समझा दिया था कि इसका अर्थ है केवल रीतिकाल अथवा श्रृंगारकाल में श्रृंगार का वर्णन । सूक्ति आश्वस्त हो गयी थी और उसने रीतिकाल पर शोध आरंभ किया तो गाइड महोदय ने उन्हें खजुराहो के बिंब प्रतीकात्मकता और रीतिकाल को रतिकाल में परिणत कर दिया । सूक्ति कुछ अधिक ही तेज निकली । उसने वाइस चांसलर महोदय से संपर्क करके अपना कार्य भी कर लिया तथा एक ऐसे विषय पर पी. एच. डी. कर ली जो भूतो न भविष्यति की श्रेणी का है । सूक्ति को इसके लिए कितने कृपाएं और कितना समर्पण इतने धार्मिक हो गये हैं कि भेंट के रूप में केवल, महिला को जीते जी अपना सब कुछ भेंट करके उन्हें प्रसन्न करना पड़ता है ।

एक तीस वर्षीया प्रसिद्ध पेंटर ने अपनी पी. एच. डी. का किस्सा यों बताया कि उसके गाइड महोदय विषय की रजिस्ट्रेशन के लिए अपनी गाड़ी में साथ ले गये । रजिस्ट्रेशन के बाद लौटते समय एक होटल के पास अपनी गाड़ी खराब होने का नाटक करके वे उसे होटल में ले गये । वहां उन्होंने उसे विदेशी संस्कृति का हवाला दिया, समर्पित भाव से रहने का वास्ता देते हुए वे उसे समर्पण के तौर-तरीको से अवगत करवाते रहे । बोले समर्पण महिलाओं की निर्यात है, तुम समर्पित भाव से रहोगी तो डिग्री तुम्हारे घर पहुंच जाएगी और फिर बड़े प्यार से उसके कोल्ड ड्रिंक में मादक द्रव

मिलाकर उसे समर्पित होने के लिए विवश कर दिया । उस पर हलका नशा छाने लगा और फिर वह नशे के चंगुल में फंस गयी । वह सुमुखी तो घर के अकेलेपन से त्रस्त तो थी, किंतु उसकी पी. एच. डी. की महत्त्वाकांक्षा उससे इतनी बड़ी कीमत मांगेगी उसने नहीं सोचा था ।

फिर धीरे-धीरे संबंध बढ़ने लगे किंतु जब साक्षात्कार का समय आया तो उन्होंने उसे साक्षात्कार के लिए आनेवाले विशिष्ट व्यक्ति से संपर्क करने को कह दिया । सुमुखी वहां पहुंची तो सब्जेक्ट एक्सपर्ट पेंटर महोदय ने रूपसी को हर कोण से निहारते हुए चिटखनी लगा दी थी । रजिस्ट्रेशन की घड़ी से लेकर साक्षात्कार (यानि (वाइवा) तक की घड़ियां टिक-टिक की जगह मात्र धक-धक करती हैं । ऐसे में हर व्यक्ति को पी. एच. डी. की अपेक्षा है । विषय चुनने जाइए तो ज्ञात होगा मीरा पर दो सौ पी. एच. डी. हो चुकी हैं, प्रत्येक लेखक पर तीस-तीस चालीस-चालीस हो गयी तुलसी, कबीर, सूर, रहीम सब के हर पहलू पर पी. एच. डी. और हर पी. एच. डी. के पीछे एक नयी कहानी, एक नया किस्सा ।

उफ ! अब तो लगता है लड़कियां अपने नाम के आगे डॉक्टर लगाने से पहले घबराएंगी ।

मैंने मास कम्युनिकेशन में एम. ए. तो किया पर पी. एच. डी. नहीं की । खुदा बचाये ऐसी पी. एच. डी. की बढ़ती मरामारी से—आजकल तो इनकी संख्या इतनी अधिक हो गयी है कि मांग कम है उपज अधिक ।

खपत का सवाल खतम होते ही हरेक तथाकथित डॉक्टर भी छोटे से छोटे पद पर दृष्टिगत होने लगेगा । **प्रस्तुति : रितु**

३१८, हिमगिरि एपार्टमेंट,
विकासपुरी, नयी दिल्ली

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. बृहस्पति, ख. बारह (चार चंद्रमा से भी बड़े), २. क. गुप्तवंश के राज्यकाल को (सन् ३२० ई. से सन् ६०० ई. तक), ख. समुद्रगुप्त (सन् ३२५ ई.-सन् ३७५ ई.), ३. क. सियाचिन (२० हजार फुट ऊंचा), ख. इसके द्वारा सैनिक कार्रवाई करके सियाचिन को पाकिस्तान के कब्जे में जाने से रोक दिया था, ४. क. जगन्नाथदास 'रत्नाकर', ख. घनाक्षरी-नियम रत्नाकर, गंगावतरण, उद्धवशतक, श्रृंगार-लहरी, रत्नाष्टक वीराष्टक (इनमें से कोई दो), ५. क. 'प्रहार' का मरमुगाव गोदी पर जलावतरण, सबसे तेज गति से चलनेवाला, ख. रूस के सहयोग से, ६. क. ९२.२० अरब अमरीकी डॉलर, ख. ६.८१ डॉलर घटा, ७. क. डॉ. स्वराजपाल, ख. इस्पात उद्योगपति लक्ष्मी मित्तल (संपत्ति लगभग डेढ़ अरब पाउंड स्टर्लिंग), ८. (क) जयंत वी. नारलीकर तथा चेक खगोलविद् जीर गेगॉर (विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए), (ख) इलाहाबाद के प्रो. अशोक सेन (वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए), (ग) श्रीभाष्यम् विजय सारथि (संस्कृत काव्यकृति 'भारत भारती' पर) (घ) विजेन्द्र (काव्यकृति 'ऋतु का पहला फूल' पर), (च) अभिनेता धर्मेन्द्र, (छ) मदर टेरेसा (निर्धनों के उत्थान के लिए), ९. क. श्री सोमनाथ चटर्जी (मार्क्सवादी पार्टी), ख. श्री मेवाराम आर्य (भाजपा), १०. इलैक्ट्रॉनिक एनसाइक्लोपीडिया

प्रेम बनाम 'लिव टुगेदर'

प्रेम, संभवत तभी से प्रमुख रूप से विद्यमान है, जब से इस सृष्टि की रचना हुई है। ज्यों-ज्यों समय बदला प्रेम का अर्थ भी परिवर्तित हुआ। संस्कार बदले, परंपराएं बदलीं—नवीन—प्राचीन कवियों, साहित्यकारों, रचनाकारों ने विभिन्न प्रणालियों में प्रेम को अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया। इसी श्रृंखला में जायसी ग्रंथावली में 'पद्मावत' की प्रेम पद्धति की व्याख्या को उत्कृष्ट माना गया है।

१५२० ई. में की गयी यह व्याख्या आज के संदर्भ से भी जुड़ी मालूम पड़ती है, अंतर केवल उसे परिभाषित करने में आया है। प्रस्तुत हैं कुछ व्यक्तियों के विचार—



शोवना नारायण

(सुप्रसिद्ध नृत्यांगना और प्रशासनिक अधिकारी)

सच्चा प्रेम तब जन्म लेता है, जब एक-दूसरे के प्रति बहुत सम्मान हो, आदर हो—एक-दूसरे के व्यक्तित्व को पहचानें, उसकी आकांक्षाओं को समझें। वासना का ऐसे प्रेम में कोई स्थान नहीं है। मेरे पति विदेश में हैं, हमारा प्रेम-विवाह हुआ, १५-१६ साल हो गये हैं विवाह को, लेकिन आरंभ के वर्षों की तरह अभी भी ताजा है। वे विदेश में रहते हैं और मैं यहां। एक-दूसरे के पल्लू में बंधकर बैठना जरूरी नहीं है। दोनों का अपना विभिन्न कार्यक्षेत्र है। कोई हस्तक्षेप नहीं है। सबसे बड़ी बात, एक समझौता है, सहनशीलता है।

आप एक-दूसरे को बांधकर रखना चाहेंगे तो प्रेम में दरार पैदा होगी। मेरे पति ने एक बार कहा था— 'मैंने शोवना को संपूर्ण रूप में चाहा है, मैं उसे जबरदस्ती अपने पास रखता हूं, तो वह मुरझा जाएगी। मैं शोवना को केवल पत्नी होने के कारण नहीं, बल्कि शोवना होने के कारण चाहता हूं। तो मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि प्रेम में एक समर्पण की भावना हो, बलिदान की भावना हो।

मैं यह कतई नहीं मानती कि आर्थिक तौर पर स्वतंत्र स्त्री परिवार के टूटने का कारण बनती है, दरअसल जब अभिमान आड़े आता है, तब दरार पड़ती है। हमें यह समझना चाहिए कि कोई भी संपूर्ण नहीं है, किसी में भी कोई-न-कोई कमी अवश्य होती है। पर पुरुष या पर स्त्री से संबंध सही नहीं है।

निर्मला अग्रवाल

निदेशक, आकाशवाणी



एक-दूसरे के सुख-दुःख का साथी हों, तकलीफ सहकर, त्याग करने को तत्पर रहें—यही प्रेम सर्वोपरि है।

प्राचीन-मध्यकाल में भी आदमी की पाशविक इच्छाएं थीं, परंतु उस समय समाज का डर कुछ अधिक था ।

आज पश्चिमी सभ्यता के आक्रमण से रहा-सहा डर भी मिट चुका है, आंखों की शरम मर चुकी है । वीडियो-दूरदर्शन के माध्यम से नग्नता आ चुकी है । वे तमाम देशों के युवाओं के मस्तिष्क को दूषित किये दे रहे हैं ।

मैंने कई देशों का भ्रमण किया, वहां के लोगों से औसत भारतीय कहीं अधिक बुद्धिमान है, जागरूक है । न तो हमारे राजदूत भारतीय संस्कृति को वहां उजागर करने का काम कर रहे हैं और दूसरी तरफ हमारी फिल्में भारतीय दर्शन से दूर नग्नता के जरिए धन बनाने में लगी है, कुछ जो समझदार निर्माता-निर्देशक हैं भी तो उन्हें सिवाय भारत की गरीबी के कुछ नजर नहीं आता ।

अगर कोई बिना विवाह के रहने की बात का समर्थन करता है, तो मैं उसे विकृत मानसिकतावाला कहूंगी, 'लिव टुगेदर' की विदेशी भावना समाज की नींव में जहर डालने के समान है । विवाह से ही एक परिवार जन्म लेता है और परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है ।

मेरे विचार से प्रेम जन्म लेता है आकर्षण से, और उसमें दरार तब आती है, जब स्वार्थ की भावना बलवती होती है, जब एक-दूसरे की निंदा आरंभ होती है और फिर यह विश्लेषण कड़वाहट का रूप ले लेता है ।

थोड़े-से रोमांचक सुख के लिए अगर कोई पर-पुरुष या पर-स्त्री संबंध बनता है, तो वह गर्त में ही जाता है । एक बार पैर फिसलता है, तो समाज बरदाश्त नहीं करता । हमें यह समझना है कि यह आकर्षण तो क्षण-भंगुर है, स्थायी नहीं है, तो फिर क्यों अपने को समाज, और सबसे बड़ी बात अपने बच्चों के सामने नीचे देखने को मजबूर करें ।



जगप्रवेश चंद्र
दिल्ली विधानसभा में कांग्रेस विधायक दल के नेता

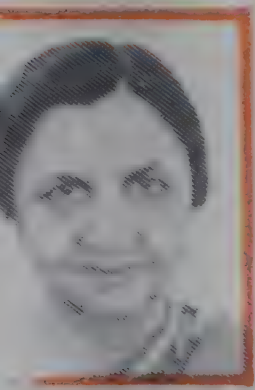
पहली नजर का प्यार ही वस्तुतः प्रेम की परिभाषा है ।

मैंने भी किया था किसी से प्रेम, वह विदेशी थी । काफी समय तक हम अच्छे मित्र रहे, लेकिन विवाह के नाम पर उसने कहा मेरी और तुम्हारी संस्कृति में बहुत अंतर है, सो वह मुझे छोड़कर विदेश चली गयी ।

पश्चिमी सभ्यता से आज कोई अछूता नहीं रह सकता । दिल्ली जैसे महानगरों में तो कतई नहीं । अगर कोई विवाह के बिना भी रह रहा है, तो हम और आप उसे मना करनेवाले कौन होते हैं ? यह उनका व्यक्तिगत मसला है । मैं तो मानता हूं कि प्रेम विवाह प्राकृतिक है और कराया गया विवाह अप्राकृतिक । जिसे आप जानते नहीं, अगले ही क्षण उसके साथ रहने लगते हैं, कितना अजीब है । अब यह तो स्थितियों पर निर्भर करता है कि कब कौन-सा विवाह सफल या असफल माना जाता है ।

समाज में चरित्र की प्रमुख भूमिका है । चरित्र के साथ पवित्रता खुद-ब-खुद जन्म लेती है ।दरार तो कभी भी कहीं भी पैदा हो सकती है । यह नियमों के अनुसार नहीं चलता, लेकिन

र आपमें एक-दूसरे के प्रति सम्मान, आदर र आज्ञा मानने की भावना है, तो दरार कभी पड़ सकती ।



सुरेन्द्र सैनी

(चेयरमैन, भारत सेवक समाज सहित लगभग नौ संस्थाओं की सदस्य तथा अध्यक्ष)

कॉलेज के दिनों में हम अक्सर एक गीत करते थे, 'प्रेम का है इस जग में पंथ ला...' हम सोचते क्या यह स्त्री-पुरुष का है ? फिर सवाल उठता प्रेम का अर्थ सिर्फ तो नहीं हो सकता । मेरी समझ से प्रेम का र्थ बहुत व्यापक है, यह सिर्फ स्त्री-पुरुष के तक ही सीमित नहीं है । यह सात्विक प्रेम है, जो ईश्वर से होता है । सर्प और शिव का संबंध है, वही असल प्रेम है अर्थात अगर और श्रद्धा से विषैले सर्प को वश में कर या जा सकता है, उसका विष अमृत बन ता है, तो फिर इसी प्रेम से हम सतयुग ला ते हैं ।

मैंने विवाह नहीं किया, इसका अर्थ यह नहीं मुझमें प्रेम की भावना नहीं है, दरअसल मुझे ने कर्तव्य से प्रेम हो गया था । मां की मृत्यु श्चात १५ वर्ष की आयु में मेरे ऊपर अपने -बहनों को पालने की जिम्मेदारी आ गयी ।

बहरहाल हम बात कर रहे हैं प्रेम पर, तो मैं झती हूं कि अगर रिश्ता स्वार्थवश हो तो आ जाती है, लेकिन अगर रिश्ते में सच्चाई तो दरार का प्रश्न ही नहीं उठता । बिना विवाह के रहना मैं ठीक नहीं समझती । मुझे लगता है, जो लोग विवाह व्यवस्था से दूर रहना चाहते हैं, वे दरअसल अपनी जिम्मेदारियों से भागना चाहते हैं । अगर विवाह किया है, तो तन-मन-धन से जुड़ना आवश्यक है । लेकिन मैंने अविवाहित रहना ही उचित समझा । मुझे श्री ब्रजकिशोर चांदीवाला जी का भरपूर सहयोग और प्यार मिला । वे मेरे संरक्षक थे । विवाह की आवश्यकता मैंने नहीं समझी ।

नरेन्द्र कुमार

(प्रकाशक)



प्रेम को परिभाषित करना नामुमकिन है । मेरे विचार से प्रेम ईश्वर है और ईश्वर ही प्रेम है । प्रेम मानव की समझ से बहुत आगे है । आज के मानव का प्रेम स्वार्थ से भरा हुआ है । मीरा के प्रेम को देखें, निःस्वार्थ प्रेम था उसका ।

मैं समझता हूं कि प्रेम तथा विवाह दो अलग-अलग बातें हैं । अगर आप विवाह करते हैं और उसमें संतुष्टि नहीं है, आप एक-दूसरे के प्रति वफादार नहीं हैं और अगर अन्य अविवाहित जोड़ा है । एक-दूसरे का आदर करते हुए साथ रह रहा है, तो उसमें बुरा कुछ नहीं है । हां यह अवश्य है कि यह एक बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य है । ऐसा नहीं है कि मैं 'लिव-टुगेदर' की परंपरा को बढ़ावा देना चाहता हूं, लेकिन मैं उसका विरोध भी नहीं करूंगा ।

प्रस्तुतिः अंजली लखेड़ा

— जे. ई.-२७, खिड़की एक्सटेंशन, मालवीय नगर, नयी दिल्ली-१७

ज्योतिष : समस्या और समाधान



● अजय भाम्बी

रुचि तनेजा, दिल्ली

प्रश्न : मेरी शिक्षा कहां तक है ? विदेश में शिक्षा का योग है ?

उत्तर : इंजीनियर होने का योग है । विदेश में भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने की संभावना है ।

सुभाष खन्ना, कोटा

प्रश्न : राजयोग (राजनीति) है या नहीं ?

उत्तर : ज्यादा नहीं ।

रविन्द्र पंवार, श्रीनगर-गढ़वाल

प्रश्न : अनुकूल परिस्थितियां कब तक ? कृपया रत्न सुझाएं ?

उत्तर : शनैः-शनैः अब अनुकूल स्थितियां बनने लगेंगी । पन्ना धारण करें ।

सीता देवी, जयपुर

प्रश्न : ब्रेस्ट कैंसर है । कितना समय निकालेगी ? शारीरिक कष्ट कैसा रहेगा ?

उत्तर : आपकी कुंडली में चतुर्थ भाव जो स्तन का प्रतिनिधित्व करता है, दूषित है । इसके अतिरिक्त चतुर्थ भाव का स्वामी गुरु , राहू पीड़ित है । इन सबके कारण यह है । जातक की उम्र बताना शास्त्र संगत नहीं है लेकिन कष्ट, चिकित्सा के चलते कम होगा ।

राजेन्द्र कुमार शर्मा, मेरठ

प्रश्न : व्यापार व नौकरी में कौन-सा कार्य उचित है ? कब तक होगा ?

उत्तर : व्यापार, और उसे तुरंत प्रारंभ करना चाहिए ।

हेमलता, दिल्ली

प्रश्न : पुत्र कब तक ? उपाय भी बतायें ?

उत्तर : अगले वर्ष । पुखराज पहनें ।

अभिमन्यु पांडे, उज्जैन

प्रश्न : छोटा बेटा मुंबई में ताऊ-ताई के पास है । उसका अब मेरे साथ रहने का योग है या नहीं ?

उत्तर : अगले वर्ष वापस आ सकता है ।

दीर्घायु प्रसाद वशिष्ठ, रायपुर (देहरादून)

प्रश्न : विदेश गमन कब तक ?

उत्तर : इसी वर्ष या १९९९ में ।

आशा गुप्ता, इलाहाबाद

प्रश्न : मंगेतर से शादी कब ? विरोधियों की पराजय कब ?

उत्तर : इस वर्ष संभावना है ।

प्राची गुप्ता, सीकर

प्रश्न : क्या इस वर्ष पी.एम.टी. में चयन होगा ?

उत्तर : पूर्ण संभावना है ।

संजीव कुमार, खडौआ (मधुबनी)

प्रश्न : अधिकारी वर्ग की परीक्षा में सफलता कब ? या अच्छी आय हेतु ज्योतिष कार्य शुरू कर दूं ?

उत्तर : आपकी कुंडली में बुध तो अच्छा है लेकिन गुरु स्थियि दयनीय है अतः उच्च कोटि का ज्योतिषी होने की कम संभावना है । नौकरी के लिए प्रयासरत रहें,

सफलता मिलेगी ।

रजनी द्विवेदी, वाराणसी

प्रश्न : मकान एवं वाहन (कार) सुख, विदेश गमन ?

उत्तर : **अब ये सारे कार्य अगली महादशा में ही संपन्न होंगे ।**

दिनेश प्रसाद शर्मा, कठआर (जे. एंड के.)

प्रश्न : राज्यपद प्राप्त होगा तो कब तक ? नहीं तो क्या करें ?

उत्तर : **अगले वर्ष प्राप्त होने की संभावना है ।**

गुरुमीत सिंह, बहजोई

प्रश्न : मानसिक शांति कब तक ? प्रभावी उपाय बतायें ?

उत्तर : **अगले वर्ष से । नीलम धारण करें ।**

मुकुंद गडफले, मुंबई

प्रश्न : विवाह सजातीय या अंतरजातीय ?

उत्तर : **अंतरजातीय ।**

श्रृंगानी परिजात, दरभंगा

प्रश्न : क्या मैं निरोग और स्वस्थ हो पाऊंगी एवं आयु की पूर्णता प्राप्त कर सकूंगी ?

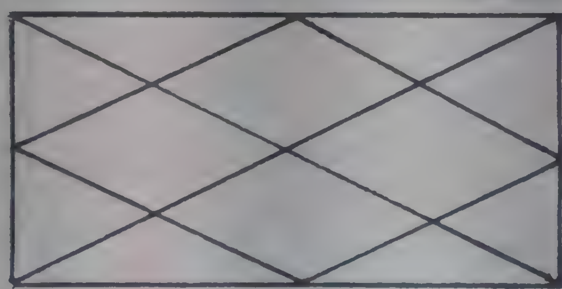
उत्तर : **बिलकुल हो जाएंगी । घबरायें नहीं आयु भी पूर्ण है ।**

गिरिराज तराना, उज्जैन

प्रश्न : किस तरह का व्यापार करूं ? जीवन कैसा बीतेगा ?

उत्तर : **मेन्युफेक्चरिंग प्रारंभ कर सकते हैं लेकिन २००२ के बाद ही करें । उसके बाद समय उत्तम बीतेगा ।**

प्रविष्टि-१८१



नाम...

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) .... महीना................. सन्.................

जन्म-स्थान...

जन्म-समय ....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण...

पता...

आपका एक प्रश्न ....

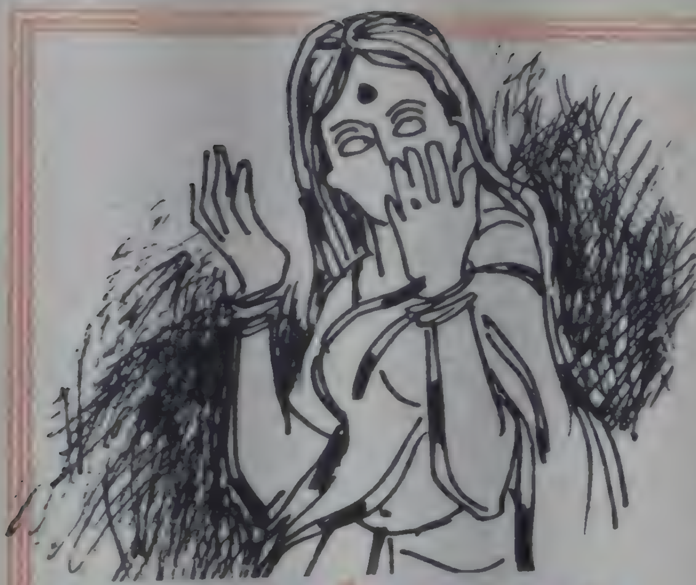
इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें...

संपादक (ज्योतिष विभाग)— प्रविष्टि— १८१ 'कादम्बिनी'

हिंदुस्तान टाइम्स भवन,

१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० जून, १९९७



सुघड़ सुडौल सुंदरी

—अलेक्सांद पुश्किन

सुघड़ सुडौल सुंदरी तुमको
मैं जब बांहों में भरकर
हुलस प्यार के शब्द मधुरतम
कहता हूं भावुक होकर
मूक-मौन रह, भुज बंधन से
मुक्त लचीला तन करतीं
व्यंग्यपूर्ण मुसकान लिये तब
दूर तनिक मुझ से हटतीं
बहुत बेवफा कभी रहा हूं
किस्से ऐसे तुमको ज्ञात,
बड़ी बेरुखी से सुनती हो
इसीलिए तुम मेरी बात
कोसे बिना न मैं रह पाता
अपना अपराधी यौवन
गुपचुप रातों, बागीचों में
विकल प्रतीक्षा, मधुर मिलन
मैं रहस्यमय काव्य-सुरों को
कोसूं धीमे प्रेमालाप
भोले मन की बालाओं का
प्रेम, अश्रु, फिर पश्चाताप।

अनुवादक : डॉ. मदनलाल मधु

साभार : पुश्किन की चुनी हुई रचनाएं
प्रगति प्रकाशन, मास्को

शृंगार-संगीत रस दोहे...

—डॉ. अख्तर नज़्मी

सारंगी-सी सांवरी, सरगम-सा सिंगार
इकतारे-सा बज रहा, चुनरी का हर तार
जब खनका उसका बदन, उभरा एक खयाल
बंजारन की चाल में, हैं कितने सुर-ताल
पानी-पानी हो किरन, सूरज भी शरमाय
गोरी उतरे झील में, जल झिलमिल हो जाय
इसके आगे रोशनी, सूरज की है मांद
गोरी तेरे गाल पर, चमके काला चांद
मेरी ऐसी लालसा, ऐसा दिन भी आय
बासंती का रूप भी, बासंती हो जाय
अपनी मंजिल पा गयी, सोने की जंजीर
चमकी उसके हाथ में, कंगन की तकदीर
चमके खुशबू राग की, ऐसा खनके तार
जैसे गुल गुलदान में, ज्यों पनघट पे नार
उस दिन कुछ ऐसा लगा, जादू है संगीत
जिस दिन ढोलक पर सुने, मेंहदीवाले गीत
दोनों दिल की डोर को, खेंचें अपनी ओर
आंगन-आंगन फाख्ता, जंगल-जंगल मोर
सारंगी, तबला कहे, कहे यही संतूर
तालमेल सबसे रखो, रहकर सबसे दूर।

खुर्जे— वालान, दौलतगंज,
लश्कर ग्वालियर



जिल्दवाली किताब है लड़की

—सिमरन कौर

कोई मासूम ख्वाब है लड़की
जिल्दवाली किताब है लड़की
है सितम आपका हमारा जो
हर जगह लाजवाब है लड़की
सारे रिश्ते गुनाह है उसके
सबके बदले हिजाब है लड़की
खून जब रंग सूखकर होगा
सब कहेंगे गुलाब है लड़की
वक्त मत पूछ एक लड़के से
वक्त बेहद खराब है लड़की
वो ना जाने क्यूं मां ये कहती है
किस जन्म का हिसाब है लड़की
तेरी खातिर कोई गजल है लड़की
खुद की खातिर अंदाज है लड़की
एक जिल्दवाली किताब है लड़की ।

बी. ९६, जेल रोड, फतेनगर
नयी दिल्ली-११०००८



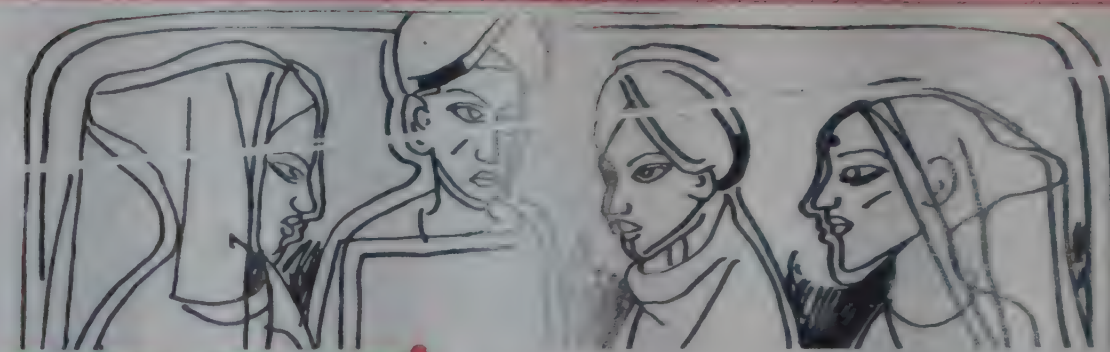


लड़की केवल लड़की नहीं होती

—सुरंजन

लड़की केवल लड़की नहीं होती
लड़की के भीतर एक और लड़की होती है
जो सोन चिरैया की तरह फुदकती है
भावनाओं की डालियों पर
पेड़ों पर
पत्तों पर
मन के आंगन-प्रांगन में चुनती है दाना
बनाती है घर तिनका-तिनका चुनकर
लड़की केवल लड़की नहीं होती
लड़की के भीतर एक और लड़की होती है
जो प्रतिबंधित है किशोरावस्था में
और यौवन द्वार पर भी पूरी तरह
जो विवश है घर के रिवाजों से
रस्मों से
लड़की होने के संस्कारों से
जो तरबतर है मृत्यु के आसपास
जो अश्रुपूरित है इंद्रधनुषी अहसास लिए !

मगध प्रकाशन,सपना अपार्टमेंट
प्रताप विहार, गाजियाबाद-२०१००९



बादल का गर्व

—महेश चंद्र द्विवेदी

मैंने कब कहा था तुमसे, प्रेयसि मुझको प्यार करो
मेरे लिए सजो नित-नित, नव-रूप श्रृंगार करो

केशों में वेणी बांधो, जूड़े में माला गुंथवाओ
नयनों में काजल रचकर, माथे पर बिंदिया दमकाओ
होठों को सरस बनाकर, मुझको मौन निमंत्रण दो
गालों की रक्तिम आभा से, मेरी प्यास को तृष्णा दो
मयूर सम ग्रीवा को मोड़ो, कानों में कुंडल चमकाओ
तिरछे नयनों से देखो, कुटिल सूक्ष्म मुसकान दिखाओ
मुझे देख अनजान बनो, पर वक्ष में धड़कन धड़काओ
करकमलों में कंगन पहनो, पैरों में नूपुर छमकाओ
मेरे हेतु न बिछुआ पहनो, सपने में भी धिक्कार करो
केवल तुम मेरे आंसू को; ना रोको, स्वीकार करो
मैं तो बादल हूं; जब रोऊंगा, प्यास धरा की बुझ जाएगी
बादल के बिन मनुहार किये, नवजीवन से खिल जाएगी
मैंने कब कहा था तुमसे, प्रेयसि मुझको प्यार करो
मेरे लिए सजो नित-नित, नव-रूप श्रृंगार करो।

उत्तर प्रदेश, पुलिस आवास निगम लि.
ए-८१, विजय खंड-२, गोमती नगर, लखनऊ

गीत

आती हैं चिट्ठियां

—यश मालवीय

आती हैं चिट्ठियां
तारों से बिंधी
छटपटाती हैं चिट्ठियां

जंग लगे लोहे का
संवेदन छूती हैं
होंठों पर खिलती हैं
आंखों से चूती हैं
अंधयारा देख
जगमगाती हैं चिट्ठियां

छिदवाकर भी सीने
जख्मों को भरती हैं
बीती तारीखों-सी
जेहन में उभरती हैं
अपनों की धूल भी
हटाती हैं चिट्ठियां

नावों-सी लगती हैं
ठौर से, ठिकाने से
कभी बचें नहीं
बार-बार पढ़े जाने से
रहकर अनपढ़ी
तिलमिलाती हैं चिट्ठियां।

ए/१११, मेंहदौरी कॉलोनी,
इलाहाबाद-२११००४

"हम भारत के उपभोक्ताओं के लिए एक ऐसा क्रांतिकारी घरेलू सफाई करनेवाला उत्पाद लाना चाहते थे, जो छूत और कीटाणुओं का शतप्रतिशत सफाया करता हो । 'डोमेक्स ऑल परपस क्लीनर' ऐसा ही उत्कृष्ट कोटि का उत्पाद है ।"—यह कहना है हिन्दुस्तान लीवर के वाइस प्रेसीडेंट (मार्केटिंग) अरुण अधिकारी का ।

हिन्दुस्तान लीवर और घरेलू सफाई के उत्पाद बनानेवाली विश्व की सबसे बड़ी कंपनियों में से एक एस. सी. जॉनसन, यू. एस. ए. के संयुक्त उपक्रम के तहत ऑल परपस डिसइन्फेक्टेंट क्लीनर 'डोमेक्स' भारत के बाजारों में पेश किया गया है ।

एक संवाददाता सम्मेलन में श्री अधिकारी ने 'डोमेक्स ऑल परपस क्लीनर' को पेश करने की घोषणा करते हुए इसे असरकारक और शक्तिशाली घरेलू सफाई करनेवाला उत्पाद बताया । जो रोगों की छूत फैलानेवाले कीटाणुओं का शतप्रतिशत सफाया करता है । उन्होंने बताया, यह उपभोक्ताओं को तीन प्रकार से फायदा पहुंचाता है; अद्भुत सफाई, शतप्रतिशत कीटाणुओं का नाश और प्रयोग के लिए सुरक्षित । अभी यह बाजार में ५०० मि. ली. और २५० मि. ली. के दो साइजों में उपलब्ध है ।

इसका इस्तेमाल बरतन, प्याले, रेफ्रिजरेटर, शिशुओं के अंतर्वस्त्र, कांच के बरतन, बिस्तरों की चादरों आदि की सफाई के लिए भी किया जा सकता है । इसका प्रयोग रसोईघर के प्लेटफार्म और सब्जी काटने के बोर्ड की सफाई के लिए भी किया जा सकता है ।

पचास-पचास प्रतिशत भागीदारी के इस उपक्रम में कुल पूंजी १५ करोड़ रुपए की है । इस संयुक्त उपक्रम का संयंत्र पुणे में स्थापित हो रहा है । इसके लिए टेक्नालॉजी एस. सी. जॉनसन ही उपलब्ध कराएगी ।

इस तरह के सफाई उत्पादों का भारत में १४० करोड़ रुपये का बाजार है और कंपनी को आशा है कि वह अपने बेहतर नेटवर्क और उचित मूल्य से इस बाजार के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लेगी ।

(हमारे प्रतिनिधि द्वारा)

डोमेक्स ऑल परपस क्लीनर

सफाई के लिए



यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिव प्रसाद पाठक

मेष : आर्थिक कार्यों में सफलता मिलेगी। यात्राओं से धन लाभ होगा। उच्चाधिकारियों से सन्निकटता बढ़ेगी। पारिवारिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। जीवनसाथी के सहयोग से संपत्ति समस्या का समाधान होगा। आकस्मिक व्ययों की अधिकता होगी। परोपकारी प्रयासों से प्रतिष्ठा-वृद्धि होगी।

वृषभ : आकस्मिक धन लाभ से विद्यमान समस्याओं का समाधान होगा। नवीन स्थान की यात्रा उपलब्धिदायी होगी। शत्रु पक्ष के प्रयास विफल होंगे। उच्चाधिकारी वर्ग की अनुकूलता से प्रभाव वृद्धि होगी। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में सफलता मिलेगी। व्ययों की अधिकता रहेगी। स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता विद्यमान रहेगी।

मिथुन : मास में अनपेक्षित कार्यों में सफलता मिलेगी। लेखन, सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों की अधिकता होगी। आर्थिक अस्थिरता से तनाव रहेगा। आजीविका की दिशा में वांछित परिवर्तन का योग उपस्थित होगा। नवीन दायित्व तथा कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा। गुप्त शत्रुओं से सावधानी हितकर होगी।

कर्क : मास उपलब्धिपूर्ण होगा। कार्यों की अधिकता होगी। नवीन दायित्वों से प्रसन्नता होगी। उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा। संपत्ति विवादों को टालना हितकर होगा। सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में नेतृत्व मिलेगा। शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से चिंता होगी। परोपकारी कार्यों में भावुकता की अपेक्षा विवेक से कार्य करें।

सिंह : मास में इच्छित कार्यों में व्यवधान होंगे। शत्रु पक्ष से सावधानी रखें। उच्चाधिकारियों से संभाषण में संतुलन रखें। पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्य पूर्ति से प्रसन्नता होगी। लंबित संपत्ति समस्या का समाधान होगा। निकटजनों के सहयोग से आर्थिक समस्या का समाधान होगा।

कन्या : मास में धैर्य तथा संयम से कार्य करना हितकर होगा। पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी। आवेश की अधिकता से शत्रु वृद्धि होगी। उच्चाधिकारियों के सहयोग से शत्रु पक्ष का शमन होगा। न्यायालयीन कार्यों में विलंब हितकर होगा। सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी। शत्रु पक्ष से सुलह के अवसर मिलेंगे।

तुला : मास उपलब्धिदायी होगा। पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी।

ग्रह स्थिति : सूर्य १४ जून से मिथुन में, मंगल ४ से कन्या में, बुध ५ से वृषभ में, २१ से मिथुन में, गुरु मकर में, शुक्र २३ से कर्क में, शनि मीन में, राहु केतु २४ से क्रमशः सिंह तथा कुंभ राशि में भ्रमण करेंगे।

निकटजनों के सहयोग से अनपेक्षित धन लाभ होगा । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से नवीन कार्य की पूर्ति होगी । नवीन संपत्ति अथवा वाहनादि पर धन व्यय होगा । आकस्मिक प्रवास में उल्लेखनीय उपलब्धि होगी । शत्रु पक्ष के पराभव से प्रसन्नता होगी ।

वृश्चिक : उच्चाधिकारियों के सहयोग से नवीन पदाधिकारी अथवा उच्च पद की प्राप्ति होगी । परिवार में धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों की पूर्ति होगी । संपत्ति कार्यों में व्यर्थ दौड़-धूप होगी । शत्रु पक्ष से सावधानी हितकर होगी । जोखिमपूर्ण कार्यों से आकस्मिक धन लाभ होगा । गृहोउपयोगी अथवा विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय होगा ।

धनु : मास में कार्यों की अधिकता होगी । पुरुषार्थ तथा परिश्रम से प्रतिकूल स्थितियों पर विजय मिलेगी । शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर प्रतिष्ठा को प्रभावित करेगा । उच्चाधिकारियों से संतुलित संभाषण करें । परोपकारी कार्यों से व्यर्थ पीड़ा होगी । स्वास्थ्य संबंधी व्यर्थ अस्थिरता होगी । रक्त अथवा उदर विकारों से पीड़ा होगी ।

मकर : आत्मविश्वास तथा साहस से जोखिमपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी । उच्चाधिकारियों का उन्नत सहयोग मिलेगा । आजीविका संबंधी वांछित परिवर्तन से प्रसन्नता होगी । पारिवारिक वातावरण में व्यर्थ विषमता होगी । रक्त संबंधियों से संतुलित संभाषण हितकर होगा । लेखन, सृजन अथवा सामाजिक कार्यों से प्रतिष्ठा वृद्धि होगी ।

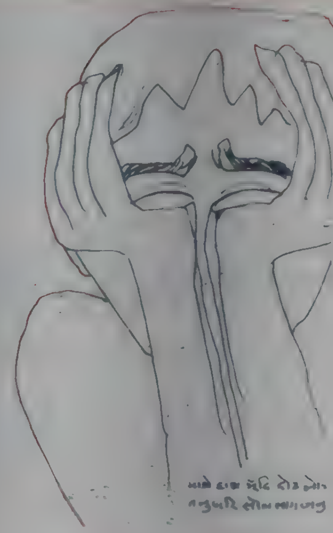
कुंभ : सार्वजनिक जीवन में यश प्रतिष्ठा वृद्धि होगी । विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से नवीन आर्थिक संसाधन का उदय होगा । लगन, परिश्रम तथा पुरुषार्थ से लंबित कार्यों में सफलता मिलेगी । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । संपत्ति कार्यों में व्ययों की अधिकता रहेगी । परोपकारी कार्यों में सावधानी रखें । शत्रु पक्ष के प्रयास विफल होंगे । स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें ।

मीन : मास में भाग्यदायी सफलता मिलेगी । विशिष्ट व्यक्ति से महत्त्वपूर्ण लाभ मिलेगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्य पूर्ति से उत्साह वृद्धि होगी । सहयोग से संपत्ति कार्य की पूर्ति होगी । प्रिय जन की अस्वस्थता से दौड़धूप की अधिकता होगी । स्वजनों के प्रवास में व्यर्थ परेशानियों का सामना करना होगा ।

पर्व और त्यौहार

१. जून अचला एकादशी, भद्रकाली एकादशी । २. सोम प्रदोष, ५. स्नानदान श्रद्धादि की अमावस्या शनैश्चर जयंती, ८. वैनायिकी श्री गणेश चतुर्थी, महाराणा प्रताप जयंती, ९. गुरु अर्जुनदेव शहीद दिवस, ११. विंध्यवासनी पूजा, १३. धूमावती जयंती, १५. गंगा दशहरा, रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस, १६. निर्जला एकादशी, भीम सेनी एकादशी, १८. प्रदोष व्रत, २०. स्नानदान वृतादि की ज्येष्ठी पूर्णिमा, संत कबीरदास जयंती, २१. गुरु हरगोविंदसिंह जन्म दिवस, २३. श्री गणेश चतुर्थी, २७. कालाष्टमी, २८. शीतलाष्टमी, ३०. योगनी एकादशी (स्मार्त)

प्रवेश



कवि लिखो एक ऐसा गीत

मत कलम को दो विराम
कवि लिखो एक ऐसा गीत
छंट जाएं नफरत के बादल
खुशियों का फैले आलोक
हो प्रीत की जीत
हिंदु, मुसलिम, सिख, ईसाई
एकता की बजे शहनाई
सुख-समृद्धि की मधुर कामना
गूंजे स्वर लहरियां हो देश प्रेम का संगीत
वियोग पर लिखा होगा
मिलन पर लिखा होगा
यौवना ने अप्रतिम सौंदर्य पर लिखा होगा
अब प्राणों से प्यारे वतन पर लिखो
गांधी नेहरू पर लिखो
बहती गंगा, जमना पर लिखो
देश की यश कीर्ति पर
उकेर दो कुछ शब्द
विश्व में भारत हो मनोहर प्रतीत
कवि लिखो एक ऐसा गीत ।

—कु. स्वाति खरे

पता : कु स्वाति खरे
कन्या शाला के पास सिहोरा
तह. सिहोरा, जिला—जबलपुर (म. प्र.)

आत्मकथ्य : मन में उमड़ती भावनाएं सभी को अभिव्यक्त करने का सटीक माध्यम है, कविता ।

प्रतीक्षा

यही आश्वासन पर्याप्त है
जीने के लिए, कि मैं आऊंगा
और तुम जब भी आओगे
मुझे प्रतीक्षारत ही पाओगे
क्योंकि मेरा जीवन बंध-सा गया है
दिनचर्याओं में
और मेरा मन
तुम्हारी प्रतीक्षाओं में ।

—अरुणेश अखिल

पता : दत्त प्रसाद माथुर
कॉलोनी जिला गुना (म. प्र.)

आत्मकथ्य : जब मन की बात समझनेवाला कोई साथी नहीं मिलता तब कागज पर उतारकर स्वयं ही पढ़ लेती हूं, इसे ही मैं अपनी लिखी कविता कहती हूं ।





संज्ञान

देखिए हर वक्त आगे ही नहीं
मुड़कर पीछे भी जरा-सा देखिए
देखकर बढ़ते रहो चहुं ओर भी
सत्य जीवन को सुरक्षित कीजिए

शक्तियां स्वमेव की सब यंत्र हैं
मंत्रमय उनको भी सब कर लीजिए
अपने पौरुष [illegible] के ही योग से
शक्ति-साधन को सफल कर लीजिए

आत्म-बल साधन बनाकर
क्षत्र संबल लीजिए ।
बेवजह उम्मीद औरों से
न हरगिज कीजिए

आत्म चिंतन ज्ञान का
साधन सरल है लीजिए
पंच इंद्रिय ज्ञान का
[illegible]र्थ भी कर लीजिए

मूर्खता से जिरह-बहस
कतई कभी न कीजिए
विद्वान अंतर्मन से अपने
जी भर के बातें कीजिए ।

— सतीश कुमार 'सत्य'

पता : एम. एस.—१४७ सेक्टर-डी,
अलीगंज, लखनऊ-२२६०२४

आत्मकथ्य : जीवन में नित्य, हमारे
के और आप
घटनाओं का क्रम, प्रकृति नियम बन जाता है ।
उनसे प्रभावित हो, आत्म-हृदय मन मेरा
कुछ कहने को व्याकुल, स्वमेव हो जाता है ।
अंतर्मन की वाणी, प्रस्फुटित हो शब्दों में
मेरे लिए 'सत्य' लेखन कर्म बन जाता है ॥

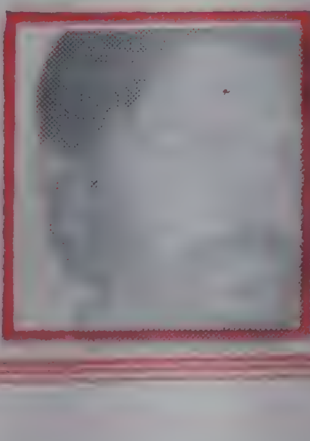
होने दो साकार

होने दो साकार
मेरी समस्त परिकल्पनाएं
चाहे वो आपके आडम्बरपूर्ण
सनातन विधान के
परखच्चे उड़ा दें
चाहे लगे पागलपन
कोई दौरा उन्माद का प्रलाप संज्ञाहीन
बह जाने दो दिग्व[illegible] अस्त्रगधारा
अंतर्बाष्प की होने का आभास
संसृति को प्रेम धा[illegible]ओं से
तुम मत रोको मेरा मार्ग मुक्ति की राह
स्वतंत्रता स्वयंभूएकाधिकारी
सृष्टि क्लीवकारक
अननुसंधेय अपराध
क्षीवात्ममुग्ध क्षितिभार
तुम्हें बनना होगा निराकार
मुझे होने दो साकार ।

— अशोक बेनीवाल

पता : ४७, कृष्णा कॉलोनी,
झारखंड मोड़,
खातीपुरा रोड,
जयपुर (राज.)

आत्मकथ्य : अति संवेदनशील भावुक मन प्रगतिशील विचारधाराओं के संचारार्थ अपनी भावनाओं को रचना संसार में उद्गारित करता है ।





ओ मेरे शहर

जब कहा था अलविदा
मैंने तुम्हें मेरे शहर
तुम्हारी मिट्टी चिपक गयी थी मेरे पैरों से
चिरसंचित कर लिया उसे मैंने सदा के लिए
कि याद जब भी तुम आओगे
महसूसती रहूंगी उसमें मैं
चिनारों की महक
जेहलम का प्रवाह
केसरिया क्यारियों की लहक
तुम पर झुके आसमान के
आकर्षक रंग
तुम्हें नहलाती दूधिया बर्फ
पर इतने वर्षों के बाद
क्या चाहकर देख पाऊंगी
तुम्हारा लुटा-पिटा टुकड़ों
में बंटा शरीर
तुम्हारे रूबरू होकर
क्या छू पाऊंगी तुम्हें
जबकि दूरदर्शन पर देखकर तुम्हें
सहलाने लगती हूं
तुम्हारी तसवीर
ललक उठती हूं
तुम्हें छूने को
मुझसे बिछुड़े ओ मेरे शहर
तरस गयी हूं मैं तुम्हारे
एक संपूर्ण स्पर्श के लिए ।

— अनिला सिंह चाड़क

पता : स्नातकोत्तर शिक्षिका
केंद्रीय विद्यालय नगर गांधी नगर, जम्मू

आत्मकथ्य : जीवन के ऊंचे-नीचे रास्तों पर चलते हुए बेहद थक जाती हूं, तो इसी थकान को मिटाने के लिए कुछ शब्द कागज पर अंकित करने की कोशिश करती हूं,

जिंदगी

शादी की सालगिरह हो
या फिर जनम दिवस की पार्टी
किसी विशिष्ट व्यक्ति का आगमन हो या फिर
किसी की सेवाओं की छुट्टी
मानव
क्यों भेंट करते हो
फूलों का ही गुलदस्ता
क्यों चुरा लेते हो बगिया से
खुशबू झोलियां भर-भरके
और ट्रकों में लादकर
ले जाते हो बगीचे की सुंदरता
क्यों नहीं दे देते हो भेंट में एक नन्हा-सा पौधा
क्या ही अच्छा हो ले लो वायदे
जन-मानस से
कि सींचे अपने हिस्से के पौधे को
मेहनत और लगन से
पौधों को जीने दो खुलकर उनकी जिंदगी
तभी तुम जी पाओगे
हंसकर अपनी जिंदगी ।

— केशव चंद्र लाल

पता : ओकनी, राजा बंगला रोड,
हजारीबाग (बिहार) ८२५३०१

आत्मकथ्य : जिसे पुख्ता होने की जरूरत है किंतु बांस की तरह भीतर से खाली है, उसे भरने की कोशिश है मेरी कविता ।





क्या है? प्रेम की भाषा

• डॉ. हीरालाल बाछोतिया

प्रेम का उल्लेख हो और फ्रायड का नाम न आये यह संभव ही नहीं है । फ्रायडिन धारणा के अंतर्गत प्रेम न तो मात्र दैहिक संबंध है, न एकांत आत्मतृप्ति, बल्कि वह संपूर्ण जीवन-प्रसंगों से जुड़ी परिपक्व जटिल प्रक्रिया है । फ्रायड ने परिपक्वता तक पहुंचने के लिए यौन-भावना को अनिवार्य रूप से स्वीकार किया है और मनुष्य के अवचेतन मन को बहुत दूर तक निर्णायक शक्ति माना है । किंतु फ्रायड के विचारों का विरोध भी हुआ, जिसमें बताया गया कि यौन आकांक्षा केवल शारीरिक भूख या तनाव मुक्ति की आकांक्षा नहीं होती बल्कि उसका मुख्य लक्ष्य एकात्मकता स्थापन और अकेलेपन से निजात पाना है । लेकिन इसके बावजूद यौनभावना प्रेम का एक अंग मात्र है । प्रेम में जहां कोमलता तथा परस्पर सुरक्षा की भावना प्रधान होती है, वहां यौन-भावना में एक-दूसरे को पराजित करने की इच्छा भी निहित हो सकती है । अन्य मानवीय वृत्तियों की तरह प्रेम भी एक विकसित विरासत को लेकर उत्पन्न होता है । आकांक्षाओं की पूर्ति हमारे मन में प्रसन्नता तथा उपेक्षा खीज और क्रोध पैदा करती है । इस तरह प्रेम सामाजिकता का उद्रेक भी करता है ।

दार्शनिक दृष्टि से प्रेम की तलाश सत्य की तलाश से जुड़ी हुई है । यह तलाश जितनी बाह्य जगत से जुड़ी हुई है उतनी ही आंतरिक जगत से । प्रेम का लक्ष्य चाहे स्व हो चाहे बाहयृखव्यक्ति या ईश्वर— प्रत्येक स्थिति में व्यक्ति की जानकारी से जुड़ा होता है । व्यावहारिक स्तर पर प्रेम में व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को चाहता है । यदि यह चाहना स्थूल धरातल पर हस्तगत करने की भावना से जुड़ा हो तब भी प्यार की जाने वाली वस्तु से आनंद प्राप्त करने की इच्छा विद्यमान रहती है । प्रेम आनंद के माध्यम से सत्य की तलाश है और आनंद माध्यम होने के कारण ही प्रेम की प्रक्रिया में व्यक्ति का अस्तित्व संलग्न रहता है ।

आधुनिक विज्ञान

आधुनिक विज्ञान ने प्रेम को 'जींस' से जोड़ दिया है । वैज्ञानिकों का मानना है कि कामेच्छा को हमारे 'जींस' प्रभावित करते हैं, जिनके आगे मनुष्य असहाय-सा हो जाता है । मनुष्य विरासत में ईर्ष्या और अधिकार का भाव प्राप्त करता है । दुनिया के सभी भागों में मनुष्य एक विवाह के प्रति निष्ठा प्रकट करता है । अपने अनुभव से वह जान गया है कि अस्थायी प्रेम-संबंध अच्छे नहीं होते । अब तो 'एड्स' के भय ने अस्थायी प्रेम-संबंधों पर अंकुश-सा लगा दिया है ।

विरासत में प्राप्त गुण को सहेजने में एक स्थिति यह भी है कि बातचीत करने में चतुर व्यक्ति हर जगह अपनी जगह बना लेता है । स्त्रियां तनावमुक्त, ध्यान से बात सुननेवाले और हाजिर-जवाब जीवन साथी की तलाश करती

है । पुरुष की शारीरिक सुंदरता की बजाय हार्दिकता, बुद्धिमत्ता और सामाजिकता आकर्षण का कारण होती है । इसके विपरीत पुरुष स्त्री का सौंदर्य, उसके स्वास्थ्य, पहनावे और व्यवहार में देखते हैं । स्त्री-पुरुष के ये गुण उनके 'जींस' की करामात होते हैं ।

साहित्य में प्रेम

हिंदी और संस्कृत साहित्य में प्रेमी की उपमा भ्रमर से दी गयी है । भ्रमर एक फूल का रस चूसकर दूसरे पर जा बैठता है । अर्थात अस्थायी प्रेम-संबंधों की वकालत । किंतु उर्दू में प्रेमी की उपमा परवाने या पतंगे से दी जाती है । अर्थात एक विवाह के प्रति निष्ठा जिसमें परवाना जानता है कि शमा उसे जलाकर राख कर देगी फिर भी वह उसी पर आसक्त है और यह आसक्ति पतंगे के प्राणोत्सर्ग के साथ ही समाप्त होती है । किंतु सांस्कृतिक दृष्टि से क्या ये उपमाएं सही हैं ? खासकर यौन- संबंधों पर सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य पर दृष्टिपात उपयोगी होगा ।

शाश्वत विषय है प्रेम

भारतीय संस्कृति पुरुष को यौन-संबंध की पूरी छूट देती है, जबकि नारी से अपेक्षा है कि वह एक पुरुष से इतर किसी दूसरे का विचार भी मन में न लाये । यदि परंपरा पर विचार करें तो वैदिक युग की प्रेम धारणा अधिक यथार्थपूर्ण और जीवन रचना से जुड़ी हुई थी । प्रेम का अमूर्तीकरण और रहस्यवादी रूप महाकाव्यों के युग से प्रारंभ होता है । रामायण और महाभारत के पात्र वैदिक तथा पौराणिक आख्यानों के पात्र हैं तथा उनकी कथा को वैदिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में ही समझा जा सकता है । तथापि यह स्पष्ट है कि महाकाव्यों के सौंदर्य-मूल्यों तथा प्रेम संबंधी धारणाओं में वैदिक युग से पर्याप्त अंतर है । रामायण और महाभारत दोनों में प्रेम-जैसा कोमल भाव झुलसा हुआ दिखायी देता है ।

इन महाकाव्यों की कथाएं पूर्ववर्ती कथाओं की वाचिक परंपरा से ली गयी हैं । रामायण में संघर्ष संक्षिप्त तथा सीमित है अतः प्रेम को सघनता से चित्रित किया गया है । राम तथा सीता का प्रेम वैवाहिक प्रेम का आदर्श रूप है

दुनिया के सभी भागों में मनुष्य एक विवाह के प्रति निष्ठा प्रकट करता है । अपने अनुभव से वह जान गया है कि अस्थायी प्रेम-संबंध अच्छे नहीं होते । अब तो 'एड्स' के भय ने अस्थायी प्रेम-संबंधों पर अंकुश-सा लगा दिया है ।

जो नीति स्वीकृत तथा मान्यताओं के अनुरूप है । राम-सीता के प्रेम में प्रखरता तथा उद्दाम भाव की अपेक्षा माधुर्य, कोमलता तथा सहज सौहार्द्र भाव अधिक है । नीतिबोध या मर्यादा के कारण प्रेमजन्य, काम भाव की अभिव्यक्ति का अभाव है । तथापि प्रकृति प्रसंग में उन्मुक्त यौन-प्रतीकों का खुलकर प्रयोग अवश्य हुआ है । महाभारत तथा श्रीमद्भागवत में दुष्यंत-शकुंतला, नल-दमयंती, उर्वशी-पुरुरवा की मार्मिक प्रेम-कथाएं प्राप्य हैं ।

अधिकांश प्राचीन प्रेम-कथाओं की परिणति विवाह में होती है । यह इस बात का प्रतीक है कि काम और यौन-संबंध प्रेम के अनिवार्य अंग

समझे गये । इसका आशय यह हुआ कि प्राचीन प्रेम धारणा में विवाह शारीरिक एवं मानसिक संतुलन का निकष माना गया था । प्रेम का यही संतुलित रूप कालिदास के काव्य तथा नाटकों में अधिक पूर्णता तथा रसमयता के साथ व्यक्त हुआ है ।

अलौकिक रति

प्रेम की दार्शनिक व्याख्याओं में प्रेम को ब्रह्म की तरह अबूझ तथा अगोचर बना दिया गया है । राधिका-श्रीकृष्ण तथा गोपियों का प्रेम रति क्रियाओं से भरा हुआ है, फिर भी उसे अलौकिक रति कहा गया है । इसी कारण माधुर्य भक्ति में वर्जित तथा गर्हित संबंधों को रूपक बद्ध किया गया है । विशेष रूप से सूर साहित्य में प्रेम का उत्कृष्ट और मनोहारी रूप चित्रित किया गया है । इसी तरह तुलसी ने श्रृंगार तथा प्रेम प्रसंगों को मर्यादा के अंतर्गत ही देखा है ।

रीति काव्य में प्रेम का स्वरूप रसिकों के अधिक अनुकूल तथा उदात्त चित्तवृत्तिवालों के लिए क्रम अनुकूल हैं । भारतेंदु काल में प्रेम चित्रण रीतिकाव्य से मिलता-जुलता ही देखा जा सकता है । सुधारवादी काल में स्त्री-शिक्षा, परदा-विरोध आदि के कारण नारी का रूप 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी । आंचल में है दूध और आंखों में पानी' दिखायी देता है । जबकि छायावादी काव्य में प्रएय की स्वानुभूति लोक सामान्य अनुभूति के रूप में प्रस्तुत की गयी है ।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में दुनिया में बड़ा बदलाव आया है । औद्योगीकरण तथा महानगरों के विस्तार ने मानवीय संबंधों में परिवर्तन कर दिया है । भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो एक ओर आधुनिक विज्ञान है तो दूसरी ओर सामाजिक पिछड़ापन । इनके चलते पारिवारिक और सामाजिक जीवन में अलगाव की भावना विकसित हुई है । प्रेम-संबंधों में एक ओर आवेश, उत्साह तथा एडवेंचर है तो दूसरी ओर उन्हीं संबंधों के प्रति तटस्थता व उपेक्षा का भाव भी दिखायी देता है । इस अलगाव की भावना ने अकेलापन, ऊब और तनाव को जन्म दिया है । इन स्थितियों का प्रभाव प्रेम संवेदना पर भी पड़ना अवश्यंभावी है जिसमें प्रेम प्रेम न रहकर एक अनुबंध बन जाता है ।

प्रेम में साहस या साहसिक वृत्ति का स्थान भी अन्यतम है । प्रेम प्राप्त करने या प्रेम पात्र बनने में हाजिर-जवाबी होना ही काफी नहीं है, दिलेर होना भी जरूरी है । यह इसलिए भी कि प्रेम में दिल भी टूटता है, लेकिन प्रेम करनेवाले हार नहीं मानते, प्रेम युद्ध में फिर शामिल हो जाते हैं ।

युद्ध इसलिए कहा जाता है क्योंकि प्रेम में संघर्ष, फाका-मस्ती, कष्टों का अनंत सिलसिला सब कुछ संभव है । यदि साहसिक वृत्ति है तो इन बाधाओं को हंसते-हंसते भी झेला जा सकता है । भावनाओं पर नियंत्रण रखा जा सकता है । हमारी उम्र चाहे जो हो, प्रेम हमें चकरा देता है, हमें मोहित कर लेता है । सवाल एक ही है, प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करें ? जो यह कर गुजरते हैं, विजेता बन जाते हैं ।

—के-४०, एफ, साकेत, नयी दिल्ली-११००१७

नयी कृतियां

पुरस्कृत कहानियां : स्वतंत्रता के बाद की हिंदी कहानी निरंतर प्रयोगों से गुजर रही है । सबसे पहले परिवर्तन नयी कहानी से आरंभ हुआ । उसके बाद कहानी विधा को लेकर ऐसी उलझन पैदा की गयी कि उसे दशकों में भी बांटने की कोशिश की गयी । कहानी, कहानी होती है । उसे अलग खंडों में विभाजित नहीं किया जा सकता । कहानी के स्वस्थ स्वरूप को बनाये रखने के लिए और नयी पीढ़ी को प्रोत्साहित कर नये कथाकारों को सामने लाने का प्रयत्न एक संपादक के रूप में **राजेन्द्र अवस्थी** ने कादम्बिनी के माध्यम से किया है । कहानी प्रतियोगिता चाहे वह कादम्बिनी द्वारा आयोजित की गयी हो अथवा कादम्बिनी साहित्य महोत्सव के माध्यम से, कहानियों को पुरस्कृत किया गया हो, इससे नये रचनाकारों की एक बहुत बड़ी पंक्ति सामने आयी है ।

प्रस्तुत पुस्तक 'पुरस्कृत कहानियां' दो भागों में है । पुस्तक के प्रथम भाग में ३५ कहानियां हैं । प्रथम भाग में उषा कुमारी की योद्धा, राजमंगल की मुआवजा, असित रंजन की दर्द, रवीन्द्र व्यास की रुई के फोहे, शारदा मिश्रा की बाबा की लोरी, जयश्री कार्णिक की बैसाखी, अनीता मेहता नेकी की सिसकते सपने, अनुकृति की सुख, कृष्ण माली की परती, मीनाक्षी की थके हारे, मेंहदी आब्दी की परिस्थितियां बनाम इच्छाएं, डॉ. अनिल तिवारी की आत्मबोध, कुंदा जोगलेकर की मरीचिका, राजरानी शर्मा की करवट, अनुराग पाठक की नारी उत्पीड़न और बिखरते परिवार, डॉ. मीनाक्षी जोशी की पूर्णमेवावशिष्यते, डॉ. विकास राय सहर की शेष फिर कभी, प्रवीण नागे की नीयत, डॉ. सैयद मेंहदी की निकाहनामा, डॉ. अलका सक्सेना की उड़ान, गोविंद उपाध्याय की यहां इलाज मुफ्त है..., कालिका चमोला की दस मरे सैकड़ों घायल, संजय वर्मा 'उदय' की स्वप्न योद्धा, विभा जगन्नाथ उकील की पुनरावृत्ति, सुरेन्द्र जोशी की प्रमाणित किया जाता है कि..., अनीता कथूरिया की अधखिले गुलाब, सौरभ गुप्ता की नागफनी, कु. मीरा ठाकुर की पश्चाताप, लक्ष्मी नारायण पयोधि की साहूकार, मालती बसंत रमोले की अंगूठी, सुनील भटनागर की बड़े बाबू, कन्हैयालाल गांधी की शमशीर सिंह का थैला, पैमिला मानसी की कोई और राह, डॉ. शिशिर पांडेय की जींस और लूजर तथा चंपा साहनी की जहर मोहरा कहानियां शामिल की गयी हैं ।

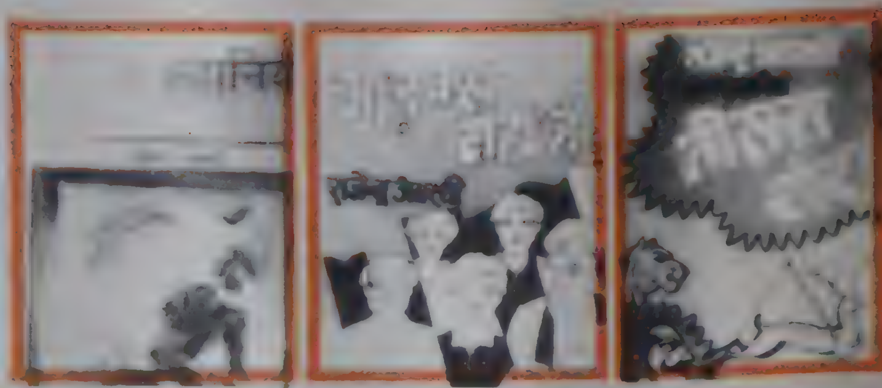
पुरस्कृत कहानियां के द्वितीय भाग में २५ कहानियां हैं । इस भाग में गीता जोशी की नरभक्षिणी, धनेश्वर प्रसाद की छटपटाहट, सैली बलजीत की दूसरे घरौंदे तक, राजेन्द्र लहरिया की आवर्त, योगीन्द्र द्विवेदी की संदर्भहीन, राधा कृष्ण प्रसाद की वह एक मनोबल, डॉ. अनीता एस. कुमार की कैक्टस, डॉ. अनुराग शर्मा की गंध जो मर गयी, डॉ. अरुणा शास्त्री की सूना सिंगार, मुकारब खान 'आजाद' की उस रात के बाद, राधेश्याम बंधु की छंटनी, शैलेश पंडित की नहीं, नाटक खतम नहीं होता, आशा सिन्हा की दूसरा रावण, शुभद्रा मिश्रा की शिखरों का सफर, बानो सरताज की प्रतिबंध, नरेन्द्र नागदेव

की सैलानी, प्रतिभा सिन्हा की अस्मिता का प्रश्न, चंद्रबली शास्त्री की बरसात, अभिरंजन कुमार की नीरू का शून्य और भाई के तमाचे, सुशील कुमार की विरासत, घनश्याम त्रिपाठी की फौजी, डॉ. रामकृष्ण पांडेय की रक्षा कवच, सुरेश सिंह ठाकुर की तीज का उपवास, परदेशीराम वर्मा की विसर्जन तथा प्रवीण कुमार राठौर की एक रात अंधेरी जैसी कहानियां शामिल हैं।

ये सभी कहानियां पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं। कहानी संकली की सारी कहानियां न केवल अपने कथ्य और शिल्प में अलग हैं, बल्कि प्रयोगों में भी एकदम अलग हैं। कादम्बिनी के संपादक राजेन्द्र अवस्थी खुद एक रचनाकार हैं तथा नये रचनाकारों को कादम्बिनी साहित्य महोत्सव के माध्यम से अथवा कादम्बिनी की कहानी प्रतियोगिताओं के माध्यम से हिंदी साहित्य जगत में सामने लाने का जो कार्य उन्होंने किया है वह कार्य शायद ही किसी भारतीय भाषा में अथवा किसी संपादक द्वारा किया गया हो। राजेन्द्र अवस्थी एक कहानीकार भी हैं, उन्होंने अपनी कहानियों में कथ्य, शिल्प तथा विविधता के नये-नये प्रयोग किये हैं।

उन्होंने कहानीकार के रूप में नयी कहानी को एक नया आयाम दिया है। एक संपादक के रूप में भी कादम्बिनी के माध्यम से उन्होंने नये-नये रचनाकारों को प्रोत्साहित किया तथा उन्हें कहानी और काव्य के क्षेत्र में आगे लाने और स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास किया है। इस कहानी संकलन के संपादक के रूप में उनका यह कार्य निसंदेह इस दिशा में नये रचनाकारों के लिए मार्गदर्शन का काम करेगा।

पुरस्कृत कहानियां : संपादक राजेन्द्र अवस्थी, प्रकाशक : समय प्रकाशन, ३३ ए संचार लोक अपार्टमेंट इंद्रप्रस्थ एक्सटेंशन, दिल्ली-९२। प्रत्येक भाग का मूल्य १३० रु.।



भीड़ कहां नहीं है : वर्तमान आधुनिक कहानी के नाम से जो बेहतरीन कहानियां आजकल दिखायी देती हैं उनमें न तो भाव होता है और न उद्देश्य। ये आधुनिक कहानियां दरअसल कहानियां नहीं, महज एक घटनाक्रम होती हैं जिन्हें आधुनिक कहानी के नाम से एक नया आंदोलन खड़ा करने की कोशिश की जा रही है— ऐसे में जब एक वरिष्ठ कहानीकार की कहानियां पाठकों के सामने आती हैं तो वे मरुस्थल में शीतल जल का काम करती हैं। भीड़ कहां नहीं है, वरिष्ठ कहानीकार राजेन्द्र अवस्थी का ताजातरिन कहानी संग्रह है। यह कहने में गुरेज नहीं कि राजेन्द्र अवस्थी नयी कहानियों के आंदोलन के एक स्तंभ हैं। उन्होंने नयी कहानी को अपनी लेखनी और भावपूर्ण, सोद्देश्य अभिव्यक्ति के माध्यम से उसे न केवल सुदृढ़ किया है, बल्कि परिमार्जित भी किया है। श्री अवस्थी प्रयोगधर्मी कथाकार हैं और अपनी कहानियों के माध्यम से उन्होंने समाज को उसकी विसंगतियों, रूढ़ियों और असमानताओं के खिलाफ न केवल चेताया है, बल्कि कहानी के पात्रों के माध्यम से उसे सही दिशा दिखाने का भी प्रयास किया है। भीड़ कहां नहीं है— एक ऐसी कहानी है जो कई कहानियों को अपने भीतर समेटे है। एक कहानी में कई पात्र हैं,

कई समाज हैं, उनकी परेशानियां तथा उन पात्रों की अपनी विवशताएं हैं । मुंबई की झोपड़ी में शराब भट्टी चलानेवाले जौन का जीवन है, उसकी बहनों की जिस्मफरोशी की विवशता है, सलीम कार मिस्त्री का पुलिसिया आतंक का यथार्थ है, बेटी के प्रेमी की हत्या के आरोप में सजा भुगत रहे रमेश के जेल में बंद पड़े सपने हैं, रमता का अलग जीवन का अंदाज है जो किराये पर लाश लाकर उसके नाम पर चंदा वसूलता है और जीवन यापन करता है । एक कहानी में ढेर सारी कहानियों को मिलाने और उनके पात्रों के माध्यम से आज के समाज की सच्चाई उगलवाने में राजेन्द्र अवस्थी का एक कहानीकार के रूप में जवाब नहीं है ।

इसी तरह दूसरी कहानी 'हम सब पहाड़ उठा सकते हैं' भी अपने शिल्प और कथ्य तथा भावपूर्ण अभिव्यंजना के हिसाब से बिलकुल अलग है । राजेन्द्र अवस्थी ने ढेर सारी राजनीतिक कहानियां भी लिखी हैं और व्यवस्था पर चोट की है । यह कहानी लोकतांत्रिक व्यवस्था में ज़िम्मेदारियों से भाग रहे राजनेताओं के लिए एक सबक भी है । इस कहानी में गांव के साधारप व्यक्तियों की देश के भावी राजनीतिक परिदृश्य की स्वप्निल चर्चा है तो अनायास उठ खड़ी होनेवाली बहसें भी हैं ।

भीड़ कहां नहीं है : राजेन्द्र अवस्थी, प्रकाशक : मगध प्रकाशन, सपना अपार्टमेंट्स, ई-७१७ ए-प्रताप विहार, गाजियाबाद । पृष्ठ : अस्सी, मूल्य : पचहत्तर रुपये ;

तीसरा शेर : आज के इस युग में बहुत कम लोग जानते होंगे कि राजेन्द्र अवस्थी ने बाल कहानियां भी लिखी हैं । उन्होंने न केवल उत्कृष्ट बाल कहानियां लिखी हैं, बल्कि बच्चों की पत्रिका 'नंदन' के संस्थादक संपाक के रूप में ऐसे कई बड़े चोटी के कथाकारों से नंदन के लिए बेहतरीन बाल कहानियां भी लिखवायी हैं । उनके इस योगदान का इतिहास अछूता ही है । इस पर शीघ्र ही आवश्यकता है कि किस तरह बच्चन से लेकर दिनकर तक से और अन्य चोटी के कथाकारों से उन्होंने बाल रचनाएं लिखवायीं और उन्हें नंदन में प्रकाशित किया । समय-समय पर नंदन में अपनी कहानियों के माध्यम से उन्होंने बच्चों को राष्ट्रीय बोध के साथ-साथ अपने दायित्वों के निर्वहन के लिए भी प्रेरित किया । उनकी कहानियां का उद्देश है— बच्चे के अच्छे संस्कार से ही देश की नींव सुदृढ़ होती है— इसीलिए बाल कहानियों के इस संग्रह की तमाशा, अंगूठी का संदेश, तीसरा शेर, लाल रोशनियां, पशुता का दंड, वचन का पालन, दोस्त, नवाब मुनाफा अली, मोरनी तथा मेजर की बेटी-जैसी कहानियां एक तरफ जहां बच्चों का मनोरंजन करती हैं, वहीं दूसरी ओर उन्हें अच्छा इनसान बनने की प्रेरणा भी देती हैं । इन कहानियों की सबसे अच्छी बात यह भी है कि इन कहानियों को बच्चे, किशोर तथा वयस्क तीनों इन्हें पसंद करेंगे ।

तीसरा शेर : राजेन्द्र अवस्थी, प्रकाशक : मगध प्रकाशन, सपना अपार्टमेंट्स, ई-७१७ ए-प्रताप विहार, गाजियाबाद; मूल्य : साठ रुपये ।

मई के अंक में पृष्ठ—१८९ में 'अनाम रिश्ते' की समीक्षा प्रकाशित हुई है, पुस्तक के लेखक हैं— डॉ. कन्हैयालाल गांधी, प्रकाशक हैं— एच.के. बुक्स, शिव मार्केट, न्यू चंद्रावल, जवाहर नगर दिल्ली-७, मूल्य—९० रुपये ।

सांस्कृतिक समाचार

डॉ. रामनारायण सिंह मधुर का सार्वजनिक अभिनंदन

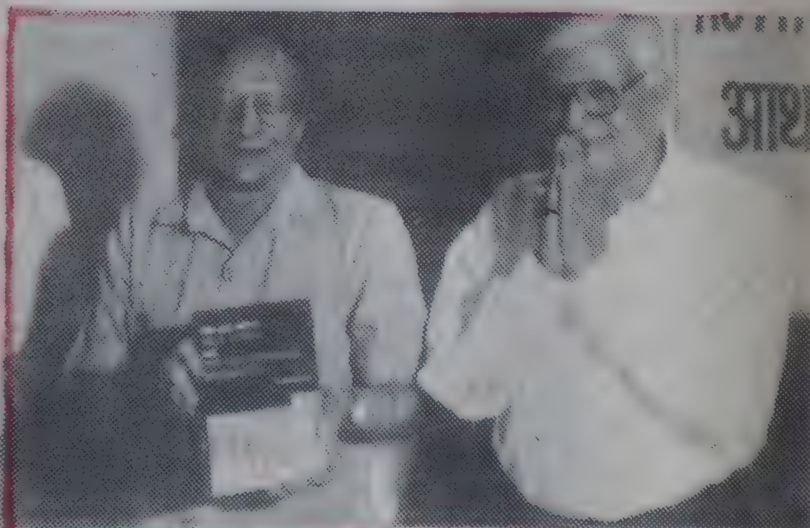
सिवनी । व्यंग्यशिल्पी डॉ. रामनारायण सिंह मधुर का अभिनंदन देखकर ऐसा महसूस हो रहा है—जैसे गंगानगरी वाराणसी का सम्मान बैनगंगा नगरी सिवनी कर रही है । डॉ. मधुर का सम्मान कर स्वयं साहित्य जगत गौरवांवित है । डॉ. मधुर के भव्य अभिनंदन समारोह को देखकर हमें महाकवि भूषण का ऐतिहासिक सम्मान याद आ रहा है जब महाकवि की पालकी को स्वयं पन्ना के महाराज छत्रसाल ने अपना कांधा दिया था—उक्ताशय के उद्‌गार क्रमशः कादम्बिनी के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी तथा स्वामी प्रज्ञानंद ने विगत ५ व ६ अप्रैल ९७ को स्थानीय श्रीमती रुकमणी देवी परमानंद अग्रवाल धर्मशाला में आयोजित 'डॉ. रामनारायण सिंह मधुर सार्वजनिक अभिनंदन समारोह' में मुख्य अतिथि व अध्यक्ष की आसंदी से कहे । अपने अभिनंदन को स्वीकार करते हुए डॉ. मधुर ने आयोजकों के प्रति आभार प्रगट करते हुए कहा—'मैं दूर कहां जा रहा हूं, मैं तो आपके हृदय में बसा हूं ।' इस अवसर पर उन्होंने समारोह संयोजक अरविन्द मानव से प्राप्त सम्माननिधि ११ हजार रु. ग्रहण कर घोषणा की कि 'पुरस्कार समिति को मेरे द्वारा दिये गये २५ हजार रु. से प्राप्त ब्याज धन से प्रतिवर्ष किसी एक चयनित साहित्यकार बंधु को सम्मानित किया जाएगा ।'



संसद टूटा हुआ आईना है पुस्तक का लोकार्पण

ऑथर्स गिल्ड ऑव इंडिया के तत्वावधान में इंडियन लॉ इंस्टीट्यूट सभागार में पिछले दिनों सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता और लेखक डॉ. जनकराज जय की नवीनतम पुस्तक 'राइज एंड फॉल ऑव देवगौड़ा एंड दी कांस्टीट्यूशनल क्राइसिस' का लोकार्पण जाने-माने साहित्यकार और संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ ।

लोकार्पण के बाद अपने भाषण में श्री अवस्थी ने कहा कि आज लोकतंत्र टूटे हुए आईने की तरह है जिसमें हर चेहरा धुंधला प्रतिबिंबित हो रहा है । आजादी की अर्धशती मनाने के बावजूद लोकतंत्र में अमर्यादित और आपराधिक मनोवृत्ति के लोगों का दबदबा बढ़ता जा रहा है । इससे धर्मनाक बात और क्या हो सकती है कि कल के अपराधी आज भाग्यविधाता बन गये हैं ।



कार्यक्रम में अन्य वक्ताओं सर्वश्री कपिल सिब्बल, अरविंद कुमार, श्री सोहल आदि ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज की सबसे बड़ी जरूरत पब्लिक लाइफ के प्रति सकारात्मक सोच पैदा करने की है । कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री पी. वी. राव ने की जबकि संचालन श्री अशोक अरोड़ा ने किया ।

प्रस्तुतिः डॉ. हीरालाल बाछोतिया

देश भर में स्थापित कादम्बिनी क्लबों ने विगत माह अनेक कार्यक्रम आयोजित किये । उन कार्यक्रमों का लेखा-जोखा :

गोंदियानगर में कादम्बिनी क्लब का पुनर्गठन

गोंदिया, कादम्बिनी क्लब का नगर में पुनर्गठन किया गया । जिसकी औपचारिक घोषणा कादम्बिनी के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने स्थानीय शारदा वाचनालय में आयोजित एक समारोह में की । कादम्बिनी क्लब के संयोजक श्री रमेशचंद्र दुबे बनाये गये हैं । अन्य सदस्यों में श्री मदन पांडेय, रमेश शर्मा 'निबिर', जगदीश मिश्रा, भरत क्षत्रीय, पदम जैन, अतुल दुबे, नरेश गुप्ता, शशि तिवारी, इंदरचंद अग्रवाल, राम कुंदनानी 'असर', दिनेश पटेल, मंजीत बग्गा, शिव अग्रवाल, अनिल महाबल, चंपालाल माहेश्वरी, बिपिन शाह, निर्मल जैन, जगेश निमोणकर, कमल मेठी, माणिक गेडाम, लक्ष्मण हंसपाल आदि हैं ।

श्री अवस्थीजी ने कादम्बिनी क्लब के गठन एवं उसके कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस क्लब की गतिविधियों को कादम्बिनी पत्रिका के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार मिलेगा तथा सदस्यों को क्लब के सदस्यता शुल्क में ही कादम्बिनी के प्रतिमाह अध्ययन का लाभ प्राप्त होगा । संयोजक श्री रमेशचंद्र दुबे एवं श्री मदन पांडेय ने श्री अवस्थीजी का पुष्पहार से स्वागत किया तथा सभी सदस्यों ने काफी देर तक उनके साथ चर्चा में भाग लिया । कादम्बिनी क्लब का कार्यालय विश्व बंधु प्रेस, अंसारी वार्ड, गोंदिया में स्थित है ।

चांपा कादम्बिनी क्लब ने अश्वनी कुमार दुबे के काव्य संग्रह 'शहर बंद है' पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया । इस विचार गोष्ठी में प्राचार्य प्रो. एम.एल. अरोरा, एम.आई. सिंह, रामेश्वर प्रसाद, केसरवानी, मदनलाल गुप्त, प्रो. अश्वनी केशरवानी, विजय कुमार दुबे, डॉ. हरिहर प्रसाद सराफ, प्रो. के.के. मिश्रा, डॉ. सतीश अग्रवाल, देवेश श्रीमोर, डॉ. व्ही.के. अग्रवाल, डॉ. सत्यप्रकाश गुप्ता, पत्रकार जीवन मोदी, के.एल. सोनी, बी.आर. पटेल, फणीन्द्र गोपाल, बजरंग पटेल, महेश राठौर, गिरधारी यादव, राजेश मिश्र, आर.के. शुक्ला तथा मोहन देवांगन ने अपने विचार व्यक्त किये । क्लब के संयोजक प्रो. भूपेन्द्र पटेल ने धन्यवाद ज्ञापन किया ।

सरायतीन (मुरादाबाद) कादम्बिनी क्लब ने हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया । सुरेन्द्र मोहन मिश्र, मक्खन मुरादाबादी, संदीप अक्षत, डॉ. प्रेमवती उपाध्याय, राकेश शर्मा, योगेन्द्र वर्मा व्योम, अशोक त्यागी, राजेश विचारक, रमेश अधीर, कृष्ण बिहारी दुबे, रवि चतुर्वेदी तथा संदीप मुदगिल ने अपनी-अपनी कविताएं सुनायीं । संचालन विजय गुप्ता ने किया । अध्यक्षता क्लब के संयोजक सुभाष चन्द्र वैश्य ने की । मुख्य अतिथि सत्य प्रकाश वकील थे । धन्यवाद ज्ञापन डॉ. देशबंधु आचार्य एवं निर्दोष कुमार ने किया ।

रोहतक कादम्बिनी क्लब ने भी एक हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया । मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री श्री रामविलास शर्मा थे । संचालन डॉ. एस.एस. मोदगिल ने किया । कवि सम्मेलन में दैनिक 'हिंदुस्तान' के उपसंपादक महेश शर्मा, डॉ. श्याम सखा श्याम, दिनेश रघुवंशी, तरुण, उदयभानु हंस, कमलेश द्विवेदी, यूसुफ भारद्वाज तथा अन्य कवियों ने अपनी कविताओं से श्रोताओं का मन मोह लिया । कार्यक्रम की अध्यक्षता रोहतक के आयुक्त श्री ए.डी. मलिक ने की तथा दीप प्रज्वलन महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के उपकुलपति ले.जन. ओ.पी. कौशिक ने किया ।

जमशेदपुर कादम्बिनी क्लब की शहर में स्थापना की गयी । इस मौके पर एक उद्घाटन समारोह साकची सुपरवाइजर्स फ्लैट के क्लब हाउस में आयोजित किया गया । क्लब का उद्घाटन

साहित्यकार निर्मल मिलिंदजी ने दीप जलाकर किया ।

कार्यक्रम के प्रारंभ में जुहिका ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की । श्रीमती वैदेही मिश्रा ने भी एक गीत सुनाया । क्लब के वरिष्ठ सदस्य डॉ. मनोहर लाल गोयल व हीरा लाल वर्मा ने अपनी कविताएं सुनायीं । विशिष्ट अतिथि डॉ. बच्चन पाठक 'सलिल' ने अपने वक्तव्य में साहित्यकारों से समाज के लिए काफी उपेक्षाएं व्यक्त कीं । स्वागत भाषण श्यामाचरण मिश्र ने व धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती वैदेही मिश्रा ने किया । कार्यक्रम का संचालन क्लब की संयोजिका डॉ. जूही समर्पिता ने किया । इस अवसर पर आर.पी. सिंह, अंजनी कुमार सहाय, श्रीमती अनिता निधि, महेश्वर प्रिंस, श्रीमती राजश्री सिंह, पंडित किशोर चटर्जी के अलावा नगर के कई प्रतिष्ठित साहित्यकार भी उपस्थित थे ।

रांची कादम्बिनी क्लब का वार्षिक समारोह सी.सी.एल. (दरभंगा हाउस) में संपन्न हुआ । समारोह का उद्घाटन आकाशवाणी रांची की केंद्र निदेशिका श्रीमती रोजीलन लकड़ा ने किया । उन्होंने कादम्बिनी क्लब द्वारा आयोजित काव्य प्रतियोगिताओं के चयनित प्रतियोगियों क्रमशः राजकुमार गीत (प्रथम), सुश्री अंजता कुमारी (द्वितीय), हीरा कुमार साहू एवं सुश्री गीतू कुमारी (तृतीय) तथा पूर्णिमा कुमारी, वैदेही विभूति एवं विनय कुमार को सांत्वना पुरस्कार से तथा महात्मा गांधी एवं राष्ट्रीय एकता शीर्षक निबंध प्रतियोगिता के लिए सुश्री महिमा कौर (प्रथम), अनिता कुमारी (द्वितीय), सनोज कुमार (तृतीय) तथा प्ररोद कुमार, संतोष कुमार, सरिता कुमारी एवं अमित कुमार को सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया । लेखिका डॉ. ऋता शुक्ला ने साहित्य की भूमिका पर प्रकाश डाला । क्लब के संयोजक आलोक आदित्य ने क्लब की गतिविधियों एवं उद्देश्यों से लोगों को अवगत कराया । राजनेता पी.एन. सिंह ने भी अपना वक्तव्य रखा । समारोह के अंत में कवि सम्मेलन का संचालन कुमार बृजेन्द्र ने किया । धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राम प्रसाद ने किया ।

रामपुर बुशहर कादम्बिनी क्लब ने एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता समन्वय के उपाध्यक्ष डॉ. डी.एन. शर्मा ने व मंच संचालन समन्वय के सचिव तथा कादम्बिनी क्लब की संयोजिका श्रीमती आशा शैली ने की । इसमें नागेन्द्र शर्मा, अरुण शर्मा, हरदेव धीमान, शांति चौहान तथा ध्यान सिंह भागरा आदि ने भाग लिया ।

गोंदिया में निराला जन्मशती समारोह

गोंदिया । श्री शारदा वाचनालय, गोंदिया (महाराष्ट्र) में कविवर पं. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जन्मशती समारोह कादम्बिनी के संपादक तथा प्रख्यात साहित्यकार श्री राजेन्द्र अवस्थी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया ।



इस प्रसंग पर श्री अवस्थी का शॉल एवं श्रीफल से शारदा वाचनालय की ओर से सम्मान भी किया गया । श्री अवस्थी ने अपने संबोधन में निराला के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला । अध्यक्षता पूर्व विधायक श्री हरिहरभाई पटेल ने की । मंच पर ट्रस्ट बोर्ड के अध्यक्ष श्री बृजमोहन बजाज तथा संस्थाध्यक्ष श्री कृष्णलाल बग्गा उपस्थित थे । संचालन ग्रंथपाल श्री शिव शर्मा ने तथा आभार प्रदर्शन नरेश गुप्ता ने किया । इस अवसर पर नगर के बुद्धिजीवी समुदाय बड़ी संख्या में उपस्थित थे ।

समस्या-पूर्ति—२१३

एक नहीं दोनों



प्रथम पुरस्कार

कोई पास नहीं था मेरे, मैं थी और तनहाई थी
पेड़ की बांह पकड़कर बैठा, लेकिन याद पराई थी
तट से तट का मिलन अधूरा, प्यास बिछाये पलकों में
तनहाई मिट जाए मन की हम-तुम 'एक नहीं दोनों'।

—जगदीश श्रीवास्तव
गुप्तेश्वर मंदिर, अंदर किला
विदिशा (म. प्र.)—४६४००१

द्वितीय पुरस्कार

प्रतीक्षा, पीड़ा, पल-पल व्याकुल मन की तड़पन
असर ऋतु, यौवन का भला-बुरा दोनों
राह देख थक चुकी जब मानिनी अभिसारिका भी
मुंह चिढ़ा रहा है ठूंठ और साज दोनों
मौसम की मस्ती में आग लगा रही आज
क्या वियोग, क्या एकांत, एक नहीं दोनों।

—मोहन कुमार सरकार
प्रशासनिक सेवा
भागलपुर—८१२००१

तृतीय पुरस्कार

बासंती राग में, बिरहा की आग में झुलसा ये मन
यौवन का ज्वार लिये, जलता श्रृंगार किये, तपता बदन
दोनों के अंतर में तेरी ही प्यास है
बरसों से दोनों को तेरी तलाश है
रस्ता निहारते हैं, तुझको पुकारते हैं, एक नहीं दोनों
आ जाओ डूबेंगे, मस्ती में भीगेंगे, एक नहीं दोनों।

—सुधीर श्रीवास्तव
व्याख्याता
डाइट-धर्मजयगढ़
जिला—रायगढ़ (म. प्र.)

दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राकेश शर्मा द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित



समस्यापूर्ति—२१५

मय जंगल

समस्या-पूर्ति साहित्य की पुरानी विधा है । हमने उसे फिर से जीवित किया है । यहां प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और नीचे का शीर्षक पढ़िए, इसे लेकर आपको सिर्फ छंदबद्ध ही नहीं, अतुकांत कविता भी हो सकती है, लिखनी है, उसमें भावों का गांभीर्य आवश्यक है । रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की हो । समस्या-पूर्ति के परंपरागत नियमों के अनुसार चित्र के नीचे दिये शब्द कविता के अंत में ही आने चाहिए ।

१. समस्या-पूर्ति केवल पोस्टकार्ड पर ही भेजें ।

२. समस्या-पूर्ति संपादक के व्यक्तिगत नाम से नहीं भेजें ।

३. एक बार पुरस्कृत व्यक्ति की रचना छह माह तक दोबारा पुरस्कृत नहीं की जाएगी ।

पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है

प्रथम—२५० रु.; द्वितीय—२०० रु. और तृतीय—१५० रु.

अंतिम तिथि : २५ जून, १९९७



Montage LK 1 96